हारमो

प्रकाशक—

नवलकिशोर प्रेस,

लखनऊ.

मूल्य ३)

सूचना

हारमोनियममास्टर पहले अलग-अलग १५ भागों में छपा था, लेकिन यह देखा गया कि जिस सज्जन ने किसी एक भाग को मोल लिया, उसने अन्य सब भागों को भी अवश्य मँगाया। इसलिये, हारमोनियम-प्रेमी महाशयों की सुविधा के लिये, इस बार हमने हारमोनियममास्टर के पंद्रहों भाग एक जिल्द में प्रकाशित किए हैं।

सब भागों को एक में करने में केवल इतना फेर बदल किया गया है कि प्रत्येक भाग के संकेत-चिह्नों और सूचनाओं आदि को एक जगह पर दिया गया है, सब रागों की सूची एकत्रित करके उसे अकारादि वर्णक्रम से कर दिया गया है, और दसवें भाग को, जिसमें कि हारमोनियम की मरम्मत की प्रक्रिया बताई गई है, अंतिम भाग कर दिया गया है।

आशा है, यह ढंग हारमोनियम-प्रेमियों को बहुत पसंद आएगा।

व्यवस्थापक

प्रकाशन-विभाग, न० कि० प्रेस

विज्ञापन।

आज कल्ह के सभी सज्जन जितना हारमोनियम बाजे को पसन्द करते हैं उतना और किसी बाजे को नहीं और प्रतिदिन इस बाजे की उन्नतिही दिखाई देती है ऐसा होने पर भी आज तक किसी हारमोनियमगुरु ने ऐसी पुस्तक न बनाई कि जिससे हारमोनियम के प्रेमियों का उपकार होता और उनको शीघ्र बजाना आजाता यद्यपि दो चार हारमोनियमगुरुओं ने अपनी ओर ध्यान करके पुस्तकें बनाईं जोकि इधर उधर के यंत्रालयों में मुद्रित हुई हैं परन्तु उनमें से एक भी ऐसी न दिखाई दी कि जिससे हारमोनियम शिक्षकों को कुछ लाभ होता कारण यह है कि ग्रंथकारों ने आद्योपान्त उन नियमों का पालन नहीं किया कि जो एक नवीन शिक्षक को आवश्यक होते हैं यही कारण है कि इन पुस्तकों से नव शिक्षक पढ़कर स्वयं बाजा नहीं बजा सकता है इसकारण मैंने श्रीयुक्त राय सोतीकृष्ण साहब क़मर देहलवी से जोकि इस साज़ के बजाने में एकही चतुर व होनहार हारमोनियस्ट हैं उर्दू में "हारमोनियम गाइड" नामक पुस्तक बनवाई जोकि १५ भागों में भिन्न भिन्न नामों से मेरे यहां छपी है इसमें उक्त ग्रंथकार ने कोई बात छिपा नहीं रक्खी है कि जिससे हारमोनियमशिक्षक को कठिनता हो किन्तु ऐसा सुगम कर दिया है कि एक बालक भी जो कुछ उर्दू जानता हो इस पुस्तक को एक बार आद्योपान्त पढ़ जावे तो आशा है कि उसको किसी हारमोनियम मास्टर की आवश्यकता न होगी वह स्वयं बाजा बजालेगा और यथासम्भव मरम्मत भी करलेगा और साथ ही इसके वह एक उत्तम श्रेणी का गायक भी हो जावेगा

इसको पुस्तक न जानिये वरन "हारमोनियममास्टर" मानिये इसकी जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है यही कारण है कि आज तक इसकी हज़ारों प्रतियां बिक चुकीं कि जिससे मुझको पुनर्मुद्रण का अवसर मिला। उर्दू हारमोनियमगाइड को देखकर हिन्दी के प्रेमियों ने मुझको हिन्दी भाषा में हारमोनियमगाइड छापनेके लिये बाध्य किया, इससे मैंने उसी अपनी उर्दू हारमोनियमगाइड को पण्डित शुकदेवप्रसाद वाजपेयी हज़रतगंज लखनऊ से हिन्दी में अनुवाद कराकर प्रकाशित किया है आशा है इससे हारमोनियमशिक्षकों को विशेष लाभ होगा और उन जालसाज़ सिखानेवालों से बचे रहेंगे कि जो नवशिक्षकों को धोखा देकर उनका रुपया व्यर्थ नष्ट करादेते हैं। इस पुस्तक को २ आप एक बार भी आद्योपान्त पढ़ जावेंगे तो फिर आपको हारमोनियम बजाने और गवैये का साथ करने आदि में किसी प्रकार की कठिनता न होगी आप स्वयं एक अच्छे हारमोनियस्ट होजावेंगे कि जो दूसरों को उपदेश दे सकेंगे इसकी अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है आप इसके किसी अंश को देखेंगे तो जानेंगे कि यह पुस्तक कैसी लाभदायक है, किमधिकम् विज्ञेषु—

आपका हितेच्छु

प्रयागनारायण भार्गव,

मालिक नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ.

भूमिका।

आह ! आज तानसेन न हुवा जो हारमोनियम ऐसे शाहाना साज़ को देखकर फूला न समाता इसकी चित्ताकर्षक आवाज़ से अपने कानों को तृप्त न करता इसकी नवीन बनावट ने यदि सच पूछिये तो गानविद्या में फिर से जान पहिनादी कहां यह दशा थी कि गाना बजाना एक प्रकार का दोष समझा जाता था और कहां अब जिधर दृष्टि डालते हैं उधर मिस्टर हारमोनियम कीही चित्ता-कर्षक आवाज़ गूंजरही है हज़रत सितार और सारंगीजान की जैसी मिट्टी खराब मिस्टर हारमोनियम ने की है वैसी ईश्वर किसी की न करवाये—भारतवर्षनिवासियों को देखिये कि स्वयं हारमो-नियम बनाकर और कम मूल्य पर बिक्री करके बहुत बड़ी उन्नति दिखा रहे हैं जिस पर तुर्रा यह है कि बलायत वाले हैरान हैं कि हिन्दुस्तानी हमसे उत्तम बाजे बनाकर कैसे कम मूल्य पर विक्रय करते हैं एक प्रतापसिंह आफ़ लाहौर, गौतम ब्रादर्स गढ़मुक्तेश्वर आदि ने पुस्तई नई तरकीबें और तर्ज़ें हारमोनियम की निकाली हैं वह अभी तक बलायत वालों के दिमाग़ में भी नहीं पहुँचीं हम ऐसे होनहार मास्टरों और कारीगरों को सच्चे दिल से बधाई देते हैं—

धनी, निधनी, स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकायें ग़रज़ कि प्रत्येक सोसाइटी के मनुष्य इस साज़ को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं और इससे एक खास दिलचस्पी रखते हैं स मेरे कि एकान्त में यही मित्र व शोकनिवारक है ी नहीं रखती के वियोग की रात्री इसके ही द्वारा ठिकाने त ी किन्तु ऐसा

यह एकही साज़ है कि जो मनमानी सफ उर्दू जानता हो कर सदैव की प्रसन्नता से मनुष्य को स्वा ी आशा है कि साज़ है जिसको बलायत वाले " शा ता न होगी वह कहते हैं फिर क्या यह धोखा हो सक ी करलेगा और शाहाना साज़ नहीं है ? भी हो जावेगा

हारमोनियमसमास्टर
पहिलाभाग ।

साज़ ।

गाना तब तक अच्छा नहीं ज्ञात होता है जब तक उसके साथ कोई साज़ न बजाया जाये पूर्वकाल के जानकार अधि-कता से सितार अथवा बीन बजाया करते थे—तानसेन के समय में सारंगी (सुरांग) और दो तारा, तः तारा का चलन था ज्यों ज्यों इसके जाननेवाले लोप होते गये त्यों त्यों इनकी भी प्रतिष्ठा घटती गई और यहां तक नौबत पहुँची कि यह साज़ नीच जाति की जीविका के द्वार होगये जैसा कि आज कल्ह के मीरासियों और भांड़ों से ज्ञात है—

सितार को अलबत्ता प्रत्येक खंड के मनुष्य काम में लाते थे अब भी उसको वैसेही देखते हैं जैसे पहिले प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा करते थे केवल यहही अकेला साज़ शेष रह गया है जो अपनी प्रतिष्ठा को स्थिर किये हुये है परन्तु इसका जानना बजाना भी ऐसाही कठिन है जैसा कि गानविद्या के एक साज़

भूमिका ।

आह ! आज तानसेन न हुवा जो हारमोनियम ऐसे शाहाना साज़ को देखकर फूला न समाता इसकी चित्ताकर्षक आवाज़ से अपने कानों को तृप्त न करता इसकी नवीन बनावट ने यदि सच पूछिये तो गानविद्या में फिर से जान पहिनादी कहां यह दशा थी कि गाना बजाना एक प्रकार का दोष समझा जाता था और कहां अब जिधर दृष्टि डालते हैं उधर मिस्टर हारमोनियम कीही चित्ता-कर्षक आवाज़ गूंजरही है हजरत सितार और सारंगीजान की जैसी मिट्टी खराब मिस्टर हारमोनियम ने की है वैसी ईश्वर किसी की न करवाये—भारतवर्षनिवासियों को देखिये कि स्वयं हारमो-नियम बनाकर और कम मूल्य पर बिक्री करके बहुत बड़ी उन्नति दिखा रहे हैं जिस पर तुर्रा यह है कि वलायत वाले हैरान हैं कि हिन्दो[illegible]नी हमसे उत्तम बाजे बनाकर कैसे कम मूल्य पर विक्रय करते हैं [illegible] प्रतापसिंह आफ़ लाहौर, गौतम ब्रादर्स गढ़मुक्तेश्वर आदि ने [illegible] नई तरकीबें और तर्ज़ हारमोनियम की निकाली हैं वह अभी तक वलायत वालों के दिमाग़ में भी नहीं पहुँची हम ऐसे होनहार मास्टरों और कारीगरों को सच्चे दिल से बधाई देते हैं—

एक पुस्तक

धनी, निर्धनी, स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकायें गरज़ कि प्रत्येक सोसाइटी के मनुष्य इस साज़ को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं और इससे एक खास दिलचस्पी रखते हैं न मेरे कि एकान्त में यही मित्र व शोकनिवारक है [illegible] नहीं रखती के वियोग की रात्री इसके ही द्वारा ठिकाने [illegible] किन्तु ऐसा

यह एकही साज़ है कि जो मनमानी सफ[illegible] उर्दू जानता हो कर सदैव की प्रसन्नता से मनुष्य को स्वा[illegible] [illegible]गी आशा है कि साज़ है जिसको वलायत वाले " शो[illegible] [illegible]ता न होगी वह कहते हैं फिर क्या यह धोखा हो सक[illegible] [illegible] ी करलेगा और शाहाना साज़ नहीं है ! [illegible] भी हो जावेगा

हारमोनियममास्टर
पहिलाभाग।

साज़।

गाना तब तक अच्छा नहीं ज्ञात होता कि जब तक उसके साथ कोई साज़ न बजाया जाये पूर्वकाल के जानकार अधिकता से सितार अथवा बीन बजाया करते थे-तानसेन के समय में सारंगी (सुरांग) और दो तारा, छः तारा का चलन था ज्यों ज्यों इसके जाननेवाले लोप होते गये त्यों त्यों इनकी भी प्रतिष्ठा घटती गई और यहां तक नौबत पहुँची कि यह साज़ नीच जाति की जीविका के द्वार होगये जैसा कि आज कल्ह के मीरासियों और भांड़ों से ज्ञात है-

सितार को अलबत्ता प्रत्येक खंड के मनुष्य काम में लाते थे अब भी उसको वैसेही देखते हैं जैसे पहिले प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा करते थे केवल यहही अकेला साज़ शेष रह गया है जो अपनी प्रतिष्ठा को स्थिर किये हुये है परन्तु इसका जानना बजाना भी ऐसाही कठिन है जैसा कि गानविद्या के एक साज़

भूमिका।

आह ! आज तानसेन न हुआ जो हारमोनियम ऐसे शाहाना साज़ को देखकर फूला न समाता इसकी चित्ताकर्षक आवाज़ से अपने कानों को तृप्त न करता इसकी नवीन बनावट ने यदि सच पूछिये तो गानविद्या में फिर से जान पहिनादी कहां यह दशा थी कि गाना बजाना एक प्रकार का दोष समझा जाता था और कहां अब जिधर दृष्टि डालते हैं उधर मिस्टर हारमोनियम कीही चित्ताकर्षक आवाज़ गूंजरही है हज़रत सितार और सारंगीजान की जैसी मिट्टी ख़राब मिस्टर हारमोनियम ने की है वैसी ईश्वर किसी की न करवाये—भारतवर्षनिवासियों को देखिये कि स्वयं हारमोनियम बनाकर और कम मूल्य पर विक्री करके बहुत बड़ी उन्नति दिखा रहे हैं जिस पर तुर्रा यह है कि वलायत वाले हैरान हैं कि हिन्दो[illegible]ानी हमसे उत्तम बाजे बनाकर कैसे कम मूल्य पर विक्रय करते हैं [illegible] एक प्रतापसिंह आफ़ लाहौर, गौतम ब्रादर्स गढ़मुक्तेश्वर आदि ने पुस्त[illegible] नई नई तरकीबें और तर्ज़ हारमोनियम की निकाली हैं वह अभी तक वलायत वालों के दिमाग़ में भी नहीं पहुंचीं हम ऐसे होनहार मास्टरों और कारीगरों को सच्चे दिल से बधाई देते हैं—

धनी, निधनी, स्त्री, पुरुष, बालक, बालिकायें ग़रज़ कि प्रत्येक सोसाइटी के मनुष्य इस साज़ को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखते हैं और इससे एक ख़ास दिलचस्पी रखते हैं स [illegible] मेरे कि एकान्त में यही मित्र व शोकनिवारक है [illegible] नहीं स्त्री के वियोग की रात्री इसके ही द्वारा ठिकाने [illegible] किन्तु ऐसा

यह एकही साज़ है कि जो मनमानी सफ़[illegible] जानता हो कर सदैव की प्रसन्नता से मनुष्य को [illegible] आशा है कि साज़ है जिसको वलायत वाले " शो[illegible] कहते हैं फिर क्या यह धोखा हो स[illegible]ता न होगी वह शाहाना साज़ नहीं है ?

[illegible] करलेगा और

[illegible] भी हो जावेगा

हारमोनियमअमास्टर
पहिलाभाग।

साज़।

गाना तब तक अच्छा नहीं ज्ञात होता कि जब तक उसके साथ कोई साज़ न बजाया जावे पूर्वकाल के जानकार अधिकता से सितार अथवा वीन बजाया करते थे-तानसेन के समय में सारंगी (सुरांग) और दो तारा, छः तारा का चलन था ज्यों ज्यों इसके जाननेवाले लोप होते गये त्यों त्यों इनकी भी प्रतिष्ठा घटती गई और यहां तक नौबत पहुँची कि यह साज़ नीच जाति की जीविका के द्वार होगये जैसा कि आज कल्ह के मीरासियों और भांड़ों से ज्ञात है-

सितार को अलबत्ता प्रत्येक खंड के मनुष्य काम में लाते थे अब भी उसको वैसेही देखते हैं जैसे पहिले प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा करते थे केवल यहही अकेला साज़ शेष रह गया है जो अपनी प्रतिष्ठा को स्थिर किये हुये है परन्तु इसका जानना बजाना भी ऐसाही कठिन है जैसा कि गानविद्या के एक साज़

पुस्तक कैसी ले ना चाहिये-

में यह बात अच्छी तरह फैलगई थी कि सितार वस्तु है और इसका सीखना सुगम नहीं इस ५ इससे संयम करते थे और यह जानकर कि वर्षों के परिश्रम से भी जैसा चाहिये नहीं आता म नाम भी नहीं लेते थे जबसे हारमोनियम का सी समय से गानविद्या की ओर हिन्दोस्तानियों रुचि होगई क्योंकि इसमें वह कठिनाइयां नाम

तक को नहीं हैं कि जिनके कारण गानविद्या के साज़ कठिन बताये जाते थे प्रत्येक साज़ का यह नियम है कि उसका ठाट राग रागिनियों के अनुसार पृथक् पृथक् बदलना पड़ता है–

इसके अतिरिक्त हारमोनियम इन निरर्थक बातों से कोसों दूर है और जो राग रागिनी चाहें बिना किसी ठाट बदलने के बजा सकते हैं क्योंकि इस साज़ में स्वर और उनके दर्जे नियत करे दिये गये हैं जोकि अटल हैं और जिनसे राग रागिनी हर प्रकार की बजा सकते हैं चाहे भिन्न ठाट क्यों न हों–

हारमोनियम ने वास्तव में ऐसा काम कर दिखाया है कि जिससे हिन्दोस्तानियों को अपने भूले हुये गुण और विद्या की खानि गानविद्या फिर से स्मरण हो आई नहीं तो असावधानी के स्वप्न से जगाने वाला कोई दूसरा रिफ़ार्मर (सुधारक) उत्पन्न न हुआ था–

हारमोनियम के लाभ।

उन सैकड़ों लाभदायक बातों में से कुछेक निम्न लिखित हैंः–

(१) और बाजों की तरह इसमें ठाट आदि बदलने की आवश्यकता नहीं होती–

(२) इस बाजा की आवाज़ मनभावनी और सुरीली होती है जिससे दिमाग़ को ताज़गी पैदा होती है रागिनी का गुण शीघ्र ज्ञात होता है–

(३) गाने वाले को बहुत सुगमता होती है और साथ अच्छा होता है–

(४) इसके बजानेवाले के हाथ ज़ोरकार और उँगलियां चुस्त कलाई नर्म रहती हैं सुस्ती पासतक नहीं आती–

(५) यदि नित प्रति दो घंटे हारमोनियम बजाया जावे

तो बजाने वाला सदैव निरोग रहेगा क्योंकि स्वरों में भी एक प्रकार का गुण होता है जोकि परीक्षा से ज्ञात होजायगा—

(६) हारमोनियम का वजाने वाला हर प्रकार की सोसाइटियों में सम्मिलित हो सकता है और उसकी प्रतिष्ठा प्रत्येक देश में होती है—

(७) हारमोनियस्ट आज कल्ह बड़ी बड़ी तनख़्वाहें पाते हैं रियासतों में जल्द नौकरियां हो जाती हैं आफ़िसर उनसे प्रसन्न रहते हैं—

हारमोनियममास्टर ।

स्मरण रखना चाहिये कि हारमोनियम सीखने में इतना परिश्रम नहीं करना पड़ता कि जितना बुद्धि और क़ान से काम लेना पड़ता है यह बिल्कुल असत्य है कि हारमोनियम एक कठिन साज़ है यह उन्हीं का कहना है कि जो रुपये के क्रोध से अज्ञान शिक्षकों को अपने जाल में लाते हैं—

किसी किसी हारमोनियम मास्टरों और मीरासियों के तो नख़रेही शिक्षकों के लिये जान का उफान हो जाते हैं, अर्बी पढाने का तो दावा करते हैं परन्तु जानते ज़बर, ज़ेर, पेश भी नहीं—वह दून की हांकते हैं कि जिससे शेख़ चिल्लियों को भी लज्जित होना पड़ता है फिर भला अज्ञान शिक्षकों की घबराहट का क्या ठिकाना हो सकता है—

शायक़ीन—जब गुरु और शिष्य के बीच में क्रोध मध्यस्थ हो जाता है तो फिर गुरु का चित्त स्वीकार नहीं करता कि शीघ्र अपने शिष्य को खलासी दे क्योंकि आमदनी का सिल-

सिला कौन अपने हाथ से तोड़ देता है परिणाम यह होता है कि शिष्य की थैली खाली हो जाती है और उसको विवश हो गुरुजी से विदा होना पड़ता है और अपने शौक़ को छोड़ दिया यह कहने की आवश्यकता होती है—

बहुधा हारमोनियम के जानकार अपने शिष्यों को हथकंडे में लाते हुये कहा करते हैं कि भला कहीं पुस्तक के पढ़ने से हारमोनियम आ सकता है ?

कहे हुये फ़िक़रे को रद् करते हुये शुभचिन्तक यह बात दावे से कहता है कि पुस्तक के द्वारा शिक्षक वह बातें प्राप्त कर सकता है कि जिनकी ख़बर आज कल्ह के हारमोनियम मास्टरों के दिमाग़ी खलियान में भी न पहुँची हों पुस्तक से सीखना तो दरकिनार रहा यदि सीखनेवाला चाहे तो योग्यता प्राप्त कर सकता है जबकि कोई अच्छा ग्रन्थकार हो—

आज कल्ह के कोई कोई हारमोनियममास्टर जिन्हों ने दो एक पुस्तकें बनाकर गानविद्या पर उपकार किया है और मास्टरी का पदक अपने शिष्यों से प्राप्त किया है अपनी रचना पर फूले नहीं समाते और कभी कभी तो अपने आपे से भी बाहर हो जाते हैं गानविद्या के नियम स्वयं बनाकर पब्लिक में दिखाते हैं कदाचित् इस ध्यान से कि देश उनकी प्रतिष्ठा करे परन्तु यह ध्यान पागलपन से अधिक प्रतिष्ठा नहीं रखता क्योंकि ईश्वर की कृपा से दुनिया में अभी बहुत गन्धर्व हैं कि जिनके आगे यह नक़ली राग रागिनी नहीं बज सकते ताल को राग और ध्वनि या रागिनी को राग के नाम से प्रख्यात करना गानविद्या को सीमाबद्ध बताना स्वयं अनभिज्ञ होकर औरों को जताना मूर्खता नहीं तो और क्या है—

किसी दूसरे मनुष्य को सिखाना कुछ कठिन है इसके लिये कुछ परीक्षा दरकार है प्रत्येक मनुष्य को यह योग्यता प्राप्त नहीं हो सकती–

एक मोटा सा उदाहरण शिक्षा विभाग का देखिये कि बिना नार्मल स्कूल पास कियेहुये मास्टर की प्रतिष्ठा उतनी नहीं होती जितनी कि पास किये की शालाओं में हुवा करती है कारण यह है कि नार्मल स्कूल में वह इन बातों को जान लेता है कि बालकों को किस प्रकार पढ़ाया जावे कि शीघ्र हृदयस्थ होजावे इससे हितैषी ने अपनी रचना में जहां तक होसका मन भावते ढंग और सुगम नियम रक्खे हैं जिससे एक कमसमझ विद्यार्थी भी इस साज़ से भले प्रकार योग्यता प्राप्त करसके जबकि कुछ गाना भी जानता हो–

हारमोनियमके शिक्षक ।

हारमोनियम बजानेवाले दो प्रकार के होते हैं एक वह जो शौक़िया वजाते हैं दूसरे वह जो पेशेवर हैं जैसे मीरासी, थ्रेटीकल हारमोनियस्ट आदि ऐसेही हारमोनियम के सीखनेवाले भी दो प्रकार के होते हैं एक वह जो केवल पुस्तक केही द्वारा इस साज़ को बजाया करते हैं और शौक़िया इसको काम में लाते हैं ऐसे शिक्षक बिना गुरु कहलाते हैं इनमें गायन के साथ करने का बल नहीं होता जो कुछ पुस्तक में तर्ज़ें होती हैं वही इनके हृदयस्थ होजाती हैं यदि यह किसी गुरु से केवल एक मास अथवा दो मास तक स्वयं उनके पास रहकर कुछ सीखें तो अतिशीघ्र उत्तम प्रकार के बजाने वाले होजावें–जो बात

पुस्तकों के द्वारा शीघ्र आजाती है वह किसी गुरु के पास रह कर इतनी जल्दी कदापि नहीं आसकती है—

दूसरे प्रकार के शिक्षक वह हैं जो इस साजमें योग्यता प्राप्त करना चाहते हैं और इससे अपनी आमदनी का सिलसिला चलाना स्वीकार करते हैं ऐसे शिक्षक वर्षों गुरु जी के पास पड़े रहते हैं और सीखते हैं फिर उचित प्रैक्टिस करके नौकर होजाते हैं—

हारमोनियमके स्कूल।

आज कल्ह भारतवर्ष के हर बड़े बड़े शहरों में हारमोनियम सीखने के स्कूल खोले गये हैं जिनमें और शालाओं की भांति इस साज़ की भी शिक्षा होती है परन्तु ऐसे स्कूल बहुत कम हैं कि जहां नियमबद्ध शिक्षा होती हो क्योंकि इन स्कूलों में केवल साज़ के बजानेवाले ही मास्टरी के पद पर नियत होते हैं गानविद्या के नियमों के जाननेवाले बहुत कम रहते हैं यही कारण है कि हारमोनियम शिक्षक मनमानी सफलता प्राप्त नहीं करसकते और राग रागिनी के अनगिनत लाभों से कोसों दूर रहते हैं—

यदि प्रत्येक शहर में म्यूज़िक स्कूल इस प्रकार के खोले जावें कि जहां हारमोनियम के अतिरिक्त गानविद्या की भी शिक्षा हुवाकरे तो पब्लिक को बहुत कुछ लाभ होसकता है क्योंकि जब तक मनुष्य असली भेद को न पावे तब तक उसकी ज़ाहिरा कार्रवाई पर न चले नहीं तो मनमानी मंज़िल को न पहुँच सकेगा—गानविद्या का प्रचार प्रत्येक हारमोनियस्ट पर

आवश्यकीय हैं यदि हारमोनियम के साथ वह इसका भी क्रम छेड़ दें तो वह दिन शीघ्र आवेगा कि भारतवर्ष फिर अपनी पिछली करामात को दोबारा प्राप्त करसके-

---

हारमोनियम की क़िस्में।

यद्यपि हारमोनियम के कारीगर आये दिन नई नई तर्ज़ें हारमोनियम बाजे की निकालते रहते हैं इसकारण उन सब तर्ज़ों का ब्योरेवार वर्णन करना इस समय कठिनही नहीं वरन असम्भव है इससे इस पुस्तक में हर प्रकार का वर्णन संक्षेपता के साथ लिखा जाता है जोकि परमावश्यक है-

बनावट के ध्यान से हारमोनियम दो प्रकार के हैं।

फ़ोल्डिङ्ग (मुड़ने वाला) फ़्लोट (फ़र्शी)

(१) फ़ोल्डिङ्ग का वर्णन।

फ़ोल्डिङ्ग वह हारमोनियम बाजा है कि जो दोनों हाथों और दोनों पावों से बजाया जाता है अर्थात् दोनों हाथों से पर्दे दबाये जाते हैं और दोनों पैरों से हवा दी जाती है यह चार प्रकार का होता है-

---

क़िस्म अव्वल।

स बाजे में दोनों पावों से हवा दीजाती है और दोनों हाथों से कुर्सी पर बैठकर बजता है ऐसे बाजे बहुधा थेट्रीकल कम्पनियों में काम आते हैं—

नम्बर १

क़िस्म दोम।
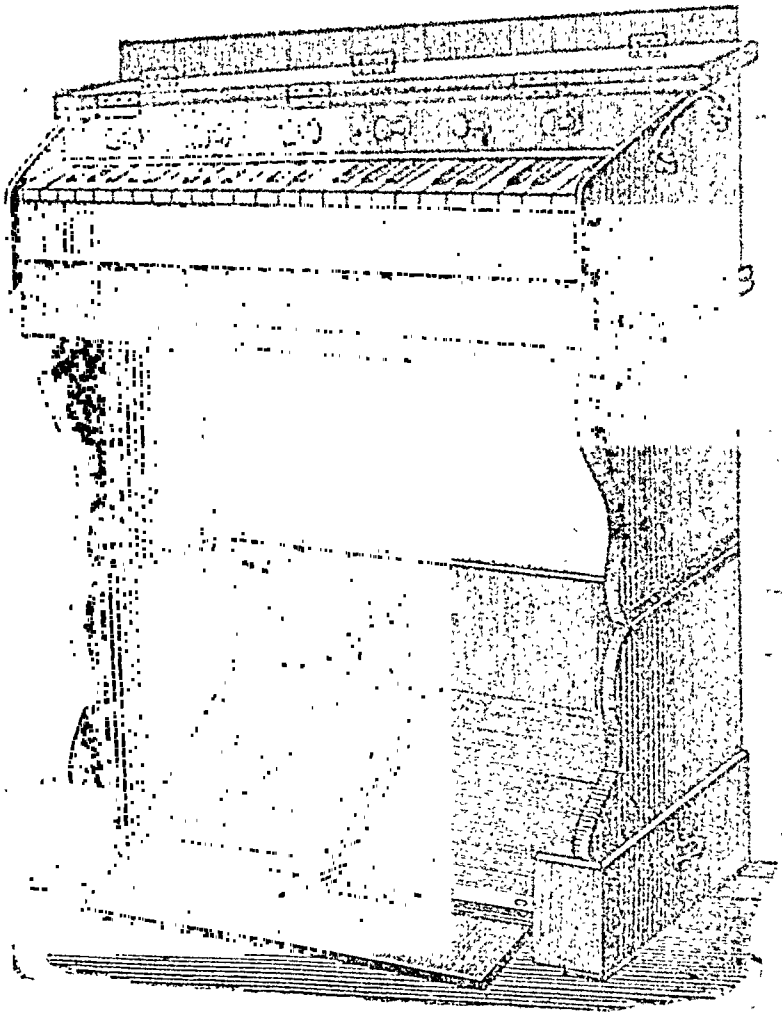
ऐसे बाजे सुन्दरता के अतिरिक्त दृढ़ता में उपमारहित होते हैं क्योंकि इनमें हवा जर्मन सिलवर की नलियों के द्वारा जाती है इन बाजों का मूल्य भी अधिक होता है—

नम्बर २

क़िस्म सोम ।
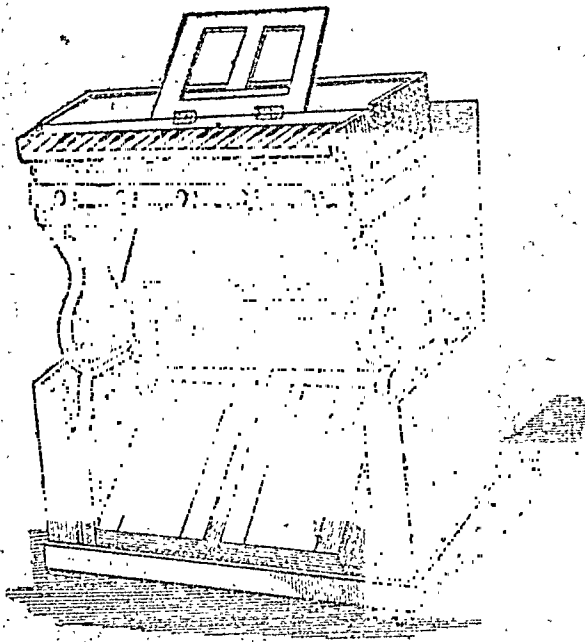
यह बाजा उपरोक्त बाजों में से एक मुख्य बात के लिये भिन्न है अर्थात् यह बाजा केवल दो पेंचों के अलग करदेने से फ़र्शी बनजाता है और बड़ी सावधानी से बजाया जाता है–

नम्बर ३
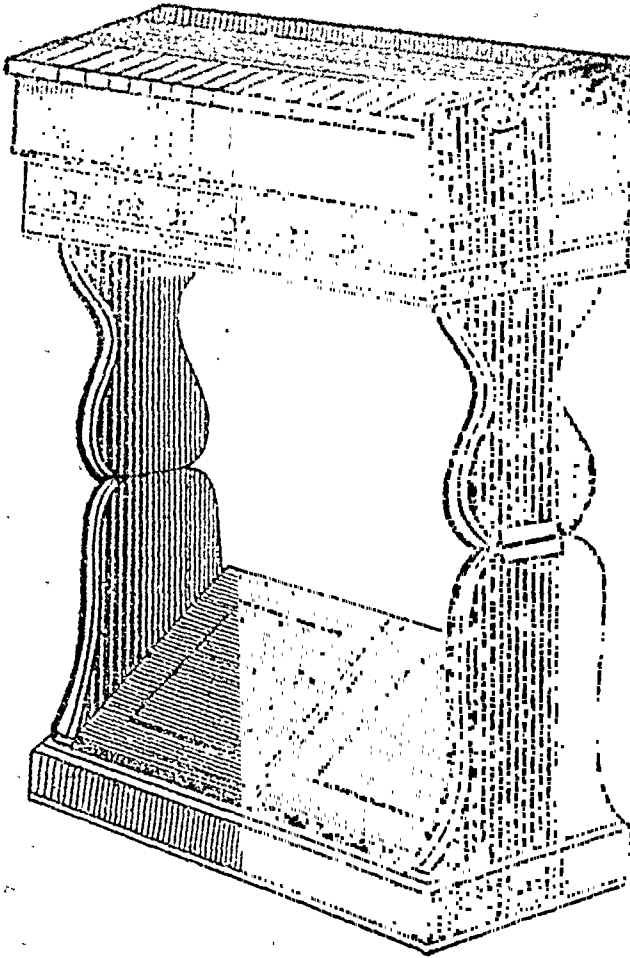
क़िस्म चहारुम।

यह बाजा मेज़पर रखकर एक पावँ और दो हाथों से बजाया जाता है और डोरी व पैडिल के अलग करदेने से फ़र्शी बन जाता है जिसकी धौंकनी ऊपर की ओर होती है—

नम्बर ४
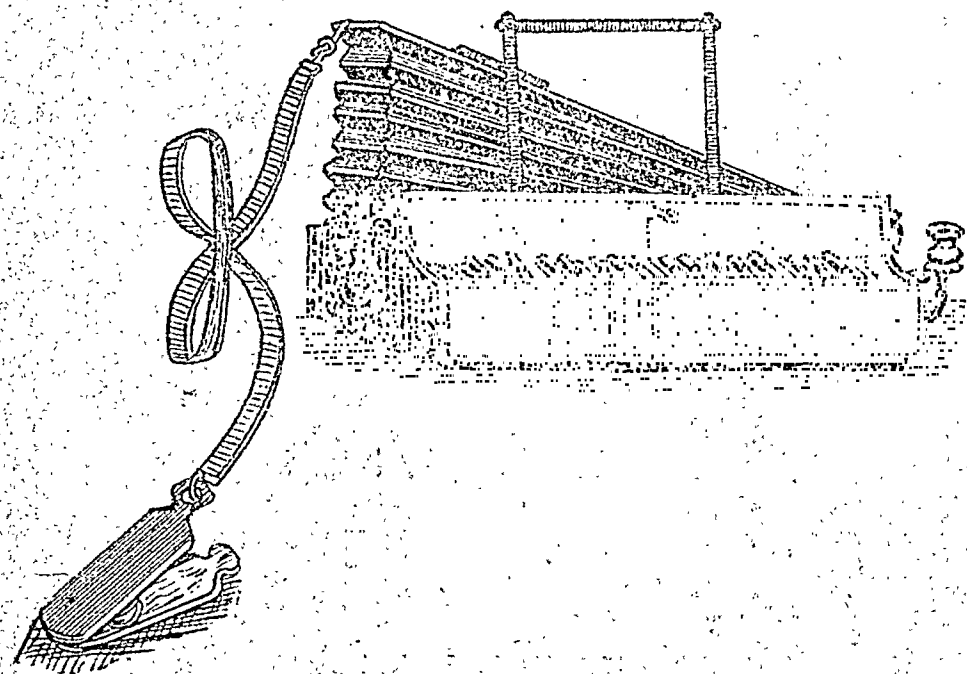
फ़ोल्डिङ्ग हारमोनियम का मूल्य।

फ़ोल्डिङ्ग हारमोनियम का मूल्य कम से कम ३०) होता है और अधिक से अधिक आज कल्ह भारतवर्ष में दो हज़ार रुपये तक मिलता है इससे अधिक अथवा न्यून मूल्य के बाजे कारीगर खरीदार की मांग पर बना देते हैं—

(२) फ़्लोट का वर्णन।

जिसको भारतवर्षीय फ़र्शी बाजा भी कहते हैं यह केवल एक हाथ से बजाये जाते हैं और इनमें एकही हाथ से हवा दी जाती है यह तीन प्रकार का होता है–

क़िस्म अव्वल।

नम्बर १
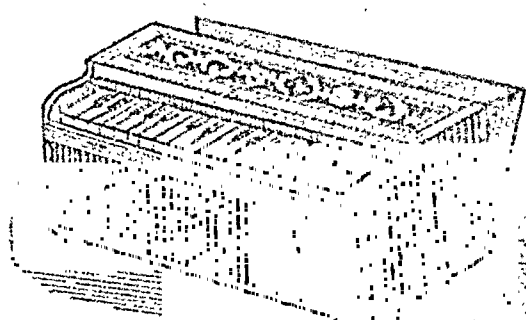
यह बाजा कम खर्च बालानशीन होता है दृढ़ता में दूसरों से बराबरी लेजा चुका है एक हाथ से हवा दी जाती है और दूसरे हाथ से बजता है–

क़िस्म दोम।

यह बाजा बलायत काही बना हुआ अच्छा होता है धौंकनी ऊपर को होती है और बायें हाथ से नीचे की ओर दबाई जाती है यद्यपि यह बाजे सुन्दर होते हैं तब भी दृढ़ता में मनमानी सफलता नहीं दिखा सकते बेलो शीघ्र नष्ट होता है–

नम्बर २
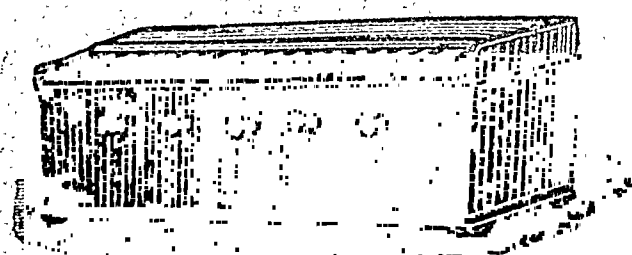
क़िस्म सोम।

यह बाजा हेरल्ड के नाम से प्रख्यात है क्योंकि इस तर्ज़ के कर्मारम्भक मिस्टर हेरल्ड थे इसकी तर्ज़ बनावट बनिस्बत और बाजों के अजीब व ग़रीब है इसकी बेलो अकार्डीन बाजे की भांति पीछे लगी रहती है सामने का भाग बहुतही सुन्दर होता है—

नम्बर ३
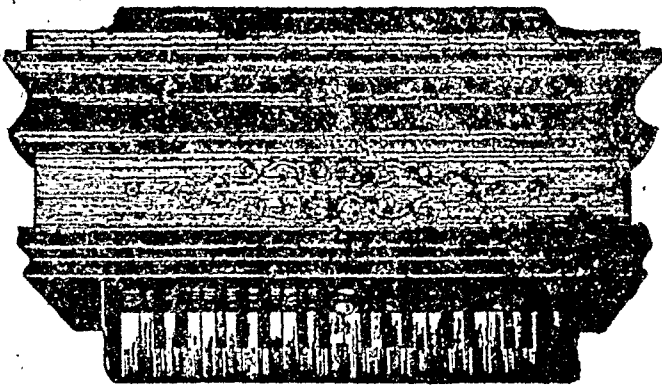
फ़्लोट का मूल्य।

फ़र्शी बाजों का मूल्य कम से कम पन्द्रह रुपये और अधिक से अधिक पांच सौ रुपये होता है—

रीड्स।

रीड को स्वर भी कहते हैं यह हिन्दोस्तान में नहीं बनाये जाते या यों समझिये कि कोई हिन्दोस्तानी कारीगर इस ओर ध्यान नहीं देता देशी तो यह पीतल के होते हैं परन्तु मूल्य के ध्यान से बाजे में सबसे अधिक मूल्य की वस्तु है जिस बाजे में अच्छे रीड लगाये जाते हैं उनका मूल्य भी

अधिक होता है इसके अतिरिक्त जो बाजे कम मूल्य में आते हैं उनमें रीड बहुत खराब लगाये जाते हैं जिसके कारण शिर-पीड़ा में फँसना पड़ता है हारमोनियम में इनका लगाना और इनको ठीक करके जड़ना बहुत कठिन है जिसको कि होनहार म्यूजिक प्रोफ़ेसर या मास्टरही पूरा कर सकता है बढ़ई लुहार आदि नहीं जड़ सकते जैसा कि आज कल्ह के कारखानों में बहुधा होता है रीड को घिसकर ठीक करने के लिये अनुभविक गुरु की आवश्यकता है क्योंकि न्यूनाधिक होने से स्वर नष्ट हो जाते हैं बाजों में इकहरी दोहरी कभी कभी तेहरी रीड लगाते हैं जिसको सिंगल स्वर डबल स्वर कहते हैं—

रीड यानी स्वर
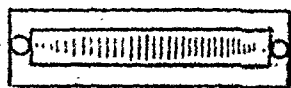
प्रत्येक हारमोनियम बाजे में कम से कम ३७ रीड होवे हैं और एक पेटी का मूल्य जिसमें ३७ रीड होते हैं कम से कम ४) चार रुपये होते हैं—

शहर पेरिस Peris जोकि मुल्क फ्रांस (योरप) में है बहुत अच्छे रीड बनाये जाते हैं हिन्दोस्तान में हारमोनियम बनाने वाले कारखाने बहुत हैं परन्तु सब रीड वलायत सेही मँगा कर लगाते हैं इसीकारण अभी तक हारमोनियम बाजों के मूल्य में मनमानी कमी नहीं हुई—

बाजे में रीड नीचे लिखे अनुसार लगाये जाते हैं अर्थात् पहिले बड़े फिर छोटे होते चले जाते हैं यहां तक कि अन्त के सप्तक के सा स्वर पर बहुतही छोटा होजाता है जब रीड को धौंकनी के द्वारा हवा लगती है तभी आवाज देता है—

हारमोनियम के भीतरी तख़्ते पर नीचे की भांति रीड लगे रहते हैं—

डबलस्वर ।

भीतरी ओर
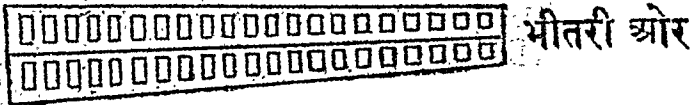
पर्दे ।

बाजे में जो सफ़ेद और काले पर्दे दृष्टि आते हैं इन्हीं के नीचे रीड्स लगे रहते हैं जब बाजे में हवा पहुँचाई जाती है और उँगली से पर्दे दबाये जाते हैं तो तुरन्त आवाज़ उत्पन्न होती है पर्दे भी उतनेही होते हैं कि जितने रीड्स होते हैं किसी किसी बहुमूल्य हारमोनियम बाजे में सफ़ेद पर्दे हाथी-दांत के होते हैं परन्तु बहुत कम—सींग अथवा नक़ली हाथी-दांत के बहुधा बनाये जाते हैं काले पर्दे साधारणही लकड़ी के होते हैं और उनपर काला रोग़न किया जाता है यह बहुधा सरेस से लकड़ी पर चिपका दिये जाते हैं और कोई कोई कारी-गर सफ़ेद पर्दों पर पीतल के छोटे छोटे पेंच क़स देते हैं जिससे दृढ़ता अच्छी होजाती है—

पर्दा सफ़ेद पर्दा काला

पर्दों का चित्र ।

आक्टयूज़ ।

जिसको भारतवर्षीय सप्तक कहते हैं बाजे में जो सफ़ेद और काले पर्दे होते हैं वह सब सप्तक पर विभाजित हैं अर्थात् सात सफ़ेद और पांच काले पर्दों का एक सप्तक होता है इसी प्रकार प्रत्येक बाजे के पर्दे गिनने से सप्तक ज्ञात होसकते हैं–

सप्तक ३ से ७ तक होते हैं परन्तु बहुत कम क्योंकि मनुष्य का गला तीसरे सप्तक तक साथ दे सकता है पहिले सप्तक की आवाज़ मोटी दूसरे की दरम्यानी तीसरे की महीन और ऊंची होती है उपरोक्त तीनों सप्तकों के नाम क्रमानुसार मन्दर, मध्य, तार अथवा टीप है फ़ोल्डिंग हारमोनियम में तीन सप्तक से अधिक होते हैं क्योंकि यह दोनों हाथों से बजाया जाता है इसीकारण तीन सप्तक काफ़ी नहीं होते–

पर्दों का चित्र।

आकृटपूल ।

जिसको भारतवर्षीय सप्तक कहते हैं बाजे में जो सफेद और काले पर्दे होते हैं वह सब सप्तक पर विभाजित हैं अर्थात् सात सफेद और पांच काले पर्दों का एक सप्तक होता है इसी प्रकार प्रत्येक बाजे के पर्दे गिनने से सप्तक ज्ञात होसकते हैं—

सप्तक ३ से ७ तक होते हैं परन्तु बहुत कम क्योंकि मनुष्य का गला तीसरे सप्तक तक साथ दे सकता है पहिले सप्तक की आवाज़ मोटी दूसरे की दरम्यानी तीसरे की महीन और ऊंची होती है उपरोक्त तीनों सप्तकों के नाम क्रमानुसार मन्द्र, मध्य, तार अथवा टीप हैं फोल्डिङ्ग हारमोनियम में तीन सप्तक से अधिक होते हैं क्योंकि यह दोनों हाथों से बजाया जाता है इसीकारण तीन सप्तक काफी नहीं होते—

एक आक्टघूज़ का चित्र।

स्टाप ।

स्टाप को बाजे की कुंजी भी कहते हैं यह बाजों में कम से कम एक और अधिक से अधिक नौ होते हैं इनकेही कारण बाजा में भिन्न भिन्न आवाजें उत्पन्न होती हैं स्टाप फोल्डिंग हारमोनियम में अधिक होते हैं और फ्लोट में केवल तीनही चार होते हैं प्रत्येक स्टाप की आवाज़ दूसरे से विभिन्न होती है इनमें एक स्टाप वर्णन योग्य है जिसका नाम " ट्रेमलू " है इसके खोलने से थरथरी आवाज़ उत्पन्न होती है यह आवाज बहुतही दर्दनाक लहजे में सुनाई देती है थेटीकल कम्पनियां इस आवाज को उस समय सुनाती हैं कि जिस समय कोई दर्दनाक सीन देखने में आता है अथवा किसी को सूली दी जाती है जिसके सुनने से सुननेवालों का दिल लरजता है—

स्टाप

स्टाप का चित्र ।

हारमोनियम में नीचे की भांति स्टाप लगे रहते हैं ।
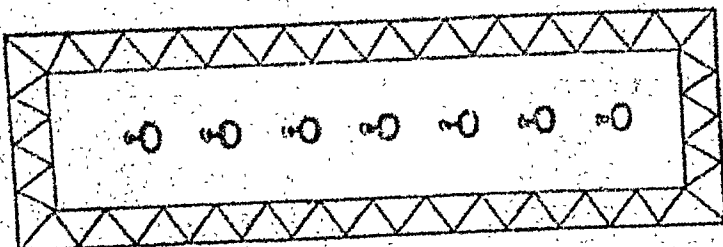
दमकश।

जिसको वेलो कहते हैं और बहुधा धौंकनी भी कहते हैं हारमोनियम बाजों में हवा पहुँचाने के लिये काम में लाई जाती हैं प्रत्येक वाजे में साधारण दो धौंकनियां होती हैं एक बाहर की ओर जोकि हाथ अथवा पावँ से चलाई जाती है और दूसरी भीतर बक्स में होती है इसके द्वारा भीतर वाजा में हवा पहुँचती है जिससे स्वर बोलते हैं यह साधारण रीति से काग़ज़ और चमड़े की बनाई जाती हैं परन्तु साबड़ की अच्छी रहती है इसकी बनावट भिन्न भिन्न प्रकार की होती है-

स्प्रिंग।

बाजे में जो पीतल के तार पर्दों को दबाये रहते हैं वह स्प्रिंग अथवा कमानियां कहलाते हैं सिवा पीतल के तार के और किसी धातु का तार इस काम को अच्छी तरह पूरा नहीं कर सकता क्योंकि जैसी लचक उसमें होती है दूसरे तार में नहीं होती इनका एक सिरा लकड़ी में ठुका हुवा रहता है और दूसरा सिरा पर्दे को दबाये रहता है जितने पर्दे होते हैं उतने ही स्प्रिंग होते हैं-

स्प्रिंगका चित्र।
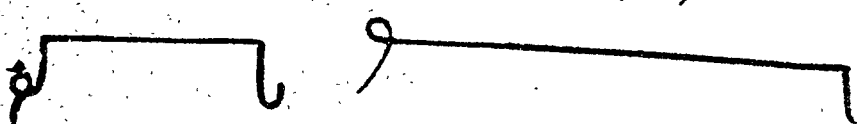
हारमोनियम की आवाज़।

बहुधा लोगों का यह ध्यान है कि वलायती हारमोनियम

बाजोंकी आवाज़ देशी बाजों से बहुत सुरीली और चित्ताकर्षक होती है वास्तव में उनकी यह भूल है सदैव स्मरण रखना चाहिये कि जो बाजा बहुमूल्य होगा चाहे वह विलायती हो या देशी-आवाज़ सुरीली और मनभावनी होगी क्योंकि बाजे का मूल्य उसके रीड अच्छे होने के कारण अधिक होता है सुन्दरता से नहीं जोकि एक दो मास की दिखाऊ भड़क होती है जब बाजा दोनों हाथों से बजाया जाता है बहुत अच्छा ज्ञात होता है और गानेवाले को साथ करने में अधिक कठिनता नहीं होती क्योंकि दोहरी आवाज़ के उत्पन्न होने में बोल स्वच्छ ज्ञात होता है ऐसेही जो बाजे दोहरे या तेहरे स्वर के होते हैं उनकी आवाज़ और भी चित्ताकर्षक और मीठी होती है—

हारमोनियम की आवाज़ें भिन्न भिन्न प्रकार की होती हैं जैसे गोल आवाज़, खड़ी आवाज़ आदि-यह हारमोनियम के शिक्षक की इच्छा पर निर्भर है कि जैसी आवाज़ उसको पसन्द हो उसी आवाज़ का बाजा लेवे—

कम मूल्य के बाजे यद्यपि तीव्र आवाज़ के होते हैं परन्तु वह आवाज़ सुकुमार चित्तवालों के लिये दर्दशिर है और मुख्यकर विद्यार्थियों और स्त्रियों के लिये तो वबालजान है क्योंकि प्रथम तो उनके मस्तिष्क पहिलेही से निर्बल होते हैं दूसरे शिक्षा में हानि होती है स्मरणशक्ति नहीं रहती यद्यपि प्रैक्टिस के ध्यान से बीस पचीस रुपयेवाला बाजा हर प्रकार अच्छा रहेगा तब भी जहांतक होसके तीस चालीस रुपये वाला बाजा डबल स्वर का लेकर शौक पूरा करना चाहिये—

वलायती हारमोनियम ।

वलायती हारमोनियम बाजे सुन्दरता में निरुत्तर होते हैं सुरीले और दृढ़ भी होते हैं परन्तु भारतवर्ष के वायु जल के अनुसार नहीं होते आये दिन जीर्णोद्धार की आवश्यकता होती है लकड़ी शीघ्र फट जाती है सब संसार में पेरिस का कारखाना जो यम. केसरायल के नाम से प्रख्यात है हारमोनियम के लिये उच्चश्रेणी का कारखाना है–

भारतवर्षीय व्यवसायी अधिकता से इसी कारखाने से हारमोनियम मँगाकर विक्रय करते हैं बहुधा थेट्रीकल कम्पनियां भी इसी कारखाने के बने हुये बाजे काम में लाती हैं इस कारखाने के बाजों का मूल्य और कारखानों से अधिक होता है–

हिन्दोस्तानी हारमोनियम के शौक़ीन जो दूसरी वलायत से बाजा मँगाते हैं यह उनकी भूल है क्योंकि आज कल्ह बहुत अच्छे हारमोनियम हिन्दोस्तानी कारीगर बनाते हैं जिनको देखकर वलायतवाले दंग हैं–

देशी हारमोनियम ।

हिन्दोस्तानी कारीगरों ने इसमें वह उन्नति प्राप्त की है कि जिससे वलायतवाले चकित हैं बरन कोई कोई होनहार कारीगरों ने तो वह तर्ज़ें नई निकाली हैं जोकि वलायतवालों के दिमाग़ी खलियान में भी न पहुँची हों हम ऐसे होनहार और हिन्दोस्तान के नाज़ हारमोनियम के कारीगरों को सच्चे दिल से बधाई देते हैं और हारमोनियम के शौक़ीनों को सूचना देते हैं कि वह कदापि वलायती बाजों को न मँगावें व्यर्थ रुपया न खोवें अपने देश की दशा को देखें और व्यय करें–

हारमोनियम के कारखानों का वर्णन।

सब संसार में लाखों कारखाने म्यूजीकल इन्स्ट्रूमेंट "Musical Instruments" (औज़ार व साज़ गानविद्या) के मस्तुत हैं यद्यपि हिन्दोस्तान में और देशों के इतने नहीं तब भी और देशों से अधिक हैं क्योंकि यह देश गानविद्या की खानि है और सबने मानलिया है कि भारतवर्ष में जितने गानविद्या के मास्टर हैं उतने किसी और देश में नहीं पाये जाते—

पाठक! यह बात इस दशा में उत्पन्न है जबकि यह भारतवर्ष गानविद्या से बिल्कुल हाथ धो बैठा है—

भारतवर्ष।

भारतवर्ष में निम्नलिखित शहर हारमोनियम के लिये मख्यात हैं—

कलकत्ता, लाहौर, अमृतसर, मेरठ, बम्बई, स्यालकोटादि—

दूसरी वलायत।

निम्नलिखित शहर हारमोनियम के लिये मख्यात हैं—

पेरिस, जर्मन, वाशिङ्गटन, न्यूयार्क, लीवरपूल, लंडन, टोकियो, सेंटपीटर्सबर्ग (पिटरोग्रेड), आस्ट्रिया (देश)

नोट—यदि कोई सज्जन संसार के सब कारखाने और दूकानें हारमोनियम सम्बन्धीय व दूसरे अंगरेजी साज़ की पूछना चाहें तो "क़मर म्यूज़ीकल डायरेक्टरी" को देखें जिसमें सब कारखानों और दूकानों के पते और संक्षिप्त समाचार और गानविद्या सम्बन्धीय औज़ार व साज़ लिखे हैं—मूल्य ५) रुपया (प्रोफ़ेसर सोतीकृष्णराय क़मर देहलवी की बनाई व संगृहीत)

हारमोनियम की दूकानें।

आज कल्ह हिन्दोस्तान के प्रत्येक बड़े बड़े शहरों में हारमोनियम बाजों की दूकानें प्रस्तुत हैं जिनमें बहुतसे सौदागर शिक्षकों को धोखा देकर माल खराब देते हैं यही कारण है कि बहुधा शौक़ीन इस साज़ से घृणा करने लगते हैं यदि वह इस पुस्तक को ध्यान से पढ़ें और इसके अनुसार कार्य करें तो मैं प्रण करके कहता हूं कि कदापि धोखा न खायेंगे-

शायक़ीन! दूकान की ऊपरी भड़क और सौदागरों के लल्लोपत्तो और उनकी चापलूसी में न आजाइये उनकी आनबान देखने से कुछ लाभ नहीं किन्तु उनके माल के देखने से उनकी दशा ज्ञात होती है और मूल्य के पूछने से उनकी ईमान्दारी और सच्चाई जान पड़ती है-

शीघ्रता कदापि न कीजिये वरन बड़ी सावधानी से हर प्रकार से जांचकर मूल्य दीजिये जब तक बाजे की ओर से पूरा ढाढस न हो लेना व्यर्थ है-

---

वलायती समाचार।

मुख्य शहर लंडन से चार समाचार गानविद्या सम्बन्धीय निकलते हैं जोकि इस विद्या में पब्लिक को सप्ताहिक और मासिक नई नई मालूमातों का ज़खीरा पहुँचाते रहते हैं जिनका संक्षिप्त समाचार नीचे लिखा है-

(१) "म्यूज़ीकल होम जनरल" सप्ताहिक लंडन से छपकर निकलता है वार्षिक मूल्य ८) है-

(२) "म्यूज़ीकल बजट" मासिकपत्र इसका वार्षिक चन्दा ३) है यह पत्र कमख़र्च बालानशीन है-

(३) " म्यूजीकल हेरल्ड" मासिक छपता है और वार्षिक चन्दा ३) है मनभावता समाचार है-

(४) " म्यूजीकल टाइम्स " इसका वार्षिक चन्दा ५) है और मासिक छपता है इसमें समाचार भी होते हैं-

---

सफ़ेदपोश डाकू ।

मिस्टर की दूकान में दो तीन हारमोनियम बाजों से अधिक न होंगे परन्तु समाचार पत्रों में इनका विज्ञापन चलता रहा है कि सब हिन्दोस्तान के बाजे इनकीही कोठरियों में धरे हैं- जनरल एजंट और कमीशन एजंट तो मानो इनकी पुश्तैनी मालियत है करोड़पती भी ऐसे वैसे नहीं-आधे दाम पर हार-मोनियम बाजे बेच करके इस दुखिया हिन्दोस्तान पर दया करते हैं उपकार जताते हैं लम्बे चौड़े सार्टीफिकेट छाप करके अपने आपको बनाने का परिश्रम करते हैं मोछों पर जरा ताव देकर अपने नाम परही अकड़े जाते हैं गवर्नमेंट पर खैरख्वाही जताते हैं कि दरबार ताजपोशी की खुशी में आधा लाख रुपया माल पर छोड़ दिया जो चाहे सो लूट ले यदि कोई इन से यह पूछे कि मियां सच कहना कभी तुम्हारे बड़े बूढ़ों ने भी ऐसी उदारता की थी तो उत्तर में क्या कहते हैं कि क्यों नहीं ! बाबा हातिम के वंशजों में हमीं तो शेष रहगये हैं जब किसी टेढ़ी खीर से सामना पड़ता है तो महाशयजी की जनरल मर्चेंटी धरी रहजाती है उल्टा बाजा बजने लगता है बड़े घर की सैर करते हुये ध्रुपद अलापते हैं-

गत वर्ष गवर्नमेंट ने इनकी खबर रखने के लिये शहर कल-कत्ता में कोतवाल साहब को नियत किया था जिनकी रिपोर्ट

से ज्ञात हुवा कि बहुतसे ऐसे जनरल मर्चेंट और कमीशन एजंट बने बैठे हैं जिनके घर में खाक धूल भी नहीं–पाठक इसी प्रकार और शहरों का भी अनुभव करसकते हैं जैसे लाहौर आदि–

शायक़ीन हारमोनियम ! जहांतक सम्भव हो विज्ञापनों की चिकनी चुपड़ी बातों में आकर अपना रुपया व्यर्थ न खो बैठें जहांतक होसके सावधानी से काम कीजिये और अपने परिश्रम से संग्रह किये हुये रुपये इस प्रकार फेंक कर हाथ न मलिये–

संसार में हरप्रकार के मनुष्य हैं इससे प्रत्येक व्यवसायी को उपरोक्त लेखानुसार एकही न समझिये क्योंकि बहुतसे ईश्वर के दास ऐसे भी हैं जो थोड़े लाभ में संतोष करते हैं दूसरों को लाभ पहुँचाते हैं ईमान्दारी और अपनी बात का ध्यान रखते हैं अच्छे बुरे की परीक्षा जो चतुर होते हैं तुरन्त करलेते हैं लेख से ताड़ जाते हैं–

मिसरा ।

" ख़त का मज़मूं भांप जाते हैं लिफ़ाफ़ा देखकर "

हारमोनियम की ख़रीदारी के नियम ।

बहुधा हारमोनियम के शौक़ीन सफ़ेदपोश डाकुओं की लच्छेदार बातों और सौदागरों के लल्लोपत्तो को देखकर व्यर्थ ख़र्च कर बैठते हैं यदि वह नीचे की बातों को स्मरण रखकर बाजा लिया करें तो कभी धोखा न खायेंगे–

(१) यदि बाजा बाहर से मँगाना हो तो किसी अच्छे कारखाने से जोकि स्वयं बाजा बनाता हो ख़रीदना चाहिये

जो बाजे से कुछ भी जानकारी न हो तो अपने किसी मित्र के द्वारा कि जो जानकार हो खरीद करो–

(२) बाजे के एक एक स्वर को स्वयं बजाकर देखलो और सुनो क्योंकि बहुधा सौदागर जो बाजा बनाना जानते हैं दो तीन टूटे हुये स्वरों को बजाते समय प्रकट नहीं होने देते–

(३) धौंकनी को देखो कि कड़ी चलती है या धीरा यदि कड़ी है तो अवश्य खराब होगी और जल्द बिगड़ जायेगी–

(४) वार्निश पर तेल या पानी का धब्बा तो नहीं लगता यदि यह बात होगी तो वार्निश अच्छी न होगी–

(५) यदि बाजे की लकड़ी चीड़ की है तो पायदार न होगी बाजा हलका अवश्य होगा–

(६) आवाज़ को सुनो और ज्ञात करो कि यह चित्त प्रसन्न करनेवाला है या शिर की पीड़ा उत्पन्न करनेवाला है–

(७) बाजा बरसात में नहीं ख़रीदना चाहिये बहुधा धोखा खा जाते हैं अगर बहुत ज़रूरी ख़्याल करो तो अपने किसी मित्र द्वारा ख़रीद करसकते हो जोकि इस बात को जानता है कि बाजा क्यों न ख़रीदना चाहिये–

(८) बहुधा सौदागर पुराने बाजे को वार्निश आदि करके बना बना कर बेच लेते हैं ख़रीदने के समय इसका ध्यान रखना परमावश्यक है–

(९) शिक्षक को चाहिये कि सीखनेके लिये बाजा सिंगल स्वर तीन स्टाप तीन सप्तक का ख़रीद करे जोकि कम ख़र्च बालानशीन होगा–

इति

प्रार्थना

यह "हारमोनियम मास्टर" का दूसरा भाग है जो आपको अतिशीघ्र स्वरों से जानकार बना देगा और इसके पढ़ने के पीछे बेसुरे न कहलायेंगे क्योंकि स्वरों के बाबत हितैषी ने वह सब बातें जोकि हारमोनियस्टको स्मरण करनी चाहिये लिखदी हैं और अन्त में अँगरेज़ी व हिन्दोस्तानी स्वरों का सामना किया है जिस से और अधिक योग्यता हो सकती है मैं आशा करता हूं कि पढ़ने के पीछे यह पुस्तक शौकीनों को हारमोनियम की मनमानी सफलता का मार्ग दिखायेगी—

हितैषी की दृष्टि से बहुतसी पुस्तकें हारमोनियम बाजे की निकलीं परन्तु किसी में स्वरों के समाचार ब्योरेवार दृष्टि न आये—

यद्यपि गानविद्या का ठहराव केवल स्वरों पर है इस कारण विना इनकी जानकारी के कोई मनुष्य किसी साज़ को नहीं बजा सकता और न नियमानुसार गाही सकता है यद्यपि गाना और रोना प्रत्येक मनुष्य को आता है तब भी वह आनन्द, वह रंग, वह ढंग जो नियमबद्ध गाने बजाने में आता है प्रत्येक मनुष्य से नहीं उत्पन्न होसकता जबतक कि वह इन स्वरों से भली विधि जानकार न होजाय इन बातों पर दृष्टि रखते हुये मैंने यह भाग केवल स्वरों के जानने के लिये बनाया है जिससे मुझको आशा है कि गानविद्या के शौक़ीन अवश्य लाभ उठाकर स्वरों की चित्ताकर्षक आवाज़ से आनन्द उठावेंगे—

ग्रन्थकर्त्ता

हारमोनियममास्टर

दूसराभाग ।

गानविद्या ।

राग भी बहुतसे रोगों की औषध हैं जैसा कि चलने फिरने दौड़ने से टांगों को और जिस्म को वर्जिश होती है ऐसाही गाना भी श्वास लेनेवाले स्थानों के लिये संयम का काम देता है और रग व पट्ठों के लिये लाभदायक मानागया है गानेवालों के फेफड़े और दिमाग में रद्दी चीज़ें इकट्ठा नहीं होने पातीं और यह जोड़ जैसा कि वर्जिश का परिणाम है सदैव अपने आहार (खून) उत्पन्न होने की ओर लगे रहते हैं और आहार को खींच करके हरे भरे और नीरोग रहते हैं यद्यपि अच्छी आवाज़ का बड़ाभारी दारोमदार फेफड़े की आरोग्यता और उसकी नली की फराखी तंगी के बराबर रहने पर निर्भर है इसकारण सदैव गाने के शौक़ीन ऐसी चीज़ें जो अत्यन्त उष्ण व शीत हों और तरी पैदा करनेवाली चीज़ों से जिनसे चर्बी की नली ढीली पड़जाय बेहद संयम करें और भारतवर्ष के प्रचलित व संगृहीत पान को अपना सम्बन्धी समझते हैं यह मिला हुवा पान, चूना, कत्था, सुपारी से बना हुवा होता है बहुतही लाभदायक है—

चूना—जो रायटंट गुण रखता है इससे वह मनुष्य कि जिन को पान खाने की बानि नहीं होती उनको बहुधा दुःख देता है परन्तु इसका आरीटंटडिसइन्‌फ़िकेंट हज़्म करनेवाले आलों

की तुर्शी को दूर और लसदार बलग़म को काटकर दूर करने वाला गुण इसको इस बनावट का बड़ा भाग बनाये हुये है—

कत्था—अपने गरिष्ठ गुण के कारण फेफड़े की नली के ढीलेपन को दूर करके अपनी स्वच्छता का गुण दिखाता है और निष्प्रयोजन वस्तुवों को निकालता है व नली पर जो चूने का रायटंट असर पड़ता है इसकी दुरुस्ती करने के कारण इस बने हुये पान के स्वभाव को दूना करता है—

इलायची—में भी गरिष्ठ और डिसइनफ़िकेंट गुण होने के कारण फेफड़े की नली गन्दी और ढीली होने से बची रहती है सौंफ हज़्म होने के आज़ा के भरजाने और बाई को दूर करने के कारण सांस लेने की चीज़ों को ख़राबी पहुँचाने वाला भाग लेने से बचाये रखती है और बलग़म के बिगाड़ को दूर करदेती है—

सुपारी—का भी गरिष्ठ गुण सांस लेने के आज़ा को चालाक व चुस्त बनाने और हलक़ आदि से पानी के बहने रोकने में लाभदायक है और इस मिलाव पान को मातदिल अधिक गुणकारी बनाता है—

पान—स्वयंही सीमा से अधिक सटीमोलींट और सकमक गुण रखता है जिससे चित्त में प्रसन्नता और शरीर में दृढ़ता व चतुरता उत्पन्न होती है इन सब गुणों से जो उस अजज़ा में होते हैं—

इससे यह अर्थ निकला कि मिलाव पान के साथ फेफड़े के सब काम नियमित रीति पर चलाने में रसायन से कम नहीं—

राग का सुनना घावों से बहते रुधिर को बन्द करने में बहुतही लाभदायक निश्चय हुवा है इस कारण फ़ौजी डाक्टर

लिखते हैं कि जब लड़ाई में कोई सिपाही घायल होजावे तो उसे जब राग सुनाया जाता है तो उसके घावों से रुधिर का आना बन्द होजाता है इसका कारण यह है कि राग से बहते हुये रुधिर और धड़कते हुये दिल पर सटीपौलीट गुण करता है इससे बहते रुधिर की तेजी कम होजाती है और एक प्रकार की बेहोशी लाकर दिल की चाल कम करदेती है जिससे रुधिर का बहना बंद होजाता है—

एक पेरिस के डाक्टर "यम. डूनियर्ड" जो दांतों की दवा करने में प्रख्यात हैं कहते हैं कि जब वह दांतों के रोगों की औषध करते थे तो रोगी को ऐसी दवाई देते थे कि जिससे बेहोशी आ जाती थी जिसमें कष्ट कम हो परन्तु जर्राही अमल पूरा होने के पीछे रोगी शिर की पीड़ा और घूमने का रोग बतलाता था और उसे अनिष्ट स्वप्न दिखाई देते थे अब उन्होंने यह नियम अंगीकार किया है कि बेहोशी की दवाई देने से पहिले रोगी को थोड़ीदेर फोनोग्राफ सुनाते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि रोगी को जर्राही अमल होने के पीछे किसीप्रकार का कष्ट नहीं होता है—

नेपोलियन जब सेंटहलीना टापू (आफ्रिका) में बन्दी था तो उसे नष्ट स्वप्न बहुत सताया करते थे जिसकी पूर्ण औषध राग के सुनने से हुई और नष्ट स्वप्नों का नाम तक न रहा—

अन्तिम अभिप्राय यह है कि दिल व दिमाग के बहुतसे रोगों की औषध राग व गान के द्वारा सरलता से किया जाता है दिल धड़कना जिसे अंगरेज़ी में "पलिपटेशन आफ हार्ट" कहते हैं इस रोगवाले को औषध से अधिक लाभ राग के सुनने से होता है—मालीखूलिया जोफ़बाह-रुधिर के बहुतसे रोगियों को राग

व गाना सुनने से पूर्ण लाभ हुवा अर्थ यह है कि राग का गाना या सुनना बहुतसे दुःखों के दूर करने की पूर्ण दवा है और इसका प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य के लिये लाभदायक है—

स्वर का वर्णन।

जो आवाज़ ठीक मनुष्य के गले से निकले वह स्वर कहलाती है चाहे वह स्थिर हो अथवा अनस्थिर—गानविद्या की जड़ केवल सात स्वर हैं जिनसे सब राग रागिनियां निकली हैं यह सातों स्वर भिन्न भिन्न पशुवों के बोल से उत्पन्न हुये हैं प्रत्येक साज़ में [illegible] कैसाही हो निम्नलिखित [illegible] स्वर [illegible] वरन मनुष्य के कंठ में भी यही सा[illegible] स्वर भरे हैं [illegible]

पड्ज[1], ऋषभ[2], गान्धार[3], मध्यम[4], पञ्चम[5], धैवत[6], निषाद—यह सात स्वरों के नाम हैं—

स्थिर स्वर।

सात स्वरों में केवल दो स्वर पड्ज[1] और पञ्चम[2] स्थिर स्वर कहलाते हैं अर्थात् इनका उतार चढ़ाव दूसरे पांच स्वरों की भांति नहीं होता सदैव एकही स्थान पर स्थिर रहते हैं हारमोनियम के शिक्षक को इन दोनों स्वरों से गायन प्रारम्भ करने की बानि डालनी चाहिये जिसमें कि शीघ्र सफलता हो—

न्यूनाधिक स्वर।

ऋषभ[1], गान्धार[2], मध्यम[3], धैवत[4], निषाद[5]—यह पांचों स्वर उतरा चढ़ा करते हैं एकही आवाज़ पर स्थिर नहीं रहते किन्तु न्यूनाधिक होते रहते हैं—

चढ़ा स्वर ।

चढ़ा स्वर उसको कहते हैं जो स्वर की पूरी आवाज़ देवे हारमोनियम में ऐसा स्वर सफ़ेद पर्दा होता है—

उतरा स्वर ।

बराबर हिस्से की आधी आवाज़ लीजाय तो वह उतरा स्वर कहलायेगा जोकि हारमोनियम में काला पर्दा होता है—

स्वर की पहिंचान ।

नीचे के नक़्शे में सातों स्वरों के संक्षेप नाम और उनके चिह्न लिखे हैं जोकि हारमोनियस्ट काम में लाते हैं—

सात स्वर	षड्ज	ऋषभ	गान्धार	मध्यम	पञ्चम	धैवत	निषाद
संक्षेप नाम	सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी
चिह्न	स	र	ग	म	प	ध	न

सरिगम ।

सातों स्वरों को शीघ्रता में सरिगम कहते हैं वास्तव में सरिगम पा धा नी कहना चाहिये जोकि सातों स्वरों के संक्षेप नामों का संग्रह है—

ग्राम ।

षड्ज, मध्यम, पञ्चम यह तीनों स्वर ग्राम कहलाते हैं गानविद्या के जानकार उपरोक्त तीनों स्वरों मेंसे किसी एक को स्थिर करके राग रागिनी अलापते अथवा बजाते हैं क्योंकि जब

एकसे अधिक साज़ एक साथ बजते हैं तो बजाने के पहिले आपस में मिलकर स्वर मिला लिया करते हैं जिसमें कि बीच में दूसरे स्वर को स्थिर करने से गड़बड़ न होजाय बहुधा षड्ज को स्वर मानकर बजाते हैं जोकि बिल्कुल ठीक है इसमें कुछ भेद न आयेगा यदि गानेवाला बीच में दूसरे स्वर को स्थिर करले और गाये तो साज़ साथ न देगा और जो गाने वाला मध्यम, पंचम को स्वर स्थिर करले तो षड्ज के मिले हुये साज़ कुछ बुरे न जान पड़ेंगे–

सम्पूर्ण ।

जिस राग अथवा रागिनी में सातों स्वर बोलैं चाहे वह उतरे हों या चढे उसको सम्पूर्ण कहते हैं–

खाढ़ू ।

जिस राग रागिनी में छः स्वर बोलैं उसको खाढ़ू कहते हैं–

ऊढ़ू ।

जिस राग रागिनी में केवल पांच स्वर बोलैं उसे ऊढ़ू बोलते हैं–

बादी स्वर ।

बादी स्वर वह कहलाते हैं जिन पर राग रागिनी भली विधि ज्ञात होती है जैसे मालकौस मध्यम पर और भैरव धैवत पर–

समबादी स्वर ।

जो स्वर बादी स्वर के साथ बोलैं अर्थात् उनके सहायक हों वह समबादी कहलाते हैं–

अनवादी स्वर ।
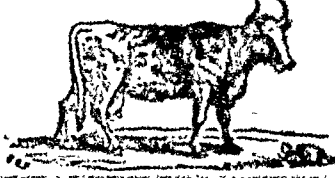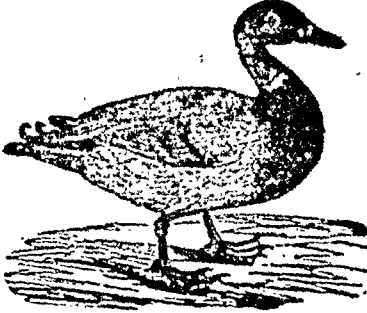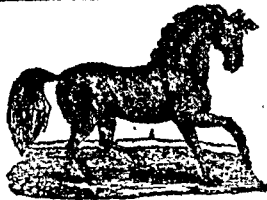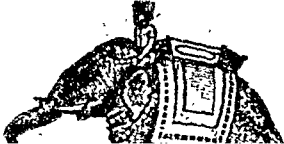
जो स्वर वादी और समवादी के साथ बोले अर्थात् समवादी स्वर को सहायता दे जिससे राग रागिनी में और भी आनन्द आये तो उसको अनवादी कहते हैं—

ववादी स्वर ।

ववादी स्वर वह कहलाते हैं कि जो राग रागिनी के रंग को विगाड़ दें जैसे योगिया में धैवत और कल्याण में मध्यम—

स्वर का निकास ।

आगे के नक्शे में उन पशुओं व पक्षियों के चित्र हैं कि जिनसे सातों स्वर उत्पन्न हुये हैं—

मोर	षड्ज
गौ	ऋषभ
बकरा	गान्धार
करांकुल	मध्यम
कोकिल	पञ्चम
घोड़ा	धैवत
हाथी	निषाद

सातों स्वरों के स्थानों का वर्णन ।

गाने बजाने के समय गायन में उतरे चढ़े स्वर बोलते हैं क्योंकि ऐसा न होने से नतो राग रंग पकड़ता है और न कुछ आनन्द आता है इसकारण गानविद्या के जानकारों ने सात स्थान स्वरों के नियत किये हैं अर्थात् प्रत्येक स्वर के लिये तीन स्थान चढ़े के और तीन स्थान उतरे के हैं और एक स्थान उस मुख्य स्वरका है जिसको सिद्ध स्वर कहते हैं यद्यपि स्वरके सात स्थान हैं और स्वर भी कुल सातही हैं इसकारण ७ स्वर × ७ स्थान = ४९ स्थान हुये—

उतरे स्वरों के स्थान ।

(१) शिकारी—जो स्वर सिद्धस्वर से तीन स्थान उतरा हो उसको शिकारी स्वर कहते हैं—

(२) अतिकोमल—या इतिकोमल वह स्वर है जो सिद्ध स्वर से दो स्थान उतरा हो—

(३) कोमल—वह स्वरहै जो सिद्ध स्वरसे एक स्थान उतरा हो—

(४) सिद्धस्वर—(मुख्यस्वर) उसको कहते हैं जो अपनी असली आवाज पर स्थिर रहे और उतार चढ़ाव न करे—

चढ़े स्वर के स्थान ।

(५) तीव्रस्वर—जोस्वर सिद्ध स्वरसे एक स्थान चढ़ा रहताहै—

(६) तीव्रतर—उसको कहते हैं जो सिद्ध स्वर से दो स्थान चढ़ा रहता है—

(७) तीव्रतम—वह स्वर कहलाता है जो सिद्ध स्वर से तीन स्थान चढ़ा हो—

शिक्षा ।

हारमोनियम के शौक़ीनों को इन स्थानों से कुछ अर्थ नहीं

क्योंकि हारमोनियम में केवल दो स्थान हैं एक कोमल, दूसरा तीव्र—इससे निरर्थक कष्ट न उठावें उपरोक्त दोनों उतरे चढ़े स्वरों को हृदयस्थ करलें—

आक्टयूज़ ।

आक्टयूज़ अर्थात् सप्तक तीन से सात तक होते हैं एक सप्तक के बारह स्वर होते हैं जिनमें सात चढ़े और पांच उतरे होते हैं नीचे एक चित्र केवल एकही सप्तक का दिया जाता है जिससे बाजे में शिक्षक को पर्दे की पहिंचान सुगमता से हो जायगी—

चित्र सप्तक ।

१	२	३	४	५
(रे)उतरा	(गा)उतरा	(मा)चढ़ा	(धा)उतरा	(नी)उतरा

(सा)कायम	(रे)चढ़ा	(गा)चढ़ा	(मा) उतरा	(पा) कायम	(धा) चढ़ा	(नी) चढ़ा
१	२	३	४	५	६	७

उपरोक्त चित्र में जो काले पर्दे हैं उतरे हैं केवल मध्यम स्वर का काला पर्दा इसके प्रतिकूल है अर्थात् काला चढ़ा और सफ़ेद उतरा है शेष सब सफ़ेद पर्दे चढ़े स्वर के हैं—

हारमोनियम में पहिला सप्तक बायें हाथ से प्रारम्भ होता है—

सप्तक का वर्णन ।

वास्तव में सप्तक केवल तीनहीं काममें लाये जाते हैं क्योंकि मनुष्य का गला यहीं तक काम दे सकता है आगे साथ देना असम्भव है इन तीनों के नाम मन्द्रि१र, मध्य२ तार या टीप३ हैं—

(१) मन्दिरसप्तक ।

बाजे में जो सबसे पहिला बारह स्वरों का सेट होता है वह मन्दिर या उदारसप्तक कहलाता है इस सप्तक की आवाज़ मोटी होती है गानेवाले को इस सप्तक के स्वरों से आवाज़ मिलाने के लिये अपनी आंतों पर ज़ोर डालना पड़ना है—

(२) मध्यसप्तक ।

मध्यसप्तक अथवा मदारासप्तक दूसरे सप्तक का नाम है इसकी आवाज़ पहिले सप्तक से दुगुनी होती है और इसके स्वरों के साथ देने में कलेजे पर और दिल पर ज़ोर पड़ता है—

(३) तारसप्तक ।

इसको टीप भी कहते हैं यह तीसरा सप्तक होता है इसकी आवाज़ महीन और ऊंची होती है इसके स्वरों के साथ देने में आंखों पर ज़ोर पड़ता है और कभी कभी आंखों से पानी भी निकलने लगता है—

पर्दों के भिन्न भिन्न नाम ।

प्रत्येक मनुष्य काले पर्दे को कोमल अथवा सफ़ेद पर्दे को तीव्र नहीं कहता इनके भिन्न भिन्न नाम हैं जोकि दूसरे देशों में और मुख्य भारतवर्ष में बोले जाते हैं पाठकों के चित्त लगने के लिये नीचे लिखे जाते हैं—

	१	२	३	४	५	६	७	८
कालेपर्दे	Soft	Block	कोमल	उतरा	मुलायम	रहम	काला	
सफ़ेदपर्दे	Hard	White	तीव्र	चढ़ा	सख़्त	ज़ुल्म	सफ़ेद	

हारमोनियम की क़िस्में।

स्वरों के ध्यान से हारमोनियम दो प्रकार के होते हैं—

(१) सी. टू सी. (C. to C.)

(२) यफ़. टू यफ़. (F. t. F.)

सी. टू सी. बाजा।

अंगरेज़ी में (C.) को सा कहतेहैं इसकारण सी. टू सी. के मानी सा से सा तकके हुये ऐसे बाजे भारतवर्ष में अधिकता से प्रचलित हैं इस बाजे में जो सबसे पहिला पर्दा होता है वह षड्ज कहलाता है जिसका नाम संक्षेप रूप से सा है—

दूसरी पहिंचान—दूसरी पहिंचान इस बाजे की यह है कि पहिले सफ़ेद पर्दे के दो काले पर्दे होते हैं—नीचे का चित्र देखो—

चित्र नम्बर (१)

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १० ११ १२ १३ १४ १५ १६ १७ १८ १९ २० २१ २२

यफ़. टू यफ़. बाजा ।

अंगरेज़ी में (F.) को मा कहते हैं इसकारण यफ़. टू यफ़. से यह अर्थ है कि मा से मा तक— यह एक नई बनावट है मेकर (बनानेवाला) ने मा को षड्ज मानकर बाजा बनाया है ऐसे बाजे बहुत कम बिकते हैं इसका सबसे पहिला पर्दा मा होता है—

दूसरी पहिंचान—इस बाजे में सबसे पहिले पर्दे के पीछे तीन काले पर्दे होते हैं जैसा कि नीचे के चित्र से ज्ञात है—

चित्र नम्बर (२)

गुप्तभेद

अर्थात्

सी. टू सी. का यफ़. टू यफ़. बनाना ।

यदि कोई महाशय सी. टू सी. बाजे को यफ़. टू यफ़. बाजा बनाना चाहें तो पहिले पांच पर्दे अर्थात् तीन सफ़ेद और दो काले छोड़कर छठे पर्दे को स्वर यानी षड्ज नियत करलें और फिर बजायें गायन ठीक बजेगा—

शिक्षक हारमोनियम को दोनों बाजे मोल लेने की विशेष आवश्यकता नहीं—

सोलह स्वरों का वर्णन ।

प्रकट हो कि स्वर वास्तव में सोलह हैं परन्तु गानविद्या के ज्ञाताओं ने केवल सातही स्वर स्थिर कर लिये हैं और इन्हीं पर सब राग रागिनियों का ठहराव है—

यहां पर इन सोलह स्वरों का वर्णन करना हारमोनियम-शिक्षकों के लिये लाभकारी होगा जिनसे संस्कृत भाषा के जानने वाले भली विधि बोध रखते हैं नीचे लिखे चित्र को देखिये—

सोलह स्वरों का चित्र ।

अ	اے	ऊ	اُو	अं	انگ		
आ	آ	ए	اے	अः	آن		
इ	اِی	ऐ	آئی	..			
ई	اِی	ओ	آو	..			
उ	اُو	औ	آؤ	..			

उपरोक्त चित्र में जो सोलह स्वर हैं इनमें से चार अर्थात् ऋ ॠ ऌ ॡ मुख्य संस्कृत बोलनेवाले काममें लाते हैं मनुष्य के गले में भी यही सोलह स्वर भरे हुये हैं कोई ऐसा शब्द उनकी जिह्वा से नहीं निकलता जिसमें कोई उपरोक्त स्वर अपनी आवाज़ प्रकट न करें ऐसेही गानविद्या में कोई मनुष्य सात स्वरों से पृथक् नहीं गा सकता और न कभी ऐसा सम्भव हो सकता है इससे जो कुछ प्राचीन समय के जानकारों ने नियम बांधा है वह ठीक है और इसमें उलट फेर कदापि न होगा और न कोई घटाव बढ़ाव का दावा कर सकता है कोई कोई गानविद्या के अभिमानी कहा करते हैं कि गानविद्या की हमने हद करदी अर्थात् उन्होंने सब कुछ जान लिया यह दावा चंडू-खाने की गप से अधिक गौरव नहीं रखता क्योंकि यह विद्या अर्थात् गानविद्या अन्तरहित है इसकी हद नहीं हो सकती चाहे मनुष्य कितनेही जन्म लेकर इसके प्राप्त करने का परिश्रम करे उन सोलह विद्यायों मेंसे कि जिनका वर्णन वेदों और पुराणों में है यह विद्या सबसे अधिक गौरव रखती है और इसके जाननेवाले को गन्धर्व कहते हैं—

सुरीलापन।

बहुधा मजलिसों और नाटकों में जब गवैया गाता है तो किसी किसी मनुष्य को अतिहर्ष आ जाता है और कोई कोई वन्समोर (Once more) की ऊंची ध्वनि करते हैं तालिका-ध्वनि करते हैं जिससे उनकी इच्छा यह होती है कि मानों बहुत अच्छा गाना है एक बार और गाया जाय—

यह बात उस समय उत्पन्न होती है जब गवैया सुरीला हो

अर्थात् अपनी आवाज़ को गानविद्या के नियमानुसार उतारता और चढ़ाता रहे जो बाजा साथ बजता हो उसके स्वरों से मिलाता रहे और किसी किसी समय अलाप कर रागिनी में आनन्द उत्पन्न करे ऐसे गानेवाले को सुरीला गवैया कहते हैं और प्रत्येक मनुष्य उसके गाने को स्वीकार करता है क्योंकि जो रागिनी सुरीलेपन से नियमानुसार गाई जाती है और साथही गवैया समय का भी ध्यान रक्खे तो उसका गुण अवश्य होता है जिससे सुननेवालों का चित्त प्रसन्न हो जाता है इसकारण सुननेवाले इकाइक वाह वाह की ऊंची ध्वनि करते हैं और आनन्द में तालियां बजाते हैं–

हारमोनियमशिक्षक को चाहिये कि जब किसी पर्दे पर उँगली रक्खे और उसमें आवाज़ पैदा होवे तो अपनी आवाज़ को उसके साथ मिलाये इसी प्रकार प्रत्येक स्वर से आवाज़ मिलाने का श्रम करे जिसमें गाने के समय बेसुरा होने से रागिनी का आनन्द न जाता रहे–

बेसुरा।

कोई कोई अच्छे गानेवाले भी बेसुरे हो जाते हैं बनिस्बत बेताले के बेसुरापन कोई बड़ा दोष नहीं तब भी शिक्षक को चाहिये कि गाने से पहिले आ आ आ आ की आवाज़ गले से निकाले और उसको उस रागिनी की तरह अलापे जिसको कि वह गाना चाहता है दो एक बार ऐसा करने से गला खुल जायगा और स्वर ज्ञात हो जायँगे हारमोनियम के पहिले सप्तक पर आवाज़ मिलती हो और बजाने वाला दूसरे सप्तक पर बजाता हो तो मानो बेसुरा न कहलायेगा–

यद्यपि जिस शब्द को कोमल पर कहना हो और तीव्र पर कहे अथवा षड्ज को ऋषभ पर तो उस समय में गवैया वेसुरा कहलायेगा जिससे राग रागिनीका गुण नष्ट हो जावेगा—

ज़मज़मा ।

सितार में जिसको मींड कहते हैं उसको हारमोनियम में ज़मज़मा कहते हैं जो हारमोनियस्ट ज़मज़मा देना जानता है वही राग रागिनी में आनन्द उत्पन्न कर सकता है क्योंकि ज़मज़मा उँगलियों की उस तेज़ ज़रब का नाम है जोकि दो उँगलियों और कभी कभी तीन उँगलियों से एक साथ पर्दे पर मारी जाती है यह बात उस समय में उत्पन्न होती है जब हाथ की उँगलियां बिल्कुल तैयार हो जाती हैं और हारमोनियस्ट के थोड़े से इशारे पर चलती हैं पिछले पृष्ठों में यह बतलाया गया है कि अनवादी और समवादी स्वर वह हैं जो राग रागिनी में अधिक होकर आनन्द उत्पन्न करें इसीकारण ज़मज़मा में लाये जाते हैं जिससे राग रागिनी में आनन्द आजाता है—

ज़मज़मा सदैव पास के पर्दों पर दिया जाताहै और उँगलियों की ज़रब एक साथ दीजाती है यदि इसके प्रतिकूल होगा तो वह ज़मज़मा नहीं कहलायेगा वरन गायन नष्ट होजायगा ज़मज़मा का अधिक विस्तार लिखना व्यर्थ है क्योंकि जब हारमोनियम-शिक्षक की उँगलियां खूब तैयार होजाती हैं तब वह ज़मज़मा देने पर अपने आप आसक्त होता है—

तान ।

गवैया जब गाता है तो उसको किसी किसी स्थान पर अलाप देने की आवश्यकता पड़ती है उस समय वह अपनी ध्वनि में

अर्थात् अपनी आवाज़ को गानविद्या के नियमानुसार उतारता और चढ़ाता रहे जो बाजा साथ बजता हो उसके स्वरों से मिलाता रहे और किसी किसी समय अलाप कर रागिनी में आनन्द उत्पन्न करे ऐसे गानेवाले को सुरीला गवैया कहते हैं और प्रत्येक मनुष्य उसके गाने को स्वीकार करता है क्योंकि जो रागिनी सुरीलेपन से नियमानुसार गाई जाती है और साथही गवैया समय का भी ध्यान रक्खे तो उसका गुण अवश्य होता है जिससे सुननेवालों का चित्त प्रसन्न हो जाता है इसकारण सुननेवाले इकाइक वाह वाह की ऊंची ध्वनि करते हैं और आनन्द में तालियां बजाते हैं–

हारमोनियमशिक्षक को चाहिये कि जब किसी पर्दे पर उँगली रक्खे और उसमें आवाज़ पैदा होवे तो अपनी आवाज़ को उसके साथ मिलाये इसी प्रकार प्रत्येक स्वर से आवाज़ मिलाने का श्रम करे जिसमें गाने के समय बेसुरा होने से रागिनी का आनन्द न जाता रहे–

बेसुरा ।

कोई कोई अच्छे गानेवाले भी बेसुरे हो जाते हैं बनिस्बत बेताले के बेसुरापन कोई बड़ा दोष नहीं तब भी शिक्षक को चाहिये कि गाने से पहिले आ आ आ आ की आवाज़ गले से निकाले और उसको उस रागिनी की तरह अलापे जिसको कि वह गाना चाहता है दो एक बार ऐसा करने से गला खुल जायगा और स्वर ज्ञात हो जायँगे हारमोनियम के पहिले सप्तक पर आवाज़ मिलती हो और बजाने वाला दूसरे सप्तक पर बजाता हो तो मानों बेसुरा न कहलायेगा–

शीघ्रता से आ आ कर जाता है ऐसे स्थान पर हारमोनियम बजानेवाला उसकी आवाज़ के साथ अपनी उँगलियां फुर्ती के साथ उन्हीं स्वरों पर चलाता है जिन स्वरों पर गवैया अलापता है इसीको तान अथवा अलाप कहते हैं तान का बजाना कुछेक कठिन काम है इसके लिये हाथ को हथियार की भांति तैयार करने की आवश्यकता पड़ती है सैकड़े पीछे दश हारमोनियस्ट वर्तमान समय में तान बजाना जानते हैं क्योंकि बहुत से इसको कठिन समझ कर छोड़ देते हैं वास्तव में यह उनकी भूल है क्योंकि रागिनी का आनन्द अलाप सेही आता है विना तान के कुछ आनन्द नहीं आता इसकारण जहां तक होसके तान बजाने का अभ्यास होना चाहिये जोकि हाथ के तैयार होने पर किया जाता है–

तान के बजाने में बहुत से पर्दे शीघ्र बजाने पड़ते हैं जिनके उदाहरण शुभचिन्तक ग्रंथकारने " हारमोनियममास्टर छठे भाग में " ब्योरे के साथ लिखे हैं–

पल्टे ।

तान के उलट कोही पल्टा कहते हैं अर्थात् जिस स्वर से बजाते हुये नीचेकी ओर चलेगये फिर उसही तेज़ी में बजाते हुये उसही स्वर पर आगये जहां से तान प्रारम्भ कीगई इस उलट फेर का नाम पल्टा है–

इसके बजाने में तान से अधिक अभ्यास करने की आवश्यकता पड़ती है हारमोनियमशिक्षक को जब तान देना आ जाये तो उसको पल्टे बजाने की प्रैक्टिस करनी चाहिये जिस हारमोनियस्ट को पल्टा, तान, ज़मज़मा बजाना आ जाता है

चित्र सामना ।

नीचे के चित्र में अंगरेज़ी और हिन्दोस्तानी स्वरों का सामना किया है शौक़ीन अच्छी तरह से कंठाग्र करलें—

१	२	३	४	५	६	७
A.	B.	C.	D.	E.	F.	G.
धा.	नी.	सा.	रे.	गा.	मा.	पा.

शेष सब बातें वही हैं जोकि भारतवर्ष के गायकों ने माना है—

चित्र अंगरेज़ी सप्तक ।

नीचे के चित्र से प्रकट है कि अंगरेज़ी में स्वर (C.) सी. से प्रारम्भ होता है परन्तु कोई कोई हारमोनियममेकर (F.) यफ़. से प्रारम्भ करते हैं—
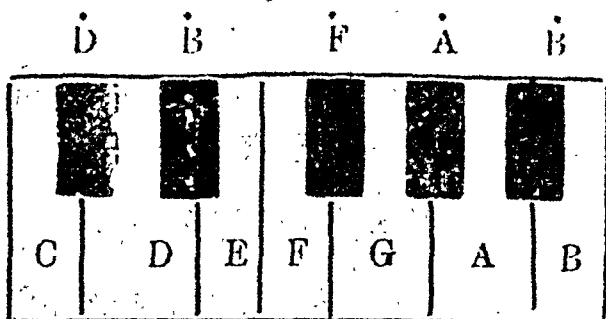
सरिगम का वर्णन ।

सा रे गा मा पा धा नी को जल्दी में सरिगम कहते हैं प्रत्येक राग रागिनी की एक सरिगम नियत करदी गई है जिन पर वह रागिनी गाई जाती है इससे हारमोनियमशिक्षक को आगे की सरिगमैं खूब याद करलेनी चाहियें क्योंकि जिस हारमोनियस्ट को सब राग रागिनियों की सरिगम आती हैं

पर कभी बेसुरा नहीं हो सकता और न साथ करने में घबड़ाता है सब मिलकर कठिन से कठिन राग को अलाप सकता है जिन शिष्यों के हाथ तैयार होते हैं परन्तु साथ करना नहीं जानते उनके लिये यह बोलियाँ मुख्य कर लाभ पहुँचावेंगी—

सब राग रागिनियों का वर्णन ।

सब राग रागिनियों का इस छोटीसी पुस्तक में वर्णन करना असम्भव है यद्यपि सब प्रसिद्ध समय की रागिनियों का संक्षेप रूप से वर्णन किया गया है—

राग ।

(१) भैरव राग ।

(१) समय ।

इस राग का अन्त सूर्य निकलने से पहिलेही कर दिया जाता है भारतवर्ष में रात के तीन या चार बजे से प्रारम्भ किया जाता है—

(२) भैरव राग का गुण ।

इसका गुण चित्त पर अति शीघ्र होता है सुनने से चित्त प्रसन्न होता है शरीर में चुस्ती बिजली की भांति काम कर जाती है जो मनुष्य नियमित समय पर गाता है और नियमानुसार गानविद्या का अलाप करता है वह कभी बीमार नहीं होता—

(३) सरिगम ।

हारमोनियम में नीचे के पर्दे काम में लाये जाते हैं-
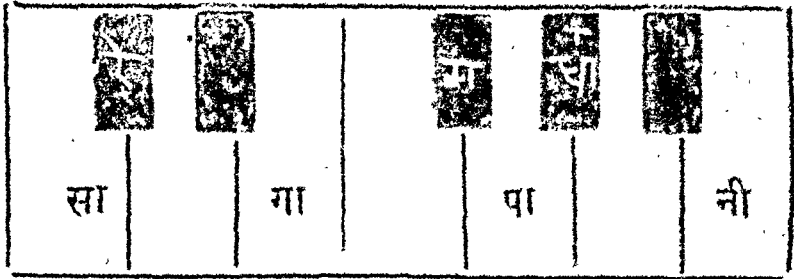
(२) मालकौस राग ।

(१) समय ।

अन्तिमरात्रि अर्थात् रात के दो अथवा तीन बजे यह राग गाया जाता है-

(२) गुण ।

इस राग के सुनने से मनुष्य मस्त होजाता है शराब के नशे की तरह सरूर आता है उस समय चित्त यही चाहता है कि-
मेरे पास बैठा हो वह सनम् लिये अपने हाथ में जामेजम्-
पियें दम् बदम् मय वस्ल हम न खयाल रोज़ हिसाब हो।
मय खुश गवार का दौर हो नशये शराब का ज़ोर हो-
उधर उसके दिल में कुछ और हो इधर हमको जोशे शबाब हो।
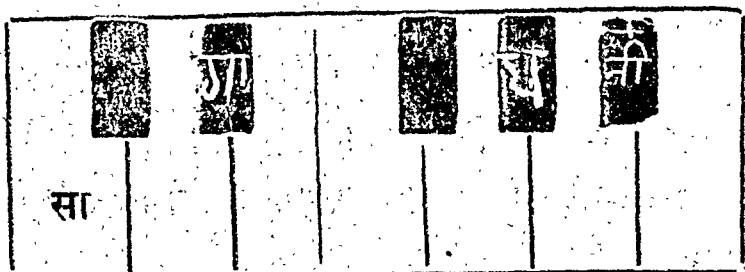
(३) सरिगम ।

(३) हिंडोल राग ।
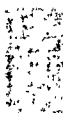
(१) समय ।

यह राग सायंकाल के समय गाया जाता है और बसन्त ऋतु में इस समय अपना गुण रखता है—

(२) गुण ।

इस राग के सुनने से मनुष्य मतवाला हो जाता है चित्त प्रसन्न और मगन होता है गानविद्या के अधिकारी यदि एक लिखी पर अक्षर डालने के लिये मजबूर किये जावें तो इस राग की सहायता से अवश्यही सफलता प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि गानविद्या के नियमों से कुछ भी मेल न रखते हों—

(३) सारिगम ।

झिकारी

सा गा मा धा नी

(४) दीपक राग ।
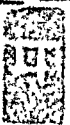
(१) समय ।

दो पहर दिन को यह राग गाया जाता है यह किंवदन्ती है कि इसके गाने से दीपक प्रज्वलित होजाते हैं—

(२) गुण ।

आतशे इश्क़ से नीम बिस्मिल कि तरह तड़पता—
वे क़रारी व बेचैनी से मजनूं बनता ।

"न आज तक किसीने इसके गुण से दीपक प्रज्वलित किये हैं और न कभी कर सकता है कविता की लम्बी चौड़ी बातें सूर्यवत् प्रज्वलित हैं ज़रासे तिनुके को तीर फ़ौलादी बनाना इनके बायें हाथ का खेल है"—

(३) सरिगम ।

(५) श्री राग ।

(१) समय ।

तीसरा पहर अर्थात् दो बजे से चार बजे तक इस रागका गुण रहता है—

(२) गुण ।

इस राग के सुनने से मनुष्य मालीख़ोलिया व ख़फ़क़ान आदि रोगों से मुक्त हो जाता है और प्रसन्नता प्राप्त होती है चित्त के सब संशय दूर हो जाते हैं और उस समय वे रोक जिह्वा से यह शैर निकलता है—

मारा बजहां ख़ुश्तर अज़ीं यकदम् नेस्त—
कज़ नेक व बद अन्देशः व अज़ कस ग़म नेस्त ।

(३) सरिगम ।

(६) मेघ राग ।

(१) समय ।

इस राग का समय दिन का अन्त है परन्तु कोई कोई गानविद्या के जानकार अन्तिम रात्रि बतलाते हैं और वर्षाऋतु में यह राग हर समय गाया जाता है–

(२) गुण ।

इस राग के सुनने से चित्त को शान्ति होती है प्यास बुझती है और दाह रोग को लाभ होता है बरसात में इसका गुण तुरन्त होता है मुख्यकर श्रावण के महीने में जब बादल उमड़ घुमड़ आते हैं तब यह राग अपना पूरा गुण दिखलाता है परन्तु वर्षा का होना बिल्कुल झूठ है–

(३) सरिगम ।

सा | रे | मा | पा | धा | नी

रागिनियां ।

रागिनियां भैरव राग ।

(१) वीड़ाड़ी ।

यह रागिनी प्रातःकाल गाई जाती है-

(२) गुण ।

आलस्य दूर हो-चित्त प्रसन्न हो-

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

औरत खूबरू-सब्ज़ फ़ाम-औसत अन्दाम-तिरछी नज़र-पतली कमर-खुशरवू-खुशगुलू-

(४) सरिगम ।
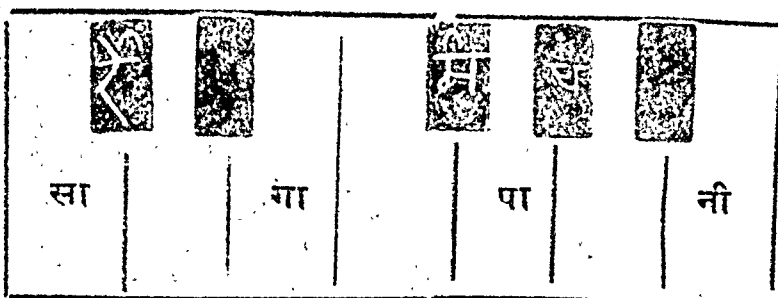
(२) मधुमाध रागिनी ।

(१) समय ।

मुख्य समय इस रागिनी के अलापने का प्रातःकाल है-

(२) गुण ।

इस रागिनी का असर कामदेव पर अधिक होता है सुनने वाले से फिर रहा नहीं जाता । चाहै वह कैसाही बलवान, ब्रह्मचारी, जितेन्द्रिय क्यों न हो-

नूहानश पर नूहानश नौंगू पर नौंगू-
लगानक पर लगानश ढोलो पर ढोल ।

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

खूबसूरत औरत-नाज़ुक मिज़ाज-कमसिन-गिलाहिंग-लिबास-सादे-

(४) सरिगाम ।

(३) भैरवी रागिनी ।

(१) समय ।

प्रातःकाल भैरवी की अलाप मुनासिब है ।

(२) गुण ।

बदन में चुस्ती व चालाकी हो-आलस बेदारी हो-इस राग के सुनने से चित्त बहुत प्रसन्न होता है-

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

जैसे खूबरू-मिश्गीं-खुशगुफ्तार-खुशरफ़्तार-
शरमगीं-महेजबीं-चहारदःसाला-मिस्ल उम्र दोशीज़ह-
बरस पन्द्रह याकि सोलह का सिन-
जवानी की रातें मुरादों के दिन ।

(४) सरिगम ।

(४) सिन्धवी रागिनी ।

(१) समय ।

चौथा पहर अर्थात् दिन के अन्तिम भाग में यह रागिनी गाई जाती है—

(२) गुण ।

इस रागिनी के सुनने से दिल को जोश आता है क्रोध से शरीर कांपता है युद्ध की ओर चित्त जाता है धैर्य जाता रहता है और आशा नहीं रहती—

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

औरत खूबसूरत—सुर्ख आंखें—सुर्ख लिबास—शकीला—जमीला नौजवां का इन्तिज़ार—दिलबेक़रार—माही बेआब—गुस्से की आग श्वालहज़न—

(४) सरिगम ।

(५) बंगला रागिनी ।

(१) समय ।

इस रागिनी का समय अन्तिम दिन है–

(२) गुण ।

जिस एक ठिकाने न रहै–कभी जिस में कुछ ध्यान हो कभी कुछ हैरान व परेशान हो–

(३) स्वरूप व साहश्य ।

स्त्री सुन्दर-पति स्मरण में मस्तक-विभूति लगाये हुये छ-छिन्न-वस्त्र पीत-घबड़ाहट की दशा-कमल का फूल हाथ में लिये हुये–

(४) सरिगम ।

रागिनियां मालकोस राग ।

टोड़ी रागिनी ।

(१) समय ।

मुख्य समय इस रागिनी के गाने बजाने का पहर भर दिन चढ़े का है अर्थात् आठ या नौ बजे दिनके गाई जाती है–

(२) गुण।

इस रागिनी का असर पशुवों पर विशेष होता है हरिणादि इसके सुनने से शीघ्र मोहित होते हैं एक अच्छे गवैये के लिये यह रागिनी हथियार का काम देती है—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

युवा स्त्री—चन्द्रवदनी—गौर शरीर—घूंघरवाले बाल—बिजली का असर—

(४) सारिगम।

(२) गंकले रागिनी।

(१) समय।

दिनके पांच बजे अथवा छः बजे गानेसे यह रागिनी अपना गुण दिखलाती है—

(२) गुण।

आतशे इश्क़—बेक़रारी—दिलफ़िगारी—परेशानी—सरगरदानी—जुस्तजूये यार—आहोफ़िग़ां—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

शकील और हसीन औरत—उम्र चौदह साल—फ़िराक़यार में बेक़रार—ग़म पुरअलम—पज़मुर्दः चेहरा—गर्दन झुकाये हुये—

(४) सारिगम।

(३) खंबावती रागिनी।

(१) समय।

यह रागिनी बहुधा एक या दो बजे रात को गाई जाती है—

(२) गुण।

आराम हासिल हो—तबीयत खुश हो—इन्तिज़ार ज़्यादः हो—दिल कुशादः हो—शिर दर्द दूर हो—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

खूबसूरत औरत—परी पैकर—सुर्ख रुखसार—खुश गुफ्तार—चञ्चल रफ्तार—नशे में चूर—लिबास सब्ज़—शृंगार किये हुये किसीका इन्तिज़ार कर रही है—

(४) सारिगम।

रे	ग				नी	
सा	०	०	मा	पा	धा	०

समय बहुत अच्छा समाँ बँध जाता है जिसको कागज़ के छोटे से टुकड़े पर दिखलाना कठिन बात है—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

खूबसूरत औरत—चार, मनचल—घुंघरू—घुंघरू—खनकार—नशे में चूर—रक्स करती हुई रागिनी अलाप रही है—

(४) सरिगम।

रागिनियां हिंडोल राग।

(१) रामकली रागिनी

(१) समय।

यह रागिनी वसन्तऋतु में चढ़ते दिन के समय गाई जाती है—

(२) गुण।

दिल उमड़ आता है—छाती फटी जाती है—फ़िक्रें दूर हों—चित्त में चुलबुलाहट का असर हो—रंग पीला हो जाय—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

खफ़गी की नज़र—बांकी फबन—नाज़ व अन्दाज़ से पुर-शोख़ चश्म—कम उम्र—करश्मा साज़—

(४) ककुभ रागिनी ।

(१) समय ।

यह रागिनी दोपहर दिन में गाई जाती है और उसी समय कुछ आनन्द भी आता है–

(२) गुण ।

हासिल विसाल हो–दूर दिलका मलाल हो–आलम खामोशी छाजाये–जबान बन्द होजाये–न ग़म है न रंज है–गुनूदगी तारी है–

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

नौजवां नाज़नीन–रश्क हूर–कमसिन–सुरीरंग–ज़र्द लिबास परेशान–ज़ुल्फ़ बिखरी हुई–ज़बान पर मुहर सकूत लगी हुई–

(४) सरिगम ।
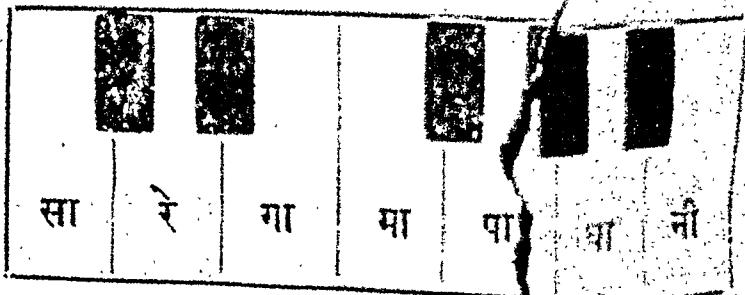
(५) गौरी ।

(१) समय ।

जब दिनका अन्त होने लगता है उस समय गौरी रागिनी का अलाप और समय से अच्छा लगता है–

(२) गुण ।

इसके सुनने से चित्त नाच की ओर दौड़ता है और उस

(३) देवसाख रागिनी ।

(१) समय ।

दस या ग्यारह बजे दिनके यह रागिनी गाई जाती है–

(२) गुण ।

सुननेवालों से गानेवाला इस रागिनी के गुण को अधिक मानता है और इस रागिनी का गुण केवल चुम्बक पत्थर की ही भांति नहीं वरन यह रागिनी मनुष्य के चित्त को परवश करदेती है और की सुगन्ध आती है मेघ उत्पन्न होता है–

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

औरत मर्दाना लिबास–जिस्म पहलवान–हाथ में नंगी तलवार लिये हुये–गरेबां चाक–अंगलियां कीसी सूरत–मैदान जंग की तैयारी–

(४) सारिगम ।

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी

(४) ललित रागिनी ।

(१) समय ।

इस रागिनी का अलाप सुबह के पांच बजे होता है–

(४) सरिगम।

(२) विलावल रागिनी।

(१) समय।

इस रागिनी के अलाप का समय दशबजे दिन अच्छा रहता है—

(२) गुण।

चित्त में उमंग उत्पन्न हो – किसी मुख्य काम को सुगमता से पूरा करे – प्रत्येक काम में सफलता होना—चित्त सदैव लहरैं लेता रहेगा – दुःख का चिह्न तक न रहेगा—

(३) स्वरूप व सादृश्य।

औरत स्याह फ़ाम—नाज़ुक अन्दाम—सांवरी सूरत—मोहनी मूरत—कामिनी और मृगनयनी—लिवास सुर्ख़—जवान उम्र—सर व क़द—आहूचश्म—

(४) सरिगम।

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी

(३) देवसाख रागिनी ।

(१) समय ।

दस अथवा ग्यारह बजे दिनके यह रागिनी गाई जाती है—

(२) गुण ।

सुननेवालों से गानेवाला इस रागिनी के गुण को अधिक मानता है और इस रागिनी का गुण केवल चुम्बक पत्थर की ही भांति नहीं वरन यह रागिनी मनुष्य के चित्त को परवश करदेती है स्नेह की सुगन्ध आती है मेघ उत्पन्न होता है—

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

औरत मर्दाना लिबास-मिस्ल पहेलवान-हाथ में नंगी तलवार लिये हुये-गरेबां चाक-अंगुलियां कीसी सूरत-मैदान जंग की तैयारी—

(४) सरिगम ।

सा रे गा मा पा धा नी

(४) ललित रागिनी ।

(१) समय ।
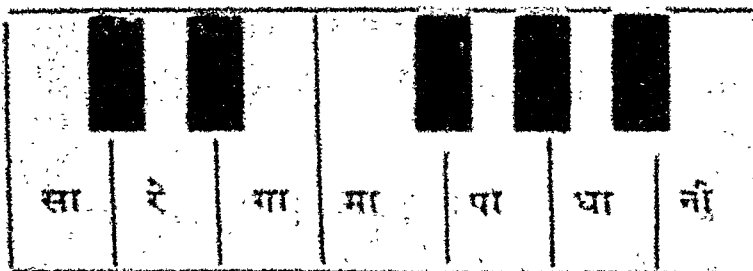
इस रागिनी का अलाप सुबह के पांच बजे होता है—

(२) गुण।

दो० विरह आगि तनमें लगी, जरन लगे सब गात।
नाड़ी छूतहि वैद्य के, परे फफोले हात॥

(३) स्वरूप व सादृश्य।

औरत–नेकसीरत–नज़र गौर–हालतज़ार–बुलबुल बीमार–हिज्रसनम–ग़मगीनचेहरा–नाज़ुक अन्दाम–सफ़ेदफ़ाम–

(४) सरिगम।

(५) पटमंजरी रागिनी।

(१) समय।

यह रागिनी आधीरात के समय अपना गुण दिखाती है–तानसेन का कहना है कि पटमंजरी अलापने के समय यदि ज्वर हो तो बिल्कुल दूर हो जाता है जबकि तान का भी ध्यान रक्खा जावे–

(२) गुण।

ज्वर दूर हो–मन प्रसन्न हो–चित्त प्रसन्न हो जाय–भूख अधिक लगे–प्यास भगे–

(३) स्वरूप व सादृश्य।

युवा लड़की–गौर शरीर–लालगाल–धानी रंग साड़ी पहने हुये–जल्दी जल्दी चलती हुई–

(४) सरिगम ।

सा	रें	गा	मा	पा	धा	नी

रागिनियां दीपक राग ।

(१) देश रागिनी ।

(१) समय ।

आधा दिन—कोई कोई गानविद्या के जानकार रात के दूसरने का समय बतलाते हैं और यही समय अति उत्तम मानते हैं—

(२) गुण ।

शरीर दृढ़ हो—हाथ पैर आदि को बल दे—प्रसन्नता प्राप्त हो—

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

नौजवां औरत—सुर्ख़ लब—सब्ज़पोश—जवानी का जोश—

(४) सरिगम ।

सा	रें		मा	पां		नी

(२) कामोद रागिनी ।

(१) समय ।

जब सूर्य अस्त होता है उस समय यह रागिनी अपना पूरा गुण दिखलाती है—

(२) गुण ।

यह रागिनी अपना असर पपैया पर बहुत जल्द डालती है यह पक्षी सदैव इस रागिनी की ध्वनि अलाप करता है–चित्त प्रसन्न हो–मन स्थिर होजाय–ईश्वर का ध्यान रहे–चित्त को ठंढक पड़े–

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

आशिक मिज़ाज–ज़रीं लिबास–कम उम्र–पतली कमर–गूंजती हुई आवाज़–सहरा व जंगल में बैठी है–

(४) सरिगम ।
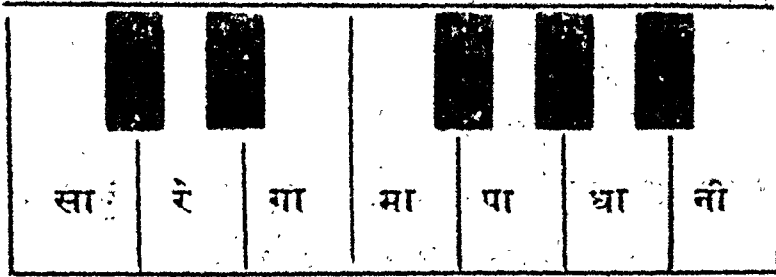
(३) कान्हरा रागिनी ।

(१) समय ।

दीपक जलने के पीछे अर्थात् सायंकाल से प्रारम्भ होती है–

(२) गुण ।

हाथी को मस्त करदे जबकि उस समय गवैये के साथ सिवा पखावज के और कोई बाजा न बजाया जावे–

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

औरत खूबसूरत–मर्दाना लिबास–गूंजती हुई आवाज़–हाथमें नंगी तलवार–गर्जती है और मस्तानावार झूमती है–

(४) सरिगम ।

(४) केदारा रागिनी ।

(१) समय ।

इस रागिनी के गाने का समय आधीरात है—

(२) गुण ।

आलम खामोशी—तापरनादी—ग़नूदगीतारी—इस रागिनी से ग्रन्थकार अपने मस्तिष्क को हरा भरा कर लिया करते हैं और ताक़त पहुँचाते हैं—

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

योगिनी का वेश—लम्बे लम्बे केश—सुर्ख़ लिबास—गोरावदन—विभूति मले हुये आसन पर बैठी है और अपने दिमाग़ को आराम दे रही है—

(४) सरिगम ।

(५) नट रागिनी ।

(१) समय ।

अन्तिम दिन अर्थात् रात्रि का पहिला पहर इस रागिनी के लिये बहुत अच्छा है और आज कल्ह इसी समय में अलापी जाती है–

(२) गुण ।

आतश इश्क़ श्वालाजन हो–तपे हिज्र से तबीयत ख़राब हो–सच्चा आशिक़ मौत का शिकार हो–बायस इन्तिज़ार यार हो–

(३) स्वरूप व सादृश्य ।

जवान मर्द–दर असल औरत–घोड़ेपर सवार–सिपाहियाना तर्ज़–ग़ज़बनाक मशगूलकार राज़–

(४) सरिगम ।

सा	रे	गा	०	पा	धा	नी.

म

भूमिका ।

शायकीन ! गानविद्या का गुण निस्सन्देह है इस विद्या के जानकार किसी के आश्रयी नहीं रहते-राग रागिनियों को अपने वश में करके अन्तसमय ईश्वर में लीन होजाते हैं इस का गुण प्रत्येक चित्त पर होता है और शीघ्र प्रसन्न होता है और विद्याओं में परमात्मा ने इसको एक मुख्य कारणसे ऊंचा पद दिया है जिसके कारण संसार में मनुष्य और पशु इसके वशीभूत दिखाई देते हैं-

गानविद्या के प्राप्त करने के लिये एक समय आवश्यक होता है मानो विद्या ऐसी है कि प्रत्येक मनुष्य योग्यता को पहुँच जावे तब भी सबको उसके प्राप्त करने की योग्यता नहीं होती-जैसे गाना बजाना प्रत्येक मनुष्य जानता है-

इस विद्या के जानकार वर्तमान समय में नीचजाति में अधिकता से पाये जाते हैं क्योंकि सुल्तान मुगलिया और मुसलमान बादशाहों के समय में जिनमें कि बहुधा पक्षपाती और परिणाम के न विचारनेवाले बादशाह होगये हैं वह गान-विद्या के जाननेवालों से बड़ी ग्लानि करते थे जिसके कारण और बड़े बड़े घरों में भी उनके आधीन होने से यह विद्या नीचदृष्टि से देखी जानेलगी समय के परिवर्तन से गानविद्या के जानकार भारतवर्ष में बहुतही कम रहगये और धीरे धीरे गुप्त होगये इस समय कठिनता से सौ में एक ऐसा गन्धर्व मिलेगा जो किसी मुख्य राग से कुछ जानकारी रखता हो नहीं तो सहस्रों में कोई भी ऐसा न होगा जो सब राग रागिनियों पर अधिकार रखता हो सिवा इसके कि कोई भैरव को अलापता अथवा बजाता है और कोई मालकोस से जानकारी रखता है-

आज कल्ह हारमोनियम ने पब्लिक में यह प्रतिष्ठा प्राप्त की है कि जो प्रचलित समय में कदाचित् किसी साज़ की हुई हो पूर्व से पश्चिम तक और उत्तर से दक्षिण तक मुख्य कर भारतवर्ष में इस साज़ की ऐसी चाह होरही है कि वर्णन नहीं कर सकता एक नवीन और मूल्यवान् साज़ के होने से इसकी रसाई बड़े घरों में और अमीर घरों में होगई है जिससे गानविद्या का ध्यान घर के लोगों का नवीन उत्पन्न हो गया इसकारण स्कूल और मदर्से हारमोनियम सीखने के लिये स्थापित होगये परन्तु अबभी गानविद्या का प्रचार जसा चाहिये नहीं होता है—

यह आवश्यक होगा कि आप पहिले व दूसरे भाग को भली-भाँति हृदयंगम कर लें जिनमें हारमोनियम सम्बन्धीय चित्र स्वरों का ब्योरेवार वर्णन तान, ज़म्ज़मा, पल्टा, लय, राग, रागि-नियां, यफ़. टू यफ़. —सी. टू सी. अँगरेज़ी स्वरादि लिखे हैं नहीं तो क्रम बिगड़ जाने से सफलता न होगी क्योंकि इस भाग में केवल हारमोनियम का बजाना, साथ करना, बोल निकालना, हाथ का तैयार करना बतलाया गया है——

हारमोनियमशिक्षक को चाहिये कि इस पुस्तक को अपना सच्चा पथप्रदर्शक (राह बतलानेवाला) समझ करके इसके अनु-सार कार्य करे और सदैव ध्यान रक्खे कि कोई गुरु मुझको यह सब बातैं बतला रहा है यदि परमेश्वर ने चाहा तो शिक्षक को सिवा इस पुस्तक की सहायता के किसी दूसरे मास्टर की आवश्यकता न होगी जब कि वह दृढ़ता को न छोड़े और हिम्मत हारकर बैठ न रहे——

हारमोनियममास्टर

तीसराभाग

गाना।

कहावत है कि गाना और रोना प्रत्येक को आता है संसार में कोई मनुष्य ऐसा न होगा कि जिसे गाना अथवा रोना न आता हो मतलब कि इस मसल से पशु भी पृथक् नहीं वह भी शामिल हैं क्योंकि जब वह चिल्लाते या चीखते हैं तो उनकी आवाज गानविद्या के स्वरों में से एक न एक स्वर से अवश्य ही रहेगी इसके प्रतिकूल होना असम्भव है—

प्रकार का होता है एक वह जो केवल जबान से करके गाया जाता है जैसे बहुधा थियेट्रिकल कम्प- अंगरेजी तर्जें गाई जाती हैं उन में स्वर का ध्यान अवश्य होता है परन्तु रागियत नहीं होती है अर्थात् जिस रागिनी के स्वर उसमें काम में लाये जाते हैं वह रागिनी भले प्रकार नहीं करते इन्हीं कारणों से यह गाने फीके कह- लाते हैं क्योंकि इनका गुण चित्त पर बहुत कम देखा गया है जैसे थियेटर की एक गायन "देखो करके खयाल किया कैसा कमाल हूं मैं वही रम्माल आगे पहुँचा यहां" है—इसके गाने में केवल ज़बान चलती है गलेबाजी नहीं होती जिसके कारण रागिनी अपना रूप प्रकट नहीं कर सकती वास्तव में यही कारण है कि बड़े बड़े गवैये ऐसी चीजों को नापसन्द करते हैं—

त कम होते हैं क्योंकि सब लोग गानविद्या के नियमों
जानकारी नहीं रखते और अपनी नासमझी से अलाप
ना नापसन्द करते हैं आ आ आ आ करना व्यर्थ समझते
वास्तव में यह उनकी भूल है जो मुख्य बात को छोड़कर
ल बाहिरी सुन्दरता पर मस्त होजाते हैं फिर हमको कैसे
गा होसकती है कि ऐसे गानेवाले इस विद्या में कुछ
ते करके मनमानी मंज़िल तक पहुंच जायेंगे जैसा कि
के शेर से प्रकट है—

स्वर—वेद कहता है बार बार सुभाय ।
आप स्वर होके ईश्वर होजाय ॥
राग वैराग की निशानी है ।
और खटराग सब कहानी है ॥

नाचना ।

जब मनुष्य पशु गाते हैं और उस गाने के प्रभाव से
वह मस्त होकर नाचने लगते हैं राग में
सा गुण होता है जिसके कारण गानेवाले
अपना जोश नाचकर ठंढा करते हैं बहुधा
अपने समाज में नाच करते हुये देखा होगा यह
य में नाचती हैं जिससे प्रकट है कि वह गायन
अदा करके उसके जोश में नाचने लगती हैं
गया है कि नाचनेवाले रागिनी के गुण से
और उनको उस समय किसी बात की पर-

(Fragments from a partially visible facing page, left margin: के, जाता, गि, प्रकार का, करके गा, अंगरेजी, होता है, के स्वर, पं, निच है, अनेक, रागि सुने, प्रकार को, लाते हैं क्योंकि, जैसे थियेटर की, कमाल है मैं वही, में केवल ज़बान, रागिनी अपना, कारण है कि बड़े)

जानने की बहुत [illegible] है जिनको [illegible] करने के लिये एक बड़ी पुस्तक की आवश्यकता है हारमोनियम के शौकीनों के चित्तविनोदार्थ कुछ [illegible] बातों के संक्षेप समाचार नीचे लिखे जाते हैं—

वेश्यायें—वेश्याओं के नाच दो प्रकार के होते हैं एक साधारण दौड़ जोकि गायन के दुगुने [illegible] करने पर होती है दूसरा ठुमका अर्थात् केवल एक स्थान पर [illegible] होकर घुँघरुओं की आवाज़ प्रकट करना—ठुमका हर समय [illegible] नहीं ज्ञात होता वरन कभी कभी किसी मुख्य मिसरा [illegible] कुछ झुककर ठुमका दिया जाता है जोकि बहुत प्यारा ज्ञात होता है—

सदैव स्मरण रखिये कि नाच उसी वेश्या का अच्छा होगा कि जो बताना जानती हो इसके अतिरिक्त नाजुकबदन और नाज़ व नखरे से भरी हो सुन्दर[illegible] की नाच में पैठार नहीं—

स्वांग—सांगीतों में लड़के नाचा करते हैं [illegible] भी नाच वेश्यावों की भांति होता है परन्तु यह एक बात [illegible] वेश्यावों से बराबरी ले जाते हैं अर्थात् गर्दन का हिलाना [illegible] इन लड़कों को खूब आता है कभी कभी अच्छा नाचने वाले नाचने के समय एक एक या दो दो घुँघुरुवों की आवाज़ प्रकट करते हैं जोकि बड़ीही योग्यता की बात है प्रत्येक को यह बल [illegible] नहीं कि वह उनका अनुकरण करसके—खैर कुछही योग्यता क्यों न हो वर्तमान समय में लड़कों का नाचना दोष समझा जाता है परन्तु हमारे ध्यान में नाचना और गाना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है यद्यपि स्त्रियों में इसका भाग पुरुषों से अधिक है तबभी पुरुषों के लिये नाचना और गाना कदापि दोष

नहीं होसकता और जो इसको दोष समझते हैं वह सरासर भूलही नहीं करते हैं वरन ईश्वरीय नियमों के प्रतिकूल चलने वाले हैं नाचने की बाबत जो बुरे ख्याल किसी किसी अनजान व नादान दोस्तों में फैले हुये हैं उनको नीचे के शैर से शीघ्र ज्ञात होजायगा कि वास्तव में बात क्या है—

शैर—मय कि बदनाम कुनद अहेल खिरदरा गलत अस्त।
बल्कि मय मी शवद अज़सोहबते नादां बदनाम॥

अर्थ—कहते हैं कि चतुर मनुष्य को शराब बदनाम करती है यह झूठ है किन्तु शराब नादान के साथ में स्वयं बदनाम होती है—

"रामलीला" और "रासलीला"

यद्यपि इनका नाच धार्मिक ढंग को लिये हुये होता है इसकारण प्रत्येक हिन्दू प्रतिष्ठा की दृष्टिसे देखता है स्वरूप श्रीकृष्णजी महाराज का मुख्यकर परमेश्वर की भांति पूजा जाता है यदि धार्मिक पुस्तकें देखी जावें कि जिनसे श्रीकृष्ण जी महाराज के जन्म के समाचार ज्ञात होते हैं तो वहां भले प्रकार प्रकट कर दिया गया है कि श्रीकृष्णजी महाराज गान विद्या के जानकार व नाच में जिनके समान आजतक कोई भी उत्पन्न नहीं हुआ जब ऐसे बड़े बड़े फ़्लासफ़र जिनकी रचना पर करोड़ों मनुष्य चल रहे हैं नाचनेवाले थे और नाच को मनुष्य के चित्तकी नेचरल (स्वाभाविक) बतलाते थे फिर हम इनके सामने एक मूर्ख और अनपढ़ की बात को स्वयं झूठ जानकर कैसे मान सकते हैं शिवाशिव, राधामाधव आदि बड़े बड़े देवता जब अपनी स्त्रियों के साथ नाचा करते थे और गानविद्या से ईश्वर की भक्ति किया करते थे तो बतलाइये वह

समय क्याही सुहावना होता होगा और कैसा प्यारा ज्ञात होता होगा–

थियेट्रिकल नाच–वर्तमान समय के सब नाचों में अंगरेज़ी ढंग के थियेट्रिकल नाच बहुत अच्छे होते हैं ऐसे नाचों में दश पन्द्रह लड़के परियों के पार्ट में मिलकर नाचा करते हैं और केवल एक नाच में भिन्न भिन्न रूप उनके नाचके हो जाते हैं जैसे सर्कस कम्पनियों में छोटे लड़के एक पर एक कमान बनाकर खड़े हो जाते हैं इसीप्रकार थियेट्रिकल कम्पनियों में नाच के समय आन की आन में बड़ी समां हो जाती है तरह तरह के नाच केवल स्टेज के ऊपरही अच्छे ज्ञात होते हैं वेश्यावों और रासधारियों की भांति प्रत्येक स्थान पर अपना पूरा असर नहीं रखते यही कारण है कि बहुधा गानविद्या के जानकार इसको नीच दृष्टि से देखते हैं–[१]

बजाना ।

जबतक गवैये के साथ कोई साज़ नहीं बजता तबतक कुछ भी आनन्द नहीं आता और न गानेवाले को कुछ सहायता मिल सकती है गानविद्या के जानकारों ने साज की तीन क़िस्मैं स्थिर की हैं इन तीन क़िस्मों से अधिक संसार में और कोई क़िस्म नहीं है सब संसार के साज़ इन्हीं तीन क़िस्मों में आ गये हैं–

१—थियेट्रिकल कम्पनियोंके भिन्न भिन्न तमाशों के नाच तसवीरों सहित हारमोनियम में बजाने के ढंग "हारमोनियममास्टर के ग्यारहवें भाग में" देखिये–

ग्रन्थकर्त्ता.

तार—इसमें वह साज़ सम्मिलित हैं जिनमें तार लगाये जाते हैं जैसे सितार, सारंगी, इसर दः तारा आदि—

थाप—जो साज़ थाप के लिये मख्यात हैं वह इसमें सम्मिलित हैं जैसे तबला, ढोलक, मृदंग, चंग, नक़ारा, ताशा आदि—

फूंक—इसमें वह बाजे हैं जो वायु की सहायता से बजते हैं जैसे बीन, बांसुरी आदि—

तानसेन ने जो क़िस्में साज़ों की लिखी हैं वह कुछ और ही ढंग लिये हुये हैं वह कहते हैं कि साज की ढाई क़िस्में हैं जिन में हरएक क़िस्म के साज मिले हैं—

पहिला तार—जैसे सितार आदि—

दूसरे खाल—जिनमें तबला, मृदंगादि मिले हैं—

तीसरे घुंघुरू—यह आधे साज़ में से हैं—

उपरोक्त दोनों मतों की राय एक है इससे हम इसकी बाबत अधिक लिखना उचित नहीं समझते अलबत्ता शिक्षक को कुछ आवश्यकीय बातें यहां पर बतलाना चाहते हैं—

(१) हारमोनियम के सिवा प्रत्येक साज़ में ठाट आदि स्वयं बांधने पड़ते हैं और यही बात कठिनता की है—

(२) जब कोई तार की क़िस्म का साज बजता है उस समय उसके साथ खाल का भी कोई साज़ अवश्य बजना चाहिये जिसमें दूना आनन्द हो—

(३) घुंघुरू और मंजीरे के बजाने में भी परिश्रम दरकार है यद्यपि सबसे सुगम है तब भी प्रत्येक मनुष्य नहीं बजा सकता इसके लिये उचित प्रैक्टिस चाहिये—

(४) तार के साज़ से स्वर और खाल के साज़ से ताल ज्ञात होता है—

(५) वर्तमान समय में हारमोनियम इन सब साज़ों से बराबरी कर चुका है यही कारण है कि प्रत्येक मनुष्य इसके बजाने और सुनने से शीघ्र प्रसन्न होता है–

हारमोनियम ।

भारतवर्ष में हर प्रकार के हारमोनियम प्रचलित हैं जिन का खोलना, बंद करना हारमोनियम बेचनेवाले ख़रीदार को बतला देते हैं इससे यह आवश्यक नहीं कि हम इस स्थान पर हर प्रकार के हारमोनियम बाजों के चलाने की क्रियायें लिखें क्योंकि हज़ारों नमूने चालू हैं जिनका ब्योरेवार लिखना कठिनता के सिवा असम्भव भी है इस कारण हारमोनियम सीखनेवाले को चाहिये कि प्रत्येक बाजे का चलाना, रोकना हारमोनियम विक्रेता से भले प्रकार समझ लें फिर इस पुस्तक के सहारे से बजायें–

हारमोनियम की बहुत सी क़िस्में "हारमोनियममास्टर पहिले भाग में" लिख दी गई हैं जिसमें चित्रों के द्वारा उसका चलाना, रोकना बतलाया गया है गुणग्राहक उसकी सहायता से इस काम को कर सकते हैं–

हारमोनियम की क़िस्में ।

(१) फ़्लूट–अर्थात् फ़र्शी बाजा जिसको सब लोग हाथ का बाजा भी कहते हैं यह बाजा फ़र्श पर रखकर केवल एक हाथ से बजाया जाता है और इसमें दूसरे हाथ से हवा दी जाती है इसकी भी बहुतसी क़िस्में हैं परन्तु आगे के नमूने

वाले अधिक चालू हैं और कम खर्च वालानशीन होने के कारण प्रत्येक मनुष्य ऐसा बाजा मोल ले सकता है:-
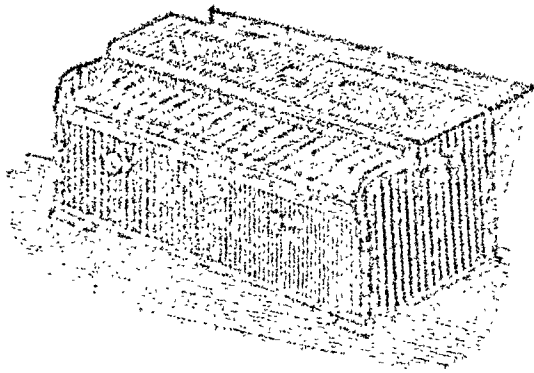
(२) फ़ोल्डिङ्ग–यह बाजे दोनों हाथों से बजाये जाते हैं और इनमें दोनों पावों से हवा पहुँचाई जाती है कुर्सी अथवा तिपाई पर बैठकर बाजा बजाया जाता है -

फ़र्शी बाजा ।
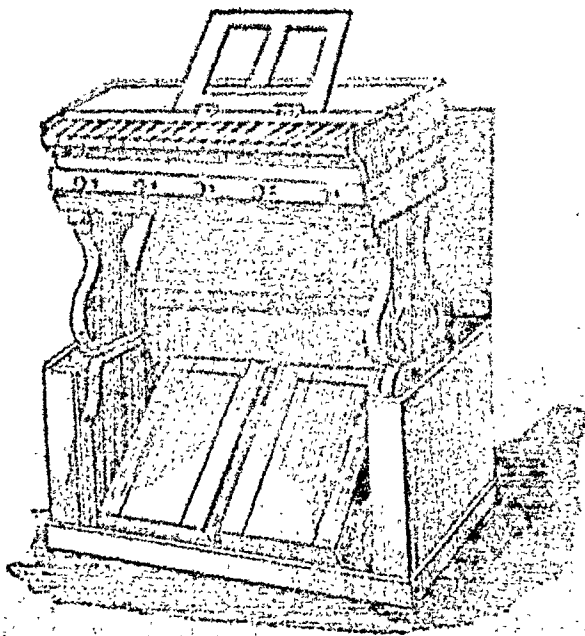
इस पुस्तक में हम फ़र्शी बाजा को स्थिर रखकर सब बातों को कहेंगे सीखनेवाले को इसी प्रकार दूसरे बाजों को भी उनके ढंग से काम में लाना चाहिये और नीचे के चित्र को अच्छी तरह से स्मरण कर लेना चाहिये क्योंकि आगे के प्रकरणों में इसके सम्बन्धीय सब नियम लिखे गये हैं—
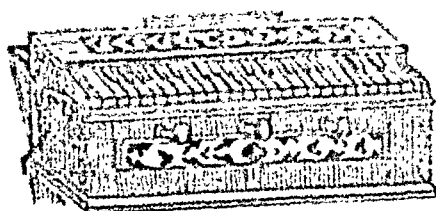
उपरोक्त बाजा में ३ स्टाप ३ सप्तक बताये गये हैं और बाजा को सिंगल (इकहरा) स्वर माना है—

हारमोनियम का खोलना ।

हारमोनियम को सन्दूक से बाहर निकालकर रक्खो और स्टाप अर्थात् वह खूंटियां जो कि बाजे के बाहर सामने की ओर लगी रहती हैं अपनी ओर को (बाहर की तरफ़) खींचनी चाहिये—

ध्यान रखिये कि स्टाप खींचने के समय अधिक ज़ोर न किया जाय किन्तु धीरे से अपनी ओर खींचना चाहिये जब अपने आप रुक जावे तब उसको वैसेही रहने दीजिये यदि स्टाप चार से अधिक हों तो तीन चार आवश्यकतानुसार खोलने चाहिये—

ऊपर लिखे अनुसार शिक्षक जब स्टाप खोल चुके तो उसको चाहिये कि धौंकनी अर्थात् दमकश जिसके द्वारा हवा बाजे के

अन्दर पहुँचाई जाती है उस कील से अलग कर दे जिसमें वह अटकी रहती है अब बाजा बजने के लिये तैयार होगया नीचे का चित्र देखो—
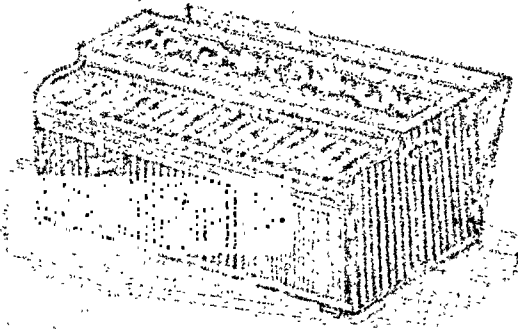
हारमोनियम का बजाना ।

बाजा खोलने के पीछे सीधा हाथ पर्दों पर चलाने के लिये तैयार कर लेना चाहिये और उँगली पर्दे पर रखकर बायें हाथ से धौंकनी चलानी चाहिये नीचे का चित्र देखो—
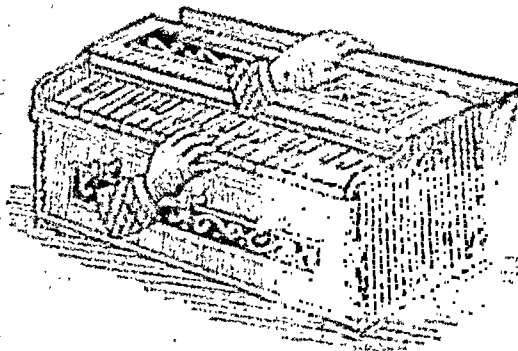
बाजा बजाने से पहिले नीचे लिखी बातों पर ध्यान रखना चाहिये—

(१) बजाने के पहिले सबसे पाहिले या अन्त के सफ़ेद पर्दे पर से वह पीतल का स्प्रिंग (कमानी) सरकावो जो उस पर्दे को दवाये रहती है अब वह पर्दा विना उँगली के दवाव

के केवल धौंकनी चलाने सेही आवाज़ देता रहेगा शिक्षक के लिये यह काम आवश्यक होगा ऐसा करने से बाजा शीघ्र नष्ट न होगा—

(२) धौंकनी चलाने के प्रथम पर्दे पर उँगली रखनी अत्यावश्यक है कारण कि धौंकनी चलाने से हवा बाजे में भरेगी यदि इसके निकलने की कोशिश न कीजावेगी (जो कि केवल पर्दे के दबाने से हो सकती है) तो हवा भीतर से निकलने के लिये ज़ोर करेगी जिससे बाजा हवा देनेवाला होजावेगा और शीघ्र नष्ट होगा सदैव इसका ध्यान रखना चाहिये—

(३) धौंकनी सदैव धीरेधीरे चलाना चाहिये और एकही चाल से चलाना चाहिये—

(४) पर्दों पर उँगलियां धीरे धीरे तेज़ चलानी चाहियें पहिले धीरे धीरे चलाओ—

(५) एक पर्दे पर दो उँगलियां मत रक्खो किन्तु एक के बाद दूसरी चलाओ और बीच में खाली देना भी एक अच्छी बानि है—

(६) जहां तक हो सके पर्दे को बहुत कम दबाओ "फट फट" पर्दे का बोलना बाजे के शीघ्र नष्ट होने का चिह्न है—

(७) अपने हाथ को तुला हुआ रक्खो—

(८) बाजा बजाने के समय आगे की तरफ़ मत झुको वरन सीधे बैठे रहो—

(९) कोई कोई शिक्षक जब धौंकनी चलाते हैं तो उनका हाथ पर्दों पर नहीं चलता और जब पर्दों पर उँगली चलाते हैं

तो उस समय धौंकनी नहीं चलती इससे सीखनेवाले को ऐसे समय में हिम्मत हार कर न बैठ रहना चाहिये किन्तु बार बार परिश्रम करना चाहिये एक घंटे के लगातार परिश्रम से यह दोष जल्द दूर हो जायगा और फिर दोनों हाथ इकसां चलने लगेंगे—

(१०) सदैव स्मरण रखिये कि हारमोनियम सीखने के लिये उँगलियों का तैयार करना अत्यावश्यक है इस कारण प्रथमही से अपनी उँगलियों को दुरुस्त करने का परिश्रम करते रहो और उपरोक्त कहे अनुसार चलाते रहो—

(११) जब बाजा बजाना आरम्भ करो उस समय बाजे को भले प्रकार साफ करलो और उँगलियों को रूमाल से साफ करलो जिससे कि पर्दे पर उँगली न चिपके और जल्द चले—

हारमोनियम का बन्द करना।

जब हारमोनियम को बन्द करना चाहो उस समय नीचे लिखी बातों पर ध्यान रखना चाहिये।

(१) बजाते हुये इकदम धौंकनी को हाथ से छोड़ देना चाहिये और पर्दों को हाथ की पांचों उँगलियों से दबाकर हवा निकाल देना चाहिये इस बात से बाजा बजने से रुक जायगा—

(२) जब बाजा रुकजाय उस समय एक हाथ की उँग-लियां पर्दों पर रखकर दूसरे हाथ से धौंकनी को इस कील में अटका देना चाहिये जोकि खास इसी काम के लिये वहां लगी रहती है इसके करने से जबतक धौंकनी पीछे से आकर

कील के निकट होगी पर्दे बराबर आवाज देते रहेंगे अर्थात् हवा सारी पर्दों के मार्ग द्वारा बाहर निकल जायगी–

(३) जब धौंकनी बन्द हो जाय उस समय स्टाप जितने खुले हों उनको पीछे की ओर (अन्दर की तरफ़) सरका देने चाहियें अब बाजा बन्द होगया–

(४) जब बाजा बन्द होजाय उसको सन्दूक या गिलाफ़ में बन्द करके (जैसा हो) रखदेना चाहिये–

(५) सदैव स्मरण रखना चाहिये कि जब बाजा खोला जाता है तब स्टाप सबसे पहिले खोले जाते हैं और इसके अतिरिक्त जब बाजा बन्द होता है उस समय सबसे पीछे बन्द किये जाते हैं–

हारमोनियम के रखने का स्थान।

कोई कोई शिक्षक यह भी नहीं जानते कि हारमोनियम किस प्रकार बैठकर बजाना चाहिये जिससे दोनों हाथ स्वतंत्ररहें और अपना काम बहुत सुगमता और उत्तमता के साथ पूरा करें कारण कि जब इनपर किसी प्रकार का ज़ोर या दबाव पड़ेगा तो बहुत जल्द थककर रह जायेंगे इसकारण सीखनेवाले को अपने बैठने का स्थान प्रथमही से ठीक रखना चाहिये नहीं तो आगे नैराश्यता का मुख देखना पड़ेगा–

बुद्धिमान् को ऐसा काम न करना चाहिये कि जिससे पीछे को पछितावा हो–

नीचे कुछेक हारमोनियम के रखने के स्थान लिखे जाते हैं– हारमोनियम के सीखनेवाले को चाहिये कि जिसको वह स्वीकार करे प्रथमही से उसके अनुसार काम करे जिसमें पीछे को कोई बुराई न पैदा हो–

प्रथम।

यह बैठक साधारण है एक हाथ से धौंकनी चलानी चाहिये और दूसरे हाथ से हारमोनियम बजाना चाहिये नीचे का चित्र देखो—
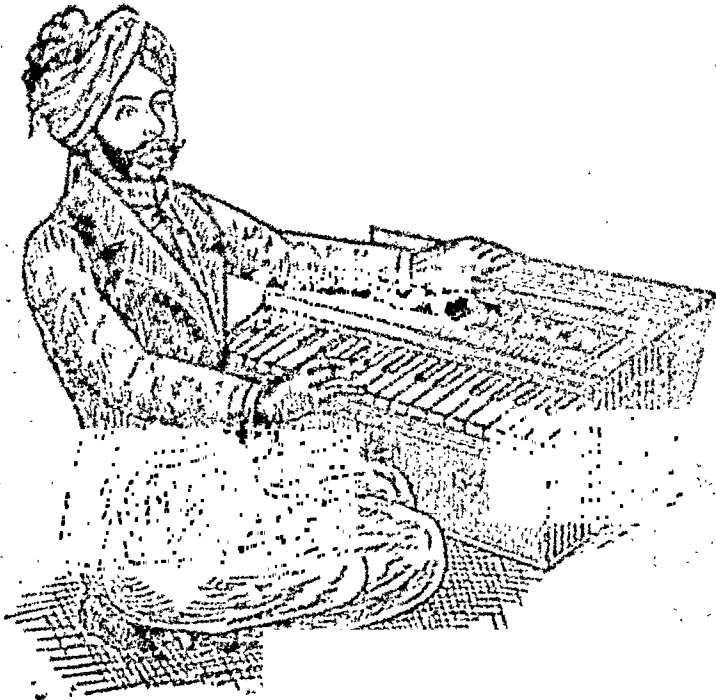
द्वितीय।

नीचे के चित्र से ज्ञात है कि बायें हाथ से ऊपर की धौंकनी दबा रहा है और दूसरे हाथ से पर्दे दबा रहा है यह बैठक इसी प्रकार के बाजों के लिये है—
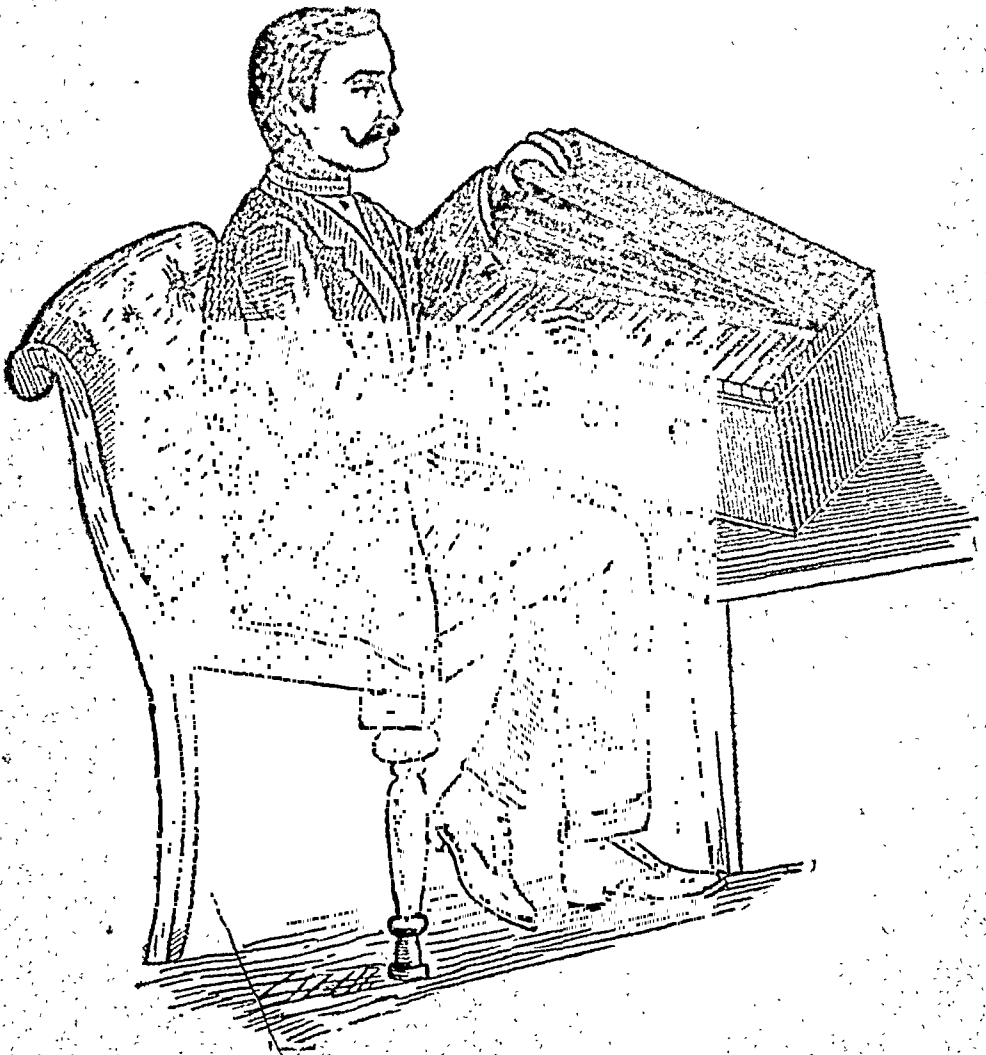
तृतीय।

फ़ोल्डिङ्ग हारमोनियम की तरह बाजे को मेज पर रखकर और स्वयं कुर्सी पर बैठकर बायें हाथ से धौंकनी चलाकर सीधे हाथ से बजा रहा है—
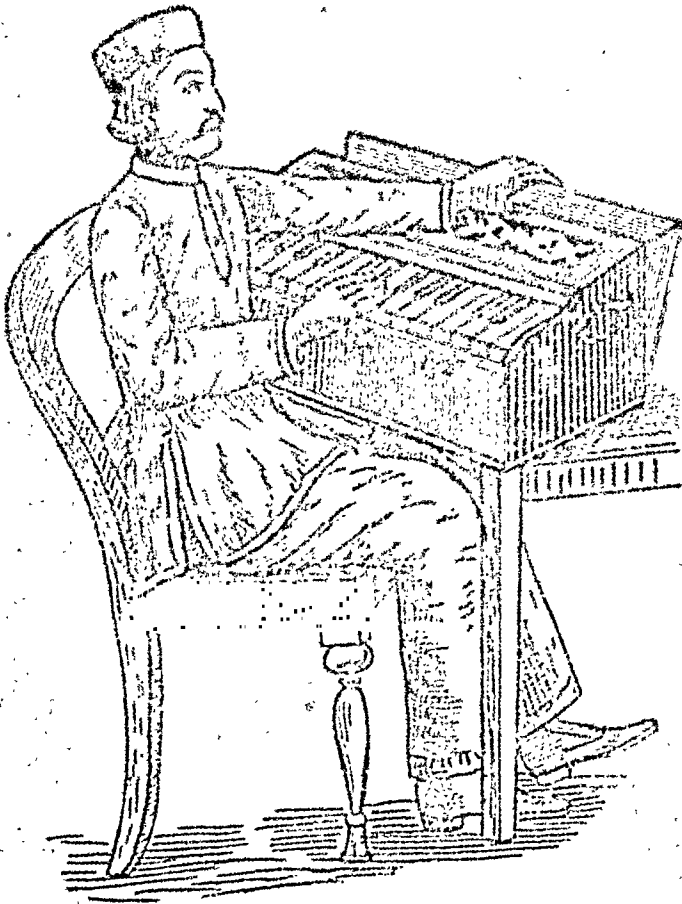
चतुर्थ ।

"हेरिल्ड" के बाजे को नीचे के चित्रानुसार मेज़ पर रख कर और स्वयं तिपाई पर बैठ कर अकार्डीन बाजेकी तरह पीछे से धौंकनी चलाकर बजा रहा है—
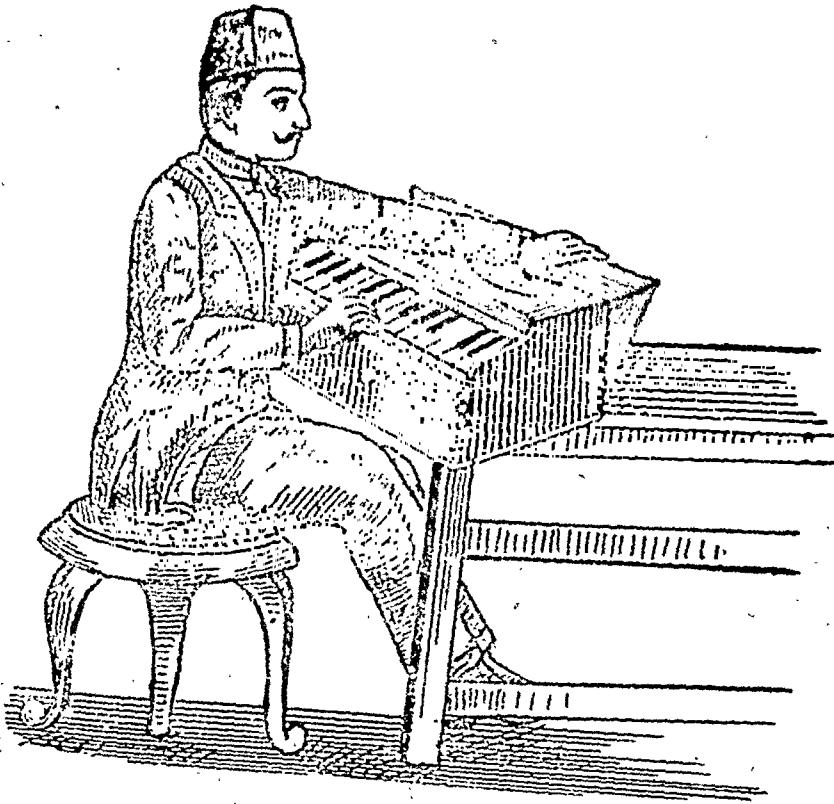
पञ्चम ।

यह बैठक विशेष करके स्त्रियों के लिये उत्तम है जो बाजे को दोनों जंघावों पर रखकर बजाती हैं ऐसी बैठक अधिकतर बंगाली लेडियों में विशेषरूप से प्रचलित है परन्तु इस दशा में बाजे हलके होने चाहियें नहीं तो कृशवदनी लेडियों को बोझदार हारमोनियम अपनी जंघावों पर रखकर बजाना बोझ ज्ञात होगा और वह शीघ्र थक जावेंगी–

षष्ठ ।

पलँग पर लेटेहुये और एक बड़ा तकिया गर्दन के नीचे रक्खा हुवा दोनों जंघावों पर हारमोनियम रखकर वायें हाथ से धौंकनी चलाकर सीधे हाथ से बाजा बज रहा है—
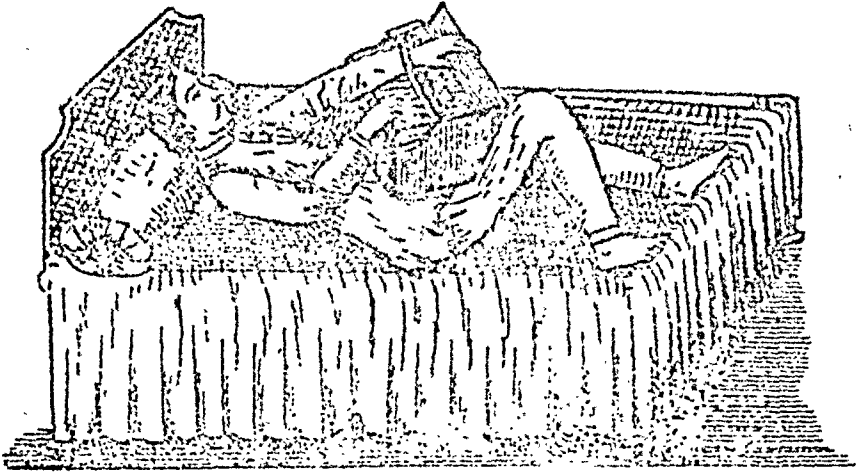
हारमोनियम में स्वरों का पहिंचानना ।

स्वर के भरोसे से हारमोनियम दो प्रकार के हैं ।

(१) सी. टू सी.

(२) यफ. टू यफ.

(१) सी. टू सी.

जिस बाजे का सा से आरम्भ होता है और सा परही अन्त होता है वह सी. टू सी. कहलाता है अर्थात् यह बाजा पट्ज को स्वर मान करके बनाया गया है—

दूसरी पहिंचान

इस बाजे की यह है कि सबसे पहिले सफेद पर्दे के बाद दो काले पर्दे होते हैं और फिर तीन जैसा कि आगे के चित्र से ज्ञात होगा—

चित्र सी. टू सी.।

निशान पहिला सप्तक							निशान दर्मियानी सप्तक							निशान तीसरा सप्तक							चौथा सप्तक
	१ रे	२ गा		३ मा	४ धा	५ नी		६ रे	७ गा		८ मा	९ धा	१० नी		११ रे	१२ गा		१३ मा	१४ धा	१५ नी	
१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

चित्र यफ़. टू यफ़. ।

निशान पहिला सप्तक ×	निशान दूसरा सप्तक	निशान तीसरा सप्तक	
काली पट्टियाँ: ×✲मा, ×✲धा, ×✲नी, ×✲रे, ×✲गा	✲मा, ✲धा, ✲नी, ✲^रे, ✲^गा	✲^मा, ✲^धा, ✲^नी, ✲^रे, ✲^गा	
सफ़ेद पट्टियाँ: ×पा, ×धा, ×नी, ×सा, ×रे, ×गा, ×मा	पा, धा, नी, सा, रे, गा, मा	^पा, ^धा, ^नी, 'सा, ^रे, ^गा, ^मा	=पा
० ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ०	० ० ० ० ० ० ०	०

नोट—ऐसे बाजे आज कल्ह बहुत कम प्रचलित हैं—"यफ़. टू यफ़." से "सी. टू सी." या सी. टू सी. से यफ़. टू यफ़. बनाने का नियम "हारमोनियममास्टर दूसरे भाग" में लिख दिया गया है—

हारमोनियम पर उँगली चलाना।

बहुधा लोग अपनी उँगलियां बाजे पर ठीक ठीक नहीं चलाते इसीकारण अपने प्रयोजन को नहीं पहुँचते और सदैव गवैये के साथ करने में पीछे रह जाते हैं वस्तुतः यह बड़ा भारी दोप है—हारमोनियम के बजाने में केवल उँगलियों को तैयार करने का परिश्रम करना पड़ता है जब उँगलियां ठीक ठीक तैयार होजाती हैं तो केवल राग रागिनी के समझने की आवश्यकता रह जाती है बहुतसे गुरु राग रागिनी को भले प्रकार जानते हैं परन्तु उनके हाथ तैयार न होने से सब के सब धरे रह जाते हैं और कोई कोई हारमोनियस्ट अपने हाथ को बहुत अच्छा बनालेते हैं परन्तु गानविद्याके न जानने से बहुधा सभाओं में साथ देने से घबड़ा जाते हैं ऐसा कभी कभी होता है। क्योंकि जिसका हाथ तैयार होगा वह गानेवाले का साथ बहुत अच्छी तरह देगा गवैया चाहे जितना कठिन राग गाता हो इसकारण शिक्षक को चाहिये कि प्रथमही से अपनी उँगलियों को नियमानुसार चलाने का परिश्रम करे—

पांचों उँगलियां किस प्रकार पर्दों पर रखनी चाहियें।

सब से प्रथम सीखनेवाले को अपनी उँगलियां नियमानुसार चलाने की प्रैक्टिस करनी चाहिये जैसा कि नीचे के चित्र में है—

सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां
(×)	(१)	(२)	(३)	(×)	(१)	(२)	(३)

(×) = अँगूठा— (१) = तर्जनी अर्थात् पहिली उँगली अँगूठे के पास की—

(२) = मध्यमा अर्थात् बीचकी उँगली (३)=कनिष्ठिका के पासकी उँगली जिसको अनामिका और अंगरेज़ी में रिंग फ़िंगर कहते हैं—

नोट—उपरोक्त चित्र में यह समझा दिया गया है कि कौन सी उँगली किस पर्दे पर रखनी चाहिये—

(१) अँगूठा उपरोक्त चित्र की तरह सदैव सा और पा पर रखना चाहिये—

(२) कनिष्ठिका अर्थात् लेटिल फ़िंगर को हाथ के तैयार होने पर काममें लाना चाहिये—

(३) अँगूठा काले पर्दे पर कदापि नहीं रखना चाहिये—

(४) काले पर्दों पर भी पीछे के चित्रानुसार उँगलियां रखनी चाहियें–

(५) यदि शिक्षक प्रथमही से पीछे के अनुसार उँगलियां चलाने की प्रैक्टिस (अभ्यास) करेगा तो अति शीघ्र सफलता को प्राप्त होगा बाजे पर उँगलियां फुर्ती से चलेंगी और थोड़े परिश्रम से हाथ तैयार हो जावेगा–

(६) यदि इस नियम के विरुद्ध होगा तो प्रलय तक हाथ का तैयार होना कठिनही नहीं किन्तु असम्भव है उँगलियां कदापि पर्दों पर शीघ्र न चल सकेंगी और तान पर हाथ रुक जायगा–

पहिले इन चिह्नों को स्मरण कर लीजिये।

"सोतीकृष्णवर्मा हारमोनियम सीरीज़" की समग्र पुस्तकों में नीचेके चिह्न हारमोनियम बाजे के पर्दे पहिचानने के लिये नियत किये गये हैं इसकारण शिक्षक को सबसे पहिले इन चिह्नों को भलेप्रकार स्मरण कर लेना चाहिये जिनसे गायन और बोल बाजे में बजा सके और समय पड़ने पर पृष्ठावलोकन करने में अपने मस्तिष्क को कष्ट न देना पड़े–

पहिला सप्तक–जिस पर्दे पर "×" यह चिह्न हो वह पहिले सप्तक का पर्दा होगा जैसे सा रे गा आदि–
(× × ×)

दूसरा सप्तक–जिस पर्दे पर कोई चिह्न न हो वह दर्मियानी सप्तक का पर्दा होगा जैसे सा रे गा आदि–

तीसरा सप्तक–जिस पर्दे पर "^" यह चिह्न हो वह तीसरे सप्तक का पर्दा होगा सा रे गा आदि–
(^ ^ ^)

कालापर्दा–जिस पर्दे पर सूर्य का चिह्न हो "*" वह बिना सन्देह कालापर्दा होगा जैसे रे गा मा आदि–
(* *)

सफ़ेदपर्दा–जिस पर्दे पर सूर्य का चिह्न न हो वह अवश्य सफ़ेद पर्दा होगा जैसे सा–रे–गा–आदि–

मात्रा–उस ठहराव का नाम है कि जितनी देर में मनुष्य एक, दो, तीन कहसके–

ठहराव–जिस पर्दे के आगे एक बिन्दु हो वहां एक मात्रा उँगली को ठहराना चाहिये और इसी प्रकार जितने बिन्दु हों वहां उतनेही मात्रा अधिक ठहरना चाहिये जैसे सा. सा.. सा...आदि–

शीघ्रता–जिस पर्दे के प्रथम एक बिंदु हो वहां एक मात्रा कम ठहरना चाहिये प्रयोजन यह कि जितने बिन्दु हों उतनेही मात्रा कम ठहरो अर्थात् वहां से उँगली शीघ्र हटालो जैसे– .सा..सा...सा इत्यादि–

जरब–जिस पर्दे के आगे गुणा का चिह्न "×" हो और उसके आगे कोई अंक हो वहां उस पर्दे को उँगली से वैसेही दबाओ जैसे अंक बतलाता हो जैसे सा × २ अर्थात् सा सा (दो बार उँगली का दबाव पड़े) इसी तरह और भी समझ लेना चाहिये जैसे सा × ३–सा × ४–सा × ५ इत्यादि–

हाथ को हथियार की तरह तैयार करना।

अपने हाथ को हथियार की तरह तैयार करो जितना परिश्रम हाथ के तैयार करने में किया जायगा उतनाही शीघ्र इस बाजा में सफलता प्राप्त करोगे हाथ का तैयार करना केवल पल्टोंही से भले प्रकार हो सकता है गायन से नहीं जैसा कि बहुधा अज्ञान शिक्षकों का विचार है शीघ्रता कदापि नहीं करनी चाहिये और बोल निकालने से प्रथम संयम करना

चाहिये, जब सीखने वाले का हाथ तैयार हो जाता है तो वह स्वयं गायन निकाल सकता है गायन का निकालना हाथ के तैयार करने से बहुत सरल है—

कोई कोई शीघ्रता करने वाले अज्ञान शिक्षक जहां चार पांच वार सरिगम वजालेते हैं तहां तुरन्त गायन के पीछे हाथ धोकर पड़जाते हैं जिसका परिणाम यह होता है कि सदैव नैराश्यता का मुख देखते हैं और उनको जन्मभर तक कुछ भी योग्यता नहीं प्राप्त होती न स्वयं उनको कुछ आनन्द आता है और न गाने वाले का चित्त प्रसन्न होता है—

वहुधा ऐसे शौक़ीनों को समय निरर्थक व्यतीत करते हुये देखा है भाग्यवश कुछ चीज़ें याद भी होगईं तो वह भी अधूड़ी, आस्थाई किधर को जाती है तो अन्तरा किधर को जाता है न घटाव वढ़ाव ठीक है न स्वर की खबर है फिर भला रागिनी क्या आनन्द दे सकती है अस्तु हे हारमोनियम के शौक़ीनो ! सबसे पहिले अपने हाथ को तैयार करो फिर किसी गायन को वजावो देखो रागिनी कैसा रंग पकड़ती है और सुनने वाले कैसे मस्त होकर झूमते हैं—

प्रैक्टिस ।

शौक़ीनो ! यदि आप वस्तुतः हारमोनियम में सफलता प्राप्त करने की आशा रखते हो और आपकी इच्छा इसी ओर है तो नीचे के पल्टों पर हाथ चलाइये और अपने वहुमूल्य समय को निरथक न व्यतीत करके इन्हीं पल्टों को भले प्रकार स्मरण कीजिये जोकि आपको एक होनहार और योग्य हार-मोनियस्ट वनादेंगे जब उँगलियां भले प्रकार चालू हो जायँ तब आगे गतों पर हाथ तैयार कीजिये—

प्रतिज्ञा ग्रन्थकार—यदि कोई महाशय नीचे के पल्टों पर भले प्रकार अभ्यास करके ग्रन्थकार से कुछ लेना चाहैं तो शुभ-चिन्तक प्रतिज्ञा से निवेदन करता है कि नित प्रति २० बीस तर्ज़ें नवीन हारमोनियम के सीखनेवाले को याद करा सकता है यदि कुछ गाना भी जानता हो और उर्दू, नागरी, अँगरेज़ी, पंजाबी, तैलिंगी, पूर्वी, फ़ारसी भाषाओं में से किसी एक भाषा में अभ्यास रखता हो—

ग्रन्थकर्त्ता.

पल्टे ।

पल्टा- सारिगम को प्रथम एक चाल में बजाते हुये ऊपर चढ़ना और फिर उसी चाल से नीचे उतरते हुये आना—इस उलट पलट को पल्टे के नाम से प्रख्यात करते हैं—

पिछले लेखों में यह बतलाया गया था कि उँगलियां पर्दों पर किस प्रकार चलानी चाहियें अब उसी नियम से यह पल्टे लिखे जाते हैं शिक्षक को ध्यान करके बजाना चाहिये—

सरल पल्टे ।

नीचे चार पल्टे उँगलियों के ज़रब देने के अभ्यास के लिये लिख गये हैं ध्यान करके एक चाल में उँगलियां चलाओ—

पल्टा नम्बर (१)

साँ—नी—धा—पा—मा—गा—रे—सा

पलट ।

सा—रे—गा—मा—पा—धा—नी—साँ

पल्टा नम्बर (२)

सां–नी × २–धा × २–पा × २–मा × २–गा × २–रे × २–सा × २

पलट ।

सा–रे × २–गा × २–मा × २–पा × २–धा × २–नी × २–सां × २

पल्टा नम्बर (३)

सां–नी × ३–धा × ३–पा × ३–मा × ३–गा × ३–रे × ३–सा × ३

पलट ।

सा–रे × ३–गा × ३–मा × ३–पा × ३ [illegible] ३–नी × ३–सां × ३

पल्टा नम [illegible]

सां–नी × ४–धा × ४– [illegible] सा × ४

पलट ।

सा–रे .. गा .. मा .. पा .. धा .. नी .. सॉं ..

पल्टा नम्बर (७)

सॉं–नी...धा...पा...मा...गा...रे...सा...

पलट ।

सा–रे...गा...मा...पा...धा...नी...सॉं...

पल्टा नम्बर (८)

सॉं–नी....धा....पा....मा....गा....रे....सा....

पलट ।

सा–रे....गा....मा....पा .. धा....नी....सॉं....

नोट

उपरोक्त पल्टे उँगलियों को ठहराकर चला ने के लिये बहुत अच्छे हैं ंगलियां बराबर ठहरती रहें–

तीसरी विधि ।

नीचे के पल्टे उँगलियों के तैयार करने के लिये सबसे उत्तम हैं यदि इनपर भले प्रकार अभ्यास किया जाय तो ज़म्-ज़मे व और राग रागिनी में आनन्द पैदाकर सकते हैं ।

" दो उँगलियों के तैयार करने का पल्टा "

पल्टा नम्बर (९)

सॉं नी–नी धा–धा पा–पा मा–मा गा–गा रे–रे सा–

पलट ।

सा रे–रे गा–गा मा–मा पा–पा धा–धा नी–नी सॉं–

" तीन उँगलियों के तैयार करने का पल्टा "

पल्टा नम्बर (१०)

सां नी धा—नी धा पा—धा पा मा—पा मा गा—मा गा रे—गा रे मा—

पलट।

सा रे गा—रे गा मा—गा मा पा—मा पा धा—पा धा नी—धा नी सां—

" चार उँगलियों के तैयार करने का पल्टा "

पल्टा नम्बर (११) (अ)

सां नी धा पा—नी धा पा मा—धा पा मा गा—पा मा गा रे—मा गा रे सा—

पलट।

सा रे गा मा—रे गा मा पा—गा मा पा धा—मा पा धा नी—पा धा नी सां—

पल्टा नम्बर (१२) (व)

सां नी धा पा मा—नी धा पा मा गा—धा पा मा गा रे—पा मा गा रे सा—

पलट।

सा रे गा मा पा—रे गा मा पा धा—गा मा पा धा नी—मा पा धा नी सां—

चौथी विधि।

नीचे के पल्टे उँगलियों को शीघ्रगामी बनावेंगे हारमोनियम शिक्षक को चाहिये कि क्रमानुसार शीघ्र उँगलियां चलाये—

पल्टा नम्बर (१३)

सॅा–.नी . धा. पा . मा . गा . रे . सा–

पलट ।

सा–. रे . गा . मा . पा . धा . नी . सॅा–

पल्टा नम्बर (१४)

सॅा– .. नी .. धा .. पा .. मा .. गा .. रे .. सा–

पलट ।

सा– .. रे .. गा .. मा .. पा .. धा .. नी .. सॅा–

पल्टा नम्बर (१५)

सॅा–...नी...ध ...पा...मा...गा...रे...सा–

पलट ।

सा–...रे...गा...मा...पा...धा...नी...सॅा–

पल्टा नम्बर (१६)

बहुत शीघ्रता से उँगलियां चलाना चाहिये–

सॅा–....नी....धा....पा....मा....गा....रे....सा–

पलट ।

सा–....रे....गा....मा....पा....धा....नी....सॅा–

पांचवीं विधि ।

नीचे जो पल्टे लिखे गये हैं यह काले और सफ़ेद पर्दों की प्रैक्टिस में बहुत अच्छे रहेंगे चिह्नों का ध्यान रक्खो–

पल्टा नम्बर (१७)

सॅा–नी–धा–पा–मा–गा–रे–सा–

पलट।

सा—रे—गा—मा—पा—धा—नी—सां—

पल्टा नम्बर (१८)

सां नी धा—नी धा पा—धा पा मा—पा मा गा—मा गा रें—गा रे सा—

पलट।

सा रे गा—रे गा मा—गा मा पा—मा पा धा—पा धा नी—धा नी सां—

पल्टा नम्बर (१६)

सां नी धा पा—नी धा पा मा—धा पा मा गा—पा मा गा रे—गा गा रे सा—

पलट।

सा रे गा मा—रे गा मा पा—गा मा पा धा—मा पा धा नी—पा धा नी सां—

पल्टा नम्बर (२०) *

सां—नी—धा—पा—मा—गा—रे—सा—

पलट।

सा—रे—गा—मा—पा—धा—नी—सां—

---

* यहां सफ़ेद और काला दोनों (मा) का स्वर काम में लाया जावेगा—

अभ्यास

हारमोनियमशिक्षक को चाहिये कि सब पल्टों पर विशेष अभ्यास करे और जब उँगलियां भले प्रकार तैयार हो जायें तो आगे गतों को वजाये जिससे कि हाथ हथियार हो जायेगा यद्यपि आपको यह पल्टे और गतें बहुतही खराब ज्ञात होती होंगी और चित्त घबड़ाता होगा तद्पि आपको दृढ़ता से काम करना चाहिये—कहावत है कि जिस कार्य का आरम्भ अच्छा होता है उसका परिणाम भी सदैव अच्छाही होता है यदि आपने परिश्रम करके इन पिछले पल्टों पर भले प्रकार अभ्यास कर लिया है तो सत्य मानिये कि आप हारमोनियम बजाना जान गये कारण कि सब राग रागिनी इन पिछले पल्टों पर भिन्न भिन्न प्रकार से बज सकती हैं—

गायन बजाना और बोल निकालना ऐसा सरल है कि आप पांच मिनट में कर सकते हैं परन्तु उँगलियों का ठीक करना अति कठिन है और हारमोनियम बाजे में केवल यही परिश्रम का काम है यदि आपने अपनी उँगलियों को स्वाधीन कर लिया है तो फिर कोई ऐसी कठिनता शेष न रहैगी कि जिसका सरल करना असम्भव हो—

हारमोनियम के शौक़ीनो! हियाव हारकर न बैठ जाइये नितप्रति कम से कम दो घंटे अवश्य अभ्यास किया कीजिये अभी गायन का ध्यान तक न करो यदि कोई कहे तो भी साफ़ इंकार करदो—किसी दूसरे सीखनेवाले को देखकर मूर्खता कदापि नहीं करनी चाहिये जितना परिश्रम आपको इन पल्टों के तैयार करने में होगा उसका सवां भाग भी बोल निकालने में न होगा दृढ़चित्त हो स्थायी रक्खो—

पलट।

सा–रे–गा–मा–पा–धा–नी–सां–

पल्टा नम्बर (१८)

सां नी धा–नी धा पा–धा पा मा–पा मा गा–मा गा रे–गा रे सा–

पलट।

सा रे गा–रे गा मा–गा मा पा–मा पा धा–पा धा नी–धा नी सां–

पल्टा नम्बर (१९)

सां नी धा पा–नी धा पा मा–धा पा मा गा–पा मा गा रे–गा गा रे सा–

पलट।

सा रे गा मा–रे गा मा पा–गा मा पा धा–मा पा धा नी–पा धा नी सां–

पल्टा नम्बर (२०) *

सां–नी–धा–पा–मा–गा–रे–सा–

पलट।

सा–रे–गा–मा–पा–धा–नी–सां–

---

* यहां सफ़ेद और काला दोनों (मा) का स्वर काम में लाया जावेगा—

अभ्यास

हारमोनियमशिक्षक को चाहिये कि सब पल्टों पर विशेष अभ्यास करे और जब उँगलियां भले प्रकार तैयार हो जायें तो आगे गतों को बजावे जिससे कि हाथ हथियार हो जा-येगा यद्यपि आपको यह पल्टे और गतें बहुतही खराब ज्ञात होती होंगी और चित्त घबड़ाता होगा तद्यपि आपको दृढ़ता से काम करना चाहिये–कहावत है कि जिस कार्य का आरम्भ अच्छा होता है उसका परिणाम भी सदैव अच्छाही होता है यदि आपने परिश्रम करके इन पिछले पल्टों पर भले प्रकार अभ्यास कर लिया है तो सत्य मानिये कि आप हारमोनियम बजाना जान गये क्योंकि सब राग रागिनी इन पिछले पल्टों पर भिन्न भिन्न प्रकार से बन सकती हैं–

गायन बजाना और बोल निकालना ऐसा [illegible] है कि आप पांच मिनट में कर सकते हैं परन्तु उँगलियों [illegible] ठीक करना अति कठिन है और हारमोनियम बाजे में केवलही परिश्रम का काम है यदि आपने अपनी उँगलियों [illegible] कर लिया है तो फिर कोई ऐसी कठिनता शेष न [illegible] कि जिसका सरल करना असम्भव हो—

हारमोनियम के शौक़ीनो ! हियाव हारकर न
नितप्रति कम से कम दो घंटे अवश्य अभ्यास
अभी गायन का ध्यान तक न करो यदि कोपा + पा–धा–मा–
साफ़ इंकार करदो–किसी दूसरे सीखनेवा
मूर्खता कदापि नहीं करनी चाहिये जितनथीत् (नी) नहीं काम
इन पल्टों के तैयार करने में होगा उसका
निकालने में न होगा दृढ़चित्त हो स्थायी

(३) गतिदेश (सोरठ)

ताल तीन

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	सा̂	रे̂	०	०	०	०	०

सा–सा–रे–रे–रे–मा–पा–सा–नी–सा ∻

रे̂–रे̂–सा̂–नी–नी–धा–पा–सा̂–नी–सा̂ ∻

रे–रे–सा̂–नी–नी–धा–पा–पा–सा–

सा̂–नी–सा̂–सा̂–नी–नी–धा–पा–पा–मा–रे–गा ∻

नोट–यह गति बड़ी जान पड़ती है परन्तु बहुतही सरल और मनोहर है–

(४) गति सिन्दूरह

ताल तीन

पा–धा–मा–पा–पा–सा–नी–सा–सा–सा ∴ साँ–साँ–नी–

साँ–साँ–रेँ–गा–रेँ–साँ–नी– ∴

रेँ–रेँ–साँ–नी–नी–पा–मा–गा–गा–गा–रे–सा–सा–रे–

सा–मा–पा–सा–नी–धा– ∴

नोट–जल्दी जल्दी बजावो तो बहुत अच्छी ज्ञात होगी–

(५) गति केदारा

ताल तीन

पा–पा–मा–धा–पा–मा–मा–पा–पा–सा ∴ –साँ–साँ–नी–रेँ–रेँ–साँ–साँ धा–नी–साँ– ∴

धा–धा–पा–मा–मा–गा–रे–सा–सा–सा– ∴

मा–मा–पा–पा–पा–पा–धा–नी–

नोट–इस गति को ठा में अर्थात् धीरे से बजावो–

दूसरे प्रकार की गतैं

नीचे की गतैं सितार के बोलों पर लिखी जाती हैं हारमोनियम सीखने वाले को चाहिये कि सितार के बोल अच्छी तरह स्मरण करलें सितार की सरिगम नीचे लिखी है–

(१) डिर–डा–डिर–डा–ड़ा–डा–डा–ड़ा ∴ सरिगम सितार–

(१) सा–रे–गा–मा–पा–धा–नी–सा ∴ सरिगम हारमोनियम–

(६) गतिझँझौटी

पहला सप्तक							दर्मियानी सप्तक						
०	०	०	०	पा	धा	०	सा	रे	गा	मा	०	०	०

डिर डा डिर डा ड़ा डा डिर डा

××२ ×धा सा×२ रे गा गा मा×२ गा

ड़ा डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा

मा— रे सा×—२ रे गा सा* धा×× नी ××

नोट—सितार के बोल साफ़ साफ़ निकलते रहेंगे ज़बान से भी कहते जाव—

(७) गीत काफ़ी

दर्मियानी सप्तक						तीसरा सप्तक						
०	०	०	पा		०	सा	रे	०	मा	०	०	०

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा ..

पा×२ *धा सा̂×२ रे̂ पा मा̂ गा̂* सा̂

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा :

गा̂×२ सा̂ नी×२ धा पा नी धा नी

नोट—ऐसी गतें सदैव ठा की लय में बजानी चाहिये—

(८) गति ईमनकल्याण

नियमानुसार यफ़० टू यफ़०

दर्मियानी सप्तक

डिर	डा	डिर	डा	डा	डा	ड़ा
नी×२	धा	पा×२	धा	पा	गा	गा

डिर	डा	डिर	डा	डा	ड़ा	डा	डा
रे×२	गा	पा×२	गा	पा	पा	पा	पा

नोट—इस गति को बड़ी सावधानी से बजावो—

(९) गति गुरुसारंग

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	०	सा	रे	गा	०	०	०	०

डिर	डा	डिर	डा	ड़ा	डा	डा	ड़ा
रे×२	धा	मा×२	पा	नी※	धा	सा̂	नी※

डिर	डा	डिर	डा	ड़ा	डा	डा	ड़ा
नी×२※सा̂		रे̂×२	गा̂	रे̂	धा	सा̂	नी※

नोट—यह गति यफ़० टू यफ़० के नियम से अच्छी बजैगी—देखो पुस्तक हारमोनियममास्टर दूसराभाग।

(१०) गति जंगला

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	०	सा	रे	०	०	०	०	०

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा

गा×२ मा धा×१ *नी सा× नी धा पा ∴

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा

सा×२ नी धा×२ गा मा पा पा पा ∴

नोट—तेज़ी से वजावो—

हारमोनियम के साथ गाना ।

कोई कोई हारमोनियम के शौक़ीन किसी गवैये के साथ वजाने में लज्जा करते हैं और साथ देने के समय घवड़ा जाते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि ऐसे शौक़ीन कभी मजलिसों और सभावों में हारमोनियम नहीं वजाते न आरम्भ सेही किसी गानेवाले का साथ करते हैं फिर भला वह किसप्रकार हारमोनियम वजाने में योग्यता प्राप्त कर सकते हैं सदैव स्मरण रखिये कि गानविद्या के प्राप्त करने में लज्जा करना शिक्षकों के लिये वहुतही हानिकारक है सहस्रों मनुष्यों में वैठ कर रागिनी का अलाप करना, वाजों का वजाना उसी रूप में अच्छा हो सकता है जब आप लज्जा को उठाकर रखदेंगे और सभा में स्वतन्त्रता से वनावट को छोड़कर अपना काम करेंगे—

इसके अतिरिक्त गानविद्या के सीखने में कान से अधिक काम लेना पड़ता है जिसका सुननेवाला बल तीव्र होता है वह शीघ्र इस विद्या का ज्ञाता हो सकता है जैसे पाठशाला में लड़के इम्ला (डिक्टेशन) लिखने के समय जो कुछ कि मास्टर कहता जाता है वह तुरन्त उसकी वाणी के सुनतेही कागज़ पर उसी शब्द को लिख देते हैं उन्हीं में जो लड़के बुद्धिमान् होते हैं और शीघ्र लेखक भी होते हैं वह तुरन्त लिख देते हैं और कोई कोई मन्द बुद्धि और धीरे लिखनेवाले इम्ला लिखने के समय घबड़ा जाते हैं और अनेक भूलैं कर जाते हैं ऐसेही गानेवाले के साथ हारमोनियम बजाने में काम करना पड़ता है अर्थात् गानेवाले की वाणी को सुनकर तुरन्त जान लेना चाहिये कि उस समय यह आवाज़ कौन से स्वर पर है और अब हमको कौन सा पर्दा लगाना चाहिये जैसे इम्ला लिखनेवाला लड़का गुरु की आवाज़ से पहिंचान जाता है कि इस शब्द के यह अक्षर होने चाहियें इसी प्रकार गानविद्या का विद्यार्थी गवैये के गाने को ज्ञात कर लेता है कि इस गायन में यह स्वर हैं और इन स्वरों के मिलाव से यह रागिनी बना है स्कूल का लड़का जिस शीघ्रता से अपनी लेखनी चलाता है उसी शीघ्रता से नवशिक्षक हारमोनियम के पर्दे दबाने चाहियें जिस सुन्दरता से स्कूल का विद्यार्थी शब्दों को सुन्दर अक्षरों में लिखता है उसी प्रकार हारमोनियम के शिक्षक को साफ़ बोल निकालने चाहियें जैसे वह ह्रस्व दीर्घ के सहित शब्द के उच्चारण को ठीक करता है वैसेही हारमोनियम सीखनेवाले को अनवादी, बादी, समबादी स्वरों को ज़म्-ज़मे देकर रागिनी के आनन्द भरे ठाठ को बांधना चाहिये—

जबतक कि हारमोनियम के शायक़ीन किसी गवैगे का साथ हीं दे सकते तबतक वह बिल्कुल उस लड़के के बराबर हैं कि ो प्रथम पुस्तक पढ़ता है परन्तु इमूला नहीं लिख सकता है र्थात् अक्षरों को पढ़ लेता है परन्तु उनके आकार अपने हाथ े नहीं बना सकता–

इसकारण हे हारमोनियम के शौक़ीनो ! गानविद्या का इमूला लिखा करो अर्थात् हारमोनियम को किसी गाने वाले के साथ बजाने का अभ्यास किया करो जिससे आपको इस विद्या में कुछ मिलजाये नहीं तो आप किसी रूप में अपनी वांछाको फलीभूत नहीं कर सकते–गानविद्या कोई भाषा नहीं है जिसे आप थोड़े समय में ही सीख लें और बोलने लगें यह उन सोलह विद्यावों में सबसे उच्च श्रेणी की विद्या है कि जिसका चर्चा वेदों और पुराणों में विद्वानों ने तर्कणा सहित लिखा है इसके संचय करने में वर्षों परिश्रम करना पड़ता है तब भी पूर्ण-रूप से जान लेना कठिन नहीं किन्तु असम्भव है–

स्मरण रखने वाली बातें ।

(१) सातों स्वरों की आवाज़ों से कान को मित्र करो कि साथ करने में बेसुरे न हो जावो और गानेवाले के गले से स्वर मिलते रहें यह बात कुछ दिन अभ्यास करने से आवेगी जैसे तार द्वारा बात चीत करने के समय गिर-गिट्ट की आवाज़ से तमाम शब्द बन जाते हैं और सिगनेलरों (तारबाबू) को उस की आवाज़ तुरन्त ज्ञात हो जाती है ऐसेही हारमोनियम पर विशेष अभ्यास करने से सातों स्वरों के भेद भले प्रकार ज्ञात हो जाते हैं–

(२) जब हारमोनियम को बजाओ तो उसके साथ स्वयं भी गाया करो—हारमोनियम के पर्दों को देखकर उँगली न चलावो—किन्तु अपने मुख को सीधा रक्खो—बाजे पर झुककर मत बैठो यह बानि अच्छी नहीं है और गानविद्या जाननेवालों के समक्ष में यह अवगुण कहलायेगा—

(३) साथ करने में गानेवाले के आधीन बजानेवाला होता है नकि गवैया बजानेवाले के भरोसे पर गाता है इसकारण जैसे गानेवाला अपने गले को चलावेगा वैसेही बजानेवाले को स्वर देने चाहियें हां बजानेवाला जहां गवैये को बेताला या बेसुरा होता दिखाई देगा तुरन्त बाजे को बन्द कर देगा—

(४) स्वर कान से सुनकर जाना जाता है नकि आंख के देखने से जैसे कि बाज़ शौक़ीनों की बानि पड़जाती है—

"शुभचिन्तक ग्रंथकर्ता के मकान पर एक हारमोनियस्ट महाशय जिनका नाम केवल सुनाही सुना था पधारे—स्वागत और हिन्दोस्तानी लल्लो पत्तो के पीछे उन्होंने मुझसे हारमोनियम सुनने की इच्छा प्रकट की संयोगवश उस दिन मकान पर कुछेक पाहुन आगये थे इसकारण मैंने उनसे क्षमा चाही जिसके उत्तर में उपरोक्त महाशय ने स्वयं हारमोनियम बजाने के लिये मुझसे कहा मैंने तुरन्त एक कसेरायल फ़ोल्डिंग उनके आगे रख दिया जिस समय का यह चर्चा लिखरहा हूं वह सन्ध्या का समय था उक्त महाशय ने दीपक के लिये मुझसे कहा जिसका उत्तर मैंने परीक्षार्थ शून्य दिया उक्त महाशय ने बहुतेरा चाहा परन्तु अंधेरे में बिल्कुल बेसुरे होगये कारण यह था कि उनकी बानि प्रथमही से ख़राब थी जो स्वर को देखकर बजाते थे—

इसकारण जहांतक हो सके कान से काम लो क्योंकि यह विद्या कानों से ही पढ़ी जाती है और कानोंही से सुनी जाती है-

शिक्षायें ।

(१) गायन निकालने से प्रथम उसको एक दो बार गाकर याद करलो जिससे उच्चारण और रंगत ज्ञात हो जायेगी और बाजा में सुगमता से बजा सकोगे-

(२) गायन बाजे में बजाने से प्रथम यह अच्छा होगा कि हारमोनियम के पर्दों पर विना धौंकनी चलाने के उँगलियों को चालू करलें यह कार्यवाही एक ढंग की लाभदायक होगी-

(३) जहांतक हो सके बाजे के साथ तबला, मृदंग, चंग, ढोलक या और कोई खाल का बाजा बजवाया करो जिससे ताल का ज्ञान होता रहे और उँगलियां बहुत शीघ्र चलें-

(४) यदि बाजे के साथ गाना भी होतारहे तो क्याही बात है गवैया भी सुरीला हो जाये और हारमोनियम सीखनेवाला भी शीघ्र उन्नति करले-

(५) सदैव अपने बराबरवाले या किसी प्रवीण मनुष्य से बाजा सीखने का यत्न करे या उनको अपने बाजे के साथ गाने को कहे कभी भूलकर कमीनों और नीच जातों की संगति न करे अपने बराबर व योग्य मास्टरों की संगति करे जिससे कुछ लाभ भी हो-

बोल निकालना ।

जब हारमोनियम सीखनेवाले का हाथ चालू होजाय और

उँगलियों में लचक पैदा होजाय तब हारमोनियम बाजे में बोल निकालना बहुतही सरल बात है हां स्वरों की आवाज़ स्मरण करनी पड़ेगी प्रथमबार बोल निकालना कुछ कठिन ज्ञात होता है इसकारण हम कुछ उदाहरण देते हैं सीखनेवाले को चाहिये कि इनको बाजे में निकाले जब तीन चार पिसरे निकल आवें और उसके सब नियम समझ में आजायें तो आगे पूरे गायन के बोल निकालने प्रारम्भ करे–

इस किताब में बहुतही सीधे और सादे बोल दिये गये हैं शिक्षक को चाहिये कि इनका भले प्रकार अभ्यास करले जिस से इसको सब नीचा ऊँचा ज्ञात हो जाये बोल निकालने में जो चिह्न बतलाये गये हैं उनका समझना अति आवश्यक है कारण यह कि गायन का शुद्ध बजाना उन्हीं चिह्नों पर निर्भर है पहिले आपको कुछ कठिनता ज्ञात होगी परन्तु धीरे धीरे सब सरल हो जायगा एक गायन को पचास वार बजाना मानों उस पर अधिकार कर लेना है इस कारण दृढ़ता और मध्यम चाल मुख्य को समझे शीघ्रता को कभी भी काम में न लाये–

न्यू अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ बम्बई–

तमाशा ।

भूलभुलैया ।

नम्बर (१) दिलदार यार छैला से नैना लड़ायेंगे–
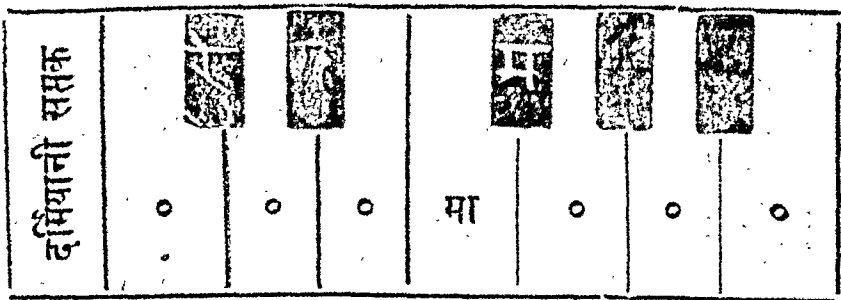
केवल चार काले पर्दों पर बजाइये और मा सफ़ेद भी लगाइये–

दिलदार	र	या	र	छै	ये	ला	से
मा×२॰	॰गा*	मा	॰मा*	॰मा॰	॰गा*	रे॰*	गा*

नैनालड़ा	यें	गे
मा×४॰	गा*	मा॰

नोट–बीचवाली लय में बजावो–ठहराव का ध्यान रक्खो–

दी इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी आफ धौलपुर-

तमाशा।

शकुन्तला।

नम्बर (२) ज़रा अन्दर चलो जानी अहा हा हा-हो हो हो-

ज़रा	अन	चलो	जा	नी	अहा	हा	हाआ
गा×२	.रे	मा×३	गा*	पा.	मा×२	गा.*	.रे×२.

हो	हो	हो
सा	रे	सा
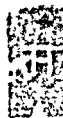
नोट—ताल क़ौवाली में ग़ज़लों की तरह बजाओ—

दी पारसी थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ बम्बई—

तमाशा।

हास्यं।

नम्बर (३) अजी साहब नतीजा मिल जायगा—

अजी	सा	हब	न	ती	जा	मिल	जा	ये
•मा×२	गा※	रे×२.		गा※	नी※	※धा•	मा※	मा

गा
गा•※

नोट—जहांतक हो सके जल्दी बजाओ परन्तु ठहराव का ध्यान रक्खो—

दी कर्ज़न थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ कलकत्ता-

तमाशा।

दिलफ़रोश।
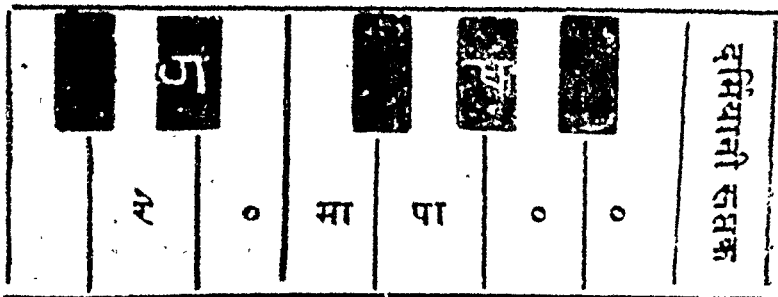
नम्बर (४) तुम्हें दूंगा मैं बाकी खबरिया जान-

तु	म्हें	दूं	गामैंबाकी	ख	बरि	या	जान
•गा※	•रे	गा•※	मा×४•	पा	धा※	•पा	मा•

नोट-शीघ्रता से बजाओ—प्रत्येक शब्द को पृथक् पृथक् दिखलावो—

दी विक्टोरिया थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ बम्बई—

तमाशा।

हरिश्चन्द्र।

नम्बर (५) हज़ारा मेरे कान का मोती—
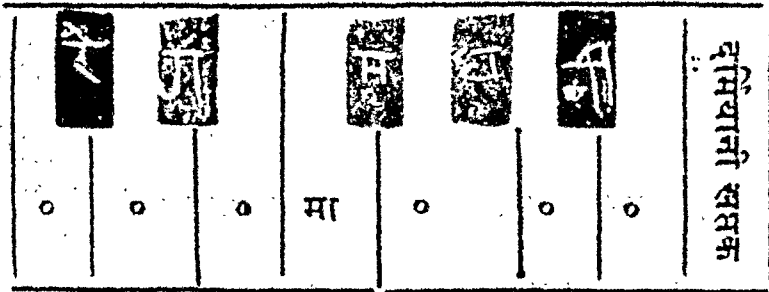
इस पद में सब कालेही पर्दे काम में लाये जावेंगे केवल मा स्वर का पर्दा सफ़ेद लगेगा—

ह	ज़ा	रह	मे	रे	का	न	का	मो
मा*	मा.	धा*	धा*	नी*	धा*	मा*	मा.	रे*

ओ	ती
गा*	मा.

नोट—यह बोल बहुत सरल है धीरे धीरे बजाओ जल्दी मत करो—

दी कारोनेशन थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ कलक

तमाशा।

चन्द्रावली।

नम्बर (६) लज्जा रखले ओ शंकर–

दर्मियानी सप्तक तीसरा सप्त

०	०	गा	मा	पा	०	०

ल	जी	या	आ	र	ख	ले	ओ-श
धा*	नी*	धा·*	पा				धा×२*

ओल्ड अल्फ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी आफ बम्बई—
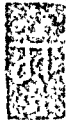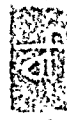
तमाशा ।

असीरहिर्स ।

नम्बर (७) हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया—

दर्मियानी सप्तक   तीसरा सप्तक

०	०	मा	पा	०	०	सा	

हा	य	मु	झे	दर	दे	जि	ग	र
पा.	.सी.	.नी॥	सी॥	धा॥	नी॥	धा	पा	मा

ने	स	ता	या
गा.॥	मा	धा.॥	पा..

नोट—कम से कम दश पन्द्रह वार बजावो—

दी अलफ्रेंड्रा थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ देहली—

तमाशा।

चूंचूंका मुरब्बा।

नम्बर (८) मैंतो भर नख़रे से आई करती छुल और ठट्ठा—

(नाच)

सा	रे	गा	मा	०	०	०	दर्मियानी सप्तक

सिर्फ़ चार पर्दों पर यह पद बजेगा—

मैंतो	भर	न	ख़रे	से	आ	ई	करती	छुल	और
सा×२.	रे	गा	रे	सा	रे	गा	मा×२.	गा.	रे×२

ठट्ठा
सा×२..

नोट—इस पद को इसप्रकार बजाओ जिससे एक एक बोल कट कट कर पृथक् होता रहे नहीं तो कुछ आनन्द न आयेगा—

दी महबूबशाही थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ हैदराबाद दक्षिण–

तमाशा।

इन्द्रसभा।

नम्बर (९) अंगिया लागी सुँदर बन जलगयोरे–

अंगिया	ला	गी	सु	न्द	र	बन	ज	ल
सा×२	रे	गा.※	रे	गा※	.मा	पा×२	गो※	मा

ग	यो	रे
गा※	रे.	सा

नोट–बीच की लय में बजावो–

दी जुबली थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ जोधपुर—

तमाशा।

ज़हर की अंगूठी।

नम्बर (१०) है दिल बुरी बला—कहूं मैं दोस्त क्या—
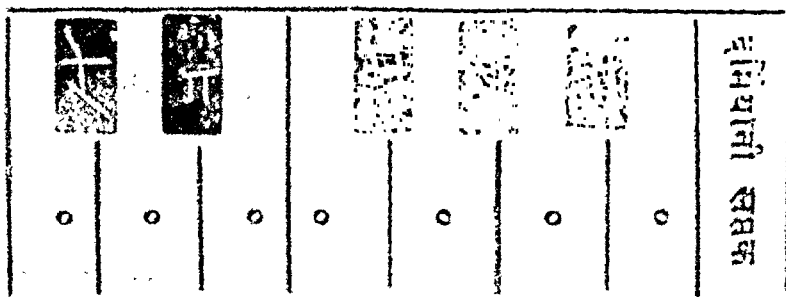
इस ढंग के बजाने से पहिले हारमोनियम बाजे की थरथरी आवाज़ करो ट्रेमलू स्टाप के खोलने और सब स्टाप के बन्द कर देने से बाजा में पैदा होती है यह आवाज़ निहायत दर्दनाक होती है और थियेट्रिकल कम्पनियों में सूली—फांसी—क़त्ल या किसी ख़ौफ़नाक या ग़मनाक सीन में गाई और बजाई जाती है—

(सब कालेपर्दे)

है	दिल	बु	री	ब	ला	क	हूं	मैं
रे.❋	मा.❋	धा❋	नी.❋	धा❋	मा.❋	गा❋	मा.❋	धा❋

दो	स्त	क्या
नी❋	धा❋	मा.

नोट—बहुतही धीरे उँगलियां चलावो—ग़मनाक लहजे में गावो—

तबला और ताल।

इस किताब में जितने गायन लिखेगये हैं वह नीचे की तालों पर अच्छे बजेंगे-

तबला।

ताल तीन-धा-धा-धींग-धा-धा-धींग-ता-ता-तींग-धा-धा-धींग-(समका स्थान) ताल दादरा-धां-तिरकिड़ता-धा-धीन-ता-(समका स्थान)

ताल।

(१) ताल तीन सोलह मात्रा का होता है-

(२) ताल दादरा छः मात्रा का होता है-

(३) ताल क़ौवाली कहरवे की तरह होती है यानी आठ मात्रा का होता है-

नोट-तमाम तालों की कैफ़ियत " हारमोनियम मास्टर बारहवां भाग " देखने से ज्ञात हो सकती है—ग्रंथकार

संकेतें।

ध्वनि–इस किताब में जो गायन लिखे हैं उनकी ध्वनि भी बतलाई गई है जिससे सीखने वाले को ज्ञात हो जाय कि अमुक गायन अमुक रंगत में बजेगी जैसे ध्वनि पहाड़ी–बज़ला आदि–

ताल–जबतक सीखने वाला ताल से भिज्ञ न होगा कभी भी गायन को अच्छे प्रकार नहीं बजा सकता इस कारण लय ताल को स्थिर करके गायन लिखे गये हैं–

लय या डगर–गायन के अलापने की चाल भी बतला दी गई है जिसमें बजाने के समय हारमोनियम सीखने वाला भूल न कर जाय–

समय–यदि ठीक समय पर रागिनी अलापी जाय तो ज़रूर असर होगा प्रैक्टिस के लिये हारमोनियम सीखने वाले को समय की पाबन्दी नहीं जब इच्छा चाहै किसी रागिनी को अलापै कुछ हर्ज न होगा–

समका स्थान–जब ताल का दौरा खतम होता है और वहां से ताल फिर प्रारम्भ होता है इस स्थान का नाम सम या गर का स्थान है इसके जानने के लिये किसी समय अच्छे अच्छे जाननेवाले भूल करजाते हैं इससे हमने हर गायन में समका स्थान बतला दिया है जिससे कभी भूल न होगी–

गायन नंबर (४१)

ध्वनि पहाड़ी-ताल तीन-लय दर्मियानी-वक़ तमाम दिन सम की जगह " खा " पर-

यह तर्ज़-मय ख़्वारी की जड़ है पैमाना

तर्ज़ थियेटर ।

तमाशा चन्द्रावली-कारोनेशन थियेट्रिकल कम्पनी आफ़ कलकत्ता बाग़-चन्द्रावली के हमराह बाग़ में सहेलियों का आना- एक का गाना-

(१) दही वाली का तौर दिखाना

(चलते हुये)-(२) लटका-बना बना दिखा दही वाली का तौर दिखाना-

(३) चन्द्रबदना-मदभर नयना-

(४) कर लटका-और झटका-

चलो चलो सहेली वहां जाना-

दही वाली का तौर दिखाना-

दमियानी सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	०	०	०	०	०

(१) द ही वा ली का तौ औ र दि खा ना ∴
धा नी* रे. सा. नी धा पा मा पा नी. धा

(२) लट का ब ना ब ना दि इ खा
मा×२ पा मा धा पा नी* सा नी* धा

दही वाली—

(३) च न द र वदना मदभ रे नै ना ∴
मा पा मा नी. धा×३.. नी×४* सा. नी. धा

(४) क र ल ट का औ र झ ट का ∴
धा नी* धा नी रे. सा नी* धा पा मा.

(चलो चलो सहेली वहां जाना) यह वज़न दही वाली का तौर दिखाना—बजाओ—

नोट—यह तर्ज़ बहुतही आसान और चलती हुई है इस तर्ज़ को बहुधा लोग गाते हैं परन्तु जो आनन्द चन्द्रावली के तमाशे में ऐक्टर्स गाकर पैदा करते हैं हर समय के बजाने गाने में नहीं आता—ऐसी थियेट्रिकल तर्ज़ें ऐक्टर को आसक्त करती हैं कि वह उन को करके दिखा दे अर्थात् साथ नाच भी हो जिससे गायन के अर्थ समझ में आयें—

गायन नंबर (४२)

ध्वनि पहाड़ी—ताल तीन—लय दर्मियानी—वक्त तमाम दिन सम का स्थान " वुन्दां " के वाद

तर्ज़ " कैसी करी करतार "

ठुमरी मल्हार ।

राजा केवड़िया खोल रस के वुन्दां गिरैं
विजली चमकै—वादल गरजै—आई घटा घनघोर—रसकी वुन्दां गिरैं
राजा केवड़िया खोल रस के वुन्दां गिरैं

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	०	०	०	०	०

राजा	के	व	ड़ि	या	खो	ल	रस	के	ए	वुन्दां
नी×३		धा	पा	धा	पा.	मा	'रे×२.	मा	पा	धा×२

गिर	ऐं
पा	मा.

विजली	चम	के वादल	ल	ग	र	जै
मा धा.	नी×२	सा×३	रे^	सा	नी	धा.

(आई घटा घनघोर रसके वुन्दां गिरैं) वजावो—वज़न राजा केवड़िया खोल—

नोट—यह मल्हार की ठुमरी बरसात की ऋतु में अनूठा आनन्द देती है इस तर्ज को ठा में वजाओ—

गायन नंबर (४३)

ध्वनि पहाड़ी-ताल दादरा-लय दुगुन-वक्र तमामादिन-तर्ज़-मज़ादेते हैं क्या यार तेरे बाल घूंघर वाले

दादरा अंगरेज़ी

यां भी होते जाना यार-काली काली ज़ुल्फ़ों वाले-

(दुगुन) काली काली ज़ुल्फ़ों वाले काली काली ज़ुल्फ़ों वाले-

मुश्किल से मिला था इकयार-

होगई वोसे पर तकरार;

अच्छे होते हैं दिलदार

पर ख़ुदा न पाला डाले

यां भी होते जाना यार-काली काली ज़ुल्फ़ों वाले

दर्मियानी सप्तक

सा	रे	गा	मा	पा	धा	०
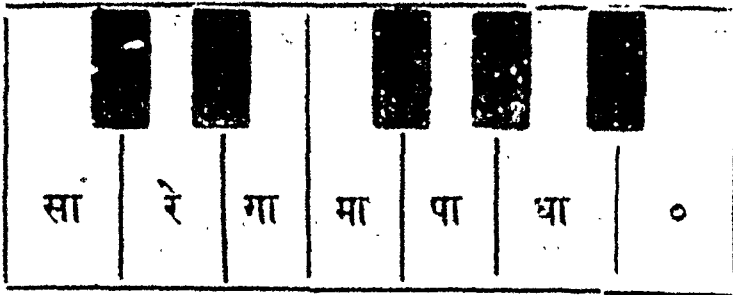
थां भी हो ते जा ना यार काली काली जुल्फों वाले
साX२ रे गा रे सा. मा X ५ गाX२ रेX२ साX२ ∴

काली काली जुल्फों वा ले का ली काली जुल्फ फों वाले
∴ मा X ७ रे मा पा धाX२ पा मा गा. ∴

मुश्किल से मिला था इक यार होगई वो से पर त क
सा X ३ रेX२ मा X ३ पा. पाX२ मा धा X २ पा मा

रार अच्छे हो ते हैं दिल दार पर खु दा न पाला
पा. माX२ मा धा पा सा. गा. गाX२ गा रेX३

आ डाले
गा साX२.

नोट—दादरा को स्वच्छता से बजावो—सादे ढंग पर दिया गया है ज़मज़म लगाकर बजावो—

ध्वनि पहाड़ी–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्त दिन भर

तर्ज़–चली आती हैं नज़रें तुमसे दरबार क़ातिल में–

ग़ज़ल दाग़ नंबर (४४)

बुताने मा हवश उजड़ी हुई मंज़िल में रहते हैं

कि जिसकी जान जाती है उसी के दिलमें रहते हैं

मुहब्बत में मज़ा है छोड़ का लेकिन मज़े की हो–

हज़ारों लुत्फ़ हर इक शिकवये बातिल में रहते हैं

हज़ारों हसरतें वह हैं कि रोके से नहीं रुकतीं

बहुत अरमान ऐसे हैं कि दिलके दिलमें रहते हैं

खुदा रक्खे मुहब्बत को किये आबाद दोनों घर

मैं उनके दिलमें रहता हूं वह मेरे दिलमें रहते हैं

कोई नामोनिशां पूछे तो ऐ क़ासिद बता देना–

तखल्लुस दाग़ है वह आशिक़ों के दिलमें रहते हैं–

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक					
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	००

स्थायी	बुतानेमा	ह	व	श	उ	ज	ड़ी	हुई…	ई	
	सां×४.	.नी	.सां	.रे ^	सां	नी	धा.	पा.	मा	
	म	न	ज़िल	में	र	हते…	ए	हैं		
	गा	सा	रे	सा	रे	गा×२.	रे	सा..		
अन्तरा	मुहब्ब	त	में	म	जाहै…	ए	छे	ड़का	ले	
	पा×३	धा	सां	नी	धा×२	नी	सां	पा×२	धा	
	किन	म	ज़े	ए	की	हो	ओ	ओ	ओ	ओ
	सां.	रे ^	सां	गां	रे ^	सां	..नी	धा	पा	धा

नोट—यह ग़ज़ल प्रख्यात है हर एक मनुष्य इसके ढंग से जाता है यहां पर यह ग़ज़ल बहुतही उत्तमता से लिखी गई है ठहराव का ध्यान रखके बजाओ और जहां उँगली देरतक ठहरेगी उसके बिन्दु दिये गये हैं ध्यान करके बजाओ—

गायन नंबर (९५)

ध्वनि पहाड़ी–ताल तीन–वक़ दिन–लय धीमी–समकी जगह " कर पर "

तर्ज़ " शग़ल गर ढूंढते हो दिल के बहलाने के लिये "–

ग़ज़ल

शर्म थी आंख में पर्दे से निकलते क्योंकर ।
न सही शर्म नज़ाकत से वह चलते क्योंकर ॥

न नज़ाकत सही वह मेंहदी लगाये होंगे
फिर वह तलवे से दिले ज़ार को मलते क्योंकर

न सही मेंहदी किसी ग़ैर से वादा होगा
सादिकुलक़ौल थे वादे को बदलते क्योंकर

न सही वादा लटें शाने पर लटकी होंगी
बोझ लेकर के वह चलते तो सँभलते क्योंकर

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

स्थाई

शर्म थी	आंख	में पर	दे	से	निक	ल	ते	क
गा×३.	रे×२	सा×३.	नी+	धा	+पा×२	+धा	नी+	..सा

यों	कर
नी	धा.+

नोट—गायन के दूसरे सब मिसरे ऊपरी तर्ज़ पर बजावो—

अन्तरा

न सही	मेंह	दी किसी	ई	ग़ैर से	वा	दा
.पा×३+	धा+	सा×३	रे.	सा×३	रे	गा.

होगा	गा	आ	आ
रे.	सा	नी+	धा×

नोट—पहिले सब मिसरे ऊपरी तर्ज़ पर बजेंगे-

नोट—यह ग़ज़ल बहुत अच्छा ढंग रखती है जो नियम ऊपर लिख दिया गया है वह बिल्कुल सादा है शिक्षक को चाहिये कि ज़मज़मे देकर ग़ज़ल में सुन्दरता उत्पन्न करे यद्यपि यह ग़ज़ल आनन्द-मय और गंभीराशय है इससे इसका ढंग भी अनुपम स्थिर किया गया है अलबत्ता थोड़े परिश्रम से तैयार होगी और ग़ज़लियात के ढंग इसके सामने कुछ भी नहीं—

निवेदन
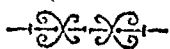
हे प्रेमियो ! "हारमोनियममास्टर चौथा भाग" आप की भेट है । इसमें हितैषी ने भिन्न भिन्न रंगत–भिन्न भिन्न ढंग की देशी राग रागिनियों को नमूने के ढंग पर चुन चुन करके लिखी हैं जिससे बहुत कुछ लाभ इस विद्या के सीखनेवालों को होगा और मनमाना लाभ उठावेंगे–

पहिले तीन भागों में हारमोनियम बजाने और साथ करने की सरल रीतें बता चुका हूं जिनसे हर एक मनुष्य लाभ उठाकर इस पुस्तक की सहायता से हारमोनियममें गायन भले प्रकार बजासक्ता है यहही नहीं वरन् हर प्रकार के गायन स्वयं निकाल सकता है–
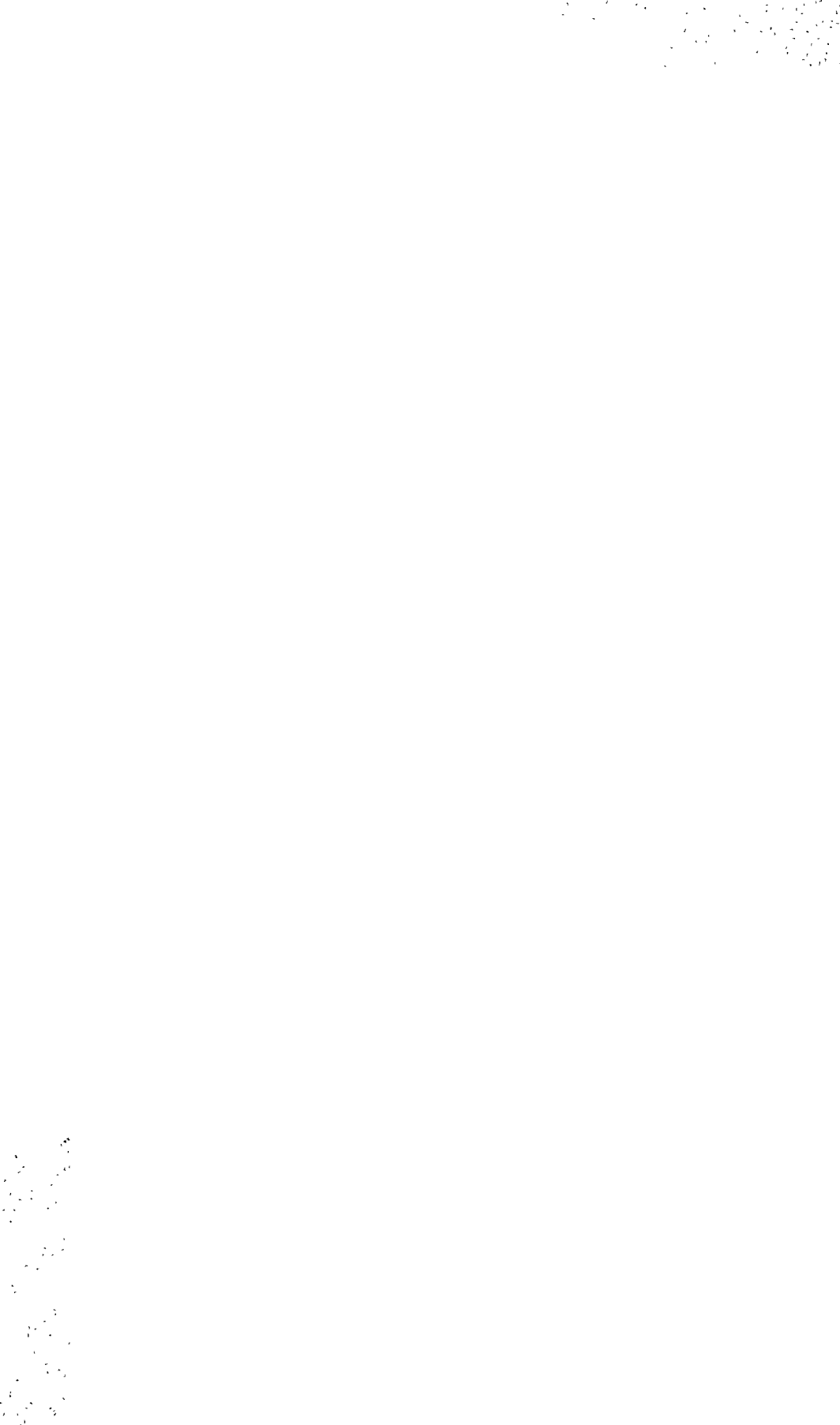
संकेतैं

ध्वनि—गायन में राग या रागिनी का ठाठ ज्ञात करने के अर्थ इस पुस्तक में ध्वनि का नाम लिख दिया गया है जिसमें सीखनेवाले को ज्ञात होजावे कि यह गायन किस रंगत में वजाई जावेगी जिसमें आनन्द दूना हो जाय जैसे ध्वनि ज़िला—क़ाफ़ी—कल्याणादि—

ताल—इस पुस्तक में ध्वनि के साथ ताल भी वतला दिया गया है जिसमें स्वर और ताल के ज्ञात हो जाने से रागिनी रंग पकड़े और साज़ वेताला न वजे। ताल के दौरे और उनके वोल पृष्ठ (६–७) पर लिखदिये गये हैं, सीखनेवाले को चाहिये कि उनको अच्छी तरह स्मरण करले। जैसे, ताल तीन—क़ौवाली—दादरा—कहरवा आदि—

लय—विना लय के गाना ठीक नहीं हो सकता। शिक्षक को लय का ध्यान अवश्य रखना चाहिये अर्थात् ठा (आहिस्ता) दुगुन (जल्दी) आदि—

समय—यदि गायन को रागिनी के नियमित समय पर बजाया जावे तो तुरंत असर होता है। हारमोनियम सीखने वाले के अभ्यासार्थ समय की विशेष आवश्यकता नहीं—

सम का स्थान—जब ताल के दौरे का अन्त हो जाता है और वहां से फिर ताल प्रारम्भ होता है तो सम के स्थान का ध्यान रखना आवश्यक है, इसकारण इस पुस्तक में सम का स्थान बतलादिया गया है—

स्मरण रखने की बातें

(१) बाजे की धौंकनी धीरे धीरे चलानी चाहिये–

(२) जो चीज़ बाजे में बजानी चाहो उसको पहिले जान लो कि कहां से प्रारम्भ होती है और किस राग का ठाट बांधना चाहिये–

(३) किसी गवैये के साथ बाजा बजाया करो जिसमें शीघ्र कार्य की पूर्ति हो। लज्जा कभी भी न करना चाहिये और न घबराना चाहिये यदि बिल्कुलही अपरिचित हो तो केवल षड्जही का साथ दिया करो कुछ बुराई की बात नहीं–

(४) हारमोनियम बजाने के पहिले पर्दे पर उँगली रखकर धौंकनी चलाओ नहीं तो हवा रुक जायगी और बाजा शीघ्रही बिगड़ जावेगा–

(५) सीखनेवाले के लिये जल्दी जल्दी बाजा बजाना अच्छा नहीं केवल मूर्खता न कर बैठे नहीं तो सदैव के लिये यह बुरी बानि सफलता प्राप्त न करने देगी–

(६) गाने का अभ्यास अवश्य करना चाहिये इससे बजाने में सुगमता होगी–

(७) सीखनेवाले को एक दिन में एक गायन इस पुस्तक का स्मरण कर लेना कोई सुगम बात नहीं। जब तक एक गायन ठीक न हो दूसरी को निकालना निरर्थक है–

आवश्यकीय चिह्न

पहिलासप्तक–जिस पर्दे पर + यह चिह्न हो वह पर्दा पहिले सप्तक का होगा जैसे सा–रे–गा आदि–
+ + +

दर्मियानीसप्तक—जिस पर्दे पर कोई चिह्न न हो वह सफ़ेद पर्दा होगा और केवल दर्मियानी सप्तक में काम में लाया जावेगा जैसे—सा—रे—गा आदि—

तीसरासप्तक—जिस पर्दे पर केवल ^ यह चिह्न होगा

^ ^

वह तीसरे सप्तक का पर्दा होगा जैसे सा—रे—गा आदि—

कालापर्दा—जिस पर्दे पर सूर्य * का चिह्न होगा वह

* * *

निस्सन्देह काला पर्दा होगा जैसे—रे—गा—मा आदि—

सफ़ेदपर्दा—जिस पर्दे पर सूर्य का चिह्न न हो वह पर्दा सफ़ेद होगा—

वक़्फ़ा—(१) जिस पर्दे के आगे कोई बिन्दु हो तो वहां उँगली को ठहराना चाहिये (२) यदि एक बिन्दु हो तो एक मात्रा ठहरना चाहिये और एक से अधिक हों तो उतने ही मात्रा वक़्फ़ा देना चाहिये जैसे सा. सा.. सा... आदि—

मात्रा—मात्रा उसको कहते हैं कि जितनी देरी में मनुष्य एक दो तीन कहसके, इसका चिह्न बिन्दु है (.) जैसे सा. गा. आदि।

जल्दी—जिस पर्दे से पहिले कुछ बिन्दु हों वहां उतनेही मात्रा कम ठहरना चाहिये—जैसे . सा ..सा ...सा आदि—

ज़रब—जिस स्थान पर एकही पर्दा से बहुत से बोल निकलते हैं वहां पर उसके आगे ज़रब का चिह्न × देकर जितनी बार वह दबाया जावेगा वही अंक लिख दिया गया है जैसे सा × २ अर्थात् सा को दो बार उंगलियों की ज़रब दो जैसे सा सा—ऐसेही जैसा अंक हो उतनीही बार ज़रब देनी चाहिये—

ताल और तबला

हारमोनियम के बजानेवालों को ताल का समझना जान की जहमत होजाता है। यदि वह नीचे की तालों को अच्छी तरह स्मरण रक्खें तो वे भी तबलेवाले से पीछे न रहेंगे और रागिनी में भलीभांति आनंद पैदा कर सकेंगे।

ताल

(१) दादरा—यह ताल छः मात्रा का है—

(२) तीन—यह ताल सोलह मात्रा का होता है—

पहिली ताली एक मात्रा पर—दूसरी ताली पांचवीं मात्रा पर—तीसरी ताली नवीं मात्रापर और तेरहवीं मात्रा पर खाली छोड़कर फिर पहिले मात्रा पर ताली बजाओ—

(३) चार—यह ताल १२ मात्रा का है—

(४) नकटा—यद्यपि यह ताल आठ मात्राका है परंतु समकी ताली पहिले मात्रा पर और पांचवीं मात्रा पर खाली रहेगी—

(५) कहरवा—यह ताल कौवाली के बराबर है पर ठा की लै में अच्छा रहता है और यही भेद है—

(६) कौवाली—यह ताल आठ मात्रा का है पहिली ताली पांचवीं मात्रा पर फिर एक मात्रा पर खाली छोड़ो—

(७) चंचल—यह ताल दश मात्रा का है इसकी भी पहिली ताली पांचवीं मात्रा पर, दूसरी ताली सातवीं मात्रापर और तीसरी ताली नवीं मात्रापर और फिर एक खाली होगी—

(८) मुगली—इसका दूसरा नाम दाई ताल है। यह १४ मात्रा का होता है—एक मात्रा पर खाली ताल—दूसरी ताल पांचवीं मात्रा पर—नवीं मात्रा पर खाली होगा—

(६) पश्तो—सब बातें मुगली जैसी, केवल थोड़ा भेद गाने में होता है।

तबला

ताल चार—धा तिरकिट धीन ता धीन धीन ता तिरकिट तीन ता तीन तीन—

ताल तीन—धाधा धींग धाधा धींग ताता तींग धाधा धींग—

ताल दादरा—धा तिरकिड़ ता धा धीन ता—

ताल चंचल—धा धीन धिग धीन ता तीन धिग तीन—

नोट—उपरोक्त तबले के बोल केवल सम की जगह के दिये गये हैं यदि आपको ताल से कुछ बोध करना है तो "हारमोनियम-मास्टर बारहवां भाग" को अवलोकन करिये—

ढंग

किताब से गायन किस प्रकार निकालनी चाहिये—

(१) सब से प्रथम गायन को दो एक बार गाओ और ढंग ज्ञात करो—

(२) चिह्नों के द्वारा पर्दे ज्ञात करो और दिये हुये हारमोनियम के बिन्दु से मिलाओ और ज्ञात करो कि गायन किन पर्दों पर बजेगी—

(३) जब पर्दे ज्ञात हो जायें तो बिना धौंकनी चलाने के उँगलियों को चलाओ जब भले प्रकार परिचय हो जावे तब धौंकनी भी चलाओ—

(४) बाजा बजाने के समय ज़बान से भी कहते रहो कि कौन सा अक्षर किस पर्दे पर ठीक होगा—

(५) एक गायन जब तक भले प्रकार ठीक न हो जावे तब तक दूसरे के निकालने का उपाय न करो—

(६) अपनी पसन्द की हुई गायन को आरम्भ में न निकालिये वरन इस शुभचिन्तक ने जिस क्रम से गायन इस पुस्तक में लिखे हैं उसी क्रम से चलना चाहिये—

(७) कोई कोई गायन कठिन हैं यदि वह न ज्ञात हो सकें तो हियाव हार कर न बैठ रहिये किन्तु जहां तक संभव हो सके उपाय करके बजाइये—

ग्रन्थकर्ता.

हारमोनियममास्टर

चौथाभाग
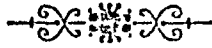
ध्वनि कल्याण—ताल चार—लय धीमी—वक्त शाम—
तर्ज़ "तू कर्तार ग़फ़्फ़ार"

इबादत (पूजा)

तू है परवर दिगार—साईं तू सिरजन हार मालिक जग संसार—तू है परवर दिगार—

हम सब तुझपर निसार—कुदरत नुदरत की वहार गुल्बन गुल्तर हज़ार—तू है परवर दिगार—

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक		
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	पा	०	०	सा	०	०

तू	है	प	र	व	र	दि	गा	र
मा.	गा.*	सा	+नी*	सा	रे*	सा	+नी*	+धा ×२

	साईं	तू	सिर	ज	न	ह	आ	र	
स्थायी	+धा*×२	नी.*	सा×२	गा*	रे*	सा	+नी*	+धा*	
	मा	लि	क	ज	ग	स	न	स आ	र
	धा*	पा	मा	पा	मा	गा*	रे*	सा +नी*	सा

तू है परवर दिगार—

हम सब	तु	भ्ह	पर	नि	सार
*मा×४	मा	मा* धा*		नी.*	धा×२

कुरतरा	कुद	रत	नुद	र	न	की	प	हार	
	पा×२	*धा×२	*नी×२	सां	रे	*सां	नी*	*धा.×२	
	गुल	ब	न	गु	ल	त	र	ह	आ नार
	धा×२	पा	मा	पा	मा	गा*	रे*	सा	+नी* सा*

तू है परवर दिगार—फिर पहिले से बजाओ—

शिक्षा

प्रातःकाल उठकर हारमोनियम के सीखनेवाले को आवश्यक है कि ऐसी "Prayers" हारमोनियम में बजाये और साथ गाता भी रहे जिससे चित्त स्वच्छ रहे और गानविद्या के रत्न को अति शीघ्र प्राप्त कर सके यह आवश्यक नहीं कि प्रातःकालही का समय हो वरन सन्ध्या का समय रागिनी की दृष्टि से अच्छा रहेगा—

अंगरेज़ी लहरा ध्वनि भैरवी–

(१) मा–गा–रे–सा }
(२) पा–धा–पा–मा }
(३) गा–मा–गारे–सा ·:·
(४) सा–रे–सा–नी }
(५) पा–धा–पा–मा }
(६) गा–मा–गारे–सा ·:·

यह लहरा वहुतही सरल है–चाल इकसां रहैगी पहिले इस ओर से कुछ चित्त खिंचैगा परन्तु पीछे जो कुछ आवेगा उस का अनुभव आपही कर सकैंगे–

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
*	* गा		* धा	* नी			* रे						
सा	०	०	मा	पा	०	०	सा	०	०	०	०	०	०

मा–गा–रे–सा–पा–धा–पा–मा–·:·

——गा–मा–गारे–सा ·:·

सा–रे–सा–नी–पा–धा–पा–मा ·:·

गा–मा–गा–रे–स.

पृथक् पृथक् टुकड़े केवल सीखनेवाले की सरलता के अर्थ कर दिये गये हैं नहीं तो वहुत शीघ्रता से बजेंगे और बहुत कम देरी टुकड़े के बीच में होगी ध्यान करके वजावो–

नोट—बजाने के समय हारमोनियम के पर्दों के नाम भी ज़बान से कहते जावो—

ध्वनि खम्माच—ताल तीन—चक्र ३ बजेशाम—लय ठा—
तर्ज़ गा* पा—नी—धा—पा ''—

राग

सा गा गा मा—पा धा नी—धा पा मा गा—नी नी नी
सा पा धा नी—धा पा मा गा—सा गा गा मा
पा धा नी—धा पा मा गा—

दूसरा सप्तक

*नी
सा रे गा मा पा धा नी
तीसरा सप्तक

सा गा गा मा—पा धा *नी—धा पा मा गा—
नी नी नी—सा पा धा *नी—धा पा मा गा—सा गा गा मा—
पा धा *नी—धा पा मा गा*

फिर पहिले से बजावो—

शिक्षा—यह राग धीरे धीरे ठा में उत्तम बजेगा—प्रैक्टिस के लिये ऐसे राग बहुत अच्छे हैं—हारमोनियम के पर्दों के नाम जिह्वा से भी कहते रहो जिसमें गाने में सुगमता हो—मजलिसों और महफ़िलों में बहुधा प्रारम्भ में राग और गतिही बजाई जाती हैं—

ध्वनि झिन्धुरा—ताल तीन—हरवक्त—लय मामूली—

तर्ज़—" डिर डा डा "

गति

डिरडा डिरडा ड़ा डा डा ड़ा

डिरडा ड़ा डा ड़ा डा डा ड़ा

अन्तरा

डिरडा डिरडा ड़ा डा डा ड़ा

डिरडा डिरडा ड़ा डा डा ड़ा

डिरडा डिरडा ड़ा डा डा ड़ा

नोट—उपरोक्त गति बहुत स्वच्छता से बजानी चाहिये बड़ी समझ कर घबरा न जाइये बहुत सरल और मनोहर है—

पहिला सप्तक		दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक		
* नी			* गा +				* नी				
०	सा	रे	०	मा	पा	धा	०	सी	रे	०	०

स्थायी

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा
गा॰ नी॰+ सा×२ गा॰ मा पा×३ × ×

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा
पा×२ गा॰ मा×२ पा मा गा॰ रे सा

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा ड़ा
पा×२ मा पा×२ नीं×२ सा×३

अन्तरा

डिर डा डिर डा ड़ा डा डा डा
सां×२ नीं× ३ रें सां नी पा× २

डि र डा डिर डा ड़ा डा डा डा
पा मा गा मा×२ पा मा गा रे सा ⁘ फिर पहिले से
बजावो

नोट—कम से कम आध घंटे में यह गति तैयार कर सकते हो—
ताल तीन—ध्वनि मलार—वक्त तीसरे पहर—लय दुगुन—
तर्ज़—" तूम तनः दिर "

तराना

तूम तना तनः दिरना नदारे दानी तनूम तनूम तनः दिरना नदारे दानी—

तूम दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तनः न न न न न न
दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तनः न न न न न न—
दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर तनः न न न न न न—
तूम तना •• •• ⁘

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
						* नी							
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	०	०	०	०	०

तूम तना ननन दि र ना त दा रे
ग×२. पा×४ धा नी सा रे सा नी

स्थायी

दा नी तनू म तनू म त नः
धा पा धा. नी धा पा धा नी

दि र ना तदारेदानी .:. तूम तना ननन:......:.
धा पा ×६

अन्तरा

दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर न न न न न न न न
रे × ८ पा × ८.

दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर न न न न न न न न
धा. × ८. पा × ८.

दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर दिर न न न न न न न न
सा. × ८ सा × ८

फिर पहिले से बजावो .:. तूम तना ननः आदि

नोट—यह तर्राना कुछ कठिन ज्ञात होगा शिक्षक को चाहिये कि पहिले तर्राने के बोलों को कंठाग्र करले फिर परिश्रम करे नहीं तो तनः न न न न में सारा दिन चला जावेगा और कुछ हाथ न आयेगा—

ध्वनिकाफी–ताल नदारद–लय चढ़ी और धीमी–वक्त तीसरे पहर–

तर्ज–"प्रीति वासे कीजिये"—

दोहा

नंबर (१)–एक तो नैना मद भरे दूजे अंजनसार ।

ऐ वैरी क्यों देत है मतवारेन हथियार ॥

नंबर (२)–जो मैं ऐसा जानती प्रीति किये दुख होय ।

नगर ढिंढोरा फेरती प्रीति न करियो कोय ॥

नंबर (३)–नदी किनारे बगुला बैठे मछली चुनि चुनि खाय ।

मछली ने कांटा हन्यो तड़पि तड़पि जिय जाय ॥

नंबर (४)–प्रीति तो वासे कीजिये प्रीति कि जानै रीत ।

प्रीति अनारी से कभी करे न कोई मीत ॥

नंबर (५) कूक करूं तो जग हँसै चुपके लागै घाव ।

विधना कठिन सनेह कर क्यहि विधि करूं उपाव॥

नंबर (६)–मीत मीत सबकोइ कहत है को केहि कर मीत ।

आज मीत बैरी कालिहि जलेरी ऐसी मीत ॥

दूसरा सप्तक

				* धा	* नी	
०	०	०	मा	पा	०	०

केवल चार पर्दों पर बजेगा (२ काले और २ सफ़ेद)

एक तो नैना मद	भरे	औ	र
*धा ×७	*नी×२..	*धा	पा

दूजे	ये	अ	न	ज	न
मा×३.	पा	*धा	*नी	*धा	पा

सार / मा.. ∴ दूसरा पद भी ऐसेही बजावो—

नोट—सब दोहे उपरोक्त नियम से बजैंगे यदि किसी दोहे में त्रुटि हो तो उसमें (रे अथवा आ आदि) अधिक करके ठीक कर लेना चाहिये—

ध्वनि भैरवी—ताल चंचल—लय दर्मियानी—वक़्त सुबह—तर्ज़—"देखोरी सखी"—

भजन

जय जय पिता परम आनन्ददाता
जगत आदि कारण मुक्ती परदाता
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे
सृष्टी का स्रष्टा तू धारता संहारता

सूक्ष्म से सूक्ष्म तू स्थूल इतना
कि जिसमें यह ब्रह्मांड सारा समाता
मैं लालित व पालित हूं तेरे सनेह का
यह प्रकृति संबंध है तुझ से ताता
करो शुद्ध निर्मल मेरी आत्मा को
करूं मैं वे अन्त साथ और माता

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				*धा	*नी		*रे	*गा					
०	०	०	मा	पा	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

जयजयपि तापरम आनन द दा ता ज गत आ दि
*नी×३ सा×३ .मा×२ *गा. *रे. सा. सा *रे .सा *नी.

का र न मुक ती पर द आ ता
*धा पा मा पा *नी .सा *गा *रे सा...

शेष सब पद उपरोक्त नियम से बजैंगे—

सूचना—बहुधा यह भजन इसी रंगत में गाया जाता है परन्तु शायक़ीन इसमें अलाप मिला करके बजाया करते हैं यह हाथ की तैयारी पर निर्भर है स्वर सब यही हैं—

ध्वनि कान्सिया-तालतीन-वक्त दोपहर-लय दर्मियानी-

तर्ज़-" चलोरी सखी दर्शन करने "-

ईश्वर भजन

राम जपन क्यों छोड़ दिया तैंने राम जपन क्यों छोड़ दियारे-

राम जपन क्यों०........

झूठे जगमें मन ललचाकर

असल वतन क्यों छोड़ दियारे

राम जपन क्यों०........

क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा

सत्य वचन क्यों छोड़ दियारे

राम जपन क्यों०........

क्यों इक हरि नाम भरोसे

तन मन धन क्यों न छोड़ दियारे

राम जपन क्यों०........

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
					नी			गा						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	रे	मां	०	०	०	०	

स्थायी

र आ म ज पनक्यों छोड़ दिया तैं ने रा
मा. पा मा नी धा×४. ना×२ सा×२.. नी धा नी.

मजप न क्यों छो ड़ दि ई या रे +
सा×३ रे गा...रे. सा नी ..सा नी धा ..

अन्तरामयस्थायी

भूल ये जगमें दिलल ल च आ कर
नी×२ गा रे×३. गा×३ मा गा रे सा×२..

अस लत्रत न क्यों छो ड़ दि या रे राम ज-
नी×२ सा×३ रे गा.. रे नी सा नी.. धा..

पन क्यों०......................:-

शेष भजन उपरोक्त ढंग पर बजाओ-

सूचना-यद्यपि यह भजन साधारण है और प्रत्येक मनुष्य इस ढंग का ज्ञाता है तथापि शिक्षक की सुगमता के अर्थ बहुतही सरल स्केच खिंचा है जोकि दो एक वार के बजाने से भले प्रकार आ जावेगा-

ध्वनि रामायण–तालतीन–लय चढ़ी–वक्र हरवक्र–

तर्ज़–“ हँसि बोले रघुवंश कुमारा ”

रामायण

(किष्किन्धाकाण्ड)

प्रारम्भ चौपाई–

आगे चले बहुरि रघुराई। ऋष्यमूक पर्वत नियराई ॥
तहँ रह सचिव सहित सुग्रीवा। आवत देखि अतुलबल सीवा ॥
अति सभीत कह सुनु हनुमाना। पुरुष युगुलबलरूप निधाना ॥
धरि वटुरूप देखु तैं जाई। कहेसु मोहिं जियसैन बुझाई ॥
पठवा वालि होइ मन मैला। भागौं तुरत तजौं यह शैला ॥
विप्ररूप धरि कपि तहँ गयऊ। माथ नाय पूछत अस भयऊ ॥
को तुम श्यामल गौर शरीरा। क्षत्रियरूप फिरहु बन बीरा ॥
कठिन भूमि कोमल पद गामी। कवन हेतु वन विचरहु स्वामी ॥
मृदुल मनोहर सुन्दर गाता। सहत दुसह वन आतप बाता ॥
की तुम तीनि देव महँ कोऊ। नर नारायण की तुम दोऊ ॥
दोहा–जग कारण तारण भवहिं, भंजन धरणीभार।
की तुम अखिल भुवन पति, लीन्ह मनुज अवतार ॥

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक					
				नी								
०	०	गा	मा	पा	धा	०	सां	रे	०	०	०	०

स्थाई

आगे	च	ल	ये	र	घु	रि	र
सा×३	नी॥	सा	रे...	सा	नी॥	धा..	पा

धुरा	आ	ई
मा..×२..पा	धा नी..—धा—....पा—धा..पा मा......	

नोट—यह अलाप है थोड़ा समझकर बजाओ जबतक गले से आ आ आ की आवाज न निकलेगी चौपाई अच्छी न बज सकेगी—

अन्तरा

ऋष्य	मूकपर्वत	त	नि	ये	र	आ	ई
गा×२..मा×३पा×२नी॥....धा.. पा धा.....पा मा....							

शेष सब चौपाई उपरोक्त नियम से बजाओ—अलाप को समझो नहीं तो चौपाई कभी न बजेगी—

नोट—शेष सब चौपाई उपरोक्त नियम से बजावो—

(२) दोहा जो चौपाइयों के नीचे है उसको ज़बानी कह जावो अथवा केवल स्वर को बजाते हुये ज़बान से कहो जबतक तान बजाना नहीं आता तबतक दोहा बजाने में आनन्द नहीं—

सूचना—प्रत्येक चौपाई एकही रंगत में है परन्तु भिन्न भिन्न रूपों में गाई जाती हैं यह अपने अपने देश की चाल है इससे उपरोक्त नियम सर्वप्रिय है—

ध्वनि भैरवी–तालतीन–लय दर्मियानी सम की जगह–वक़्त सुबह–तर्ज़ "शिर पै आंखों पै कलेजे पै बिठाऊं तुझको"—

इन्द्रसभा

(मसनवी)

गुलफ़ाम–

किस तरह चलने पै तैयार मेरी जान हूं मैं।
तू परीज़ाद है चालाक और इंसान हूं मैं॥
उड़के तू जायगी इक पल में परस्तान के बीच।
हाथ फैलाके मैं रहजाऊंगा अरमान के बीच॥
कोई उड़ चलने की तदबीर बतादे मुझको।
पर किसी देव के तू नोच के ला दे मुझ को॥

सब्ज़परी–

बहकी बातें न करो होश में आवो जानी।
न परीज़ाद से वे पर की उड़ावो जानी॥
थामलो पाया मेरे तख़्त का अब हाथ से तुम।
छूट जाना न कहीं राह में पर साथ से तुम॥

(ताली बजाना सब्ज़परी का नमूद होना तख़्त का)

मुझसे वहां चलके कोई बात न कहना साहब।
पीछे पीछे मेरे तुम नाच के रहना साहब॥
गाके और नाच के बुत सबको बनाऊंगी मैं।
तुझको ले चलके दरख़्तों में छिपाऊंगी मैं॥
किसी आफ़त में इकाइक अगर आना जानी।
याद रखना कि मुझे भूल न जाना जानी॥

(जाना गुलफ़ाम का हमराह सब्ज़परी के बैठना तख़्त पर और उड़ा ले जाना देव का)

दूसरा सप्तक													तीसरा सप्तक						
	* गा		* पा	* धा	* नी		* रें												
०	०	०	मा	०	०	०	सां	०	०	०	०	०	०						

स्थायी

किस	त	रह	चलनेपै तई	या	र	मे	री
गा*	मा	धा*	नी*×४	सा	धा*	नी*	सां
जान	हू	ऊं	मैं				
रें*	सां	.नी*	धा*....				

अन्तरा

तू पर	ई	जा	दू	है	चा	ला	क
सां×२	रें.*	सां	नी*	धा*	नी*	धा*.	मा*
और	इन	सान	हू	ऊं	मैं		
.मा	..मा*	गा.	धा	मा*.	मा		

सूचना—शेष सब प्रश्नोत्तर उपरोक्त नियम पर बजावो इसी ढँगसे उँगलियां काले पर्दों पर भले प्रकार चालू हो जावेंगी—शीघ्र बजाने में कुछ आनन्द न आयेगा यदि चाल मध्यम रहेगी तो समां बँध जायगा—

नोट—जहां तक हो सके कमसे कम इस ढंग से पचास बार बजा जावो जिसमें काले पर्दों की आवाज़ अच्छी तरह से समझ में आजावे—

ध्वनि कौन्सिया—ताल नकृटा—वक्त दोपहर—लय दर्मियानी—

तर्ज़ "बेजरवाली डगर बतलाना"—

दादरा

(१) पिया देखे बहुत दिन बीते-(२) जियरा लुभाये-बिरहा सताये—पिया देखे बहुत दिन बीते—

(३) आवन कहिगये अजहुँ न आये—सूनी सेज मोहिं डराये-राम पिया से बेगि मिलाये—पिया देखे बहुत दिन बीते—

(४) क्या कहूँ किससे कहूँ हाय फ़िसाना अपना। वक़्त बद का है यह रोना व रुलाना अपना कोई बदख़्वाह था दुश्मन वह बेगाना अपना-बुते नादान था जिसे समझे यागाना अपना—याद आताहै हाय ज़माना अपना—

(५) पिया आवो-दरश दिखलावो-जियरा लुभावो रिझावो—हम हारे मोहन तुम जीते—पिया देखे बहुत दिन बीते—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
								गां					
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	०	मां	०	०	०

(१) पि या दे खे ब हु त दि न बी ते
धा नी* रे सा. नी* धा पा मा पा नी* धा...

(२) जि य रा लु भाये वि र हा स ताश्रा ये
गा गा पा.. मा धा. पा धा नी.. सां नी* धा
पिया देखे बहुत दिन बीते ÷

(३) श्रा श्रा व न कहिगये श्राजहूंन श्रा ये ÷
मा पा मा नी* धा×२. *नी×४ सा–नी* धा
सूनी सेज मोहिं ड रा श्रा यें रा त
सां. नी सा.×२ धा×२ नी* सा नी* धा .. मा. पा

पी या से आये आये बे गि मि लाये ÷
मा. पा. गा* रे गा* रे सां नी* धा×२.

ताल दादरा

(४) क्याकू हूं किससे कहूं हायकि सा न श्रा
सा×२ धा. धा.×४ नी*×३ धा पा धा
श्र प ना ÷
पा *नी धा...

(१) वक्त बदका है यह रोना व रुलाना अपना
(२) कोई बदख़्वाह था दुश्मन वह वेगाना अपना -:-
(ऊपर की तरह बजावो)

वु ते न आ, दान, था जि से सम झसे या
धा नी* धा नी* सा ×२ रे सा. धा सा× रे
ना अ प ना
गा* सा रे सा

या द आता है हमें हा ये जमा आ न आ.
नी* धा नि*×५ रे. सा नी*×२ धा पा धा.
अ प ना
पा नी* धा

ताल नकटा

(५) पि या आओ द रश दिख लाओ जि
मा गा* गा×२.. रे गा*×२ सा रे×२ नी*
अरवा लु भावो रि झावो -:-
सा×२ धा नी*×२ पा धा×२

"हम हारे मोहन तुम जीते" (ढंग) "पिया देखे बहुत दिन बीते"—बजाओ -:-

ध्वनि देश–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–चक्र शाप–तर्ज़ " चली आती हैं नज़रें धूम "

ग़ज़ल

कहां ले जाऊं दिल दोनों जहां में उसकी मुश्किल है

यहां परियों का मजमा है वहां हूरों की महेफ़िल है

इलाही कैसी कैसी सूरतें तूने बनाई हैं

कि हर सूरत कलेजे से लगा लेने के क़ाबिल है

हज़ारों दिल मसल कर पावँ से झुँझला के फ़रमाया

लो पहिंचानो तुम्हारा इन दिलों में कौनसा दिल है

चलायें क्यों न ले मक़तल में झुकझुक कर मेरी गर्दन

कि बांकी तेग़ है बांकी अदा है बांका क़ातिल है

लिया लेतेही शीशा की तरह पत्थर पै दे पटका

मैं कहता रहगया ज़ालिम मेरा दिल है मेरा दिल है

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	गां	०	०	०	०

स्थायी	कहां ले जाऊ	ऊं	दि	ल	दो	औ	नों	ज	हा	आं
	सा×४..	.नी	.सां	.रें	सा	नी	धा.	पा	धा:	पा.
	मे	यें	उस	की	मु	श्किल	ल	है		
	मा	गा	रे..	सा	रे	गा×२	रे	सा..		
अन्तरा	इलाहीकै	सी	कै	सी	सू	रतैं	तू	ने	ब	ना	ई
	सां×४..	नी	धा	नी	सा..	पा×२.धा	सां	.रें		गां	रें
	हैं	यें	यें	यें	यें					
	सां.	नी	.धा	.पा	धा..					

आवश्यक नोट—ग़ज़ल के सब पहिले पद अन्तरा के ढंग पर बजाने चाहियें और सब अन्त के पद स्थायी के ढंग पर अच्छे होंगे अन्तरा को कम से कम तीन चार बार कह कर स्थायी बजानी चाहिये—

सूचना—यह क़ौवाली की ग़ज़ल आम है इसके ढंग पर और सैकड़ों ग़ज़लें प्रचलित हैं जिनकी लय बहुधा ऐसीही होती है—

ध्वनि सिन्ध–ताल चार–वक़ शाम–लय चढ़ी–
तर्ज़ " हम से खेलो न होरी "–

होली

पालागों कर जोरी श्याम मोसे खेलो न होरी–
(१) गौवें चरावन मैं निकसी थी सासननद की हूं चोरी–
सगरी चुनरिया रँग से भिगोई–इतनी–आहा इतनी अरज़–सुनो मोरी ॥
(२) छीनि झपट मोरी हाथ से गागर जोरसे बहियां मरोरी–
दिल धड़कत है सांस चढ़त है–देह कँपत गोरी गोरी–
श्याम मोसे खेलो न होरी–
....पालागों करजोरी–

पहला सप्तक							दूसरा सप्तक						
				※धा	※नी			※गा			※धा		
०	०	०	+मा	+पा	०	०	सा	रे	गा	मा	पा	०	०

स्थायी

पा	ला	गों	कर	जोरी श्याम	मो	सें
+मा	+पा..	+धा※..	+नी※×२..	सा×५..	+नी※	सा

खे लो	न	हो	र	ई	ई	
गा※ रे	सा	+.※नी	+.※धा	+.पा	+मा..	-:-पालागों....

(फिर पहिले से बजावो)

अन्तरा	
	गौवें चरावन मैं नि क सी हू ऊं न सा
	पा×६ धा* पा मा गा* .मा .पा धा*...पा.
	स न न्द की हूं चो री सगरीछु नरिया मो
	मा गा* रे. सा रे गा*.. मा... गा*×४ रे×२ सा
	रीर ङ्ग से भि गो ओ री इत नी आ हा
	रेगा* मा पा मा गा* रे सा गा*×२ ... रे सा
	इत नी अ रज सु नो मो र ई ⁝
	गा*×२ मा. पा मा गा* रे गा* रे सा..
	श्याम मोसे

सूचना—यद्यपि यह होली पुराने ढंग की है परन्तु रागिनी भले प्रकार ज्ञात होती है इस कारण हम और होलियों से इसको विशेष समझते हैं—

नोट—अन्तरा के बजाने में आवाज़ को कुछ ऊंची कर देना चाहिये जिससे कि स्थायी के मिलान से भले प्रकार आनन्द आ जावे और अन्त होतेही "श्याम मोसे खेलो न होरी" को सा सेही प्रारम्भ कर दो ॥

ध्वनि मुरफाच—ताल कौवाली—वक्त १ बजे दिन—चढ़ी हुई लय तेज़—तर्ज़ "दिल दिया तुम्हीं को है"—

वज़न अंगरेज़ी

अंगरेज़ी तर्ज़ थियेटर
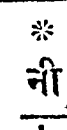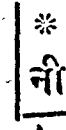
(१) मैं ज़िन्दा दिलों का ज़ौक़ है कोई पियेगा क्या मुरदार
(२) जो है इसका पीनेवाला—सदा रहता है मतवाला—नहीं
उससे कोई आला भये सरदार
(३) यह शराब—यह कबाब—
इन्हीं दोनों से है आलम शबाब
मैं ज़िन्दा दिलों का ज़ौक़ है कोई पियेगा क्या मुरदार

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
				*नी				*गा			*नी		
०	०	०	०	०	०	०	सा	रे	०	मा	पा	धा	०

(१) मैज़ि न्दादिलों क आ ज़ौ औ क़ है
+नी*×२ पा×४ ..मा .पा गा*.. मा गा*.. रे.

को ई पिये गा क्या मु र दार
+नी* .सा मा×२ गा* रे. सा रे +नी*×२ ⁘

(२) जो है इसका पीनेवाला स दा रह ता है मतवाला
गा*×६ .रे .सा .रे गा* मा×३

नहीं इससे को ई आला ऐ सर दार
धा×४ पा मा×३. .पा नी..

(३) यहश राव यहक बाब इन हीं दोनों से
मा×२ पा. गा*×२ मा. +नी* सा मा×३.

है आल म श बाब
गा* रे×२ सा .रे नी*

मैं ज़िन्दा दिलों का ज़ौक़ है कोई पियेगा क्या मुरदार
(फिर पहिले से बजाओ)

ध्वनि भैरवी—ताल तीन—लय मामूली—चक्र सुन्दर—
तर्ज़ "जब देखो सखी"..

ठुमरी

अब मोसे रार क्यों बढ़ाई डगर चलत मोसे
कीन्ही बारा जोरी-छांड़ दे कलाई—
अब मोसे रार क्यों बढ़ाई
सनद पिया मग रोकत टोकत देखलई मैं तो तोरी चतुराई
अब मोसे रार क्यों बढ़ाई

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
■	※ गा		※ मा	※ सा		※ नी	※ रे̂	※ गा̂		※ मा̂	■	■	
०	०	०	मा	०	०	०	सा̂	०	०	मा̂	०	०	०

स्थायी

(१) अ ब मो से रा र क्यों ऊँ
गा* मा धा* नी* रे̂* सा̂ रे̂* सा̂

ब ढ़ा ई ड ग र च ल त मो
गा̂* रे̂* सा̂ धा* रे̂* सा̂ रे̂* नी* सा̂ धा*

से की नी बा रा जो री छांड़ दे
नी* सा̂ गा* रे̂* सा̂ नी* धा* रे̂* नी*

क ला ई
धा* मा* मा : अब मोसे रार.....

(२) अ ब मो से रा र क्यों उँ ब
मा* मा धा* नी* रे^* सा^ रे^* सा^ गा^*

दा ई स न द पि या मग रो
रे^* सा^ धा* नी* रे^* गा^* मा^* मा^×२ गा^*

कत टो ओ क त द ये ख
मा^×२ मा^* मा^ गा^* रे^* रे^* धा* मा

ल ई आई मैं तो तो री च तु रा ई
धा* धा मा नी* सा^ रे* गा* रे^* सा^ नी* धा*

(३) छांड़ दे क ला ई -:-अब मोसे रार..........-:-
रे^* नी* धा* मा* मा

सूचना—इस ठुमरी को प्रातःकाल के समय साधारण लय में बजानी चाहिये प्रथम वार उँगलियों के उलट फेर से कठिनता ज्ञात होगी परन्तु फिर बहुत सुगम और मनभावनी ज्ञात होगी—
नोट—जब तक स्थायी ठीक न होले अन्तरा आरम्भ न करो—

ध्वनि जिला-ताल दादरा-वक़ तमाम दिन-रात धीमी-

तर्ज़ " हरद्वार जी में नैया पड़ी मँझधार "-

दादरा वर्मे रसिया

अटारियों पै गिरारी कबूतर आधी रात

सुन सुन री भाबू हम तुम सोयें दोनों साथ

नहीं नहीं रे देवरा सैयां तो जागें सारी रात

अटारियों पै........................

सुन सुन री भाबू सासू को तो दे मरवाय

नहीं नहीं रे देवरा घर की शोभा मारी जाय

अटारियों पै........................

सुन सुन री भाबू आवो निकल चलें परदेश

नहीं नहीं रे देवरा सैयां तो ढूंढें चारों देश

अटारियों पै........................

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	*धा	०	सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी

अ टा रि योंपै ऽ गिरारी क बूतर
+.धा सा. रे गा×२ ...रे मा×३ गा×२.

आधी रात
रे×२ सा... -:- दो बार बजाओ—

अन्तरा

सुनसुनरी भा बूहम सो यें दो नों साथ -:-
सा×३ रे मा×३. पा धा. पा मा. गा..

नहीं नहीं रे देव रा सैयां तो जागैं सारी रात
सा×३. रे गा.. मा×३. गा×२. रे×२ सा..

अटारियों पर गिरारी कबूतर आधी रात—फिर पहिले से बजाओ—

नोट—यह दादरा रसिया के ढंग पर बजता है—यह दादरा उन लोगों को लाभदायक है जो जान व माल से "रसिया" पर मोहित हैं—यद्यपि अधिकता से रसिये निर्लज्ज शब्दों से भरे रहते हैं इस कारण उनका लिखना निरर्थक और अयोग्य है और उस के बदले में यह प्रख्यात और रसभरा रसिया दादरे के ढंग से लिखागया है अलबत्ता शायक़ीन रिसाला "मज़ाक हारमोनियम" "मारूफ़ हारमोनियम जोकर" के अवलोकन से रसियों का पत्र उठा सकते हैं जिसमें सैकड़ों कवित्त और रसिया लिखे हैं—

ध्वनि मल्हार व केदारा-तालतीन-बरसात में हरयक लय दुर्पियान्धी-

तर्ज " घोर घोर बरसे बदरवा "-

मल्हार

घन गरजे बिजुली चमके मा--घन गरजे बिजुली चमके मा-

बिजुली चमके चमकि डरावे-डरपावन को लागे मा-

घन गरजे बिजुली चमके मा-

मोर मुकुट पीताम्बर धारी-वाकी शोभा सब सों न्यारी-

डार डार और पात पात में वाका जोबन दमके मा-

घन गरजे बिजुली चमके मा-

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				*धा	*नी			*गा					
०	०	०	मा	पा	०	नी	सा	रे	गा	मा	पा	०	०

(१)	घन	गरजे	आये	बि	जु	ल	ई	च	म	के
	मा	×५	गा	रे	गा	मा	पा	गा	गा	रे

(२) मा–ध न गर जे-वि जु ल ऽ च
गी*×२. रे सा नी.×२ सा रे सा×२
म के मा
नी धा*. पा.

(३) विजु लीचमके च म क ड रावे–
मा×२ नी*×४ सा गा *×२ रे सा×२..
डरप आ व न क व ल आ गे
मा×३ गा * रे गा मा पा मा गा रे. ⁘

इसके वाद फिर नंवर २ वजावो–

(४) मोरमु कट पी ताम्बर धा री वा की
सा×३ रे×२ ..गा मा×३ गा मा. रे गा
शो भा सव सों न्या री डा र
.मा रे.. मा गा. मा रे. .गा रे
डार और पात पात में वाकू आ
.सा×२ .नी × २ सा×३.. मा×३ मा
जो ओ व न द म के
रे गा मा पा मा गा रे इसके वाद फिर

नंवर २ वजावो–

नोट—इस मल्हार के गाने में वहुत कुछ आनन्द आसकता है जव कि मेघागम हो अथवा आकाश मेघाच्छादित हो ऐसे समय में अलापा जाय–ऐसे मल्हार सदैव ठाकी लय में अच्छे वजते हैं—

ध्वनि जिला–ताल गकदा–वक़ २ बजे दिन–तर्ज तुबन–

तर्ज "पीता हूं मैं शराब अब मिली दौलत है मुझको"–

कहरवा

राजा मैं बन जाऊंरे–तूहे रानी बनाऊं–

वाह वाह री मेरी काली जोगिनि–छतियां तुझे मैं लगाऊंरी

........तूहे रानी बनाऊं....

वाह वाह री मेरी गुलबकावली–ताजुलमलूक बनजाऊं री

... तूहे रानी बनाऊं....

वाह वाह री मेरी सब्ज़परीरी–गुलफ़ाम मैं बनजाऊं री

... तूहे रानी बनाऊं....

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	+ धा	०	सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी
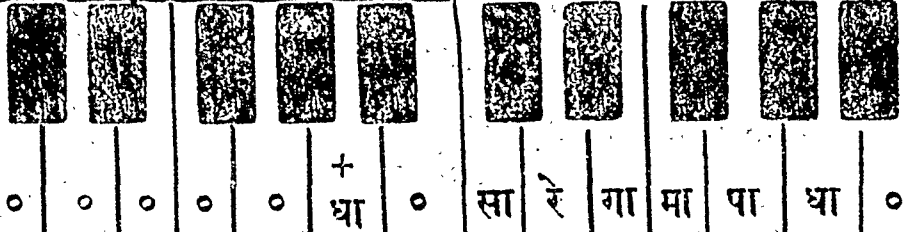
रा	जामैं	ब	न	जा	ऊं	रे	तूहै	हैरा
+धा.	सा×२	.गा	रे	गा..	.मा	गा	रे×२	सा×२

नी	ब	न	आ	ऊं	
रे	..मा	.गा	.र	सा..	⁚ राजा मैं बनजाऊं रे.....⁚

अन्तरा

वाह वाह	री मेरी	काली	ज	ओ	गिनि
गा×२	पा×३.	धा×२	पा	धा	पा..

छतियां तुझे मैं	ल	गा	ऊं	री	तू	हैरानी
गा×५.	रे	गा..	..मा	गा..	रे	सा×२

ब	न	आ	ऊं	
..मा	.गा	.रे	सा...	बाकी सब गायन सिर्फ अन्तरा

पर बजावो—

नोट—यह कहरवा हर समय अच्छा लगता है परन्तु ठीक समय दो बजे रात का है दुगुन की लय में और भी अधिक आनन्द आ जाता है—

सूचना—प्रत्येक अन्तरा उपरोक्त ढंग पर बजेगा—

ध्वनि पहाड़ी—ताल तीन—लय दर्मियानी—वक्त तमाम दिन तर्ज़ " घटा के अन्दर बिजुली रे "

मल्हार

राजा केवड़िया खोल रस की बूंदां गिरैं
बिजुली चमके बादल गरजे
आई घटा घनघोर—रस की बूंदां पड़ैं
राजा केवाड़िया खोल रस की बूंदां गिरैं—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				नी									
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सा̑	रे̑	०	०	०	०	०

स्थायी	राजा के व ड़ि या खो ल रस नी×४* धा पा धा पा मा रे×२ की रे बूंदां गिर यें ∴ राजा केवड़िया खोल.... मा पा धा×२ पा मा..
अन्तरा	बिजु ली चम के वा द ल गर जें ∴ मा×२ पा *नी×२ सा̑×२. रे̑ सा̑ नी* धा.

(आई घटा घनघोर रस की बूंदां गिरैं) राजा केवाड़िया खोल रस की बूंदां गिरैं के ढंग पर बजावो—

सूचना—इस मल्हार को वर्षा ऋतु में जिस समय चारों ओर से मेघ घिरे हों और नन्हीं नन्हीं बूंदें पड़ती हों ऊंचे स्वर से हारमोनियम के साथ गावें तो रागिनी मल्हार को भले प्रकार क़ाबू में ला सकते हैं बिजुली की कड़क और भयानक अँधेरी से कुछ भय न रहेगा—परीक्षा शर्त है—

ध्वनि कांगड़ा–ताल कहरवा–वक़ ९ बजे रात–लय दर्मियानी

तर्ज़ "मैं तो बावरची की बेटी"

नाच

(आशक़ाना नाज़ो अन्दाज़)

ओई मैं तो भर नखरे से हूं आई करती छल और ठट्टा–

नाम है मेरा मोती बेगम–चम्पा मेरी मादर

आलू मियां है नाम बाप का करती हूं मैं ज़ाहिर

ओई मैं तो फिर नखरे से हूं आई करती छल और ठट्टा

नोट–एक एक शब्द पृथक् पृथक् ज्ञात होता रहे बोल साफ़ कटते रहें हारमोनियम के शब्द पर ऐक्टर्स का पांव चलेगा यह नाच बहुतही उत्तम है यदि दर्मियानी चाल में हो–

दूसरा सप्तक

सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी

मैं तो फिर नख रे से आ ई करती छल
सा×२. रे गा रे, सा रे गा मा×२ गा..
और टठ टा
रे .गा सा.. * ओई (जबानी कहना चाहिये)

नामहै मेरा मोती बे गम चम्पामे र ई
मा×४ .पा×३ मा. धा.×३ .गा .मा

अन्तरा

मा दर आलूमियां है नाम आप क.कर
धा. पा* धा×५ पा×४ मा×२.
ती हूं मैंज़ा हिर मैं तो से प्रारम्भ करो और दोनों
धा. पा मा×२. गा* रेसा.

पदों का मिलाव दुरुस्त रक्खो और शब्द (ओई) को ज़बानी कहना चाहिये ः

सूचना—यह नाच केवल एक के लिये विशेष है परन्तु नाज़ो अन्दाज़ से भरा है इसको बहुतही सुगम कर दिया है पर ज़मज़मे देने से और ही आनन्द पैदा होता है जहां तक हो सके उँगलियों को पर्दों पर नचावो जितनी लचक अधिक होगी उतनी ही अच्छाई नाच में होगी कारण कि नाचने वाले का पावँ केवल हारमोनियम के शब्द पर चलेगा—

इति ॥

भूमिका

हारमोनियम के प्रेमियो लीजिये ! देखिये जिसकी बाट आप बहुत समय से देख रहे थे आज वह आपकी दृष्टि के समक्ष है, शुभचिन्तक ने अपना कर्तव्य पालन किया अब आप काम कीजिये और अपने विचारों को पूर्ण कीजिये। यह पुस्तक आपको दोनों हाथों से हारमोनियम बजाना बहुत सुगमता से बतादेगी, किन्तु आप दो तीन मास की प्रैक्टिस से थियेट्रिकल हारमोनियस्ट हो सकते हैं इस पुस्तक में प्रथम तो दोनों हाथों से हारमोनियम बजाने के सुगम नियम और चित्ताकर्षक ढंग लिखे हैं और अन्त में थियेट्रिकल तर्ज़ें चलती हुई लिखी गई हैं और वह सब बातें जो थियेट्रिकल कम्पनियों में होती हैं संक्षिप्त रीति से लिखी गई हैं—जिसके अवलोकन से प्रत्येक मनुष्य की जानकारी खेल (तमाशा) के सम्बन्ध में बढ़ैगी इसका हर एक ढंग ब्योरेवार लिखा गया है जिसमें शिक्षक को बजाने के समय वही लय स्मरण आजावै जैसा कि स्टेज पर बैठकर बजारहा है और नाटक का तमाशा होरहा है—गाने के लिये गायन का ढंग और मौक़ा महल अर्थात् किस समय किस ढंग पर गाई जाती है लब व लहजा अर्थात् गायन को किस प्रकार और किस अन्दाज़ से जिह्वा से उच्चारण करें कि जिससे हूबहू वह बात पैदा होजावे जैसा कि ऐक्ट कियाजाता है जैसे कोई तर्ज़ क्रोधके लहजा में गाई जाती है और कोई प्रसन्नता के आवेश में इनके लहजे भिन्न भिन्न हैं इस कारण शिक्षक को परिश्रम करना चाहिये कि इन लहजों को भले प्रकार स्मरण करलें जिससे गायन में कुछ आनन्द पैदा हो कारण कि

अंगरेज़ी ढंगों में रागियत का कुछही भाग मिलता है इससे वह फीकी कहलाती हैं परन्तु नाज़ व अन्दाज़—लब व लहजे और महल व मौक़ा से उसकी शोभा दूनी होजाती है और उस का असर सबके चित्तों पर जल्द होता है नहीं तो वही " ढाक के तीन पात " सिवाय " सुनहरे कालेदेव " के और कुछ न आयेगा—

थियेट्रिकल कम्पनियां

भारतवर्ष में जबसे थियेट्रिकल कम्पनियों ने अपने रङ्ग दिखलाने आरम्भ किये हैं तबसे सब भारतीय उनके मुग्ध होगये हैं गयेसमय में भी इसका प्रचार था अर्थात् स्वांग और लीलायें हुवा करती थीं तब भी वह आनन्द वह रंग वह ढंग जो आज कलह के तमाशों में पाया जाता है न था—

आये दिन भारतवर्ष में एक न एक नई कम्पनी स्थापित होती जाती हैं और कितनीही कालके फेरसे प्रत्येक मास उजाड़ होती रहती हैं कुछेक कम्पनियां ऐसी भी हैं कि जो मनमानी कामयाबी दिखारही हैं उन सैकड़ों कम्पनियों में से विक्टोरिया—अल्फ्रेड—पारसी—कॅरोनेथन—कर्ज़न—कारोनेशन थियेट्रिकल कम्पनियां विशेष प्रख्यात हैं यदि इनके मन्तव्यको देखाजावे तो ऐसे तो इनसे बढ़कर सारे भारतवर्ष में कोई दूसरा रिफ़ार्मर दिखाई नहीं देता परन्तु जब हम इनके कार्य को देखते हैं तो हमको दुःख होता है कि यह क्यों इस दीन भारतवर्षको तहबाला कर रही हैं रिफ़ार्म के अतिरिक्त महाराज प्रेम (इश्क़) की उन्नति पर कटिबद्ध हैं प्राचीन समय में जो ड्रामे कम्पनियां करती थीं वह निस्सन्देह गंभीराशय और रिफ़ार्मिंग हुवा

करते थे और उनका असर सबके चित्तोंपर शीघ्र होता था उस के विपरीत आज कल्ह उन्हीं ड्रामों को प्रेमाशयों से पूर्ण देखते हैं जोकि इस देश के युवा पुरुषों के चित्तको काला करते हैं इस कारण यह कम्पनियां केवल रिफ़ार्मिंग आशयोंकी ओर ध्यान दें तो इनके रिफ़ार्म का असर पब्लिक पर अच्छा पड़े और अपने धर्म व प्रतीति पर अटल रहसकें—

प्रत्येक कम्पनियों के खेल एकसे नहीं हुवा करते किन्तु विपरीत होते हैं और कभी कभी नाम भी बदल दिये जाते हैं कारण कि प्रत्येक ड्रामेटिट अपने रचित खेलको रजिस्टर्ड करा-लेता है जिससे कोई दूसरा नक़ल नहीं कर सकता—

थियेट्रिकल कम्पनियों में जो सीनरी इन्द्रजालिक दिखाई जाती हैं वस्तुतः यही खेलकी शोभा को दूना करती हैं नहीं तो केवल गाने बजाने से थियेट्रिकल ढंगों में कुछ आनन्द पैदा नहीं होसकता जबतक कि स्थान न दिखायाजाय इन्हीं स्थानों के दिखाने के लिये कम्पनीवालों का व्यय अपनी सीमा को उल्लंघन कर जाता है और इन्हीं सामान के खराब होजाने से थियेट्रिकल कम्पनियों का दिवाला निकल जाता है—

एक बार लाहौर (पंजाब) में बम्बई की प्रख्यात थियेट्रि-कल कम्पनी " दीपारसी " आई जिसने थोड़े दिनों में ऐसा नाम पाया कि कहने योग्य नहीं अभी एक मास भी न हुवा होगा कि उसने एक नया खेल " दुरंगी दुनिया " का विज्ञा-पन दिया जिसकी प्रशंसा थोड़ी न की गई थी—उस दिन दर्शकों की भीड़ एक नवीनड्रामें के होने पर जितनी होनी चा-हिये उससे कहीं अधिक थी परन्तु "दुरंगी दुनिया" का खेल तो थियेट्रिकल हाल में प्रातःकालही हो चुका था अलबत्ता कुछ

थोड़ा सा सीन और दिखाई दे रहाथा जोकि लाहौरवालों ने विना टिकट के देखाया अर्थात् उसी दिन किसी ईर्षक ने खेलघर को दियासलाई दिखा दी थी जिससे सब सामान मय पर्दों के जलकर काजल होगया और " दुरंगी दुनिया " के खेल का ड्रापसीन गुप्त रूप में दिखाई दे रहाथा—

बम्बई और कलकत्ता थियेट्रिकल कम्पनियों के लिये मख्यात हैं कारण कि आयेदिन नई कम्पनियां इन्हीं शहरों से निकलती रहती हैं दूसरे ऐक्टर जो अधिकता से पारसी होते हैं उन्हीं शहरों के निवासी होते हैं जिनको बचपनही से इसकी शिक्षा दी जाती है ऐसे ऐक्टर उर्दू ज़बान से बिल्कुल अनभिज्ञही नहीं होते वरन अपने पार्ट को भी भले प्रकार नहीं समझ सकते—पढ़े लिखे ऐक्टर बहुत कम होते हैं—

कोई कोई दर्शक खेल समझते हैं कि ऐक्टर बहुत सुन्दर होते हैं वस्तुतः उनका यह ध्यान सन्देह मात्र है कारण यह है कि सुन्दरता को देखकर कम्पनीवाले ऐक्टरों को नौकर नहीं रखते किन्तु उनका गाना और भाव देखते हैं गोरा चेहरा नहीं—जिसको कि कम्पनीवाले अपने बायें हाथ का करतब जानते हैं किसी सुन्दर को क्षणमात्र में कालादेव और किसी कुरूप को गुल्फ़ाम बनाना उनके निकट एक सुगम बात है जवान लड़कियां कम्पनियों में बहुत कम रक्खी जाती हैं. वेश्यायेंही इस काम को करती हैं—परन्तु नाम मात्र को एक या दो होती हैं लड़केही दोनों पार्ट भले मकार कर सकते हैं—कम्पनियों में वेश्यावों के रहने से सदैव दुश्मनी की आग भभकती रहती है—

दरिया—रेल—मकानात—जंगल—बाग और तरह तरह के इन्द्र-

जाल जो कम्पनियां दिखाया करती हैं यह सब मामूली चीज़ों से बनाये जाते हैं परन्तु स्टेज पर असल हुलिया दिखाते हैं कोई कोई तिलिस्म मिशीन के द्वारा दिखाये जाते हैं जैसे आन के आन में मकान का बाग़ बनजाना—दरिया का पहाड़ हो जाना—जंगल का महल होजाना इत्यादि इत्यादि—

भारतवर्ष में ऐसी मिशीनें नहीं चलाई जातीं किन्तु हाथकी ही सफ़ाई होती है इंगलैंड में ऐसी मिशीनें अधिकता से चालू हैं इन्हीं कारणों से भारतवर्ष की कम्पनियां इन्द्रजालिक खेल दिखाने में उनका प्रतिवाद नहीं कर सकतीं चाहे गाने बजाने में अग्रगामी भलेही हों—

शायक़ीन ! आज कल्ह दोनों हाथ से हारमोनियम बजाने की प्रथा उन्नति पर है उसमें भी थियेट्रिकल तर्ज़ें विना दोनों हाथ से बजाये अच्छी नहीं निकलतीं आज तक किसी हार-मोनियस्ट ने कोई पुस्तक इसके सम्बन्ध में नहीं बनाई कि जिससे हारमोनियम के शायक़ीन विना गुरुकी सहायता के घर बैठे दोनों हाथ से हारमोनियम बाजा बजा सकें—

इस पुस्तक में अंगरेज़ी की सब तर्ज़ें व वज़न लिखे गये हैं जोकि भिन्न भिन्न कम्पनियों के भिन्न भिन्न खेलों का चुना हुवा सार है इस कारण हाथों की तैयारी उम्दा होनी चाहिये नहीं तो तर्ज़ उम्दा न बजेगी और वह आनन्द न आवेगा कि जो आप थियेट्रिकल कम्पनियों के हारमोनियस्ट हाथ तैयार होने के कारण दिखाते हैं—

ग्रंथकर्ता

नाटकसम्बन्धी संकेत

ड्रापसीन—वह पर्दा जो प्रत्येक ऐक्ट के अंतपर गिरता है—

सीन—एक ऐक्ट का वह भाग जिसके समाचार लिखेहुये एक समय और एक स्थान पर देखने में आवें—

थियेटर—नाचघर, खेल—

प्ले—तमाशा—खेल—

ड्रामा—नाटक मिलेहुये व बनायेहुये और तमाशाको कहतेहैं—

थेटर—खेलकी जगह—नाचघर—रंगशाला—

परसन—मनुष्यों का बहुवचन—वह लोग जिनका रूप ऐक्टर अर्थात् तमाशागर बनते हैं—

ऐक्टर—खेल करनेवाला—पुरुष तमाशागर—

ऐक्ट्रस—खेल करनेवाली स्त्रियां—

इन्टिर—किसी मुख्य ऐक्टर का स्टेजमें आना—

ऐक्जिट—किसी मुख्य ऐक्टर का स्टेजसे चला जाना—

कमेडी—वह नाटक जिसका परिणाम प्रसन्नता हो—

ट्रेजेडी—वह नाटक जिसका परिणाम दुःखद हो—

ड्रामेटिक—गद्यपद्य जिसमें मिले हों उसको कहते हैं—

ड्रामेटिट—नाटक रचयिता—

ऐक्ट—नाटक का वह बाब जिसमें भिन्न भिन्न सीन दिखाई दे—

स्टेज—खेल करने का स्थान—

हारमोनियममास्टर

पांचवां भाग
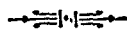
फ़ोल्डिंग हारमोनियम

दोनों हाथों से और पैरों से जो हारमोनियम बजाया जाता है उसको अधिकता से फ़ोल्डिंग हारमोनियम कहते हैं यद्यपि हम दोनों हाथों से प्रत्येक हारमोनियम को बजा सकते हैं तदपि वह आनन्द नहीं आ सकता जोकि फ़ोल्डिंग के बजाने से आता है कारण कि इसकी बनावटही और प्रकार की होती है जिसमें पैरों के चलाने से हवा भरती है जोकि चाहना से भी अधिक होती है इन बाजों में विशेषतः दुहरी तिहरी रीड होती है दूसरे स्टाप भी पांच सात होते हैं जिनके होने से आवाज़ ऊंची और चित्ताकर्षक हो जाती है सप्तक तीन से अधिक होते हैं कारण कि तीन आक्टयूज़ से काम नहीं चल सकता इससे कि यह दोनों हाथों से बजाया जाता है—

थियेट्रिकल कम्पनियों में फ़ोल्डिंग हारमोनियम अधिकता से काम में लाये जाते हैं कारण यह है कि लघुवयस ऐक्टर इस बाजे का साथ बहुत अच्छा कर सकता है बैठक (फ़र्शी) के बाजे में बोल साफ़ नहीं ज्ञात हो सकते अलबत्ता बजानेवाला उसके साथ गा सकता है—सरिगम आदि की प्रैक्टिस

के लिये फर्शीबाजेसे फोल्डिंग बाजा बहुत अच्छा होता है क्योंकि इसके बजानेवाले को स्वर बहुत जल्द ज्ञात होजावेंगे और कुछ महीनों के अभ्यास से साथ देना आजावेगा—

फोल्डिंग हारमोनियम की प्रकारोंका चर्चा " हारमोनियम-मास्टर पहिलेभाग " में हो चुका है—परन्तु प्रेमियों की प्रसन्नता के लिये कुछ नीचे लिखे जाते हैं—

नंबर (१) यह फोल्डिंगबाजे थियेट्रिकल कम्पनियों में अधिकता से काममें लायेजाते हैं आवाज़ बहुतही चित्ताकर्षक और उच्च होती है ऐसे बाजों में बहुधा ६ स्टाप से ९ स्टाप तक होतेहैं सप्तक भी ३½ या ४ होते हैं—
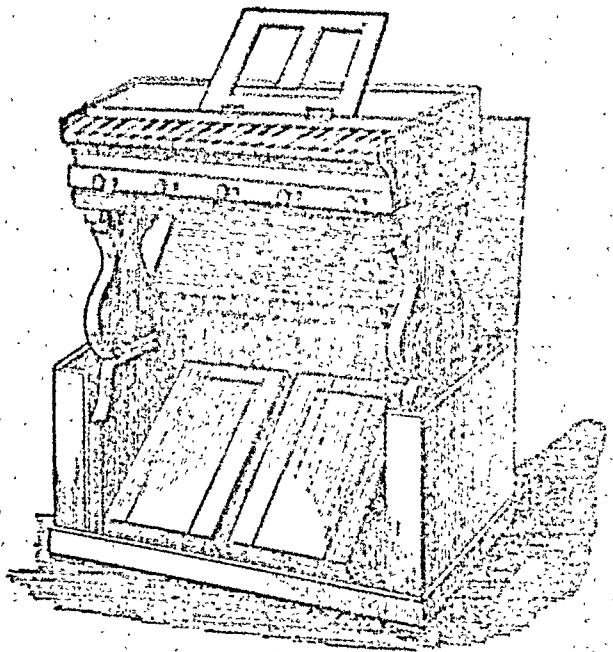
नंबर (२) यह फोल्डिंग हारमोनियम वलायती बनेहुये बहुत सुन्दर और अच्छी बनावटके होते हैं मज़बूती में भी दूसरे बाजों से अच्छे रहते हैं धौंकनी नीचेकी ओर नहीं होती किन्तु बीच में लगी रहती है—

ड्राइंगरूम की शोभा बढ़ाने के अर्थ और थियेट्रिकल तर्ज़ों के बजाने के लिये यह बाजा अपनी समता नहीं रखता— वलायती होने के कारण मूल्य अधिक होता है अर्थात् २००) में बिकता है—
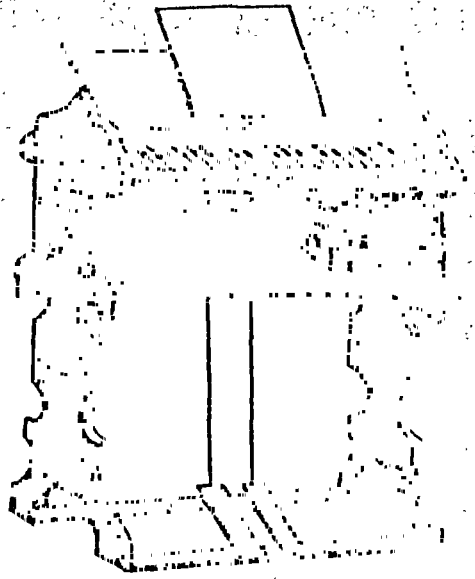
बैठक हारमोनियम

हारमोनियमके कोई कोई शौक़ीन यह भी नहीं जानते कि दोनों हाथों से हारमोनियम बाजा किस प्रकार बैठकर बजावें कि जिससे शीघ्र न थकजावें किन्तु आराम से तीन चार घंटे बैठकर बजासकें— कुछ चित्र नीचे लिखे जाते हैं जिससे ज्ञात होगा कि हारमोनियस्ट किस प्रकार अपनी बैठक को स्थिर रखते हैं और बराबर कई घंटोंतक बजाने से नहीं थकते शिक्षक को चाहिये कि प्रारम्भ सेही अपनी बैठक का नियम रक्खे नहीं तो आगे उस बुरी बानि का त्यागना अति कठिन होजाता है—

नंबर (१)

बाजा को मेज़पर रखकर और उसका एक पैडिल फ़र्शपर डाल दे जोकि डोरी के साथ लगा रहता है और वह

डोरी ऊपर की धौंकनी के निकट रहती है जिसके दबाव से धौंकनी चलता है—बजानेवाला कुर्सी—मोढा या तिपाई पर बैठकर दोनों हाथ से हारमोनियम को बजा सकता है और बायें पैर से नीचे पैंडिल को दबा सकता है यह हारमोनियम बलायतीही अच्छे होते हैं इसके बजाने में केवल दो हाथ और एक पैर चलता है नीचे का चित्र देखो—
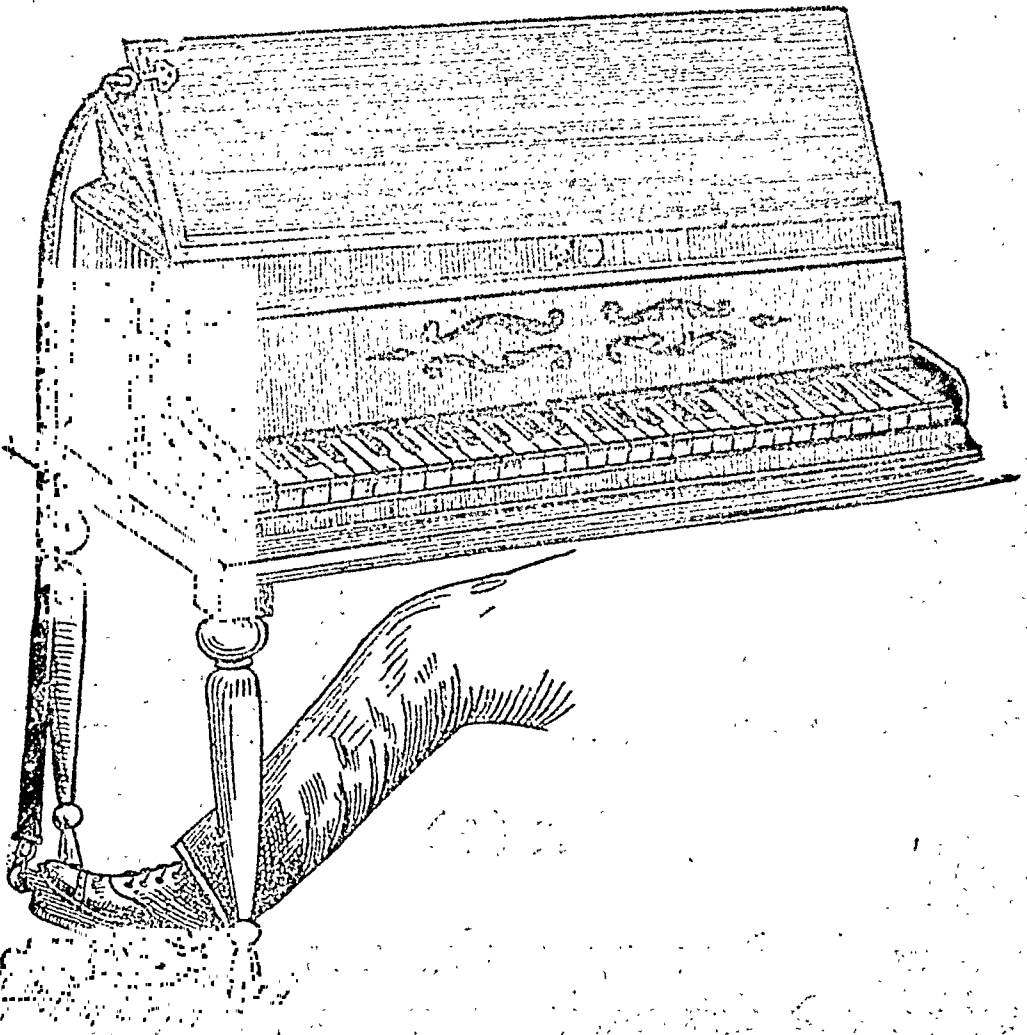
नंबर (२)

कुर्सीपर बैठकर दोनों पांवों से हवा दी जाती है और दोनों हाथों से हारमोनियम बज रहा है यह साधारण बैठक है—

नंबर (३)

फ़र्शीबाजे को दूसरे मनुष्य की सहायता से दोनों हाथों से बजाना बहुत सुगम है परन्तु इस ढंग के अंगीकार करने से बाजा शीघ्र बिगड़ जाता है इस रूप में जबकि धौंकनी चलानेवाला हारमोनियम बजाना न जानता हो कारण कि धौंकनी का चलाना प्रत्येक मनुष्य नहीं जानता और न उसकी भलाई बुराई को जानता है धौंकनी के जल्द जल्द चलाने से

धौंकनी के खराब हो जाने के अतिरिक्त स्वरों को भी बहुत हानि पहुँचती है सदैव धीरे धीरे एक चाल में धौंकनी को केवल चार उँगलियों के बल से चलाया करते हैं और जहां चाल में तेज़ी होती है तुरन्त स्वर सन सन करने लगते हैं जिनसे ज्ञात है कि वह ऐसी तेज़ी को सहन नहीं कर सकते नीचे के चित्रसे ज्ञात है कि फ़र्शी बाजा भी फोल्डिंग का काम दे सकता है—
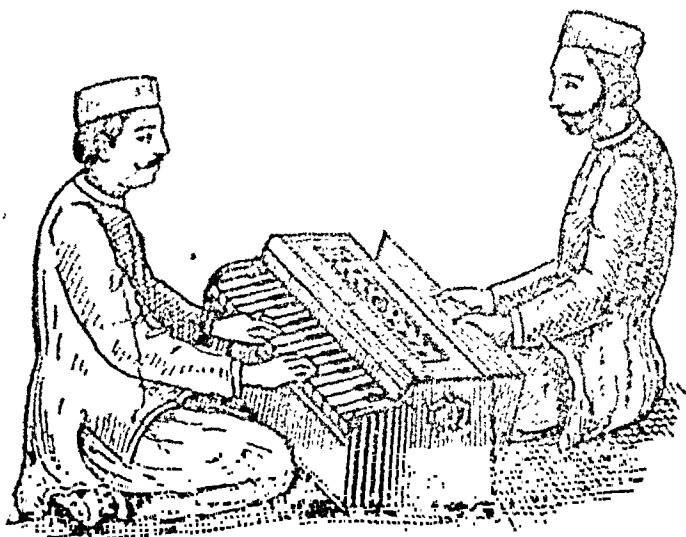
नोट—फ़ोल्डिंग हारमोनियम के बजाने में दोनों हाथ-दोनों पैर एक साथ चलते हैं-कान-आंख-ज़बान एक साथ काम करती हैं इस कारण घंटे से अधिक एकहीबार में कदापि न बजाया कीजिये नहीं तो आपको बहुत जल्द इससे हाथ खींचना पड़ेगा अर्थात् आप इसके त्याग करने पर अशक्त होजावेंगे (परीक्षा)

पैरों का चलना

जब फोल्डिंग हारमोनियम बजाते हैं तो उस समय उसमें हवा का पहुँचाना कुछ कठिन जान पड़ता है कारण कि नीचे के दोनों पैडिलों को दोनों पांवों से एक के बाद दूसरा चलाना पड़ता है और उसी समय दोनों पर्दों पर हाथ चलाना चाहिये बहुधा सीखनेवाले घबड़ा जाते हैं और कोई तो इस कष्ट को देखकर सदैव के लिये इसको छोड़ बैठते हैं यह वास्तव में उनकी कम हिम्मती और तुच्छ बुद्धि है यह काम ऐसा कठिन नहीं जैसा कि समझते हैं यदि शौक़ीन कुछ हियाव करके प्रारम्भ करें और नीचे की सूचनाओं पर ध्यान करें तो अति शीघ्र उनका पैर उनके क़ाबू में होजावेगा और जिस प्रकार चलाना चाहैंगे तुरन्त वैसाही काम करेगा परीक्षा करना चाहिये–

(१) एक घंटा नितप्रति केवल एक पाँव से चलाने का परिश्रम किया करिये एक सप्ताह इसके लिये बहुत है–

(२) जिस प्रकार कपड़ा सीने की मिशीन पाँव से दर्ज़ी चलाता है ऐसेही हारमोनियम की धौंकनी को चलाना चाहिये–

(३) यदि किसी दर्ज़ी के पास कोई बिगड़ी हुई मिशीन निरर्थक हो तो पहिले उस पर प्रैक्टिस कर लेनी चाहिये ऐसी दशा में आप तीन दिन के भीतर अपने अभिमत को पावेंगे–

(४) जबतक पर्दों पर उँगलियां न रखलो तबतक पैरों को न चलावो–

(५) पैरों को धीरे धीरे चलावो नहीं तो बाजा बहुत शीघ्र बिगड़ जावेगा–

(६) पेंडिल पर केवल पंजों का जोर देना चाहिये एँड़ी का ज़ोर मत दीजिये-

(७) पैरों को एक चाल से चलावो न्यूनाधिक न हों-

दोनों हाथ

(१) सबसे प्रथम उँगलियों के चलाने का अभ्यास करना चाहिये-

(२) बायें हाथ की उँगलियां शिक्षक को उस समय पर सहायता देसकती हैं कि जब वह उनसे भले प्रकार अभ्यास करलें-

(३) बहुधा दोनों हाथ चलाने के समय बायें हाथ की उँगलियां काले पर्दों पर अधिक चलती हैं-

(४) दोनों हाथों का ज़ोर पर्दे पर न डालो किन्तु हाथों का बोझ तुला हुवा रक्खो-

(५) बाजा बजाने के समय आगे की ओर न झुको वरन सीधे बैठे रहो-

(६) पहिलीबार सीखनेवाले के दोनों हाथ अकड़ जायँगे परन्तु यह शिकायत एक सप्ताह तकही रहेगी फिर नहीं-

(७) दोनों हाथ से बजाने में कुन (कनिष्ठिका) उँगली अवश्य काम में लाना चाहिये-

(८) जबतक पर्दों पर उँगली न रखलो पैर मत चलावो इस कार्यवाही से स्वर शीघ्र नष्ट होजाते हैं-

(९) पहिले दोनों हाथों से भले प्रकार परिश्रम लेना चाहिये और धीरे धीरे पर्दों पर चलाने चाहियें-

(१०) किसी दूसरे हारमोनियस्ट की प्रति (नक़ल) कदापि नहीं करनी चाहिये यह शिक्षक के लिये हानिप्रद है-

सुगम उपाय

दोनों हाथ से हारमोनियम बजाने का सुगम उपाय नीचे लिखा है-

पहिला उपाय

यदि सीखनेवाले को एक हाथ से हारमोनियम बजाना भली विधि से आता है तो उसको चाहिये कि दूसरा हाथ भी अपने दाहिने हाथ की तरह तैयार करले और जब कुछ चलने लगे तब दोनों हाथ एक साथ चलाना प्रारम्भ कर दे प्रथम बायां हाथ बहुत कम चलता है परन्तु धीरे धीरे तैयार होजाता है-दृढ़ता को हाथ से न छोड़ना चाहिये-

दूसरा उपाय

यदि हारमोनियम का शिक्षक दोनों हाथ से बिल्कुल बजाना नहीं जानता तो उसको उचित है कि प्रारम्भ सेही दोनों हाथ चलाया करे जिसमें उसको जल्द बजाना आजाय अलबत्ता परिश्रम अधिक करना पड़ेगा-

सदैव बायां हाथ सफ़ेद पर्दों की अपेक्षा काले पर्दों पर अधिक चलता है इसकारण दोनों हाथों को काले पर्दों पर अधिक चलाया करो जिस से हाथ शीघ्र तैयार होजावें—

बायांहाथ

सदैव स्मरण रखना चाहिये कि दाहिने हाथ की अपेक्षा बायां हाथ हारमोनियम के पर्दों पर अधिक तेज़ी से नहीं चलसकता इसीकारण दाहिने हाथको भी उसकी पूरी चाल से घटाना पड़ता है बायां हाथ सदैव दाहिने हाथ की तैयारी

पर चलता है जिस सीखनेवाले का दाहिना हाथ तैयार नहीं उसका बायां हाथ कदापि तैयार नहीं होसकता–हारमोनियम सीखनेवाला यदि अपने बायें हाथको हथियारकी तरह बनाना चाहे तो उसको चाहिये कि नीचे के नियमों को भले प्रकार मनन करले जोकि एक सीमातक लाभ देनेवाले होंगे–

(१) सदैव हाथ अकड़ा हुआ रक्खो–

(२) उँगलियों को नर्म करो जोकि नितप्रति के प्रैक्टिस से हो सकती हैं–

(३) केवल बायें हाथ से भी कुछ देरतक हारमोनियम बजाया करो–

(४) उँगलियों को नियमबद्ध रक्खो नहीं किसी गवैये के साथ देनेमें पीछे रह जावोगे–

(५) उँगलियों को सदैव स्वच्छ रक्खा करो और पसीनेको पोंछते रहाकरो जिसमें कि उँगलियां पर्दोंपर चिपक न जायें–

(६) तीन मास नितप्रति दो घंटे बजाने से बायां हाथ तैयार होसकता है और कोई कोई शौक़ीन केवल एकही मास के भीतर तैयार कर सकते हैं जबकि सच्चा प्रेम रखते हों–

(७) बायां हाथ दाहिने हाथ की तरह कदापि तैयार नहीं होसकता यह बात असम्भव जानिये–

मनभावता नियम

हारमोनियम पर दोनों हाथकी उँगलियां एक साथ चलाने का नियम यह है कि जब एक हाथ की उँगली एक सप्तक के किसी स्वर पर हो तो उसी समय दूसरे हाथ की उँगली दूसरे सप्तक के उसी स्वर पर हो—

उदाहरण

एक हाथकी उँगली पहिले सप्तक के मा स्वर पर है तो दूसरे हाथकी उँगली दूसरे सप्तक के मा स्वर पर होनी चाहिये— नीचे का चित्र देखो—

(चित्र सामना)

बाजा															
सीढ़ूसी	सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा
	पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक							

उपरोक्त चित्र का ब्यौरा

उपरोक्त नियम से केवल एक शब्द मा स्वर का निकलेगा जोकि सम्मिलित होनेसे प्यारा ज्ञात होता है—

सदैव स्मरण रखिये कि उपरोक्त नियम से एकही शब्द एकही नाम के दो पर्दों के दबाने से निकलता है यदि इसके प्रतिकूल होगा तो आवाज़ खराब हो जावेगी और शिक्षक के कान ऐसी आवाज़ को कदापि सहन न करेंगे यह एक पहेली है जोकि आपको परीक्षा के पीछे ज्ञात होगा बशर्तेकि आपने दृढ़ता को हाथ से न छोड़ा—

एक नई निकासी

हालमें एकप्रकार के हारमोनियम बाजे बनने लगे हैं जोकि केवल एक हाथ से बजते हैं परन्तु दोनों हाथ का काम देते हैं

अर्थात् एक पर्दे के दबाने से दूसरा वैसाही पर्दा अपने आप दबजाता है वास्तव में यह युक्ति बहुत उत्तम निकाली है हम इसके रचयिता को धन्यवाद देतेहैं जिसने अपनी उग्रबुद्धि और परिश्रम से एक कठिनता को सुगम कर दिखाया है हम उसकी बाबत किसी दूसरे नम्बर में व्योरेवार लिखेंगे और उस गुप्त रहस्य को प्रकट करेंगे जिससे हारमोनियम शिक्षकों के बोध का वृत्त चौड़ा होगा—

उँगलियों का चलाना

परिश्रम का काम

हारमोनियम बजाने में परिश्रम का काम केवल उँगलियों का तैयार करना है जब हाथ तैयार होजाता है फिर सीखने वाले को कोई बात उसके काम में अकाज करने वाली नहीं होती—जहां उँगलियां शीघ्रगामी हुई तुरन्त सीखनेवाला राग रागिनी को बजाने लगता है—

इस कारण सीखनेवालेको उँगलियों की तैयारीमें अधिक समय व्यतीत करना चाहिये और पहिलेही से नियमानुकूल चलानी चाहियें जिससे कि आगे बजाने में कष्ट न उठाना पड़े—

अपने हाथ को हथियार की भांति तैयार करना ऐसा आवश्यक है जैसे कि एक उच्चश्रेणी के हारमोनियस्ट को होना चाहिये जबतक हाथ तैयार नहीं होता गायन बाजेपर आनन्द पैदा नहीं करसकती और न भले प्रकार प्रख्यात होसकती है—

मेरी दृष्टि में बहुत से ऐसे हारमोनियस्ट आये जो गान विद्या को भले प्रकार जानते थे परन्तु हाथके तैयार न होनेसे गवैये का साथ अच्छी तरह नहीं कर सकते थे इसी प्रकार जिनके हाथ अच्छे तैयार होते हैं वह भी राग रागिनी के अलाप को

किसी समय नहीं बजा सकते परन्तु ऐसा बहुत कम होता है जिसका हाथ तैयार होता है वह अच्छा साथ कर सकता है चाहे गवैया कैसाही कठिन राग क्यों न गाता हो–

(२) नियम

उँगलियों के चलाने का नियम शायक़ीन "हारमोनियम मास्टर तीसरे भाग" में देख चुके हैं परन्तु दोनों हाथ की उँगलियों को एक साथ चलाने में कुछ और आवश्यक बातें नीचे लिखना योग्य समझा गया शिक्षक को चाहिये कि प्रथमही से इन नियमों पर चले जिससे शीघ्र अभिलाष पूरी होगी–

एक हाथ से बजाने में केवल चार उँगलियां चलाई जाती हैं परन्तु दोनों हाथ से बजाने में दस उँगलियों से काम लेना चाहिये–

(३) नक़्शा मुक़ाबिला

नम्बर शुमार	दाहिना हाथ	बांयां हाथ	कैफ़ियत
१	अँगूठा	तीसरी उँगली	कनिष्ठिकाउँगली पहिले काम में न लाइये
२	पहिली उँगली	दूसरी उँगली	जब खूब मश्क़ होजावे तो
३	दूसरी उँगली	पहिली उँगली	ज़मज़मा देकर गायनमें आनन्द
४	तीसरी उँगली	अँगूठा	उत्पन्न कीजिये

उपरोक्त नक़्शे से जानोगे कि दाहिने हाथ के मुक़ाबिले में बायें हाथ की कौनसी उंगली चला करती है इससे शिक्षक को उपरोक्त नियम से उँगलियां चलानी चाहियें—

तान

दोनों हाथ से हारमोनियम बजानेमें तान देना कठिन है सीखने वाले को चाहिये कि व्यर्थ परिश्रम न करे ऐसी तेज़ी बायें हाथ में बहुत कम हुआ करती है थियेट्रिकल कम्पनियों में बहुधा हारमोनियस्ट तान बजाते हैं परन्तु वास्तव में वह तान नहीं कहला सकती कारण कि तान का बजाना प्रथम तो कुछ कठिन है दूसरे तान को वही हारमोनियस्ट बहुत खूबी से बजा सकता है जो गानविद्या के नियमोंका भलीविधि ज्ञाता हो परन्तु तब भी तान दोनों हाथों से कदापि नहीं बज सकती—

शीघ्रता

शिक्षकों को उँगलियों के चलाने में शीघ्रता को काम में न लाना चाहिये कारण कि प्रथम तो इस शीघ्रताके कारण बाजा जल्द ख़राब होजाता है दूसरे ताल का स्मरण नहीं रहता और सदैव राग रागिनी का रंग फीका पड़जाता है इससे जहांतक हो अपने हाथ को बजाने के समय तुला हुआ रक्खो उँगलियों को धीरे धीरे चलावो जब भले प्रकार अभ्यास होजावे उस समय ज़मज़में—पलटे—ताल और अँगरेज़ी तर्ज़ों पर हाथ साफ़ करना चाहिये जिसमें सुगमता से प्रत्येक गायन का साथ करसको और गवैये की भी आवाज़ दूनी होजाय—

थियेट्रिकल हारमोनियस्ट

कोई कोई हारमोनियम के प्रेमी जिनको बहुधा थियेट्रिकल

कम्पनियों के तमाशों में हारमोनियम बाजा सुनने का सौभाग्य प्राप्तहुवा है वह यह यत्न किया करते हैं कि किसी प्रकार से वह थियेट्रिकल हारमोनियस्ट से बाजा बजाना सीखैं और इसी ध्वनि में वह अपना बहुत सा रुपया ख़र्च कर बैठते हैं–इसके अतिरिक्त उनको किसी समय अपमान की गठरी शिर पर उठानी पड़ती है अन्त में अपने शौक़ को सदैव के लिये तिलांजलि देना पड़ती है–थियेट्रिकल हारमोनियस्ट जोकि पेशेवर होते हैं भला वह किस प्रकार एक सज्जन पुरुष को उसके शौक़ पूरा करने में सहायता दे सकते हैं–प्रथम तो वह स्वयं गानविद्या के नियमों से बेसुध रहते हैं दूसरे उनका चाल चलन ख़राब सोहबतों में रहने से बिगड़ जाता है तीसरे शौक़ीनों की खुशामद से वह और भी नख़रे दिखाते हैं–फ़ीस वह मांगते हैं कि जो आजकल्ह एक यम. ए., की वेतन के बराबर है उनका बजाना मामूली होता है अलबत्ता पेशावर होने के कारण अभ्यास विशेष हो जाता है परन्तु बे क़ायदा– उनका हारमोनियम जभी तक अच्छा जान पड़ता है जब तक स्टेज में धरा रहेगा और उसके साथ एक कमासिन ऐक्ट्रेस (नाटक करने वाली स्त्री) अच्छे स्वरों से अंगरेज़ी तर्ज़ गाती रहेगी–

संकेतैं

ध्वनि–अर्थात् गायन में राग या रागिनी का ठाठ जानने के लिये इस पुस्तक में ध्वनि का नाम लिख दिया है जिसमें सी-खने वाले को ज्ञात होजावे कि यह गायन किस डिगरिक्स रंगत में बजाई जावेगी जिससे आनन्द दूना होजावे जैसे ध्वनि ज़िला–काफ़ी आदि–

ताल–इस पुस्तक में ध्वनि के साथ ही ताल भी बतला

दिया गया है जिसमें स्वर और ताल के ज्ञात होजाने से रागिनी रंग पकड़े और साज़ बेताला न बजे ताल और उनके दौरे मय बोल तबला के पृष्ठ (२८) पर लिखदिये गये हैं शिक्षक को चाहिये कि उनको अच्छी तरह स्मरण करले जैसे ताल कहरवा आदि–

लय–बिना लय के गाना ठीक नहीं रहसकता–शिक्षक को लय का ध्यान अवश्य रखना चाहिये अर्थात् ठा (धीरे) दुगुन (जल्दी) धीमी–लेटी हुई आदि–

समय–यदि गायन को रागिनी के नियमित समय पर बजाया जावे तो तुरन्त असर होताहै हारमोनियम शिक्षक के अभ्यास के लिये समय की पाबंदी नहीं–

समका स्थान–जब ताल का दौरा खतम हो जाता है और वहां से फिर ताल प्रारम्भ होता है तो समका ध्यान रखना आवश्यक है इस कारण इस पुस्तक में समका स्थान बतला दियागया है–

तर्ज़–थियेट्रिकल तर्जें बहुत कठिन होती हैं और बिना तर्ज़ जाने नहीं बज सकतीं इस कारण गायन के पहिले उसकी तर्ज़ लिखदी गई है जिससे बहुत जल्द ज्ञात हो जावेगा कि यह गायन किस तर्ज़ की है–

चित्र हारमोनियम–जिस गायन में हारमोनियम के जितने पर्दे काममें आना चाहिये उनका चित्र बनाकर बतला दिया गया है सीखनेवाले को उनके देखने से हरप्रकार की भूल तुरन्त ज्ञात हो जावेगी हारमोनियम को अपने सामने रखकर दिये हुये स्केच से मिला लेना चाहिये ताकि बजाने में सुगमता हो–

लहजा और डगर–गायन के नीचे यह भी बढ़ादिया गया है कि यह थियेटर के तर्ज़ तमाशा में ऐक्टर किस लहजा से

गाते हैं जिसमें सीखनेवाले को नाटक की चीज़ें बजाने का पूरा आनन्द आ जावे–

अन्तिम नोट–प्रत्येक गायन के अन्त में जो नोट दिये गये हैं उनको ध्यान से देखना चाहिये–

शिक्षा

(१) वाजे की धौंकनी सदैव धीरे धीरे एकही चाल में चलानी चाहिये–

(२) जो गायन वाजे में निकालना चाहो उसको पहिले एक दो वार गले से भी निकालो और उसका ठाठ भी जानलो कि यह किस रंगत में वजेगी–

(३) तवला–ढोलक–चंगादि का साथ किया करो जिस से ताल ज्ञात होता रहे और हाथ जल्द चला करे–

(४) किसी गानेवाले का प्रथम सेही साथ करना स्वयं गाने से अच्छा है–

(५) साथ करना कुछ कठिन है इसके लिये प्रैक्टिस दरकार है परन्तु लज्जा कदापि नहीं करनी चाहिये और न घबड़ाना चाहिये नहीं तो कुछ भी न आयेगा–

(६) हारमोनियम वजाने से प्रथम पर्दों पर उँगली रखलो तब धौंकनी चलावो और जब वाजा वन्द करना चाहो उस समय पहिले धौंकनी वन्द कर दीजिये पीछे उँगलियां पर्दों पर से हटाइये यदि इसके प्रतिकूल होगा तो वाजा जल्द खराव हो जावेगा–

(७) पर्दोंपर एक के बाद दूसरे पर उँगलियां रखिये और धीरे से पर्दे को दवाइये–

(८) कभी भूल से भी अँगूठा काले पर्दे पर न रखिये—

(९) गाने का अभ्यास अवश्य करना चाहिये जिससे बजाने में सुगमता रहे और जल्द सफलता हो–

(१०) जल्दी जल्दी बाजा बजाना शिक्षक के लिये लाभदायक नहीं किसी दूसरे हारमोनियस्टको देखकर मूर्खता नहीं करनी चाहिये–

(११) एक दिन में केवल एक गायन को तैयार करना अच्छा है इससे अधिक बढ़ना अच्छा नहीं कारण कि जो बात प्राप्त की जावे वह पूरी हो अधूरी नहीं–जिससे सदैव निष्फलता का सामना करना पड़ता है जिस गायन को सीखने वाला निकाले उसको उसमें पूरी योग्यता नहीं हुवा करती इसकारण जहां तक होसके प्रत्येक गायन को पूरे तौर से स्मरण करले और जब तक तैयार न हो दूसरे गायन के निकालने का परिश्रम न करे कितनीही बार परीक्षा की गई है कि इसके प्रतिकूल चलनेवाले शिक्षक सदैव निराश रहते हैं–

कुछ आवश्यक बातें

(१) थियेटर की चीज़ें उस समय आनन्द उत्पन्न कर सकती हैं कि जब हारमोनियम के साथ तबला भी हो–

(२) अँगरेज़ी तर्ज़ें अधिकता से जल्दी जल्दी गाई जाती हैं इसके साथ करने में शिक्षक बहुधा घबड़ा जाते हैं परन्तु यह दोष ऐक्टर के गाने से जाता रहेगा–

(३) हारमोनियम के साथ किसी थियेट्रिकल कम्पनी के देखे हुये गवैये को गवाया करो क्योंकि इन तर्ज़ों को जिस लहजे से कि गाना चाहिये हर कोई कभी नहीं गा सकता और न वह आनन्द आ सकता है जोकि एक कमसिन ऐक्टर के गाने से स्टेज पर आता है–

चिह्न

पहिलासप्तक—जिस पर्देपर यह (+) चिह्न हो वह पर्दा पहिले सप्तक का होगा जैसे सा—रे—गा आदि—
(ऊपर: + + +)

दर्मियानीसप्तक—जिस पर्देपर कोई चिह्न न हो वह सफेद पर्दा होगा और केवल दर्मियानीसप्तक में काम में लाया जावेगा जैसे सा—रे—गा आदि—

तीसरासप्तक—जिस पर्देपर केवल (^) यह चिह्न होगा वह तीसरे अर्थात् टेपकेसप्तक का पर्दा होगा जैसे सा—रे^—गा आदि—

कालापर्दा—जिस पर्देपर सूर्यका चिह्न होगा वह निस्सन्देह कालापर्दा होगा जैसे रे—गा—मा आदि—
(ऊपर: * * *)

सफ़ेदपर्दा—जिस पर्देपर सूर्यका चिह्न न हो वह पर्दा सफ़ेद होगा—

मात्रा—मात्रा उसको कहते हैं कि जितनी देर में आदमी एक दो तीन कहसके उसका चिह्न विन्दु है (.) जैसे सा. रे. गा. आदि—

वक़्फ़ा—जिस पर्देके आगे कोई विन्दु हो वहां उँगली उतनी ही देरतक ठहराना चाहिये—यदि एक विन्दु है तो एकमात्रा ठहरना चाहिये और यदि एकसे अधिक हों तो उतनेही मात्रा ठहरना चाहिये जैसे सा. सा.. सा... आदि—

जल्दी—जिस पर्दे से पहिले कुछ विन्दु हों वहां उतने ही मात्रा कम ठहरना चाहिये जैसे .सा..सा...सा आदि—

ज़रब—जिस स्थान पर एकही पर्देसे बहुत से बोल निकलते हैं वहांपर उसके आगे ज़रब (गुणा) का चिह्न (×) देकर

जितनी बार वह दबाया जावेगा वही अंक लिखदिया गया है जैसे सा × २—सा × ३—सा× ४ आदि—

उदाहरण—(१) धा × ३=अर्थात् पहिले सप्तक का * धास्वर—कालापर्दा तीनबार दबाया जावेगा—(२) धा...अर्थात् तीसरे सप्तक का दिया स्वर तीन मात्रा उँगली की ठहराव होगी—(३)..रे=दर्मियानी सप्तक ऋषभस्वर—सफ़ेद पर्दा दो मात्रा जल्द बजेगा—

शिक्षा

(१) उपरोक्त चिह्न भले प्रकार स्मरण करलेना चाहिये जिसमें गायन के समय पृष्ठावलोकन करना न पड़े और निष्प्रयोजन समय न खोना पड़े—

(२) यह सब चिह्न " सोती कृष्णवर्मा हारमोनियम सीरीज़ " के लिये नियत किये हैं प्रत्येक मनुष्यकी बनाई पुस्तक में इनका ढूंढना व्यर्थ है—

ताल और तबला

इस पुस्तक में जो थियेट्रिकल तर्जें लिखी हैं वह नीचे लिखी तालपर बहुत अच्छी बजैंगी शौक़ीन उनके बोल और मात्राओं को अच्छे प्रकार जान लें जिसमें आपको किसी अनाड़ी तबलची से कष्ट न उठाना पड़े और आप उसको समयपर कुछ बतला सकें—

(१) बोल तबला

तालतीन—धा—धा—धींग—धा—धा—धींग—ता—ता—तींग—धा—धा—धींग (१६ मात्रा)

तालचार–धों–तिरकिट–धीन–ता–धीने–धीन–ता–तिरकिट–तीने–ता–तीने–तीन * (१२ मात्रा)

तालदादरा–धां–तिरकिरटा–धा–धीन–ता * (६ मात्रा)

नोट–उपरोक्त बोल समके स्थान के हैं ध्यान से समझना चाहिये–

(२) दौरा ताल

ताल क़व्वाली–बहुधा ताल क़व्वाली पर सब लोग अधिक रीझते हैं कारण कि यह बहुतही सरल व मनभावनी है इस तालमें आठ मात्रा होती हैं पहिली ताल पांचवीं मात्रापर और एक मात्रा पर ख़ाली इसीप्रकार दौरा प्रारम्भ होता है—

तालकहरवां–ताल क़व्वाली के बराबर है केवल भेद इतनाही है कि अन्तिम ताल की गायन ठा की लय में गाई जाती है–डबल कहरवा इसकी दुगुन करने से बनजाता है–

आवश्यक नोट

(१) गायन निकालने से पहिले उसको कंठस्थ करलो–

(२) थियेट्रिकल तर्जें बहुधा कठिन होती हैं इससे जहां तक होसके हारमोनियम में बजाने से पहिले उनको किसी गवैये से सुनलो जिसमें शीघ्र समझमें आजावें और बाजेमें शीघ्र निकल आवें—

(३) अपने किसी मित्र को अपने बाजे के साथ गवाया करो जिससे गायन की ध्वनि चित्त में समाजावे और प्रत्येक गवैये के साथ देने में सुगमता हो—

(४) थियेट्रिकल चीज़ें सदैव स्वच्छता से बजानी चाहिये विशेष कर दोनों हाथों से ताकि बोल साफ़ कटते रहें जिससे

गानेवाले को अधिक गलेबाज़ी न करना पड़े वेश्यायें बहुधा थियेट्रिकल तर्ज़ों को अपनी अनजानी के कारण बिगाड़ देती हैं इसकारण उनका गाना सुनकर अपना ढंग मत विगाड़ बैठो—

(५) थियेट्रिकल टोन में अधिक आ आ ए ए की आवश्यकता नहीं केवल बोल दिखाने की आवश्यकता है जो गानेवाला गाने के समय ऐसा जानपड़े कि वह बातें कर रहा है और स्वर ताल का ध्यान रखता है तो वह निस्सन्देह एक योग्य ऐक्टर कहला सकता है कारण कि थियेट्रिकल तर्ज़ों (अंगरेज़ी) की वस्तुतः कामना यही है—

चूं चूं का मुरब्बा

मारूफ़बर

तमाशा मुरक्कब

ध्वनि कल्याण–ताल चाचर–लय ठा–नक़ आख़िर दिन–तर्ज़–"मनोहर आये करतार"—

सलामी थियेटर

नंबर (१)

अंगरेज़ी तर्ज़

तू है परवरदिगार–साईं तू सिरजनहार–मालिक जग संसार– तू है परवरदिगार–हम सब तुझ पै निसार–कुदरत कुदरत की बहार–गुलबन गुलतर हज़ार–तू है परवरदिगार—

दर्मियानी सप्तक							तीसरा सप्तक					
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	गां	मां	०	०

(१) तू है प र व र दि गा र
धा. पा. गा मा गा मा गा रे सा. *

(२) साँई तू सिर ज न (न) (न) हार
सा×२. रे गा×२ पा मा गा रे सा. *

(३) मा लि क ज ग स (स) न सा आ र
सा. नी धा नी धा पा मा पा. गा रे गा *

तू है परवर....

(४) हमसब तु भ्र पर नि सार कुद
पा×४ धा पा सां×२. रें सां×२. धा×२

रत तुद र त कीव हा र
सां×२ रें×२ गां मां गां×२ रें सां.

गुल व न गु ल त (आ) र ह ज़
सां×२ नी धा नी धा पा मा पा मा गा

आ र
रे सा : तू है परवर.....

नोट—यह सलामी बहुत से ऐक्टर मिलकर गाया करते हैं और जभी गायन में कुछ आनन्द आता है आवाज़ खूब गूँजती है यह तर्ज़ ठा में अच्छी बजेगी—

लय व लहजा—मर्दानी या जनानी आवाज़—ज़ोरदार अलफ़ाज़ दुज़ानूं होकर गाई जाती है—
महल व मौक़ा—जंगल या सुनसान मकान—ईश्वर की याद में मस्त होकर रागिनी अलापनी चाहिये—

नंबर (२)

ध्वनि मालकौंस—ताल क़व्वाली—लयदर्मियानी—वक़्त दोपहर—तर्ज़ " तरह तरह की मिठाई खिलाई "

तीसरासीन पहिला अध्याय

गाना मज़ाक़िया

तमाशा " अख़्तर हिन्द "

अंगरेज़ी तर्ज़—

(१) पुलाव मुतंजन हलुवासोहन नानवही तफ़्तन वाह वा वाह हेलवान सालन कलिया कुन्दन खाऊं तन तन वाह वा वाह-तरह तरह की हो वरयानी पराठे शीरमाल बाक़रख़ानी मारूं फोड़ूं शिरको तोड़ूं किसे थप्पड़ किसे घूंसा वाह वा वाह

पहिला सप्तक							दर्मियानी सप्तक							
						* नी			ग					
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०	

पुलाव — * धा×२   मुतंजन — सा×३   हलुवा — * +नी×२   सोहन — * गा×२

नान वही तफ़्तन	वाह	वाह	वाह
मा×४.	गा*	सा	+नी..*

नोट–शेष सब पद उपरोक्त ढंग पर बजैंगे बहुत शीघ्रता नहीं करनी चाहिये दर्मियानी चाल अच्छी रहैगी–

लब व लहजा–मर्दाना पार्ट–ज़ोरदार अल्फ़ाज़–सम का ख़्याल ज़रूरी है–

महल व मौक़ा–आलम मशर्रत–जोशख़ुशी–हालत बे परवाई हर जगह—

नंबर (२)

ध्वनि पीलू–ताल क़व्वाली–लय दर्मियानी–वक़्त तीसरा पहर–तर्ज़–" जावो जी जावो किसनःदान "–

पहिला अध्याय आख़िरी सीन–दो परियों का आना–राजा हरिश्चन्द्र से शादी का इसरार–राजा का इन्कार–गाना परी का–

हरिश्चन्द्र

तर्ज़ अंगरेज़ी–

(१) जावो जी जावो बड़े दान के दिलानेवाले–

(२) दिलको दुखानेवाले–हमको जलानेवाले–पापी बन जानेवाले–धर्मी कहलानेवाले–

(३) ज़ालिम जल्लाद बन के सफ़्फ़ाकी दिखलानेवाले–जावोजी जावो०–

(४) (दोहा) राजा को आज यहां झूठा बेईमान देखा।
ऊँची दूकान में फीका ही पकवान देखा॥

(५) पापी हत्यारे जारे–निर्दई नाकारे कारे–कपटी मतवारे न्यारे–दिलको हमारे मारे मारे–

(६) क्या जल्लादी-क्या बरबादी-क्या सय्यादी-क्या बेदादी ओ ज़ालिम तरसाने वाले जावो जी जावो बड़े दान के दिलाने वाले—

पहिला सप्तक							दर्मियानी सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	रे	मा	पा	धा	नी	सां

(१) जावो जी / गा※मा. — जाव बड़ / पा. धा — ये / पा — दान / मा. धा※ — के / पा — दि / मा. — ला / गा※ — ने

वाले / सा×२ ⁘

(२) दिल / गा※. — को / रे — दु / गा※ — खा / सा — ने / रे. — वा / +नी※ — ले / सा. ⁘

(३) ज़ालिम जल्ला / नी×३ — द / सां. — बन / नी — के / धा. — सफ़ / पा — फ़ा / मा — की / धा. — दिख / पा

ला / मा — ने / गा※ — वा / रे — ले / सा. ⁘

(४) राजा को आज यहां झू ठा वे ई मान
नी*×३ सां. पा×२ धा. सां. सां नी* धा×३

देखा
पा×२

(५) पा पीहत यारे जारें
धा मा×२ पा×४

(६) क्या जल ला दी क्या बर बा दी क्या सै
पा सां. नी सां. धा नी. धा नी. पा धा.

या दी क्या वे दा दी ओ ज़ा लम तर
पा धा. मा पा. मा पा. रे. मा. धा.* पा

सा ने वा ले*
मा गा.* रे सा..

नोट—प्रत्येक पद नम्बरवार बजाइये बहुत शीघ्रता न करिये—

लव व लहजा—फ़ीमेलपार्ट—नाच सहित (यदि दुगुन करदी जावे) शब्द नाज़ व अन्दाज़ से निकलते रहें—

महल व मौक़ा—दरबार—महल—हर समय—

नंबर (४)

ध्वनि भैरवी–ताल तीन–लय दर्मियानी–समय प्रातःकाल–तर्ज़–" तोरी नज़रिया पै जान आज वारियां"

पहिला अध्याय

४ सीन

चन्द शराबियों को शराब की तारीफ़ में गाना–

लैली उर्फ़ सितारह मंगरेलिया–

तर्ज़ अंग्रेज़ी

(१) भर के पिला दे शराब यार साक़िया–

(२) घोड़े सवार हूं–चौड़ी वरदार हूं–कोड़े फटकार हूं–भरके पिलादे शराब.....

(३) ऐसी रंगीन खेज़ हो–दिल जिसमें सब का तेज़ हो–जादू भरा हो चश्ममें और तन में– ख़ून आमेज़ हो ः

थोड़ी सी और है शीशे में साक़िया–भरके पिलादे शराब–

(दोहा) ताल नदारद–तबला बन्द–

(४) मय होवे कुंज बाग़ हो साक़ी हो माहेवश–कोई मुख़िल न हो वहां बायस हिजाब का–

गर्दन में हाथ डाल के वह शोख़ वे हिज़ाब–मुहँ से लगा दे मेरे प्याला शराब का–

(तबला शुरूअ़) शबाब हो क़बाब हो और शैर हो फिरा-किया–भरके पिलादे शराब......

दर्मियानी सप्तक								तीसरा सप्तक					
	गा		मा	धा	नी		रें	गीं					
०	०	०	मा	०	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

(१) भर के पि लादे श राब या र साक़िया ∴
मा नी*×२ धा*×३ मा*×३ मा गा* मा×२.

(२) घोड़े सब आर हूं चौड़ी बर दार हूं ∴ भरके
गा *×३ मा×२. मा*×२. धा* मा.* मा.

पिलादे शराब यार साक़िया—.

नंबर (१)

(३) ऐसी रँगी ली खे ज़ हो दिल जिस
सां × ४. मा.. गा* रें* सां मा.. गा*
से सब का ते ज़ हो जा दू
रें सां मा. गा* रें* सां. रें* सां
भरा हो चश म में और दिल में खून
नी*×२ सां. नी* धा*×२ नी.* धा* * मा मा
आ मेज़ हो ∴
गा* मा× ३

—

थोड़ी सी और है शीशेमें (नं० १) साक़िया (४) तबला बंद (दोहा)

मय होवे कुंजबाग़ हो साक़ी हो माह वश आ आ
सा×१३ मा॰ गा॰ रे॰

आ आ आ आ आ कोई मुश्किल न हो वहां बा
सा॰ नी॰ धा॰ *मा॰ मा धा × * ६

यस हि ज आ व का :
नी धा मा मा गा* मा

गर्दन में हाथ डाल के वह शोखवे हि ज आ
सा × १३ नी* सा रे*

व मुँह से लगादे मेरे प्याला
सा —नी*धा*मा—*गा—*मा (वहुतजल्द) मा×*६

शर आब का :
धा* मा मा गा मा

शराब हो कबाब हो और शैर हों फ़िराक़िया॰:॰ (व वज़न फिरके पिलावे) + फिर पहिले से वजाओ—

नोट—इस तर्ज़ को कठिन न समझिये यह बहुत सुगम है गले-बाज़ी का काम है हाथ की तैयारी आवश्यक है एक टुकड़े को पांच पांच बार वजावो—जिसमें अच्छी तरह समझ में आजावे—

लव व लहजा—मिस्ल शराबियोंके झूमते हुये नशेमें गाना—

महल व मौक़ा—दूकान शराब आलम वेहोशी तारी—नशे में बदहोश—

नंबर (५)

ध्वनि बरवा–ताल कहरवा–लय चढ़ी या दुगुन–वक़्त दोपहर तर्ज़–"ऐसी रँगीली"

दूसरा अध्याय

३ सीन

रेलगाड़ी की तारीफ़ में गाना–

फ़िसानअजायब उर्फ़ खुरशेद ज़रनिगार

तर्ज़ अँगरेज़ी–

(१) धुयें की गाड़ी उड़ाये लिये जाय–

(२) पैसे का लोभी फिरँगियारे बाबू–धुयेंकी गाड़ी उड़ाये लिये जाय–

(३) भक ! भक !! धुयेंकी गाड़ी–

(४) ज़ात नहीं देखे जमात नहीं देखे–एकदमही सबको बिठाये लिये जाय–

भक ! भक !! भक !!! धुयेंकी गाड़ी हिन्दू मुसल्मान भंगी चमार से–टिकट के रुपये गिनाये लिये जाय–

टिली ली लीलीभर ! धुयेंकी गाड़ी–

दिल्ली शहर से चले जो मुसाफ़िर–बम्बई कलकत्ता भगाये लिये जाय–

अरा रा रा रा र र ! धुयें की गाड़ी...

भक-भक-भक

दर्मियानी सप्तक								तीसरा सप्तक						
		गा				नी			रें		गां			
सा	०	०	मा	पा	०	०	०	०	०	सां	०	०	०	

(१) धु / सा •• — यें / गा* — की / •मा — गाड़ी / पा×२ — उ / मा — ड़ाये / गा — लि / मा — ये / पा — जा / मा — य / गा •• ⁝

(२) पैसे का लो / सां × ४ — भी / नी * — फिर / •धा — क्रि / *नी — या / सा — रे / पा — बा बू / मा गा*•• ⁝

धुयें की—

(३) ज़ा / पा — त / धा * — न / पा — हीं देखे जमा / नी * × ६ — त न / गा *×२ — हीं / रें * — दे / सां — खे / नी ×•• ⁝

(४) भक-भक-भक / गा * × ५ (अरा रा रा र र-टिली ली ली झर-)

हम वज़न—

नंबर (४)

गायन के पहिले मिसरे नं० ३ के ढंग पर और दूसरे मिसरे नं० (१) के ढंग पर वजैंगे-ध्यान करके बजावो—

लब व लहजा–मर्दाना पार्ट–तेज़ आवाज़–हर एक शब्द ज़बान से जल्द निकले–रुकावट बिल्कुल न हो–जोशमें आकर इधर उधर फिरना–

महल व मौक़ा–स्टेशन–गाड़ी का इन्तज़ार–जल्दी जल्दी क़दम बढ़ाना–

नोट–सम की जगह बहुत सफ़ाई से पार करनी चाहिये नहीं तो गायन निरानन्द रहेगी–

नंबर (६)

ध्वनि ज़िला–ताल झँझौटी–कहरवा–लय चढ़ी–वक्र हर वक्र–

तर्ज़–" मारो मारो पीटो पीटो "

अध्याय दूसरा

सीन चौथा

नौजवां का मार खाना–शोर मचाना–वाय वैला करना–सवाल व जवाब–

तर्ज़ अंगरेज़ी नं० २

(१) लो घेरो–घेरो–पीटो–पीटो–सीधा हो मुवा–
अब छोड़ो छोड़ो भैया–मुझको जाने दो बुवा–
अरे पीटो ज़री पीटो अभी पीटो सभी पीटो–
लगे जूता लगे जूता लगे जूता लगे जूता–
भला खाला बहुत अच्छा मैं लेलूंगा. यह सब बदला–
जब दाऊँ पाऊँगा तो सबको नाच नचाऊँगा–

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
					नी		रे						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	०	०	०	०	०	०

लो	घे	रो	घे	रो	पी	टो	पी	टो	सी
मा	धा	नी ※	धा	नी ※	सा॑	रे॑ ※	सा॑	रे॑ ※	सा॑

धा	हो	मु	वा
नी ※	धा	पा	मा ··

नोट—शेप सब मिसरे ऊपरी ढंगसे बजेंगे यह ढंग बहुतही सुगम है शिक्षक को ऐसी छोटी छोटी चीज़ोंपर खूब हाथ चलाना चाहिये जिसमें आगे कठिन चीज़ैं सुगमता से बजासकें—

लब व लहजा—मर्दाना और ज़नानापार्ट—गायनमें जहां ज़नाना पार्ट है गाने के समय वह पद गला बदलकर बोलना चाहिये—इस तर्ज़ को जितना जल्द बजावोगे उतनाही आनन्द अधिक आवेगा—

महल व मौक़ा—सवाल व जवाब—मारपीट—बाग़ में महल

नंबर (७)

ध्वनि पहाड़ी-ताल क़हरवा-वक़्त सुबह-लय चढ़ी-
तर्ज़-" देखो करके ख़याल क्या क्या कमाल "

अध्याय दूसरा

सीन पहिला

रास्ता गुलाम दस्तगीर का अपने इरादे में कामयाब होकर गाना-

जौहर शमशेर उर्फ़ क़त्ल बे नज़ीर-

तर्ज़ अंगरेज़ी (१)

(१) हुआ हासिल विसाल-बलेजी है न ढाल-नयादिल को मलाल-करूं क्या मैं बयान-

(२) करूं जानी पै जौर-नहीं अच्छा ये तौर-पड़े मुश्किल कुछ और-बुरा है यह गुमान-

वह है नाज़ुक दिमाग़-कहीं देवे न दाग़-होवे न ठंढा चिराग़-मेरे दिलका यहां-

कभी होकर बेज़ार-यहांसे होवे फ़िरार-मेरी मट्टी हो ख़्वार-उसे पाऊं कहां-

है वह नाज़ुक सनम-कहीं देवे न दम-देखूं मुल्के अदम-हाय मेरे सुजान-

छोड़ूं सख़्ती की चाल-कोई फैलाऊं जाल-उसे फंदे में डाल-करूं ताबे फ़रमां-

(ज़वानी)

यह सब कुछ हुवा मगर बेलुत्फ़ी के साथ

दर्मियानी सप्तक तीसरा सप्तक

	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें

(१) हुआ हासिल विसालबल्ले जीहेनद हाल न था
सा ×७ नी×३ धा. धा नी
दिल को म लाल करूं क्यामें च गान ः
सा. रे सा नी. धा×२. पा×२. मा. गा..

(२) करूं जानी पै जोर न हीं अच्छा ये तौर
गा×२ धा×४. नी. धा पा×४.
पड़े मुश्किल कुछ और बुरा हैये
रे×२ गा×२. मा पा. धा×२ पा×२.

गु मान ः
मा गा..

नोट—यह तर्ज़ बहुत जल्दी जल्दी बजाना चाहिये—नम्बर (१) के ढंगपर पहिले पद और नम्बर (२) के ढंग पर गायन के दूसरे पद बजैंगे—

लब व लहजा—मर्दाना पार्ट—ज़ोरदार आवाज़—तेज़ी से चलते हुये—जोश मसर्रत में मस्त होकर—

महल व मौक़ा—बाज़ार—रास्ता—शहराह कामियानी का मुन्तज़िर—

ध्वनि पीलू–ताल तीन–वक्त दोपहर–तीसरा पहर–लय चढी–या दुगुन–

तर्ज़–"ऐसा धोखा देनेवाले"

अध्याय दूसरा
सीन दसवां

मकान ग़ुलाम दस्तगीरका नज़ीरखांकी ग़ैरहाज़िरी से ग़ुस्सा होकर जोश में गाना–

तर्ज़ अंगरेज़ी (३)

(१) पड़गये मक्कारों से पाले–जानों जानों के हैं लाले–

(२) पहिंचानी हुशियारी तेरी–सब जानी अय्यारी तेरी–हमने यह मक्कारी तेरी–ग़ैरोंसेहै यारी तेरी–पड़गये मक्कारोंसे पाले–

(३) करके आप तोड़े काफ़िर पावे पशेमानी पशेमानी–दम बाज़ी का सदक़ः है लोहो पानी लोहो पानी–

(४) हमसे भी तो या वह गई–दुश्मन बनकर की दिल जोई–खान्दान की इज़्ज़त खोई–अब वह बचसकी है कोई–पड़गये मक्कारों से पाले–

(५) यों तो पहिलेही से उसकी आदत को पहिंचाने था पहिंचाने था लेकिन इतनी झूठी लंतरी कब माने था कब माने था–

(६) लानत है उसकी सूरतपर–लानत उसकी उल्फ़तपर–लानत है उसपर लानत–

(७) ऐसी चपला है चंचल–खेला मुझसे भी तू छल–ज़रा आवे तू असफ़ल–कैसे तोड़ूंगा काकुल–

(८) आई साई देनेवाले बनके कैसे भोले भाले–पड़गये मक्कारों से पाले–

पहिला सप्तक							दर्मियानी सप्तक								तीसरा सप्तक
								गा			धा	नी			
०	०	०	०	०	०	०	नी+	सा	रे	०	मा	पा	धा	०	सा

(१) पड़ गये म का नों से पा ले
सा नी+ सा रे गा* रे गा* मा

जा नों जा, नों के हैं लाले .:.
पा मा गा* मा गा * रे सा×२.

(२) पहिचानी हो शि यारीतेरी .:.
सा×४. रे. नी+ सा×४

(३) करके आप तोड़ेकाफिर पाते पशेमानी पशेमा नी
सा×३ *गा×१३ (तेज़ी से बजाओ) गा

दमबाज़ीका सदकः है लो हो पानी लो
रे×७(तेज़ीसे बजाओ) गा* रे सा×२ रे

हो पानी .:.
नी+ सा×२

(४) हम से भी तो या वह गई .:.
पा मा पा मा गा रे सा.

(५) योंतो
सा×२
पहिलेही से उसकी आदत को पहिचाने था पहिचाने
नी※×७ (जल्द बजावो) पा नी※×७
था लेकिन इतनी झूठी लन तरी कवमाने था
सां धा×६ नी※ धा पा×४ धा
कव माने था ⁝
मा पा×३
(६) लानत उस की सूरतपर ⁝
पा×२ धा मा पा×४.
(७) ऐसी चपला है चम चल ⁝ खेला मुझे भी
नी※×४ धा नी सां. सां×२ नी※×२ धा
तू छल ⁝ ज़रा आ वेतो अ स्फल ⁝
नी※ सां. सा ×२ नी※ धा×२ नी※ सां
कैसे तोहूं गा का कुल ⁝
सां×२ नी※ ×२. मा नी सा.
(८) आये साईं देने वा ले वन के कैसे भो ले
धा ※ × ५— पा धा पा गा मा गा※ रे
भाले ⁝
सा×२..

नोट—प्रत्येक नम्बर को मिलाकर बजावो—वज़न का ध्यान रक्खो. इस तर्ज़ को जितनी जल्दी बजाना चाहो बजा सकते हो बहुत अच्छी मालूम होगी—

लव व लहजा—जबान कैंची की तरह चलती रहे—सम की जगह पर शब्द को ज़ोर से कहिये—सब शरीर हिलता रहे—मर्दानी आवाज़ पुरजोश

ध्वनि कौंसिया–ताल कव्वाली–लय द्रुतगामी–वक्र) हर वक्र–

तर्ज–" तेरी बातें हैं प्यारी "

अध्याय पहिला

सीन पांचवां

सलीम और हसीना की आशक़ाना गुफ़्तगू–दोनों का गाना–

तमाशा असीरहिर्स

तर्ज़ अंगरेज़ी

(१) तोरी छलबल है प्यारी तोरी कलबल है न्यारी करो घातें न मोसे सँवरिया जान–

तोरी जुल्फें हैं काली तोरे गालों पै लाली तोरी नैनों की लागी कटरिया जान–

(२) जावो जावो नादान हमें न बनावो जान–नैनों से नैना मिलावो मोरी जान–

ज़रा सीने से सीना मिलावो मोरी जान–

(३) (अ) चलो छोड़ो जी हाथ–नहीं होगी यह बात–करो औरों से घात–

(ब) ऐ, जी वाह वाह वा–वाह वाह वा–वाह वाह वा, तोरी छलबल....*

पहिला सप्तक							दर्मियानी सप्तक						
				*	*	*							
०	०	०	०	पा	धा	नी	सा	रे	गा	मा	पा	०	०

(१) तो री छलबल है प्यारी तो री कलबलहैप्यारी
.सा रे गा × ५, .मा गा रे × ५
क रो बातें न मो से सँ व रि या जान
.गा रे सा × . ४ रे . सा नी धा नी . सा ..
(२) (अ) आ वो आ वो नादान मोसे न ब
पा– धा + पा+ सा +नी×२ सा× ३ रे
नावो जान
सा. नी+
(ब) नैनों से नै ना मि ला वो मो री जान
मा × ४ पा . मा गा रे सा रे गा ..
(३) (अ) चलो छोड़ो जी हाथ न हीं होगी यह बात
गा × ६ . .मा गा रे × ४
कर व औरों से घात
गा रे सा × ४
(३) (ब) ऐ जी वा ह वा ह वा वाह वाह वाह
सा रे मा रे सा रे गा सा रे सा ..
वाह वाह वाह
नी+ धा+ +नी सा .
तोरी छलबल...पहिले से बजावो

नोट—यह प्रश्नोत्तर का गाना स्त्री पुरुष का है इस कारण जहां स्त्री उत्तर देती है वहां गानेवाले को अपना गला बदल कर स्त्रीकीसी आवाज करलेना चाहिये अपूर्व आनन्द आयेगा—

लय व लहजा—मर्दाना और जनानापार्ट दोनों इस ढंगमें अदाकिये जावेंगे—औरत का पार्ट नाज़ो अन्दाज़ से भरा होगा और मर्दानापार्ट मुहब्बताना बेसबरी का पहलू लिये हुये होगा—

महल व मौक़ा—ख़ालीमकान—खुशी का वक़्त

नंबर (१०)

ध्वनि विहाग—ताल दादरा—लय चढ़ी—वक़्त शाम व रात

तर्ज़—" अगेन अगेन एंड अगेन "

तीसरा अध्याय

सीन तीसरा

फुलफुलका अपनी दोनों बीबियों से जूते खाना और तोबा तिल्ला करना—

तमाशा जाम जमशेद उर्फ़ जाम जहांनुमा

तर्ज़ अंगरेज़ी

(१) पनाह ! पनाह खुदा की पनाह

(२) की औरत पै औरत उठा इतनी अज़ीयत गया मर खुदा की पनाह—

निकाह ! निकाह ! हुआ जब निकाह—

तब औरत ने डांटा—कि ला दाल आटा चले घर खुदा की पनाह—

शादी ! शादी ! जो हुई दूसरी शादी—

मिली उसकी दादी–दुहाई, मचादी सरासर खुदाकी पनाह–
पनाह ! पनाह ! खुदा की पनाह–

इधर इसने खींचा–उधर उसने ईंचा फटा शिर खुदाकी पनाह–
पनाह ! खुदा की पनाह–

दर्मियानी सप्तक
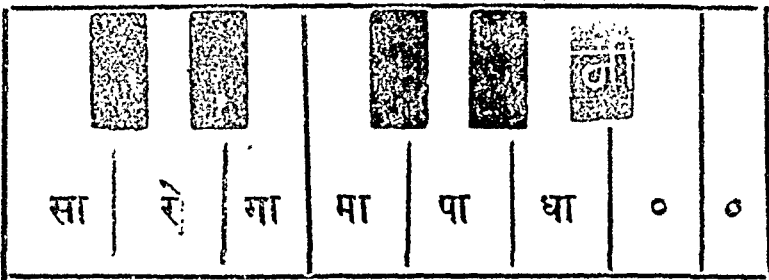
(१) (अ) प नाह प नाह खु दा की प नाह
सा मा. सा मा सा मा गा रे सा..

(ब) प नाह प नाह खु दा की प नाह
सा मा. सा मा. सा मा गा मा पा..

(२) की औरत पै औरत उ ठा इतनी अज़ीयत गा या
.मा ..धा×५ .पा ..नी×५ .पा धा

मर खु दा की प नाह फिर पहिलेसे बजावो–
पा. मा गा रे. गा मा.

नोट–नंबर १ (अ) शुरूअ में बजाना चाहिये और जब नंबर (१) को नंबर (२) यानी अन्तरे से मिलाना चाहो तो नंबर १ (ब) में बजावो—

नंबर २ की तर्ज़ पर आगे अन्तरे बजेंगे +

लब व लहजा—मर्दानापार्ट में जोरदार अल्फाज अदा किये जावेंगे गानेवाला दोनों बाजुओं की तरफ़ झुकता रहेगा यह तर्ज़ जल्दी जल्दी बजेगी—

महल व मौक़ा—मकान—दो बीवियों के बीच में मियां खड़े हुये खुदा से पनाह मांग रहे हैं—

भूमिका

आहा ! क्याही आनन्द भरा सीन दृष्टि आरहा है थियेटर वाले भी कमाल करते हैं-तुरन्तही जंगलका महल और महल का बाग़ बनादेते हैं अजी यही नहीं और भी सितम करते हैं कि भूतकाल का चित्र आन की आन में ज्यों का त्यों बना कर दिखला देते हैं आश्चर्य तो तब होता है कि जब ऐक्ट भी जैसा चाहिये वैसाही ठीक और मुनासिब ढंगपर किया जाता है जिससे देखनेवाले को यह ज्ञान नहीं होसक्ता है कि यह असल है या नक़ल-कम उम्र और गुलगूना लगाये हुये ऐक्टर अपनी ज़र्क़ वर्क़ पोशाकों में ऐसे दिखलाई देते हैं जैसे सितारे भूमिपर इतराये हुये धीरे धीरे चल रहे हैं उनका गाना और नाज़ो अन्दाज़ से नाचना इन्द्र के अखाड़े का समां बांध देता है थियेटर हाल में इधर ड्रापसीन उठा उधर दर्शकों के मुख प्रसन्नता से गुलाब के फूल की तरह खिलगये-मजाल क्या है कि दृष्टि सामने से हटजाये जबतक ऐक्टर सुरीली तान और शातिर बयानी से काम करता रहता है-सब दर्शकों के मुखोंपर चुपकी की मुहर लगी रहती है ऐक्टर का बताना-छोटी उम्रके लड़कों का मस्ताना झूम झूम के चलना-इधर हरियाली का चमकना दमकना यदि सच पूछिये तो सब के चित्तों पर चुम्बक पत्थर कासा असर करता है-

भारतवर्ष के प्रत्येक भाग में थियेट्रिकल कम्पनी के चर्चे रहते हैं-ऐसा कोई शहर नहीं है जहाँ इसके चाहने वाले दृष्टि न आते हों मतलब कि इसकी धूम खूब ज़ोरोंपर है हर गली कूचों में

थियेट्रिकल तर्जोंकी आवाज गूंजती है नाचने गाने की महफिलों में थियेटर की चीज की फर्मायश जरूर होती है हर हालत में थियेटर पसन्दगी की नजर से देखा जाता है जबकि "रिकार्डिंगमेटर" से भरे हों।

इस भाग में हिन्दोस्तानकी बड़ी मशहूर कम्पनी "इंडियन इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी" के लाभदायक ड्रामोंके अच्छे अच्छे गायन लिखे गये हैं और सरलभाषा व मनभावनी तर्जों से संग्रह किया है जिससे अल्पज्ञ भी सुगमतासे प्रत्येक गायन को वजा सकता है—

आजतक इस फेशन की कोई किताब मेरी दृष्टि नहीं पड़ी और न किसी गुरुने इस ओर ध्यान किया कदाचित् सावकाश न हो या कठिन समझकर हियाव हार बैठे हों शुभचिन्तक ने इस कठिनता को सुगम करादिया है और बहुत दिनों का परीक्षा से जो मुझे बहुधा कम्पनियोंमें रहने से ज्ञात हुआ है इस पुस्तक को रचा है जिससे मुझको आशा है कि हारमोनियम शिक्षकों के लिये और मुख्य कर थियेटर के शौकीनों के लिये इससे बहुत कुछ लाभ मिलेगा—

इंडियन इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी

यह मख्यात कम्पनी सन् १८८२ ईसवी में जनाब हाफ़िज़ मुहम्मद अब्दुल्ला साहब रईस चितौरह ज़िला फतेहपुर युक्तप्रदेश ने स्थापित की थी और इस बेनज़ीर कम्पनी के सरपरस्त अली जनाब मुअल्ला अलक़ाब सिद्धि श्री महाराजाधिराज श्री राजा सवाई रईसुद्दौला सिपहदारुल्मुल्क सरआमद राजा हायहिन्द श्री सवाई महाराज राना निहालसिंह लोकेन्द्र बहादुर दिलेरजंगजी देव—यम. सी. आई. यच., धौलपुराधीश हुये थे—

उक्त हाफ़िज़जी ने पचास ड्रामे के क़रीब अपनी कम्पनी के लिये स्वयं बनाये थे जोकि सबके पसन्द हुये कि बच्चा बच्चा आपही के बनाये हुये गायन अलापता हुवा दिखाई देता है सैकड़ों थियेट्रिकल कम्पनियां आपकेही बनाये हुये ड्रामों से तमाशा करती हैं और हज़ारों ऐक्टरों का इन्हीं की बदौलत रोज़गार चलता है उक्त हाफ़िज़ साहब का नाम सदैव जीवित रहेगा क्योंकि हिन्दोस्तानियों के दिलों पर आपके गुण भरे और फल देनेवाले ड्रामों का असर बखूबी हो चुका है—

उक्त हाफ़िज़ साहब के शिष्य रशीद मिर्ज़ा नज़ीरबेग साहब ने भी अपने गुरु का ढंग अंगीकार किया है और आज तक तीस चालीस ड्रामे तैयार कर चुके हैं जोकि वास्तव में प्रशंसा योग्य हैं—

उन सब में से हरिश्चन्द्र का ड्रामा बहुत अच्छा है इसकी प्रशंसा करने के लिये कोई उत्तम शब्द नहीं मिलता कि जिससे उसकी धूमधाम प्रकट होसके—संस्कृत के शब्दों को ऐसे स्थान पर लाना वास्तव में एक होनहार ड्रामा देखनेवाले का

काम है इसके समक्षमें और कम्पनियों ने भी ड्रामे बनाये हैं परन्तु उनका विषय भद्दा, ढंग फीका-मिर्जा साहब के बनाये हुये ड्रामे का प्लाट बहुतही बढ़िया है और उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता कारण यह कि यदि कोई पुरुष स्टेज पर तमाशा न देखसके केवल एकबार सरसरी तौर पर पढ़ही जावे तो वह बिना आंसू टपकाये न रहसकेगा यह बात हर एक में नहीं पाई जाती-अपने शौक़ीनों के चित्त विनोदार्थ उपरोक्त दोनों महाशयों के मख्यात ड्रामों में से कुछेक अच्छी तर्जें और सुगम इस पुस्तक में लिखी गयी हैं जोकि अपने आप में निराली हैं—

ताल और तबला

पाठक ! ताल और तबलेसे भी कुछ बोध रखना हारमोनियम-शिक्षक को अनुचित न होगा यहां पर कुछ नोट लिखे जाते हैं-ब्योरेवार हाल जानने के लिये "हारमोनियममास्टर बारहवां भाग" देखिये—

ताल

थियेट्रिकल चीज़ों के बजाने में ताल का ध्यान रखना परमावश्यक है नहीं तो कुछ समां न बँधेगी कारण कि बहुधा ऐक्टर ताल पर काम करते हैं-यदि ताल में कुछ खराबी आवेगी तो गायन खराब हो जावेगी और ऐक्ट भी निरानन्द होजावेगा-इससे हारमोनियम के सीखनेवाले को चाहिये कि वह ताल को मुख्य समझे और बड़ी सावधानी से बजावे-

तबला

कोई कोई अभिमानी तबलची कहा करते हैं कि तबले को

देखकर हारमोनियस्ट बजावे और तबले का ध्यान रक्खे यदि इन से पूछा जावे कि क्या गानेवाले के गलेके साथ तबला चल सकता है तो अवश्य है कि निषेध में उत्तर देंगे फिर जाना नहीं जाता कि आंखों और कानों पर पट्टी बांध कर यह तबलची ऐसा शब्द क्यों जिह्वा से उच्चारण करते हैं जोकि गानविद्या के बिल्कुलही विरुद्ध है-महाशयो ! सदैव स्मरण रखिये कि हारमोनियम केवल गानेवाले का साथ देगा तबले वाले का नहीं-यदि तबला लयसे आगे या पीछे हो जावे या हारमोनियस्ट तबले से पृथक् काम करता हो तो दोनों दशाओं में तबलची दोषभागी है कारण कि हारमोनियम या सितार सारंगी आदि का काम गानेवाले का साथ देता है और इनको देखकर मंजीरे, चंग, मृदंग, तबला, डफ आदि अपना काम करते हैं इससे हारमोनियम तबले के आधीन नहीं किन्तु तबला हारमोनियम के आधीन है और होना चाहिये—

कुछ आवश्यकीय बातें

(१) थियेट्रिकल गायन के बजाने में हाथ की उँगलियों को भले प्रकार तैयार करना पड़ता है इसलिये जब हाथ खूब तैयार हो जावे तब यह गाइड प्रारम्भ करनी चाहिये-

(२) सदैव अँगरेज़ी तर्ज़ें जल्दी बजाई जाती हैं परन्तु सीखनेवाले को चाहिये कि प्रारम्भ में चाल धीमी रक्खे और धीरे धीरे लय बढ़ाता जाय-यदि प्रारम्भही में तेज़ी से काम लिया जावेगा तो तर्ज़ खराब हो जावेगी-

(३) अँगरेज़ी तर्ज़ों में केवल जीभ चला करती है गलेबाज़ी का काम बहुत कम होता है इसकारण सीखनेवाले को चाहिये कि हारमोनियम में बोल साफ़ साफ़ निकालता रहे नहीं तो वह आनन्द न रहेगा-जैसे जीभ कतरनी की तरह चलती है

वैसेही हारमोनियम पर उँगलियां पदों की आवाज़ काटती रहें—

(४) गाने के समय स्त्री और पुरुष के पार्ट को पृथक् पृथक् कहो—यह आवाज़ बदलने से भले प्रकार ज्ञात होसकती है और गानेवाला जभी " परफेक्ट ऐक्टर " कहला सकता है—

(५) यदि सम्भव हो तो किसी ऐक्टर से उस गायन को एक बार अवश्य सुन लो जो तुम हारमोनियम में बजानी चाहते हो तो बहुतही सुगमता होगी और जल्द सीख जावेगे नहीं यह किताबही आपको एक होनहार ऐक्टर का काम देगी—

शिक्षायें

(१) थियेट्रिकल चीजें गाने के लिये आवश्यकतानुसार लय व लहजा बदलना पड़ता है नहीं तो गायन में मन न लगेगा—

(२) जबतक एक चीज़ ठीक न हो दूसरी प्रारम्भ न करो—

(३) हारमोनियम की ओर बहुत कम देखा करो देखकर बजाना ठीक नहीं—स्वरों की आवाज़ पहिचानो और उनके उतार चढ़ाव का ध्यान रखकर उँगलियां चलाओ कभी नैराश्यता का मुख न देखोगे किन्तु प्रत्येक स्थान में सहायता मिलेगी—

(४) तबला और मंजीरा या चंग हारमोनियम के साथ बजैगा तो बजाने वाले का हाथ बहुत जल्द चालू होगा और ताल का भी ज्ञान हो जावेगा—

(५) किसी दूसरे को देखकर ईर्षा कदापि न करना चाहिये किन्तु अपने से अधिक जानने वाले से कुछ प्राप्त करने का उपाय करना चाहिये क्योंकि यह विद्या समुद्र के समान है प्रत्येक मनुष्य को पूरा गुरु होजाना यह असम्भव है अलबत्ता परिश्रम करना अपना धर्म है—

ग्रंथकर्त्ता

हारमोनियममास्टर।

छठा भाग।

पहिला ऐक्ट–पहिला सीन–महल चन्द्रसेन–

महल में चन्द्रा की विधवा–सहेलियों का नाच–आनन्द भरा सीन–ध्वनि मिली हुई–ताल अद्धा कहरवा–लय दुगुन–वक़् हर वक़्

तर्ज़–"बेचै प्यारी प्यारी मालिनिया"

(नया)

बालबिधवा विवाह नाटक

नया तमाशा

(बनाया)

प्रोफ़ेसर सोती कृष्णराय क़मर देहलवी ग्रन्थकार

गति–नाच–अंगरेज़ी

सब–(१) चमके प्यारी प्यारी सूरतिया मतवारी–

(२) सूरतिया मतवारी–मूरतिया बलिहारी–चमके प्यारी....

चित्रा–(३) हाल सुनाऊं तुम्हें–खूब शर्माऊं तुम्हें

बातें बताऊं तुम्हें–ऐसा जलाऊं तुम्हें

ऐ दिलदार तुम्हें–दिखलाओ बहार हमें

बनाओ निगार हमें–करलो प्यार हमें

चम्पा–(४) बाल बिधवाकी देखो उमंग–

हमसे ऐसा करो न तुम तंग–

जल्दी शादी का करो तुम ढंग—
वर्ना बिगड़ेगा सारा यह रंग—

कमला—(५) जमे शादी का रंग—निकले दिल की तरंग—
हँसी वाली उमंग—कमर न होगा यह ढंग—
सब—(६) गमख्वारी—लाचारी—बेज़ारी चमके प्यारी....

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
■	गा	■	धा	नी			रे	गा^	■	■	■		
०	०	०	मा	पा	०	०	सा^	रे^	०	मा	०	०	०

नंबर (१) चमके प्या री प्यारी सूर ति या म
गा×*रे पा धा* नी*×४ गा* रे गा*
त वा री
^रे* सा. नी*....

नंबर (२) सूरतिया मतवारी मु र ति या वलि
रे×४ गा×४ .. नी* सा^ मा^ गा* रे*
हा री
सा^ नी*....

नंबर (३) हा ल सु नाऊं तुम्हें ख उ व
गा* पा धा* नी*×५ गा* ^रे
शर मा ऊं तुम्हैं
गा* रे* सा^ नी*×२.

नंबर (४) बा ल विधवा की दे खो उ मंग
गा* मा रे*×४ सां रे गा*..

नंबर (५) ज मे शादी का रंग
गा* मां रे×३ गा×*२..

नंबर (६) ग़ म ख़्वारी ला चा री
गा* मां रे×२. सां नी* धा.
वे ज़ा री
पा सां नी*....

सूचना—यह नाच बहुतही अच्छा है और सरल रीति से हारमोनियम पर बतलाया गया है प्रत्येक टुकड़े नंबर वार बहुत स्वच्छता से बजाने चाहिये—

नंबर ५ को बहुत फुर्ती के साथ बजावो और नंबर ४ को कुछ कमी से बजावो—हाथ हारमोनियम पर से उमंग या रंग कह कर जल्दी से हटा लिया करो तो आनन्द आ जावेगा—

इम्पीरियल थियेट्रिकल कम्पनी जोधपुर

चूं चूं का मुरब्बा

पहिला ऐक्ट—पांचवां सीन—कोह क़ाफ़—पर्दा नम्बर ७—

विश्वामित्र का परियों को हरिश्चन्द्र के दर्बार में भेजना चौबोला-ध्वनि ज़िला झँझौटी-ताल क़व्वाली-वक़ दोपहर-लय टा-

तर्ज़—"राजा हूं मैं क़ौम का इन्दर मेरा नाम"

हरिश्चन्द्र

तमाशा

नम्बर (१) विश्वामित्र जी

ऐ परियो अब जावो तुम हरिश्चन्द्र के पास

नाच दिखाना गाना सुनाना उसको वेतरवास
देवे तुम्हें इनाम जब तो कहना श्री महराज
स्त्री अपनी बना लो हमको तुम अपनी शिरताज

परियां

अच्छा ऋषी जी जाते हैं हम राजा के दरबार
जैसा कहा है तुमने हमसे वही करेंगे कार

(परियों का जाना)

पहिला सप्तक	दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
नी	नी	
० ० ० ० ० ० ०	सा रे ० मा पा धा ०	सां ० ० ० ० ० ० ०

अन्तरा स्थायी

ऐपरियो अब जावो तुम हरिश चन्द र के पास...
रे × २ सा. रे पा. मा. रे×२ सा रे मा-रे-सा+नी*

देवे तु म्हें इन आम जब तो कहना शर इ
रे×२. मा .पा सां नी* सां. पा × २ .सां नी*

महाराज
धा-नी.*-पा:मा

सूचना—शेष सब गायन उपरोक्त वज़न में बजावो—

(२) जहां तक होसके धीरे धीरे उँगलियां चलावो और ताल का भी ध्यान रक्खो—

(३) यह गाना हाकिमाना लहजे में गाया जाता है और आवाज़ भारी अच्छी रहती है–

(४) परियों के जवाब में आवाज़ बदलनी पड़ती है परिश्रम करना चाहिये–

पहिला ऐक्ट–छठासीन–महल हरिश्चन्द्र–पर्दा नम्बर ६ हरिश्चन्द्र के दरबार में परियों का आना और गाना व नाचना–पंजाबी वज़न-ध्वनि पहाड़ी-ताल कहरवा-हरनङ्ग-लय दर्मियानी–
तर्ज़–"महबूब जानी दे"

परियां

(नाच)

नंबर (२)

महाराज गायें अब हम–फिर नाच नाचें छम छम–हीरों का ताज दम दम–करे शीश ऊपर हरदम–और निगहत भी चमके चम चम–

महाराज....

रैयत यह अब तुम्हारी–तुझसे रहे खुश सारी–यह पुत्र तेरा और नारी–यानी कि प्यारा प्यारी–सुख में सदा रहें बाहम–

महाराज....

विनती नजीर हरि से है-यानी ईश्वर से-दिन रैनि अब पावे-सुख की वर्षा बरसे-महाराज तो मैं झमझम-

महाराज ....

विदूषक-(जवानी) अरे कुछ गाना गाओ और एक एक सुनाओ यह क्या गाती हो (नखरे से) छमछम डमडम झलझम टमटम अड़ ड़ड़ धड़म-

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
						नी			गा				
०	०	०	०	०	०	+धा	०	सा	रे	०	मा	पा	धा

महाराज गावें अब हम और
.+धा+नी+सा*. रे *गा रे. सारे सा .. +धा+नी*

नाच नाचें छमछम
सारे .. गा*रे सारे सा ....

हीरों का ताज दमदम कर शीश
गा* मा पा. मा धा पा. मा × २पा. मा × २ गा* × २

ऊपर हरदम और निगहत भी चमके छमछम
मा पा मा × २.. गा*रे* गा मा गा* रे. सा × २. सा × २ रे....

सूचना-शेष सब गायन उपरोक्त नियम से बजावो—

(१) यह नाच बहुत सुगम और प्यारा ज्ञात होता है बड़ा देखकर घवड़ा न जावो किन्तु परिश्रम करके निकालो "लो फूल जानी ले लो" से मिलताहुआ है–

(२) इस गायन में जितना गले से आवाज़ का चक्कर अर्थात् घुमाव निकलेगा उतनाही आनन्द पैदा कर देगा–कम उम्र के लड़कों की आवाज़ ऐसेही गानों में खूब गूंजती है यद्यपि ज़नाना पार्ट और ज़नाना लहजा है तदपि पुरुष भी बहुत स्वच्छता से गायन के बोल काटते हैं–

दूसरा ऐक्ट–पहिला सीन–ड्योढ़ी हरिश्चन्द्र–पर्दा नम्बर ६ विश्वामित्र का ताज व तख़्त लेकर तीनों को निकाल देना–तीनों का गाना और चला जाना—

ग़ज़ल–ध्वनि मांड–ताल परतो–वक़्त तीसरा पहर–लय धीमी–
तर्ज़–"ढूंढेंगे आसमां कोई अब ऐ वहन नया"

हरिश्चन्द्र–तारावती–रोहिताश्वकुँवर

नंबर (३)

सब राज पाट छोड़के जंगल को चलते हैं
सबको सलाम करते हैं घर से निकलते हैं
कुछ राज ताज तख़्त के जाने का ग़म नहीं
लेकिन वचन को अपने नहीं हम बदलते हैं
ऐ अहले बज़्म आख़िरी तुमको सलाम है
अपना वचन निभाने को हम यां से टलते हैं
जो कुछ कहा सुना हो हमारा मुआफ़ हो
हिरदै बरे हमारे वचन से दहलते हैं
(चारों का नक्षत्रा सहित वन की ओर जाना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	०	०	०	०	०	०

स्थायी

सब्र	गा	जफा	न	छो	ड़	के	ज
सा.	रे.	मा×२..	पा.	धा..	पा.	मा..	.मा

न	गल	को	च	ल	ते	हैं
..पा	गा.	रे	..सा	गा.	रे.	सा....

अन्तरा

कुन्दराज	ताज	तरूतकेजा	ने	का	ग	म	न	हीं
पा× ३	धा×२	सां×८...	नी.	धा.	पा	नी	.धा	पा.....

सूचना—शेष सब पहिले पद अन्तरा के वज़न पर बजेंगे और दूसरे पद स्थायी के नियम से बजेंगे—

(२) यह तर्ज़ बहुतही दुःखमय है जिस समय रागिनी का रूप ज्ञात होता है कलेजा मुहँ को आता है और जिगर टुकड़े टुकड़े हो जाता है—गाने वाले का चित्त प्रसन्न नहीं रहता है और वह इतना असर करनेवाला हो जाता है कि एक घंटे तक चुप होकर सो जाता है जबकि समय का ध्यान रखकर रागिनी गाई जावे—

(३) लब व लहजा मिस्ल सितम रसीदः शख़्स के जैसा होना चाहिये अलबत्ता कलपना नहीं चाहिये—

दूसरा ऐक्ट—दूसरा सीन—जंगल वीराना—पर्दा नम्बर ४
राजा हरिश्चन्द्र का स्त्री, बालक, नक्षत्रा सहित वन की ओर
जाते दृष्टि आना और गाना—

गज़ल—ध्वनि सिन्धुरा—ताल चाचर—वक्त दश बजे दिन—
लय दर्मियानी—

तर्ज़—" फिर आता है हमें किस जा तबीयत का बदल
जाना—

हरिश्चन्द्र—तारावती—रोहिताश्व

नंबर (४)

खिलाता रंग है क्या क्या मुक़द्दर का बदल जाना
कभी खूने जिगर पीना कभी लख़्ते जिगर खाना
यह क्या दिल में फ़लक पीरनाहंजार के आया
छुड़ाया रंज देने को सभी अपना व बेगाना
ऐ ईश्वर कौन पाप हमने किया है पृथ्वी पै जो
फिराता है तू यों हमको छुड़ाकर ताज शाहाना
वचन पर अपने हैं साबिर तु सुन फ़रियाद परमेश्वर
तजा सब ऐश व सुख अपना बसाया आके वीराना
नज़ीर अब मेहर हो हरि की विपति टलजाये जो शिर की
नहीं इस जीने से बेहतर है हमको मौत आ जाना

(नक्षत्रा पण्डित का मुकर करके बैठ जाना)

दूसरा सप्तक						तीसरा सप्तक						
		मा	पा	०	०	सां	रें	०	मां		०	०

स्थायी

खि ला ता र रु हैं क्या क्या मु क़द दर
.मा पा नी.* सां नी.* सां मा. गा..रे * सा नी*

का बदल जाना
धा.* नी*सांनी* धा*पा मा.....

दुवारा स्थायी नी* से प्रारम्भ करनी चाहिये जिसमें अन्तरा के साथ ठीक मिलाव रहे :-

छुड़ाया र झ आगे इसी वज़न पर बजाओ वही पर्दे
नी*×२ सां नी*

आयेंगे

अन्तरा

व चन पर अप ने हैं स आ विर
नी* सां गा* मां गा* धा* पा .गा* मा.

तु सुन फर या द प र म ई श्वर
गा*×२ रे गा* मा पा मा गा* रे सा :

सूचना-शेप सब गायन इसी प्रकार बजेगी यह भी एक अच्छा ढंग है जिसके बजाने से चित्त खुल जाता है-

(२) मर्दाना पार्ट है और दुःखमय आवाज़ में गाई जाती है ऐसी ग़ज़लों की दुगन नहीं होना चाहिये नहीं तो कुछ भी आनन्द न आवेगा-

(३) दर्मियानी लय में ताल देते हुये बजाना चाहिये तो आनन्द भरा सीन दिखाई देगा अन्तरा को कम से कम तीन वार कहना चाहिये—

तीसरा ऐक्ट—पहिला सीन—काशीजी का मन्दिर—पर्दा नंबर ८ काशी जी की स्त्रियों का पूजने को आना और गाना—

ठुमरी—ध्वनि—ईमन कल्याण—ताल—पंजाबी ठेका—वक्त शाम—लय दुगुन—

तर्ज़—"देखो आती हैं सीता जी"

कामिनी मृगनयन चन्द्रावलि

नंबर (५)

तुम्हें पूजन को आई हैं—चेरी तुमरी हूँ—लै फूल व पान और धूप दीपक पूजन........

आरती देखन आई हूं—और सुन्दर चीज़ें लाई हूँ—शिंगरफ़ रोली लौंग सुपारी पूजन........

चावल घी काफूर गरी—चोया चन्दन—सिन्दूर भी—लेके नज़ीर अब पूजा तिहारी— पूजन को आई हैं—

(सबका जाना—राजा हरिश्चन्द्र का आना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	गा	पा	धा	०	सा	रे	मा	०	०	०	०

स्थायी
तु मैं प ऊ जन को आ आ ई हूं
नी* धा. .नी* .रे सा. नी* .धा .पा धा नी*...

च ण री तु म री हूं
मा .पा धा. गा मा मा. गा*....

(१) लै फूल पान और धूप दीपक
नी*×१२

(२) प ऊ जन को आ आ ई
नी* .रे सा. नी* .धा .पा धा.

अन्तरा
हूं (३) आरती देखन आई हूं औ र सुन दर
नी* नी*×३. सा×३ गा*×४ रे सा रे.

ची जैं ला आ ई हूं (४) शि ग रफ़
गा*. मा गा* .रे .स नी*... रे सा नी.*

सूचना—शिगरफ़—रोली—लौंग—सुपारी यह सब एक वज़न हैं इससे उन्हीं पर्दों पर बजानी चाहिये और हरपर्दे के अन्त में "पूजन को आई हूं" नंबर (२) के अनुसार होगा ध्यान करके बजाना चाहिये—

(२) इस गायन को जबतक दुगुन में न बजावोगे कुछ आनंद न आयेगा—

(३) जल्दी २ उँगलियां चलावो और बोल साफ़ काटते रहो—

दूसरा ऐक्ट–दूसरा सीन–जंगल वीराना–पर्दा नंबर ४

राजा हरिश्चन्द्र का तारावती को बेच डालना–तारावती का विलाप करना और रोते हुये गाना–

ग़ज़ल–ध्वनि सोहनी–तालपश्तो–वक़्त आधीरात–लय धीमी–
तर्ज़–"ख़ार हसरत क़ब्र तक दिल में खटकता जायगा"

रानी तारावती

नंबर (६)

क्या मुसीबत है पड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है
है अजल शिर पर खड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है
जिस दिन ऐ राजा जी तुमने सपना देखा रातको
कौन सी थी वह घड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है
आज इस सुख के चमन में अपने गुल से हाय हाय
छूटती है पंखुड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है
एक दिन वह था हज़ारों टहलनी थीं टहल को
या मैं बिकती हूं खड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है
आपकी चेरी जुदा होती है स्वामी आपसे
दुख व ग़मकी सिल अड़ी अफ़सोस है अफ़सोस है

(रानी का कलप कलप कर रोना)

दूसरा सप्तक | तीसरा सप्तक

मा ० धा नी सा रे गा मा ०

क्या | यु | गी | बत | है | प | ड़ी | अक़ | ल
मा .. | धा | नी. | सा. | रे. | सा. | नी. | सा. | नी

अक़ | लों | स | है -:-
सा .. | नी×२. | धा.....

जिस | दिन | ऐ | रा | जा | जी | तुमने | सप
सा. | गा×२. | मा. | गा. | रे. | सा×२. | नी.

दे | खा | रात | को :
नी | सा. | नी×२ | धा....

सूचना—उपरोक्त दोनों ढंग अच्छे हैं—जब पहिला ढंग ठीक होजावे तब दूसरे अन्तरा के साथ मिलाकर बजाओ जिस कि रागिनी रंग पकड़ जावे—

(२) यह "वही सोहनी" है जिसके सुनने से और गाने से पत्थर का भी कलेजा पानी पानी हो जाता है—

(३) इस गाने को कलप कलप कर गाना चाहिये—

(४) इसके सुनने से यह ज्ञातहुवा करताहै कि गानेवाला स्वर से रोरहा है—

(५) बहुधा ऐसी चीजें शोकमय उच्चारण से गाईजाती हैं—

नोट—हारमोनियम बजाने में उँगलियां बहुतही चतुरता से और हलकी चाल से लगानी चाहिये कारण कि यह रागिनी अधिक तीक्ष्णता को अंगीकार नहीं करती है—

दूसरा ऐक्ट--दूसरा सीन--जंगल वीराना--पर्दा नम्बर ४
जा हरिश्चन्द्र का रानी तारावती और पुत्र रोहित से
नना और उनको विदा करना—

गज़ल—ध्वनि बरवा—ताल पंजाबी ठेका—वक़ तीसरा पहर—
धीमी—
र्ज़—" प्रीति में तेरी हे परमेश्वर राज को मैं ने छोड़ा है"

राजा हरिश्चन्द्र

नंबर (७)

ा प्यारी तारा हमारी हम से जुदा अब होती है
कर ज़रा मन में सबर ऐ प्यारी किसलिये रानी रोती है
ुत्र रोहित लगजा गले से इकबार अब ऐ प्यारे
दुख की मारी को समझाना माता तेरी जान खोती है
स्त्री बालक दोनों छूटे धर्म रहा क्या जीने का
हे परमेश्वर इस जगत में क्या मौत भी मेरी सोती है
राज गया सब देश छुटा अब स्त्री बालक छुटते हैं
हा विधना इन रोजों तक़दीर मेरी क्या खोटी है
(काशीनरेश का रानी तारावती और रोहित कुँवर को
लेजाना राजा हरिश्चन्द्र का पृथ्वी पर गिरना)

दूसरा सप्तक								
					नी		रे	
०	०	०	०	०	धा	०	सा	०

स्थायी

प्राणप्यारी ता रा ह मारी
मा×५. धा पा. गा मा×२.

दा अब हो ती है
पा मा.. गा. रे*. सा....

अन्तरा

कर जरा म न में सबर पे प्या री किस
रे*×४सा रे* गा.. मा. गा रे* सा. रे*

लि ये रा नी रो ती है
सा नी* धा. नी*. सा रे*.. सा....

सूचना—शेष सब पहिले पद अन्तरा के नियम से और दूसरे पद स्थायी के ढंग पर बजेंगे—ध्यान कर के बजाना चाहिये—

(२) यह ढंग भी शोकमय पहलू लिये हुये है अन्तिम पद अर्थात् स्थायी कहने के समय छाती पर ज़ोर पड़ता है ध्वनि बरवा के गाने वाले कफी बीमारियों से सदैव पाक साफ़ रहते हैं—सुनने से चित्त बहुत प्रसन्न होता है और गाने वालों से सुनने वालों को एक प्रकार का गुप्त प्रेम हो जाता है—

तीसरा ऐक्ट—चौथासीन—बाग़ काशी—पर्दा नंबर ६—रोहित कुँवर का बालकों के साथ फूल चुनना और गाना—लावनी ध्वनि ज़िलाभाग-ताल क़व्वाली-वक्त रात-लय दर्मियानी—तर्ज़—" गुल चमन में विच्छू छिपा बड़ा ज़हरी है "

रोहित कुँवर

नंबर (८)

क्या हरी वरकिश में फूलरही फुलवारी
इस फुलवारी की रंग वरंगी क्यारी
इक हाथ में लाला लिये खड़ा है प्याला
आंखों में जादू भरा मधुर मतवाला
कहीं खिला हुवा है चमन में यह गुललाला
सम्बुल की ज़ुल्फ़ पर बल खाता है काला
बुलबुल बोली भी प्यारी प्यारी
इस फुलवारी की रंग वरंगी क्यारी
कहीं खिला मोतिया कहीं खिला है बेला
कहीं फूल रहा है फुलवारी में केला
कहीं सरो खड़ा इक पांव से भी अलबेला
कहीं फुलवारी में नाचे मोर अकेला
क्या हरी भरी है फूलों से फुलवारी
इस फुलवारी की रंग वरंगी क्यारी

(रोहित कुँवर का फूल चुनना सांपका निकलना)

गणपति

बैत

अरे भाग रोहित यहां से शिताब
यह निकला अरे सांप खाने खराब

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	गां	पां	०	०	०

स्थायी
साँप ने मुझ को डस लि या हाय सि तम गु ज़ब
रे × ३ मा. पा धा .रें सां ... धा. .पा मा .प धा
सि तम ⁝
.पा मा....

अन्तरा
ज़हर यहां से वहां चढ़ा वहां से यहां त लक व
सां × ३ रें ^ मां × ३.. गां ^ रें ^ सां. रें ^ ^गां. रें ^
दा ⁝
सां...

सूचना—शेष सब पहिले पद अन्तरा के ढंगपर बजेंगे और दूसरे स्थायी के नियम से बजाओ—

(२) उँगली धीरे धीरे चलाओ और पर्दों पर अधिक ज़ोर न दो—

(३) कम से कम इस चीज़ को दशबार बजाओ तब तैयार होगी—

(४) यह गाना शोकमय उच्चारण में गाई जाती है कल्पना भी अच्छा ज्ञात होता है—मर्दानापार्ट में ही गायन आनन्दमय ज्ञात हो सकती है—

तीसरा ऐक्ट—छठासीन—बाग काशी—पर्दा नंवर ६

तारावती का गणपति दिनपति के साथ आना और रोहित की शव देखकर पछाड़ खाना—रोना चिल्लाना—

रुबाइयात ध्वनि पर्च कालिङ्गड़ा—ताल चाचर—अङ्क शाम—लय टा-तज़—"लैला लैला पुकारूं मैं वनमें"

रानी तारावती

नंवर (१०)

हायरे हाय प्राण प्यारे हायरे हाय आंखों के तारे ।
आंखें खोलो ज़रा पुत्र रोहित मुख से बोलो ऐ राजदुलारे ॥
दिल में अरमां थे मेरे वहुतेरे पाऊंगी अव कहां दरश प्यारे ।
किसके आगे मैं अव जाके रोऊं कोई वारिस नहीं शिर पै मेरे ॥
पति छुटा हाय अव तूभी छूटा हाय कैसा यह भाग अपना फूटा ।
यह वता किससे जाकर कहूं मैं क्या मुझको अजल ने है लूटा ॥
नाग हत्यारे क्या यह किया है मेरे वच्चे को जो डस लिया है ।
मुझ दुखिया का था एक वालक तूने पापी खून उसका पिया है ॥
खो रहीहैं रोहित अपना तन मन तेरी माता दिखादे ज़रा धन ।
देखकर हाल सवका है वेकल कर ज़वान कोनु वंद अव ऐ कमरन ॥

(तारावती का लोथ उठा कर मरघट पर ले जाना)

दूसरा ऐक्ट-तीसरा सीन-मकान पर्दा नंबर ८ अबुलहसन का शाही खयाल में रहना-ज़रीफ़ का दिल्लगी उड़ाना-

कहरवा-ध्वनि जिला-ताल नकटा-वक्त दो बजे रात-लय दुगुन
तर्ज़-" राजा मैं बनजाऊं रे-तुम्हें रानी बनाऊं "

ज़रीफ़

नंबर (८)

कैसा बनाना काम है-देखो सुल्तान गधोंका कैसा बना....
तूहै मिसाल औज बनइन्क-अक्ल में भी कुछ खामहै देखो सुल्तान....

चिड़िया पान का या हुक्म है हुक्म का-या ईंट का यह गुलाम है-देखो सुल्तान....

जी में जो आता है करता है बक बक-मुहँ में इसके लगाम है देखो सुल्तान....

अबुलहसन

(बैत)

मेरी शानमें ऐसी गुस्ताखीकी सज़ा इसको दूं मैं तुझे बाजबी
(ज़रीफ़ का पिटना वायवैला मचाना)

	दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक					
०	०	०	मा	पा	धा	०	साँ	रेँ	०	०	०	०	०

स्थायी

कैसा बना न आ का म है दे खो सुल
मा × ४. धा पा. धा .. .नी धा. पा मा. मा
तान ग धो आँ का ÷
पा नी धा पा .मा ..

अन्तरा

तू है मिसाल आँज व न उन्क +
धा साँ × ३ .. रेँ × २ साँ रेँ साँ ....
अक्ल में भी कुछ खा म है
धा × ५ पा धा .. .. नी ... धा + देखो

सुल्तानगर्धा का—उपरोक्त ध्वनि में साथ मिलाकर बजावो—

सूचना—यह गायन दुगुन की लै से तिगुन तक करसकते हो—परन्तु आनन्द जभी आवेगा कि जब ऐक्टर चलता—फिरता—मटकता रहे एक जगह खड़े होकर कोई भी उम्दगी से नहीं गा सकता—

(२) बजाने वाले को चाहिये कि ताल का ध्यान रक्खे जिसमें गायन में आनन्द उत्पन्न हो और ऐक्टर का पाँव भी चलता रहे—

दूसरा ऐक्ट—तीसरा सीन—मकान—पर्दा नंबर ८
ज़रीफ़ का शिर खुजलाते हुये आना और अबुल्हसन का फिर मज़ाक़ उड़ाना—

ठुमरी—ध्वनि ज़िला—ताल कहरवा—लय दुगुन
तर्ज़—"लाई नसीम बहार—बहार मेरे प्यारे—आई नसीम बहार"

ज़रीफ़

नंबर (३)

कौवा बना शहरयार—बहार कोई देखो— कौवा
क़ोरमा मुतंजन भी खायेंगे हरदम—पियेंगे ज़र की अजार—
अजार कोई देखो कौवा........

शहंशाह बनकर हुकूमत करेंगे—होंगे गधेपर सवार—
सवार कोई देखो कौवा........

सजधज पै इनकी जिहालत पै इनकी—क़ुर्बान न हों क्यों
चमार—चमार कोई देखो कौवा........

जाओ जगाओ रीछ व बंदर तेंदुवे—हैं इनके सब रिश्तेदार
उधार—कोई देखो कौवा........

(अबुल्हसन का ज़रीफ़ को जूते लगाना—कोतवाल का
अबुल्हसन को दीवाना समझकर पाँव में
ज़ंजीर डाल ले जाना)

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक					
					नी								
०	रे	०	गा	पा	धा	०	सां	रें	०	०	०	०	०

स्थायी

ब	हार कोई दे	खो	कौवा	बना
...रे मा × ४	.. पा	नी*.	. धा × २	पा × २

शह	र	यार
धा	पा	मा....

अन्तरा

कोरमा पु	लंजन भी	खायेंगे हर	दम
.नी * × ३	सां × ३	रें × ४	सां ...

पियेंगे ज़र	की	अ	जार	अ	जार
रे × ४	... सां	.. नी*	.. सां	.. नी*	.. सां

कोई देखो-कौवा वना शहरयार को "अजार" से मिलाकर बजावो-नहीं तो आनन्द जाता रहेगा ः-

सूचना-शेप सब गायन उपरोक्त नियम से बजावो—

(२) यह भी शीघ्रता से वजाया जाता है और वही दशा ऐक्टर की होती है जो नंबर २ की गायन में होनी चाहिये—

(३) मर्दाना और ज़नाना दोनों पार्ट होसकते हैं लब व लहजे मज़ाक़िया होना ज़रूरी है—

दूसरा ऐक्ट–चौथा सीन–पागलख़ाना–पर्दा नंबर ५
दारोग़ा पागलख़ाने का अबुलहसन को मारते हुये नज़र आना
अबुलहसन का वायवैला मचाना—

नक़टा–ध्वनि ज़िला–ताल कहरवा–वक्त दिन–लय दर्मियानी
तर्ज़–"गजरा बेचनवाली नादान यह तेरा नखरा"

दारोग़ा

नंबर (४)

क्योंजी क़ायम हुये औसान अब उतरी वहशत–

अबुलहसन–महल व मकान या यह ज़िन्दान है–अक़्ल मेरी कैसी हैरान है–

दारोग़ा–बड़ा घर है–नया दर है–शाही ख़र है.... अब उतरी वहशत–

अबुलहसन-आई तबाही-है कैसी शाही-अक़्ल व ख़िरद होगई राही–

दारोग़ा-छोड़ो बकबक–खाओ चाबुक–नहो मर्दक..........
अब उतरी वहशत

दारोग़ा

क्योंजी क़ायम हुये औसान अब उतरी वहशत–

(अबुलहसन का चाबुकों की मार से शाही ख़्याल तर्क करना और छूट जाना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	साँ	०	०	०	०	०	०

स्थायी

कपोंजीका गमहो ये श्रो सान अबड तरी
साX३. गाX२. मा: धा पा.. गाX२ मा

ब ह शत ∴ फिर पहिले से बजाओ–
.रे गा सा ....

अन्तरा

(१) पह लव म कांयायह ज न व आन है
मा गा मा. पाX३. धा साँ .नी※ धा पा..

अक्र मेरी कै सी है रान है ∴
धाX४ मा गा मा. पाX८..

(२) ब ड़ा द र है =(नया घर है–शाही स्वर है)
मा गा. मा गा. मा.

एकही ढंगके हैं—

इसके बाद अब ड तरी ब ह शत ∴ अवश्य बजाइये
गाX२ मा रे गा सा...

और फिर प्रारंभ करिये–

सूचना–बहुधा शौक़ीन कहे हुये ढंग को इसी ढंग में पसन्द करते हैं परन्तु यह और ढंगों में भी गाई जाती है इससे इसी ढंग को शुभचिन्तक ने हारमोनियममास्टर पांचवें भाग में भी एक निराली युक्ति से लिखा है–

(२) यह सुगम रीति है-ज़मज़मे स्वयं देकर गायन को
नन्ददायक बनाइये-

(३) दुगुन की लय उस समय होनी चाहिये कि जब इस
यन को कोई वेश्या गाती हो या तुम प्रैक्टिस के तौर पर
ाते हो-

तमाशा

शकुन्तला

पहिला ऐक्ट-तीसरा सीन-जंगल-पर्दा नंबर ११

विश्वामित्र का मेनका परी पर मोहित होना-जप तप का भूल
ाना और घबड़ाहट में गाना-

ग़ज़ल-ध्वनि देश-ताल क़ौवाली-वक्त शाम-लय दर्मियानी-

तर्ज़-" बरांडी में वह लज़्ज़त है अहा हाहा-उहू हूहू "

विश्वामित्र

नंबर (१)

ह ज़ुल्फ़ रूये नूरानी अहा हूहू-उहू हूहू
यह अबरूदार पेशानी अहा हाहा-उहू हूहू
ह दन्दां क्या हैं सिल्के दुर अहा हाहा-उहू हूहू
यह लब याक़ूत रूम्मानी अहा हाहा-उहू हूहू
बुलबुल और हो तुम गुल मैं योगी और तुम योगिन
मैं राजा और तुम रानी अहा हाहा-उहू हूहू
देया दिल तुमको परीजान तुम्हें कब क़द्र है उसकी
हुई क्या हमसे नादानी अहा हाहा-उहू हूहू
रहीं अब जब्त है दुश्वर अभी होजाओ हमबिस्तर
ज़रा अन्दर चलो जानी अहा हाहा-उहू हूहू

(विश्वामित्र का मेनका परी को कोठड़ी के अन्दर लेजाना
और..)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	गां	०	०	०	०

स्थायी

यहजुल्फरु	ये	न	उ	र	श्रा	नी	श्र	हा
सा ×४	.नी सा	.रे	सा	.नी	धा..	पा..	धा	
श्रा	हा	हा	उ	हू	उहू	उ	हू	
पा	मा	गा.	सा	रे	गा×२	रे	सा....	

अन्तरा

यहश्रबरूदा	र	पे	शा	नी	श्र	हा	हा	हा
सा ×४	.नी	धा	नी	सा	पा	धा	सा	रे
उ	हू	हू	हू					
सा	गा	रे	सा					

तान
(उ उ उ उ)
नी धा पा धा....

अन्तरे के साथ मिलाकर बजाने से गाने का आनन्द दूना होगा—

सूचना—यह क़ौवाली की ग़ज़ल साधारण है पहिले पद अन्तरे के ढंग पर बजाइये और दूसरे पद स्थायी के नियम से बजाना चाहिये—

(२) " अहा हाहा उहू हूहू " को समझ कर बजाइये—

(३) इस तर्ज़ की दुगुन का करना तुम्हारे हाथ है परंतु थियेटर में ठा की लय में बजाया जावेगा और तभी आनन्द भी आवेगा—

दूसरा ऐक्ट—दूसरा सीन—आबिद का जंगल—पर्दा नंबर ६
दो ऋषियों का राजा दुष्यन्त की बड़ाई करना और मेहमान बनाना—

पद—ध्वनि योगिया आशावरी-ताल चाचर-वक्त सुबह-लय धीमी-
तर्ज़—" हायरे क्यों न मैं शिर को पटकूं "

सारंग सारोत

नंबर (२)

आपका है सदा हम पै साया, आप हैं राजा हम सब रिआया।
आपका........

यां है असथल गुरुका हमारे, वह नदी मालती के किनारे ॥
बाग भी वहां इक लगाया, आप हैं राजा हम सब रिआया।
आपका......

कण्वऋषि हैं गुरु जो हमारे, सोम तीरथ को वह सिधारे ॥
उनकीहाज़िर है पुरसारीमाया, आप हैं राजा हम सब रिआया।
आपका......

उनकी बेटी शकुन्तला प्यारी, खूब करती है मेहमान्दारी ॥
है गुरु ने उसे यह सिखाया, आप हैं राजा हम सब रिआया।
आपका......

चलके हों मठ में अब आप मेहमां, लायें पूजाका हम जाके सामां ॥
जानियेगा न हमको पराया, आप हैं राजा हम सब रिआया।
आपका......

(दोनों का जाना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				नी				गा			धा		
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा	रे		मा	पा	०	०

स्थायी

आवो गुइयां ल प क ल प क च लो

गा×२ मा×२.सा .रे सा मा गा* रे सा रे

पा नी भ र ला यें फि र आ यें

नी* सा रे सा नी*.धा...* नी* धा पा. मा....*

व ये ला चम वेली जूही केतकी सवमें

मा नी* धा. नी* सा×२. गा×३ मा×३. .पा×३

गगरी झु का आ आ यें

धा*×२. पा मा .गा* .रे सा....

अन्तरा

फिर सव सखियां चुनि चुनि कलियां भरभर

*नी×२ सा×२ गा×३. मा×६. पा×३

ला यें इ लि या न हा र व ना

धा* पा मा .गा* ..रे .सा.... मा नी* धा नी*

यें गजरे गुँथ आयें वाग में रंग र

सा. गा×३ मा×२. पा×३ धा*×२ पा

चा आ आ यें

मा. .गा* .रे सा.....

सूचना—यह भी नाच का ढंग है परन्तु वहुधा वैसेही गाई जाती है—

(२) सव मिल कर जव गाते और नाचते हैं उसी समय आवाज़ धैवत पर पहुँच कर खेल घर में गूंज जाती है उतार चढ़ाव का ध्यान रखना परमावश्यक है—

दूसरा ऐक्ट—पाचवां सीन—माविद का बाग—पर्दा नंबर ५
शकुन्तला का माथे पर चन्दन लगाये हुये सहेलियों के साथ राजा दुष्यन्त के विरह में बेचैन दिखलाई देना—

ठुमरी—ध्वनि ज़िला—ताल पंजाबी ठेका—वक्त रात दिन—लय ठा—
तर्ज़—" अँगनवां मोरा करके करकि गयोरे"

शकुन्तला

नंबर ५

घबराती है ऐ सखियो मेरी इस दम तन में जान
अनसूया—क्यों हाल हुआ यह तेरा—
प्रियंवदा—किस बीमारी ने घेरा—
शकुन्तला—शरमाती हूँ मुहँ से कहते मैं हाल दिल इस आन—
घबराती ...

अनसूया—शरम है हमसे क्या—
प्रियंवदा—हाल सुना दिलका—(दुष्यन्त का आना और छिपकर बातें सुनना)
शकुन्तला—मुझसे कहा नहीं जाता—
अनसूया—क्या इश्क़ हुवा है पैदा—
प्रियंवदा— है राजा पर क्या शैदा—
शकुन्तला—हां उससे है मिलने का मेरे दिलको है अरमां—
घबराती....

अनसूया—उसको भी उलझन है—
प्रियंवदा—तेरी मुहब्बत है—
शकुन्तला—ऐसे मेरे नसीब कहां—
अनसूया—तू इतना मत घबरा—
प्रियंवदा—हम देंगी उससे मिला—

शकुन्तला

तो तुरंत उससे मिलने का तुम कर दो कुछ सामान-यत्न....

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	०	मं	०	०	०

तीसरा ऐक्ट—चौथा सीन—दरबार—पर्दा नंबर १३

दुष्यन्त का शकुन्तला को न पहिचानना— शकुन्तला का पता बतलाना और निराशदशा में गाना—

ग़ज़ल—ध्वनि पर्च कालिंगड़ा—ताल कौवाली—वक़ पूरा दिन-लय चढ़ी हुई—

तर्ज़—"उन्हींको ऐ लोगो नेक जानो शरीक हों जो पराये ग़ममें—"

शकुन्तला

नंबर (५)

हुये जो राजा मुझसे रूकश बताओ मेरा गुनाह क्या है
कुयें में गिरती न आब खोती जो मैं समझती कि चाह क्या है
गये थे माबिद के बाग़ तक शिकार तुम खेलने वहीं तब
किया था मख़फ़ी विवाह मुझसे कहो तो अब इश्तिबाह क्या है
जो दिल तुम्हारा हटा है मुझसे मिलाओ आंखें इधर को देखो
किसी तरह पर भी दो तसल्ली ज़रा तो सीखो निबाह क्या है

दुष्यन्त

(बैन)

किसलिये मुकर की बातें सुनाती है तू
दाग़ बदकारी का क्यों मुझको लगाती है तू

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				धा			रे						
०	०	गा	मा	पा	०	नी	सां	०	०	०	०	०	०

स्थायी

रू ये जो रा का मुझसे रू ठ ठ कर
सा रे॰. मा धा॰. पा. धा॰×२ पा .धा॰ .नी सां.
च ना ओ म ये रा गु ना ह क
नी सां. नी .धा॰ .पा मा. पा धा॰ पा मा.
या क्या है
गा रे॰. सा .... ÷

अन्तरा

ग ये थे मा बिद के बाग तक शिकार तुम
मा गा. मा धा॰ पा. धा॰ नी×२. सां. सां×३ नी
खे ल ने व हीं तव ÷
धा॰. पा मा. पा धा॰. पा....

सूचना—यह एक प्राचीन ढंग है उपरोक्त नियमानुसार सब गायन बजैंगी—

(२) ज़नानापार्ट लय व लहजा मिस्ल हाज़िर जवावी के होगा—

(३) बोल साफ़ काटते रहो और प्रत्येक शब्द पृथक् पृथक् ज्ञात होता रहे—

(४) चढाई से उतार जैसा होता है वही चित्र इस ढंग का है ध्यान करके शीघ्रता से बजावो जिसमें आनन्द दूना हो जावे—

तीसरा ऐक्ट–चौथा सीन–दरबार–पर्दा नंबर १३

शकुन्तला का हर एक प्रकार से दुष्यन्त को समझाना परन्तु उसका न मानना शकुन्तला का और पते देना–

गजल–ध्वनि देश–ताल पश्तो–लय पड़ी हुई–वक्त रात–मकी जगह

तर्जे–" है हकीकी इश्क उन्हीं का लोगो– "

शकुन्तला

नंबर (६)

ी हूं मैं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो
हुये जिस पै जान से थे तुम फ़िदा तुम्हें याद हो कि न याद हो
के जाहिदों के चमन में जब किया एक भौंरे ने दिक गजब
तो दिया था तुमने उसे उड़ा तुम्हें याद हो कि न याद हो
ी नीलोफर की जो पहुँची थी सरे राह बाग में गिरपड़ी
तो लिया था तुमने उसे उठा तुम्हें याद हो कि न याद हो
ई मांगने को मैं पहुँची जब हुई तुमको ख्वाहिश वस्ल तब
वहीं गन्धर्वी ब्याह था हो गया तुम्हें याद हो कि न याद हो
हो अब भी बाकी है कोई शक जो न की इधर को निगाह तक
दिया पूरा मैंने तो सब पता तुम्हें याद हो कि न याद हो

दुष्यन्त

(बैत)

रानी चालाकी न दिखला तू खुदारा हमको
बे ठिकाने की नहीं बातें गवारा हमको

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				धा			रे						
०	०	गा	मा	पा	०	नी	साँ	०	०	०	०	०	०

स्थायी

हु	ये	जो	रा	जा	मुझसे	रू	ऊ	ऊ	कश
सा	रे*.	मा	धा*.	पा.	धा*×२	पा	.धा*	.नी	साँ.
व	ता	वो	म	ये	रा	गु	ना	ह	क
नी	साँ.	नी	.धा*	.पा	मा.	पा	धा*	पा	मा
या	आ	है							
गा	रे*.	सा							

अन्तरा

ग	ये	थे	मा	विद्	के	वाग़	तक	शिकार	तुम
मा	गा.	मा	धा*	पा.	धा*	नी×२	साँ.	साँ×३	नी
खे	ल	ने	व	हीं	तव				
धा*.	पा	मा.	पा	धा*.	पा....				

सूचना—यह एक प्राचीन ढंग है उपरोक्त नियमानुसार सब गायन बजेंगी—

(२) ज़नानापार्ट लय व लहजा मिस्ल हाज़िर जवाबी के होगा—

(३) बोल साफ़ काटते रहो और प्रत्येक शब्द पृथक् पृथक् ज्ञात होता रहे—

(४) चढ़ाई से उतार जैसा होता है वही चित्र इस ढंग का है ध्यान करके शीघ्रता से बजावो जिसमें आनन्द दूना हो जावे—

तीसरा ऐक्ट—चौथा सीन—दरबार—पर्दा नंबर १३

शकुन्तला का हर एक प्रकार से दुष्यन्त को समझाना परन्तु उसका न मानना शकुन्तला का और पते देना—

गजल—ध्वनि देश—ताल पश्तो—लय पड़ी हुई—वक्त रात—स्थकी जगह

तर्ज—" है हक़ीक़ी इश्क़ उन्हीं का लोगो— "

शकुन्तला

नंबर (६)

वही हूं मैं प्यारी शकुन्तला तुम्हें याद हो कि न याद हो
हुये जिस पे जान से थे तुम फ़िदा तुम्हें याद हो कि न याद हो
मुझे ज़ाहिदों के चमन में जब किया एक भौंरे ने दिक़ गज़ब
तो दिया था तुमने उसे उड़ा तुम्हें याद हो कि न याद हो
मेरी नीलोफ़र की जो पहुँची थी सरे राह बाग़ में गिरपड़ी
तो लिया था तुमने उसे उठा तुम्हें याद हो कि न याद हो
गई मांगने को मैं पहुँची जब हुई तुमको ख़्वाहिश वस्ल तब
वहीं मख़फ़ी ब्याह था हो गया तुम्हें याद हो कि न याद हो
कहो अब भी बाक़ी है कोई शक जो न की इधर को निगाह तक
दिया पूरा मैंने तो सब पता तुम्हें याद हो कि न याद हो

दुष्यन्त

(बैत)

अपनी चालाकी न दिखला तू दुबारा हमको
बे ठिकाने की नहीं बातें गवारा हमको

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
	गा			धा	नी		रे̂	गा̂			धा̂		
०	०	०	मा	पा	०	०	सा̂	०	०	मा̂	पा̂	०	०

स्थायी

व　ही　हूं　मैं　प्यारी　श　कुन्त　ला
धा*　पा　गा*　मा.　.धा*×२　.नी*　रे^×*२　^गा*..
तुम　हैं　या　द　हो　कि　न　या
.मा^　^गा*　रे^*　सा.^　धा*.　नी*　रे^*　सा^.
द　हो
नी*.　धा*....　:

अन्तरा

मु　झे　ज़ाहि　दों　केचमन में　जब　किया
धा*　नी*　रे^×*२　गा^*　^पा×४ ..　^धा* ..　पा^×
एक भौंरे　ने　दिक़　ग　ज़ब　+
मा^×४ ..　^धा*　पा^　.मा^　गा^*...

सूचना—सब पहिले पद उपरोक्त नियमानुसार बजैं। अर्थात् स्थायी के ढंग पर दूसरे पद बजैंगे और अंतरे के निय[म] से पहिले सब शेष पद बजैंगे—

(२) लव व लहज़ा—निन्दा करने का—मर्दाना पार्ट इ[स] ढंग के लिये ठीक न होगा इस रागिनी में इश्क की आग क[ी] कुछ कुछ झलक पाई जाती है अर्थात् गानेवाला गाने के पश्चा[त्] ऐसा ज्ञात होता है मानों कोई इश्क़ में तड़पता हो—

तीसरा ऐक्ट—पांचवां सीन—रास्ता—पर्दा नंबर १

शकुन्तला का रोते हुये आना और कलप कलप कर गाना—

ग़ज़ल-ध्वनि योगिया आसावरी-ताल ठेका पंजाबी—वक़्त सुबह—लय दा—

तर्ज़—" ख़ुदा या तंग आई हूं सितम अब उठ नहीं सकता—"

शकुन्तला

नंबर (७)

न पहिचाना मुझे राजा ने कैसी बे वफ़ाई है
खुदा जाने किसी ने बात क्या उसको समझाई है
बुरा उस आंख का हो आग यह जिसने लगाई है
जलाकर जान व दिल पानी का तूफ़ान अब यह लाई है
फिराकिया मुझसे वह बुत फिर गई क़िस्मत है बस मेरी
रफ़ीक़ों ने भी अब छोड़ा ख़ुदा की क्या ख़ुदाई है
करूं तै रास्ता कांटों का है है धूप में कैसे
न शिर पर साया पांवों में न मेरे ज़ेरपाई है
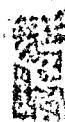
(मोहित का आना)

गई दिल की बदौलत हाय मैं घर बार दोनों से
यहीं अब जान दूं अपनी यही जी में समाई है

(गाना दोनों का)

दूसरा सप्तक

रे सा	गा	मा	पा	०	०	०

स्थायी

न	पहिं	चा	ना	मु	झे	रा	जा	ने	कै	सी
सा	रे॰	गा.	मा.	गा.	मा.	पा	धा॰.	पा.	मा	गा
बे	व	फा	ई	है ⁘						
मा.	पा	धा॰.	पा	मा....						

अन्तरा

बुरा	उस	आं	ख	का	हो	आ	ग	यह	जिस
	धा॰×४.		पा	मा	पा.	नी॰..	धा॰	पा	मा
ने	ल	गा	ई	है ⁘					
गा.	मा	धा	. पा	मा....					

सूचना—अंतरे के ढंग पर शेष सब पद और स्थायी के ढंग पर सब दूसरे पद बजैंगे ध्यान करके बजावो—

(२) "सोहनी" से दूसरे दर्जे पर जिगर के चीर देनेवाली रागिनी यह "योगिया आसावरी" मिली हुई रागिनी है मजाल क्या है कि इसके सुनने से मनुष्य की आंखें बन्द न हो जावें इसमें वह असर है कि यदि ज्वर आनेवाला रोगी एक बार भरी आवाज़ इसके स्वरों की सुनले तो सब ज्वर चाहे कैसाही वेग का हो तुरंतही उतर जावेगा और अच्छी नींद आ जावेगी बहुधा परीक्षा की गई है और सदैव ठीक पाया गया है कि योगिया आसावरी से ज्वर के रोगी वानवे सैकड़े अच्छे होते हैं जबकि गानेवाला सुरीला गवैया हो—

चौथा ऐक्ट—चौथा सीन—दुष्यन्त का बाग़—पर्दा नंबर ६

राजा दुष्यन्त का शकुन्तला के विरह में विह्वल आना—

ग़ज़ल—ध्वनि मांड—ताल दादरा—वक़्क़ बेवक़्क़—लय ठा—

तर्ज़—"ढूंढेंगे आसमां कोई अब ऐ वहन नया—"

राजा दुष्यन्त

नंबर (८)

तेरे फ़िराक़ ने मुझे मारा शकुन्तला

मिल अब तू जल्द आके ख़ुदारा शकुन्तला

मंज़िल से फेरा मैंने जो ऐ माहरू तुझे

बरगश्ता बख़्त का हुवा तारा शकुन्तला

अपने किये का हाय करूं मैं इलाज क्या

नाचार हूं नहीं कोई चारा शकुन्तला

क्योंकर हूं ज़िन्दगी से न मायूस दिल में

हो जबकि बख़्त का न सहारा शकुन्तला

तुझी जुदा है मुझसे मेरी जान जान तू फिर

क्या ख़ाक ज़िन्दगी हो गवारा शकुन्तला

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	गां	मां	०	०	०

स्थायी									
ते	रे	फ़िराक़	न	ये	मु	झेम	आ	रा	
मा	पा	नी※×३.	सां	रें.	सां	नी※×२	.सां	धा	
श	कु	न	त	ला					
.पा	मा.	धा	.पा	मा....					

अन्तरा								
मंज़िल	से	फेरा	मैंने	जोए	मा	ह	र	उ
सां×३	रें×२	मं×४.	गां.	.रें	..सां	गां..		
तु	झे							
रें	सां....							

सूचना—उपरोक्त ढंग पर सब गायन बजेंगे—

(२) इश्क़िया लहजा में विह्वल होकर दर्द भरी आवाज़ में यह गायन गाई जावेगी—

(३) उँगलियां नियमानुसार चलाओ—

(४) दर्मियानी चाल भी कर सकते हो परन्तु दुगुन करने से गायन बिल्कुल नष्ट हो जावेगी और कुछ भी आनंद न आवेगा—

(५) जहां तक होसके उँगलियों को हलकी चाल से चलाओ—

चौथा ऐक्ट—चौथा सीन—दुष्यन्त का बाग़—पर्दा नंबर ६

मातलि देव का पृथ्वी से निकलना और राजा दुष्यन्त से कहना—

मसनवी—ध्वनि बरहंस—ताल दादरा—वक़ दिन—लय लेटी हुई

तर्ज़—"इल्हाम अलिफ़ से हुवा अल्ला है बस एक"

मातलि देव

नंबर (६)

दुष्यन्त महाराजा हमेशा रहो तुम शाद
    इन्द्र ने किया अपनी सभा में है तुम्हें याद
मुँह राक्षसों ने राजा के फ़रमां से मोड़ा
    और उसकी अताअत को बग़ावत से है छोड़ा
इन्द्र जब इन्हें कर न सका ज़ेर महाराज
    इम्दाद को तब अपनी बुलाया है तुम्हें आज
(देव का ताली बजाना और एक मोर का आकाश से आना)
लो तीरो कमान हाथ में हाज़िर है सवारी
    ख़ुश होके चढ़ो इस पै कि नादिर है सवारी
पहुँचायेगा यह मोर तुम्हें कोह के ऊपर
    मैं तुमसे मिलूंगा वहाँ इन्द्र को ख़बर कर
(राजा दुष्यन्त का मोर पर सवार होना मोर का उड़ जाना मातलि देव का पृथ्वी में समाना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	गा	मा	०	०	०

स्थायी	दुष्यन्तमहा	रा	जा	हम	ए	श	ह
	रे ×५	गा॥ मा	गा ॥×२	..रे	..सा	रे	
	र	हो	तुम	शाद +			
	.नी॥	सा	रे..	सा....			
अन्तरा	इन्दर ने	कि	या	अ	प	नी सभा	
	नी॥	.सा	रे.	.नी॥	..सा	नी॥×२.	
	म	यें	है	तु	म्हें	याद :	
	..पा	..धा	मा	.पा	.धा	नी॥....	

सूचना—पहिले पद अंतरे के ढंग पर बजैंगे और सब दूसरे पद स्थायी के ढंग पर बजाये जावेंगे—

(२) यह तर्ज़ गज़ल की तरह है परन्तु इसको मसनवी कहते हैं उपरोक्त नियम से बजाने के समय ज्ञात होगा कि इस के बजाने का ढंग बिल्कुल ही निराला है और गज़लियात से बिल्कुल अलग है—

(३) इसमें कुछ परिश्रम दरकार है नहीं तो सरल होने में कोई सन्देह नहीं—

चौथा ऐक्ट–दूसरा सीन–हमीकोट पहाड़–पर्दा नंबर ४

दो गोसाइयों का शिरोदमन को खिलाते हुये दिखलाई देना–

ठुमरी–ध्वनि कालिङ्गड़ा–ताल कहरवा–वक्त दोपहर–लय दुगुन

तर्ज़–" मैं तो बावरची की बेटी–"

गोसाईं

नंबर (१०)

शोख़ी मतकर मेरे प्यारे खेल सीधा सीधा जानी–

बाप तेरा दुष्यन्त राजा शकुन्तला मा रानी

परियों की सिरताज मेनका है तेरी तो नानी शोख़ी....

ख़ाली तेरा कोई नहीं बहादुरी से काम

इससे है तूने तो पाया शिरोदमन नाम शोख़ी....

(दुष्यन्त का मोर की सवारी करते उधर आना गोसाइयों का शिरोदमन को मोर दिखाना)

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
	गा			धा	नी								
सा	०	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	०	०	०	०

स्थायी

शो	खी	मत	कर	मे	रे	प्या	रे	खेल	सीधा
सा	गा॰	मा	पा	मा	.गा॰	मा	.पा	धा॰..	पा×२.

सीधा	जानी	
मा×२.	गा×२....	⁖

अन्तरा

बाप तेरा	दुष्यन्तराजा	श	कुन्तलामा	रा	नी
धा॰×४	नी॰×४	.धा॰	सां×४.	.धा॰	नी॰....

परियों की शिरताज मे	नका	है	ते	री	तो
सां×७	नी॰×२	धा॰.	नी॰	सां.	नी॰.

ना	नी	
धा॰.	पा....	⁖ शोख़ी आदि

सूचना—शेष सब गायन उपरोक्त नियमानुसार बजैंगे—

(२) उँगलियों को शीघ्रता से चलाओ—

(३) यह बिल्कुल सीधा नियम है क्योंकि इस ढंग में ज़मज़मे आदि अधिक लगाये जाते हैं—

(४) जहां तक होसके परिश्रम करके ताल भी बजाओ—लब व लहजा हावभाव से भरा ज़नाना पार्ट अच्छा रहता है—

पहिला ऐक्ट—पांचवां सीन—बाग़ शीरीं—पर्दा नंबर ७

शापूर का ताजिर के वेष में अपने साथियों सहित शीरीं के बाग़ में आना—जोश ख़ुशी में गाना—

अंगरेज़ी तर्ज़—ध्वनि ज़िला झँझौटी—ताल क़व्वाली—वक़्त सब दिन—लय दुगुन बल्कि तिगुन—

तर्ज़—"जैसा करना वैसा भरना शक हो जो तो कर कर देख—"

तमाशा

शीरीं फ़रहाद

शापूर

नंबर (१)

शहर क़रीं है अजब नहीं है यहां हो शह का दिल जानी
शाद हो पै दिल सख़्त मनाज़िल न होवें न्यारी व आसानी
देखे क्या क्या दश्त व कोहसा कैसी उठाई परेशानी
बाग़ यह अच्छा सामने आया इसमें चलके पियें पानी
यह शाह का तिलस्म—ठहरा न था क़दम—क्या क्या सहा सितम—
पर ग़म नहीं है यार—इस शहर में जो हम—ख़ुदा की क़सम—
पायेंगे यह सनम—

दूसरा रूपक

सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी

शहर	क़रीं	है	अजब	नहीं	है	य	हीं	हो शह	का
साx४	गा.		रेx४	मा.		गा	पा	माx२	पा
दिल जा	नी	+=							
धाx२.	पा....								

शेष सब पद इसी ढंग पर बजाइये और अन्तिम टुकड़े को नीचे के ढंग पर बजाने का उपाय कीजिये क्योंकि बहुधा इस तर्ज़ को इसी तरह गाया करते हैं—

अन्तरा

वह	राह	का	सि	तम=	उठ	ता न था	क़	दम
रे	माx२	गा	.मा	पा..	मा	धाx३.	.मा	पा..
क्या	क्या	स	हा	अ	लम=	पर	अब न	हीं	है ग़म
मा.	धा.	सा	पा.	.मा	गा..	रे	साx२	गा.	रे सा....

दूसरे टुकड़े इसी प्रकार फिर $\frac{\text{ब}}{\text{पा}}$ $\frac{\text{लुत्फ़ यज़दा}}{\text{माx२ धाx२}}$ $\frac{\text{नी}}{\text{पा.}}$ बजाइये ;

सूचना—सब गायन लिखे हुये नियम से अच्छे बजेंगे—

(२) बहुधा नाटकों में उपरोक्त नियम से ही बजाते हैं कोई २ और ढंग पर भी बजाते हैं परन्तु वह गाने वाले के लिये किसी दशा में सुलभ नहीं और न ड्रामिटिट ने यह ध्यान करके बनाया है—

(३) लब व लहजा मर्दाना ज़ोरदार आवाज़—जीभ कैंची की तरह चलती रहे हारमोनियम पर उँगलियां तेज़ी से चक्कर मारती रहें—

दूसरा ऐक्ट–चौथा सीन–कूचा ईरान–पर्दा नंबर २

एक मसखरे हबशी का शब्बू खवास के पीछे आना और छेड़ करना–

कहरवा–ध्वनि झिला–ताल कहरवा–वक्त रबजे रात–लय दुगुन

तर्ज–''सुनों हजरत जरा सुनों हजरत जरा–

अम्बर हबशी

नंबर (२)

शब्बू जानी मेरी–शब्बू जानी मेरी दिलसे है चाहत–मुझको तेरी

शाहजादी सा तेरी शौहर हुवा हमारा शाह

तूभी करले प्यारी जल्दी मुझसे ब्याह

शब्बू जानी मेरी..........:

शब्बू खवास

मुये हबशी परे मुये हबशी परे सूरत से तेरी भुतने डरे

मुँह तो इस लायक बनवाले अपना ऐ शैतान

एड़ी चोटी पर मैं तुझको करदूं कुर्बान

मुये हबशी परे..........:

अम्बर

मरके हूं मैं दिल से तुझपर दिल से हूं कुरबान

नाहक मुझपर इतना गुस्सा करती है ऐ जान

शब्बू जानी मेरी..........:

शब्बू

काले कौवे और भौंरे से तू बढ़कर स्याह

इस खूबी पर उल्लू मुझसे करने आया ब्याह

मुये हबशी परे..........:

अम्बर

शादी करके मुझसे जानी होवेगी दिलशाद

मैं मुश्की तू नुक़री अबलक़ पायेगी औलाद
शब्बू जानी मेरी.......... ÷

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा॑	रे॑	०	०	०	०	०

स्थायी	शब्बू जानी	मे	री	श	ब्बू	जानी	मे	री	
	मा×४	पा	धा.	.नी*	..धा	मा×२	पा	धा..	
	दिल से है	चा	हत	मुझको	ते	री	÷		
	नी*×३	धा	मा	धा×२	पा	मा..			
अन्तरा	शहज़ादी का	तेरी	शौहरहुवा हमा	रा	शाह ÷				
	नी*×४	सा॑×२	रे॑×३	..नी*	सा॑..				
	तू भी करले	प्या	री जल्दी	मुझ	से	अप	ना	ब्याह ÷	
	धा×४	नी*	सा॑×३	धा	नी*	धा	पा	मा..	

सूचना-शेष सब प्रश्नोत्तर अंतरे की लय में बजैंगे ध्यान करके बजावो-

(२) सब गानेवालों को ज़नानी मर्दानी आवाज़ को अलग करके गाना चाहिये जिसमें कुछ आनन्द भी आवे-

(३) किसी २ समय शीघ्रता भी करनी चाहिये-

(४) उत्तर के बाद फिर स्थायी आती है तो उस समय शीघ्रता से हाथ चलाना चाहिये नहीं तो साथ करने से पीछे रह जावोगे और ऐक्टर तुम से आगे निकल जावेगा तो सिवा लज्जा के और कुछ हाथ न लगेगा-

शब्बू

घोड़ी हूं मैं क्या ऐ गधे चल हट मत रेंक
वर्ना तेरे मुहँ पर जूती मारूंगी मैं एक
मुये हबशी परे..........॥

अम्बर

पांवों पर शिर तेरे रक्खूं और जोडूं मैं हाथ
शादी में जो हुज्जत है तो सो रह यौंहीं साथ
शब्बू जानी मेरी..........॥

शब्बू

सो मुतने तू मरघट में चल जा हट खन्नास
खायेगा अब जूती जो तू आया मेरे पास
मुये हबशी परे..........॥

अम्बर

झगड़ा इतना करती क्यों है नाहक ऐ दिल्दार
छाती से लिपटाले जानी मैं हूं तेरा यार
शब्बू जानी मेरी..........॥

शब्बू

छाती पर तेरे अंगारे चल हट हो किनार
दोज़ख में पड़ शैतान तुझपर मालिक की फटकार
मुये हबशी परे..........॥

अम्बर

छाती से लपटा लेने में भी जो है कुछ इन्कार
तो बोसेही देदे तो हो दिलको मेरे करार
शब्बू जानी मेरी..........॥

शब्बू

बकता है क्या बातें मुझसे बेहूदा हरबार
काले मुहँपर तेरे भडुवे मारूँ मैं पैज़ार
मुये हबशी परे ....:

अम्बर

मेरे काले मुँह पर दिलबर जूती ले सौ मार
अपने गोरे गालों के पर बोसे दे दो चार
शब्बू जानी मेरी ....:

शब्बू

बोसे के बदले मैं जूती देती हूं औ लात
हटता है अब तू क्यों पीछे खड़ा तू रह बदज़ात
मुये हबशी परे............:

अम्बर

अहा हा यह नखरा गमज़ा ओहो हो यह नाज़
मुझको प्यारी तेरा हर एक भाता है अन्दाज़
शब्बू जानी मेरी............:

शब्बू

दुर्रे लगाऊं अब तेरे और खिंचवाऊं खाल
कहती हूं मैं शीरीं से यह जाकर अब अहवाल
मुये हबशी परे............:

(एक्ज़ेट हरदोनों)

तमाशा

सितम हामां फ़रेब शैतान

पहिला ऐक्ट—दूसरा सीन—वन—पर्दा नंबर ५ व ६

हामां को परमेश्वर का धन्यवाद करते हुये दिखाई देना और गाना—

ग़ज़ल—ध्वनि पीलू काफ़ी—ताल क़ौवाली—वक़्त शाम व दो पहर लय दर्मियानी—

तर्ज़—"मैं तुझ बिन यार मरता हूं कहां जाऊं किधर ढूंढूं"

हामां

नंबर (१)

ज़बां से शुक्र हो सकता नहीं हरगिज़ अदा तेरा
  मेरा क्या मुँह जो शाकिर हो सकूं ऐ किब्रिया तेरा
तू वह शाहे दो आलम है कि हैं मुहताज सब तेरे
  वह फ़ख़्रे क़ैसरो जमशेद जो हो जाये गदा तेरा
तेरे रुत्बे को क्या जाने कोई इतनाही काफ़ी है
  कि है कौनैन से आला ख़ुदाया मर्तबा तेरा
ख़ियालो शक क्या है क्या ज़ुनूंपो वहम है या रब
  है चारों सिम्त जिलवा आलिके हरजा समा तेरा
(स्याही का छा जाना—शैतान का ज़मीन से निकलना)
ज़नो फ़र्ज़न्द से तोड़ा तअल्लुक़ इश्क़ में तेरे
  फ़क़त बन्दे को है मौला मेरे है आसरा तेरा

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
		गा			धा	ना								
सा	रे	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	०	०	०	०	

स्थायी

ज़बां	से	शुक्र हो	सक	ना	नहीं	हर	गिज़	अ
सा×३.		मा×३	गा*	पा..	मा ×२	गा*..	रे.	.रे

दा	ने	रा
गा*.	रे	सा... +

अन्तरा

तू वह शाहे दो आलम	है	कि	है	मुह	ताजसब
सां×७.	नी*..	धा*	पा.	मा.	धा*×३

ते	रे
पा	मा ... +

सूचना–स्थायी के ढंग पर सब दूसरे पद और अंतरे के नियम से सब शेष पहिले पद बजैंगे–

(२) जब अन्तरे प्रारम्भ करोगे तो ऊपर से नीचे को उतरते आवोगे जैसे–सा नी धा पा मा–

(३) आवाज़ को पर्दों से बराबर मिलाते चले आवो–

(४) लब व लहजा मर्दाना व जनाना दोनों के लिये ठीक है–

दूसरा ऐक्ट—पहिला सीन—वीराना—पर्दा नंबर ६

मेहरनिगार का होश में आना और ताजिर का धन्यवाद देना—

ग़ज़ल—ध्वनि पीलू—ताल चाचर—वक़्त दो पहर दिन—लय दा—

नर्गी—" भला दिल से जान बाज़ बस प्यार अब तो—"

मेहरनिगार

नंबर (२)

बड़ा आपने मुझपर इहसान किया है

जज़ा देगा ख़ालिक़ फ़क़ीरों पे किया है

यहां तो लबों पर है फ़ाक़ों से अब जां

कई दिन से दाना न पानी मिला है

मुसीबत में डाला है क़िस्मत ने मुझको

अजब बेकसी है अजब माजरा है

जो पीने को आंसू तो खाने को ग़म है

फ़लक शामियाना ज़मीं बिस्तरा है

जो मौत आये मुझको तो हो ज़िन्दगानी

मगर हाय मुझसे अजल भी ख़फ़ा है

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	०	०	०	०

स्थायी								
व	ड़ा आप	ने मुझपर	इहसान	क्रि	या	है	+
.गा*	–मा×३	पा×३.	सां×२	नी*.	धा*	पा ..	

अंतरा											
जज़ा	दे	गा	ख़	आ	आ	लिक़	फ़	क़ी	रों	पै	
पा×२	धा*	पा.	.मा	पा	.मा	गा.	सा	रे.	मा.	पा	
किया	है	+									
धा*.	पा...										

सूचना–यह ग़ज़ल ठा की लय में उपरोक्त नियमानुसार बजाइये–

(२) अर्थात् पहिले पद ग़ज़ल के स्थायी के ढंग पर बजैंगे और दूसरे सब पद अंतरे के नियम से बजाये जावेंगे–

(३) लब व लहजा आजिज़ाना–महकूमाना–स्त्री पुरुष दोनों के लिये इकसां हैं–

(४) धीरे धीरे बजाइये और शब्द " ख़ालिक़" (देखो अंतरा को ज़रा सफ़ाई से जल्दी कह जाओ शेष इकसां चाल से–

पहिला ऐक्ट–छठा सीन–भयानक वन–पर्दा नंबर ७

ग़ानिम का रास्ता भूल जाना–आलम हैरत में गाना–

अंगरेज़ी वज़न–ध्वनि जिला झँझौटी–ताल दादरा–चक्र

तमाम दिन–व्यय चढ़ी हुई सपकी जगह–

तर्ज़–" या रब मुझे बचा–या रब मुझे बचा–"

तमाशा

फ़ितना ग़ानिम दिलपसन्द आलम

ग़ानिम

नंबर (१)

या रब ग़ज़ब हुआ या रब ग़ज़ब हुआ
दश्त पुर ख़तर में लाई घेर कर क़ज़ा
मैयत को दफ़न करके पलटता था मैं सूये शहर
भटका अँधेरी रात में हुआ बड़ा है क़हर
भूला हुआ हूं रास्ता भूला हुआ हूं रास्ता
दश्त पुर ख़तर में लाई घेर कर क़ज़ा
(एक बिजली चमक देखकर)
जंगल में कैसी रोशनी यह आई है नज़र
इस वक़्त कौन आयेगा भला यहां इधर

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	०	मा	पा	०	०	साँ	०	०	०	०	०	०

स्थायी

व	ड़ा आप	ने मुझपर	इहसान	कि	या	है	+
.गा॰	–मा×३	पा×३.	साँ×२	नी॰.	धा॰	पा..	

अन्तरा

जज़ा	दे	गा	ख़	आ	आ	लिक़	फ़	क़ी	रों	पै
पा×२	धा॰	पा.	.मा	पा	.मा	गा.	सा	रे.	मा.	पा

किया	है	+
धा॰.	पा...	

सूचना–यह ग़ज़ल ठा की लय में उपरोक्त नियमानुसार बजाइये–

(२) अर्थात् पहिले पद ग़ज़ल के स्थायी के ढंग पर बजैंगे और दूसरे सब पद अंतरे के नियम से बजाये जावेंगे–

(३) लब व लहजा आजिज़ाना–महकूमाना–स्त्री पुरुष दोनों के लिये इकसां हैं–

(४) धीरे धीरे बजाइये और शब्द "ख़ालिक़" (देखो अंतरा को ज़रा सफ़ाई से जल्दी कह जाओ शेष इकसां चाल से–

पहिला ऐक्ट–छठा सीन–भयानक वन–पर्दा नंबर ७

ग़ानिम का रास्ता भूल जाना–आलम हैरत में गाना–

अंगरेज़ी वज़न–ध्वनि जिला झँझौटी–ताल दादरा–चक्र

तमाम दिन–लय चढ़ी हुई समकी जगह–

तर्ज़–" या रब मुझे बचा–या रब मुझे बचा–"

तमाशा

फ़ितना ग़ानिम दिलपसन्द आलम

ग़ानिम

नंबर (१)

या रब ग़ज़ब हुवा या रब ग़ज़ब हुवा

दश्त पुर ख़तर में लाई घेर कर क़ज़ा

मैयत को दफ़न करके पलटता था मैं सूये शहर

भटका अँधेरी रात में हुवा बड़ा है क़हर

भूला हुवा हूं रास्ता भूला हुवा हूं रास्ता

दश्त पुर खतर में लाई घेर कर क़ज़ा

(एक सिम्तकी तरफ़ देखकर)

जंगल में कैसी रोशनी वह आई है नज़र

इस वक़् कौन आयेगा भला यहां बशर

है यह कोई बला है यह कोई बला

दश्त पुर खतर में लाई घेर कर क़ज़ा

(उसी सिम्तको कान लगाकर)

आहट सुनाई देती है यह कैसी अब यहां

आते हैं चोर या डकैत जाऊं मैं कहां

आफ़त में फँस गया आफ़त में फँस गया

दश्त पुर खतर में लाई घेर कर क़ज़ा

जो गश्त वाले हैं तो मुझे चोर जानेंगे

मैं लाख कुछ कहूं न मेरी एक मानेंगे

देंगे बहुत सज़ा देंगे बहुत सज़ा

दश्त पुर खतर में लाई घेर कर क़ज़ा

(बहुत घबराकर)

वह आये आये हाय हाय जाऊं अब किधर

छिपता हूं इस दरख़्त परही चढ़के जूदतर

देखूं करें यह क्या देखूं करें यह क्या

दश्त पुर खतर में लाई घेर कर क़ज़ा

(ग़ानिम का वृक्ष पर चढ़ जाना और दो ग़ुलामों का सन्दूक़ शिर पर धरे और एक ग़ुलाम का उनके आगे रोशनी हाथ में लिये आना)

ड्राप सीन

भूमिका

प्रेमियो ! थियेट्रिकल चीज़ों से दूसरे नम्बर पर ग़ज़लियात हैं जिनका चलन आज कल्ह बहुत ज़ोरों पर है बचा बच्चा भी इनका प्रेमी दिखाई देता है मजलिसों और महफ़िलों में प्रथम ग़ज़लही की फ़र्मायश होती है शायरान नाजुकख़्याल भी इसी ओर ध्यान देते हुये दिखाई देते हैं वस्तुतः ग़ज़ल ने भी गानविद्या की ऊपरी भड़क को भले प्रकार शोभा दी है ठुमरी–दादरे–ध्रुपद अपने अपने रंग में मस्त हैं परन्तु ग़ज़ल ने सबको नीचा करदिखाया है –

एशियाई कवियों के आनन्द भरे और मनभावते सीन भी ग़ज़लों मेंही पाये जाते हैं क्योंकि यह एक ऐसा सरल ढंग है कि जिससे एक छोटा सा छोटा कवि भी बड़ी सुलभता से हर एक पहलू में अपने ध्यान की आलोचना कर सकता है–

उपर्युक्त कारणों को ध्यान रखकर ग़ज़लों के प्रेमियों की दिलचस्पी के लिये यह पुस्तक बड़े परिश्रम से बनाई गई है जिसमें बीस ढंगोंपर प्रख्यात कवियों की गम्भीराशय और परिणाम भरी अच्छी अच्छी ग़ज़लैं बहुत सरलता से हारमोनियम के नियमों से बतलाई गई हैं। प्रत्येक ग़ज़ल के अन्त में " औषध-गानविद्या " भी लिखदी गई है जो कि शुभचिन्तक ग्रन्थकार ने कितेकबार परीक्षा करालिया है–

अमेरिका के म्यूज़िक प्रोफ़ेसरों की परीक्षायें हैं वह छोटे अक्षरों में लिखीगई हैं प्रेमी भी उनकी परीक्षा करें यद्यपि आप के लिये यह नया काम है परन्तु यह औषध मस्मरेज़म विद्या से

भी प्राचीन है इस समय इसके जाननेवाले बहुत कम हैं और भारतवर्ष में यह विद्या क्रमानुसार चली आती है शुभचिन्तक ने बड़े परिश्रम से इस विद्या में कुछ थोड़ा सा अभ्यास कर पाया है जोकि नमूने के तौरपर अब पुस्तक द्वारा सर्व महाशयों के समक्ष करता हूं और आशा करता हूं कि इसमें विशेष चित्त लगावेंगे और भलेप्रकार अभ्यास करके सब बीमारियों की औषध भलीविधि कर सकेंगे—

सूचनायें।

निम्न लिखित शिक्षाओं को ग्रहण करो जिसमें तुमको मनमानी योग्यता प्राप्त हो—

(१) ग़ज़ल को बजाने से प्रथम दो तीन बार सरसरी तौर पर देख जाओ और कमसे कम दो शैर अवश्य स्मरण करलो—

(२) बजाने के प्रथम ग़ज़ल को एक बार गाओ जिससे उसका ढंग ज्ञात हो जावे—

(३) एक एक शब्द को साफ़ साफ़ कहो जिससे सुनने वाले को भी आनन्द आवे लज्जा न करो और खुल कर गावो—

(४) अन्तरे को अच्छी तरह कहो दो तीन बार अन्तरे को कहकर फिर स्थायी के ढंग के पद को कहो कारण कि पहिले पद से पूरा अर्थ नहीं सिद्ध होता जिसके जानने के लिये सुननेवाले विह्वल होजाते हैं यह विह्वलता और आशा रंग लायेगी और गवैये को सभा में दान अथवा न्याय मिलेगा—

(५) ग़ज़ल को अच्छी तरह समझ लो जिसमें बताने में सुगमता हो कवि के आशय को जानना कठिन है तब भी दर्शाना आवश्यक है नहीं तो कुछ आनन्द न आवेगा—

(६) एक ग़ज़ल को प्रत्येक रीति से गावो जिससे भली विधि जानकारी हो जावे कारण कि प्रत्येक मनुष्य एकही ढंग पर नहीं गाता है किन्तु ग़ज़लें बहुधा भिन्न भिन्न रूप में गाई जाती हैं—

आवश्यकीय नोट।

इस भागमें सब ग़ज़लें बहुतही सुगम रीति से लिखी गई हैं अलाप और तालसे निषेध किया गया है यदि शिक्षक का हाथ अच्छी तरह चालू होजावे तो उसको लाज़िम होगा कि पास के पर्दों पर ज़मज़मे भी देता रहे परन्तु यह उस समय में अच्छे लगेंगे जबकि हारमोनियमशिक्षक की उँगलियों में लचक पैदा हो जावे इस शुभचिन्तक ग्रन्थकार ने परिश्रम किया है कि विना ज़मज़मे के भी गायन बहुत अच्छी बजैंगी अलबत्ता परीक्षा की आवश्यकता है।

वेश्यायें।

वेश्यावों के गाने में कुछ औरही आनन्द होता है अर्थात् इनका बताना ग़ज़ब का होता है जिस वेश्या को बताने में अच्छा अभ्यास होता है वह समाज अथवा सभा को प्रफुल्लित करदेती है इसके अतिरिक्त जिसे इसमें अभ्यास नहीं होता वह जमाव में कुछ भी आनन्द पैदा नहीं करसकती है स्त्रियों की वाणी बहुधा चित्ताकर्षक होती है और हावभाव के कारण उसका गुण सब चित्तों पर बहुत जल्द असर कर जाता है

वास्तव में यही कारण है कि गवैयों से सदैव आगे बढ़ जाती हैं नहीं तो गानविद्याके नियम मे यह बिल्कुल बेख़बर रहती हैं जो कुछ उनके गुरु जी ने बता दिया वही उन्होंने गलेसे कह दिया और कटाक्ष से भाव बताना प्रारम्भ कर दिया यह ध्यान कदापि न होगा कि गायन किस ध्वनि की है और किस समय प्रारम्भ करनी चाहिये—

वेश्यावों में जो शिक्षा पाई हुई होती हैं वह बहुधा अपने काम में योग्यता रखती हैं और बहुत जल्द रागिनी का ठाठ अपने चित्तानुसार बदलसकती हैं वेश्यायें ग़ज़ल के सिवा दूसरी चीज़ें बहुत कम गाती हैं और जो गाती भी हैं वह अच्छा भाव नहीं पैदा कर सकतीं बहुत कम वेश्यायें थियेट्रिकल गायन को नियमानुसार गासकती हैं कारण कि सदैव यह असल ढंग को कुछ न कुछ बदल देती हैं जोकि उनकी बानि है या उनके गुरु जीकी सारंगी का अपराध है—

वेश्यावों के साथ हारमोनियम बजाना बहुत सुगम है यह सदैव दुगुन की लयको पसन्द करती हैं और अन्तरा बहुत स्वच्छता से कहती हैं केवल तीन मास की प्रैक्टिस दरकार है और बस—

उस्तादी गाना।

उस्तादी गाना या समाधी गाना वह कहलाता है कि जो नियमानुसार गानविद्या अलाप और तान के साथ गाया जाता है ऐसे गाने बहुधा उस्तादों केही गले से गाये जाते हैं इस कारण उनको उस्तादी गाना कहते हैं—

ऐसे गाने साधारण रीति पर नहीं होते इसीकारण प्रत्येक मनुष्य इनमें चित्त नहीं लगाते और न आज कल्ह ऐसे गवैये हैं जो राग को साफ़ साफ़ कह सकें केवल रागिनी की

ध्वनि को बतला देना योग्यता समझना सिवा छिछोड़ा-पन के और कुछ नहीं कारण कि जब तक आन्तरिक दशा न ज्ञात हो बाहिरी दशा को देखकर कोई कैसे व्यवस्था कह सकता है—

हारमोनियम ऐसे गानेवालों के साथ देने में कभी कभी पीछे रहजाता है ऐसे गायन बजाने के लिये बहुत अच्छा हाथ तैयार होना चाहिये दूसरे गानविद्या में भली विधि दक्षता होनी चाहिये नहीं तो तान और अलाप हारमोनियस्ट के लिये जान की ज़हमत होजावेंगे और समय पर कुछ बन न पड़ेगा हार-मोनियमशिक्षक यदि प्रथम सेही अलाप किया करे तो बहुत जल्द अपने मन्तव्यों के अन्त को पहुँच सकता है केवल छह मास के भीतर हाथ तैयार होना सम्भव है—

रागिनी का चिह्न।

रागिनी का चिह्न चित्त पर अवश्य होता है जबकि गवैया गानविद्या के नियम से विज्ञ हो और रागिनी के समय को ध्यान रखते हुये आलापचारी का ठाठ बांधे बहुधा देखा गया है कि नाच व गाने की सभाओं में किसी किसी सुननेवाले को विह्वलता आजाती है और रागिनी के चिह्न से ऐसे विह्वल होजाते हैं मानो नशे में चूर हैं—

कदाचित् कोई पाठक यह पकड़ पकड़ें कि रागिनी का चिह्न सर्व साधारण पर क्यों नहीं होता ? और क्यों मुख्य मनुष्यों को भरी सभा में विह्वलता आजाती है—सदैव स्मरण रखिये कि शौक़ीन मनुष्य पर गानविद्या का असर बहुत जल्द आजाता है औरों पर कम—यद्यपि राग में ऐसा बल है कि वह

पत्थर को भी पिघला दे तब भी प्रत्येकपर एकसां असर होना असम्भव समझिये—परमात्मा ने सब मनुष्यों को एकही सांचे में नहीं ढाला किन्तु प्रत्येक अपने आपमें निराला है इस कारण उसके चित्त पर एकसां असर नहीं हो सकता—उदाहरण—रागिनी सोहिनी से यदि वह ताल पल्टों में आधीरात के समय गाई जावे तो उसके असर से प्रत्येक मनुष्य को तुरन्तही नींद आजानी चाहिये ऐसा कभी कभी होता है कि पचास मनुष्यों में से बीस को नींद आती है और बचे हुओं में कोई ऊंघता है कोई नींद के खुमार में है कोई बिल्कुल चुपचाप है—किसी की छाती फटी जाती है—कोई ग़मगीन है—कोई चिन्ता में घुटनों में शिर डाले बैठाहै अभिप्राय यह है कि प्रत्येक के चित्त पर रागिनी का पूरा असर नहीं होता—किसी पर विशेष किसी पर कम—परन्तु असर अवश्य होता है नहीं तो गानेवाले का अपराध जानिये—

औषध गानविद्या ।

संसार में कोई रोग ऐसा नहीं जिसकी औषध गानविद्या से न होती हो योरप व अमरीका के डाक्टर बहुतसे रोगों की औषध केवल स्वरों की चित्ताकर्षण और जल्द असर करनेवाली आवाज़ से करते हैं जब तक कि अमल जर्राही भी इस विद्या के कारण और ढंगों की अपेक्षा बहुत अच्छी होती है गानविद्या से औषध करना रोगी को औषध पिलाने से कितनाही गुणा अच्छा है—भारतवर्ष जिसको कि इस विद्या की खानि कहना चाहिये यह गानविद्या में सब संसार में प्रख्यात था परन्तु समय के परिवर्तन से जैसे जैसे गाने इस देश से उठते गये वैसेही उसके साथ इस औषध के जानने

वाले भी न रहे और जो कुछ जाननेवाले जानते थे वह भी अपने साथ स्वर्ग को लेगये—

हमने इस छोटीसी पुस्तक में जो केवल हारमोनियम के उन प्रेमियों के लिये बनाई गई है जिनको कि ग़ज़लों से अधिक प्रेम है औषध गानविद्या को संक्षेप से वर्णन किया है और प्रत्येक ग़ज़ल के अंत में उस रोग का नाम भी लिख दिया है कि जो उस रोग से आराम पायेगा जिस ध्वनि में ग़ज़ल का ठाठ जमाया गया है और संक्षेप से औषध भी लिख दिया है जिससे औषध करनेवाला (गाने बजानेवाला) कदापि निराश न होगा—

यदि लिखे हुये ढंग के प्रतिकूल होगा तो रोगी शीघ्र लाभ न उठायेगा जो कुछ परीक्षा में आया है केवल वही लिखा गया है—

ग्रन्थकर्त्ता

हारमोनियममास्टर
सातवांभाग

ध्वनि सिन्धु भैरवी–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक्त शाम–

तर्ज़–"इश्क़ में तेरे कोह ग़म शिरपै लिया जो हो सो हो"

ग़ज़ल ।

(ज़रीफ़)

नामे खुदा पै मुल्को माल हमने दिया जो हो सो हो
पेशो तरब फ़क़ीर हो तर्क किया जो हो सो हो
बख़्शा था तूने किर्दीफ़र तख़्तोसिपह ताज़ो गर
मैंने वह तेरे नाम पर सदक़े किया जो हो सो हो
इश्क़ खुदा में सुर्खरू हूं मैं यही है आरजू
शिर को कटा बहा लहू हूंगा फ़िदा जो हो सो हो
नामपै तेरे क़िर्दगार छोड़ के शहर और दयार
जानिब दश्तो कोहसार सरसे चला जो हो सो हो
तुझपै फ़िदा है जानो तन तुझसे लगी है अब लगन
मिस्ल ज़रीफ़ बेवतन अबतो हुआ जो हो सो हो

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	पा	धा	०	साँ	रें	गाँ	माँ	०	०	०

स्थायी

ना	मे	खु	दा	पैं	मुल	को	माल	हमने	दि	या
रे	मा ×	३		पा॰	धा	रे^	सा^॰	धा × २	पा	मा॰

जो	हो	सो	हो	
पा	धा	पा	मा....	⁝

अन्तरा

वख्शा	था	तू	ने	किरोंफ़र	तख़्तो	सि	पा	ह्व
सा^	× ४		रे^॰	मा^×३॰	गा^×२	रे^	सा	रे^॰

ता	जो	ज़र	
गा^	रे^	सा....	⁝

सूचना—सब गज़ल उपर्युक्त ढंग पर बजैगी ध्यान करके बजावो—

परीक्षा—कफ़ की बीमारियां—बहुत जल्द अच्छी होती हैं रोगी को पलँग पर लिटाकर उसके शिरहाने रागिनी अलापी जाती है—तबला नहीं बजता—केवल तार के साज़ से स्वरों की आवाज़ सुनाई जाती है—जैसे प्यानो—हारमोनियम—सितार आदि—

मुख्य परीक्षा—"पल्पी टेशन आफ़ हार्ट" (दिलधड़कना) क रोगी को बहुत जल्द आराम होता है—

ध्वनि सिन्धु भैरवी-ताल क़ौवाली-लय दुगुन दर्मियानी-वक्र शाम-
तर्ज़-"यह कैसे बाल बिखरे हैं यह क्यों सूरत बनी ग़म की"

ग़ज़ल।

चखादे चाशनी ऐ शरबते दीदार थोड़ी सी
दमे आख़िर तो करले ख़ातिरे बीमार थोड़ी सी
वह है बे ज़ायक़ा शर्बत अगर तुर्शी न शामिल हो
विसाले यार में भी चाहिये तकरार थोड़ी सी
ताम्मुल शिर झुकाने में किया कब मैंने ऐ क़ातिल
मियां से रहगई खिंचकर के क्यों तलवार थोड़ी सी

दूसरा सप्तक

सा	रे	०	मा	पा	०	०

स्थायी

चखा	दे	चाशनी	ऐ	शर	बते	दी	दार
सा×२	रे.	मा×३	गा*	पा..	मा×२	गा*..	रे×२
थो	ड़ी	सी :					
गा*..	रे	सा....					

अन्तरा

वह है बे ज़ायक़ा	शर	बत	अगर	तुर	शी	न	शा
धा*×५	पा	नी*.	धा*×२	पा	मा	पा	.धा
मिल	हो :						
पा.	मा....						

सूचना-स्थायी के ढंग पर दूसरे पद बजैंगे और अंतरे के नियम से पहिले सब पद बजैंगे—

परीक्षा-देखो पृष्ठ (१४)

ध्वनि भैरवी–ताल दादरा–लय द्रा–वक़ मुतह–

तर्ज़–" मेरे शाह को या खुदा "

ग़ज़ल ।

पसेमर्ग मेरे मज़ार पर जो दिया किसी ने जला दिया

उसे आह दामन बादने सरे शामही से बुझा दिया

मेरे दफ़न करने से पेश्तर कहा हमदमों ने यह सोच कर

कहीं जाये न इसका जी दहल मेरी लाश पर से हटा दिया

कहा नामाबर ने जवाब दो मुझे ख़त आशिक़ ज़ार का

वहीं ख़त को आग में डाल कर कहा कहियो ख़त को जलादिया

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

स्थायी

प	से	मर	ग	मे	रे	म	जार	पै	जोदी
धा*	पा	नी*	धा*	पा	गा*	मा	धा*×२	नी*	गा*

या	कि	सी	ने	ज	ला	दि	या
रे *	सा	धा*	नी*	रे *	सा	नी*	धा*....

अन्तरा

उसे	आह	दामन	बादने सरे शाम	ही से
धा*×२	नी*×२	रे *×२	गा*×७.	मा×२.

बु	भा	दी	या
गा*	रे *	सा	नी*....

सूचना—अन्तरे की ध्वनि पर सब दूसरे पद बजेंगे और स्थाई के अनुसार पहिले पद गजल के बनाये जावेंगे—

परीक्षा—रोगी यदि खांसी कफ से परेशान हो या दिल, दिमाग, कलेजा, गुर्दा आदि में कुछ बाधा उपस्थित हुआ हो या मस्तिष्क बहुत निर्बल हो गया हो तो उसको चाहिये कि प्रातःकाल पांच या छः बजे जिस समय चिड़ियां न बोलें इस रागिनी को अलाप करे—अधिक से अधिक एक सप्ताह तक इस क्रिया के करने से तुरन्त लाभ होगा—एक अमरीकन डाक्टर कहता है कि पागल भी इसके द्वारा अच्छे हो गये हैं—

ध्वनिभाग-ताल मुगली-लय दर्मियानी-वक्त रात-
तर्ज़-" दिल में ख़याल हो "

ग़ज़ल ।

शवे माह हो बादये नाब हो लबे जू हो फ़र्श हुबाब हो
वह निगार मस्त शराब हो न तो पर्दा हो न हिजाब हो
मेरे छेड़ने से वह जाने जां कभी गुस्सा हो कभी मेहरबां
कभी बोसा दे कभी गालियां गहे लुत्फ़ हो गहे इताब हो
मेरे पास बैठा हो वह सनम लिये अपने हाथ में जामे जम
पियें दम बदम मये वस्ल हम न ख़ियाल रोज़ हिसाब हो
कभी बिगड़े वह और कभी बने कभी रूठे वह और कभी मने
कभी करदे रुख़ मेरे सामने कभी चेहरा ज़ेर नक़ाब हो
मये खुशगवार का दौर हो नशये शराब का ज़ोर हो
इधर उसके दिलमें कुछ और हो उधर हमको जोशे शबाब हो

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	०	साँ	रेँ	गाँ	माँ	पाँ	०	०

अन्तरा और स्थायी इकसा बजाइये

श	वे	मा	ह	हो	वो	या	द	ये	ना	व
गा^	रे^	सा^.	धा	नी*	..पा	पा	गा	मा	धा..	नी*

हु	व	व	हो	= शीघ्र उँगली चलावो
सा^	रे^	गा^	मा^	

ल	वे	जू	हो	फ	र	श	हु	व	आ
रे^	गा^	मा^	पा^.	मा^	गा^	रे^.	सा^	..नी*	..सा

आ	व	हो	⁝ (शीघ्रता करो)
..रे	सा^.	धा....	

सूचना—केवल स्थायी के ढंग पर सब ग़ज़ल बजेगी—

परीक्षा—मुख्य रात्रि के समय की यह रागिनी है ज्वर तिजारी और चौथिया के लिये बहुतही लाभदायक है—अलाप के साथ कोई खाल का बाजा भी हो जैसे तबला, मृदंगादि रोगी यदि बड़बड़ाता भी हो तो अच्छा हो जावेगा—ज़नानी आवाज़ इसके लिये विशेष गुणकारी है नहीं तो बारह वर्ष से कम आयु के बालक की आवाज़ ठीक है—

कोई कोई जानकार कहते हैं कि भाग से नींद नहीं आती है—

ध्वनि भैरवी–ताल कौवाली–लय दर्मियानी–वक्र प्रातःकाल–
तर्ज–" मैं तुझ बिन यार मरता हूं "

ग़ज़ल।

निगाहे यार बदमस्ती में भी हुशियार कैसी है
मेरा दिल छीन लेने के लिये तैयार कैसी है
जिगर में चुभगई पहेलू में उतरी दिलमें जा खटकी
गजब की चुलबुली चंचल निगाहे यार कैसी है
अदायें जान देती हैं निगाहे तेरा क़ातिल पर
शहादत शिर कटाने के लिये तैयार कैसी है

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
				धा̂	नी		रे	गा					
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	०	०	०	०

स्थायी

निगाहे यार	ब	द	म	स	ती में		भी इ
सा × ६	गा*	रे*	सा	नी*	×२		सा नी×*+

हु	शि	या	र	क	ए	सी	है
धा*	नी*	रे*..	गा*	मा	गा*	रे*	सा....

अन्तरा

जिगर में	चुभगई	प	हे	लू	में	उतरी	दिल
सा×२ रे*	सा×३.	मा	मा	गा*..	रे*	सा×२	*.

में	ज	आ	खट	की
गा*	.मा	.गा*	रे*.	सा...

सूचना–स्थायी के ढंग पर सब दूसरे पद बजैंगे और अन्तरे के नियम से सब पहिले पद बजाये जावेंगे–

परीक्षा–देखो पृष्ठ (१७)

ध्वनि पहाड़ी—ताल चार—लय ठा—वक्त सारा दिन—
तर्ज़—" क़मर तुझसे चला जाता नहीं "

ग़ज़ल ।

यार की कोई ख़बर लाता नहीं ।
दम लबों पर है निकल जाता नहीं ॥
मत सता ज़ालिम दिले रंजोर को ।
क्या तुझे ख़ौफ़े ख़ुदा आता नहीं ॥
बोसा मिल जाता गुले आरिज़का गर ।
हाथ मलता दरसे फिर जाता नहीं ॥
ख़ूबरू देखे जहां में लाखहा ।
पर कोई तुझसा नज़र आता नहीं ॥
तुम मिलो ग़ैरों से हम देखा करें ।
यह सितम हमसे सहा जाता नहीं ॥
तुझको आना है तो आजा ऐ अजल ।
चोचला तेरा मुझे भाता नहीं ॥
हसरतें दिलकी निकालूं किस तरह ।
यार को तनहा कभी पाता नहीं ॥
ऐ तबीबो है अबस फ़िक्रे दवा ।
जुज़ मसीहा दर्दे दिल जाता नहीं ॥
क्या ख़ता सरज़द हुई हमसे भला ।
ख़्वाब में भी वह नज़र आता नहीं ॥
दिल गया ताक़त गई और सब्र भी ।
पर तसव्वर यार का जाता नहीं ॥

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	धा	नी	सा	रे	०	०	०	०	०

झपताल स्थायी

यार की को	ई	खबर	ला	ता	न	हीं	:
सा ×४.	नी	धा×२	पा.	नी.	.धा	पा...	

मतसता ज़ा	लिम		दिले	रन	जो
गा ×४.	रे	..	सा ×२	नी *.	रे ..

र	को	:
सा	नी* ...	

सूचना—केवल स्थायी पर अन्त करसकते हो परन्तु अन्तरे से रागिनी और भी आनन्द भरी होजावेगी—

परीक्षा—शिर के दर्द के लिये झँझौटी और पहाड़ी यह दोही रागिनियां गुणकारी हैं बहुत बार परीक्षा की गई है बिल्कुल ठीक पाया है कोई मुख्य समय नियत नहीं मर्दानी आवाज़ और भी लाभदायक होगी रोगी की गर्दन के नीचे एक बड़ा तकिया लगाये रहना चाहिये तबला और पियानो आदि लाभकारी न होंगे—

ध्वनि ज़िला–ताल क़ौवाली–लय दरमियानी–वक्त हरवक्त–

तर्ज़–" उम्र देखो तो दश बरसकी "

ग़ज़ल ।

सितमही करना–जफ़ाही करना–निगाह उल्फ़त कभी न करना

तुम्हें क़सम है हमारे शिर की हमारे हक़ में कमी न करना

हमारी मैयत पै तुम जो आना तो चार आंसू बहा के जाना

ज़रा रहे पास आबरू भी कहीं हमारी हँसी न करना

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
	गा				नी								
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	०	०	०	०	०

स्थायी

सि तम ही करना ज़फ़ा हीं क र ना नि
मा गा* मा पा×४. सां नी* सां नी* .पा
गा ह उ ल फ़त क भी न
धा पा मा .गा* रे. गा* पा. मा
कर ना
गा* रे...

अन्तरा

हमा री मैयत पै तुम जो आ ना तो
मा पा नी*×२ सां रें सां नी* सां. नी.
चार आं सू गिरा कें ज आ ना
धा×२ नी* रे. सां×२. रें नी* .धा पा...

सूचना—शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजाये जावेंगे—

परीक्षा—एक हिन्दोस्तानी डाक्टर का वाक्य है कि जिला के सुनने से कान सून होजाते हैं यदि नश्तर लगाते समय गाया जावे तो अवश्य है कि घायल को कुछ कष्ट न होगा इसीकी पुष्टता एक मेडीकल जनरल करता है वह लिखता है कि उसने फ़ोनोग्राफ़ में ज़िला की रागिनी भरकर घायल को नश्तर देने के पहिले सुनादी जिससे पीछे को कुछ कष्ट न हुवा—

ध्वनि देश—ताल क़ौवाली—लय दर्मियानी—वक़्त शाम दश बजे—
तर्ज़—" बुताने माहवश उजड़ी हुई "

ग़ज़ल दाग़ ।

मिलाते हो उसीको ख़ाक में जो दिल से मिलता है
मेरी जां चाहनेवाला बड़ी मुश्किल से मिलता है
भरे हैं तुझ में वह लाखों हुनर ऐ मजमये ख़ूबी
मुलाक़ाती तेरा गोया भरी महफ़िल से मिलता है
मुझे आता है क्या क्या रश्क वक़्ते ज़िब्ह उससे भी
गला जिस दम लिपट कर ख़ंजरे क़ातिल से मिलता है
मिसाले गंज कारूं अहले हाजत से नहीं छिपता
जो होता है सख़ी ख़ुद ढूंढ कर सायल से मिलता है
छिपाये से कोई छिपती है अपने दिलकी बेताबी
कि हर तारे नफ़स अपना रगे बिस्मिल से मिलता है
जवाब इस बात का उस शोख़ को क्या दे सके कोई
जो दिल लेकर कहे कमबख़्त तू किस दिलसे मिलता है
ग़ज़ब है दाग़ के दिल से तुम्हारा दिल नहीं मिलता
तुम्हारा चांद सा चेहरा महे कामिल से मिलता है

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

स्थायी

मिलाते हो	उ	सी	ई	को	वो	ख़ा	क
सा ⁀ × ४..	. नी..	सा ⁀ .	. रे ⁀	.सा .	.नी	धा.	पा

में	यें	जो	वो	दिल	से	मि	लता	आ
.धा	पा	. मा	. गा	रे .	सा	रे	गा × २..	रे

है	
सा...	:

अन्तरा

भरे हैं तु	झ	में वह	ला	खों	हुनर	ऐ
सा ⁀ × ४.	नी	धा .	नी	⁀ ..	पा × २	ध

मज	म	अ	ख़ू	बी	{	ई	ई	ई
सा ..	रे ⁀	गा ..	रे ⁀	सा ..	{	नी	धा	पा

ई		
धा...	:	}

ब्रैकेट का बोल गायन को आनन्दमय बनादेगा यद्यपि विशे आवश्यकीय नहीं है—

ध्वनि जंगला-ताल दादरा-लय दर्मियानी-वक़्त ख़ास तीसरा पहर-

तर्ज़—" जान मेरी कहीं हिज्र में "

ग़ज़ल मसीहा ।

चमने कूचये जानां से सदा आती है
नाज़ करती हुई गोया कि सवा आती है
कौन भरता है दम सर्द जो रातों को मुदाम
ठंढी ठंढी तेरे कूचये से हवा आती है
किसकी मैं ज़ख़्म हिनाई का हूं ज़ख़्मी यारब
जो हर एक ज़ख़्म से फिर वूये हिना आती है
इल्तिजा यार की रखता है सरे शाम से दिल
रात क्या आती है इक शिर पै वला आती है
छोड़ जाता है जो वह मुझको अकेला घर में
दरो दीवार से रोने की सदा आती है
दोश से तावाकमर और कमर से तावापा
जो हैं बलखाये हुये ज़ुल्फ़ दुता आती है
जी में आता है मसीहा से मैं पूंछूं जाकर
मर्ज़ें इश्क़ की कुछ तुमको दवा आती है

दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
* ध * नी	* रे
० ० ० मा पा ० ०	सा ० ० ० ० ० ०

स्थायी

च   मने   कू   च   ये जा   ना   से   स
धा* सा ×२   रे* .   सा   नी*×२.   सी . नी*   धा*

दा   आ   ति   इ है
नी*. धा*.   मा   पा   नी ....

अन्तरा

जी में   आ   आ   ता   है मसी   हा   से   मैं
धा*×२   नी*   ..धा*   रे*   सा ×३   धा*   सा   नी*

इव   ना   पूं   छूं
सा   . रे*   .सा.   नी* ....

सूचना—शेष सब पद उपरोक्त ढंग से बजेंगे—

परीक्षा—वह सब रोग जो कि रुधिर के खराब होने से पैदा होते हैं इसके द्वारा बहुत जल्द अच्छे होते हैं—

ध्वनि सोहिनी–ताल पश्तो–लय धीमी–वक्त अख़ीरी रात–

तर्ज़–"वायसे वहशत हुई"

ग़ज़ल ।

ज़फ़र

ख़ार हसरत क़ब्र तक दिल में खटकता जायगा

मुर्ग़ बिस्मिल की तरह लाशा फड़कता जायगा–

जान जायेगी जो इश्क़े आरज़े गुलरंग में

तख़्तये ताबूत मिस्ले गुल महकता जायगा–

यह मैं कहताहूं कि मेरी लाश को ऐ दोस्तो

इक ज़माना दीदये हसरत से तकता जायगा–

मरगयाहूं मैं किसीके हसरते दीदार में

क़ब्र तक लाशा भी मेरा राह तकता जायगा–

ऐ ज़फ़र क़ायम रहेगी जबतलक अक़लीम हिन्द

अख़तरे इक़बाल उस गुल का चमकता जायगा–

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	* नी	०	रे	गा	मा	पा	०	०

अन्तरा और स्थायी इसमें बजेगी

खा	र	हस	रत	कब	र	तक	दिल	में	ख	टक
+ नी	रे	गा	मा..	पा.	मा	गा.	मा..	गा.	रे	गा

ता	जाय	गा	
मा..	गा×२	रे...	⁘

सूचना–सब ग़ज़ल उपरोक्त नियम से बजाई जावेगी अन्तरा इसका एक और नियम से भी बजता है परन्तु यहां पर उसको निरर्थक समझता हूं सीखनेवाले के लिये यही योग्य है दूसरा ढंग देखिये "हारमोनियममास्टर चौथे व पांचवें भाग" में—

परीक्षा–यदि किसी कारण से विशेष चोट आगई हो और अधिक कष्ट हो और पेट की पीड़ा से विह्वल हो जाने पर यह सोहिनी आपको बहुत कुछ लाभ पहुचा सकती है परन्तु गवैये को उस समय रागिनी के गाने में शीघ्रता नहीं करनी चाहिये–चित्त चाहे कैसाही खराब हो केवल एक वार के गाने या बजाने से ठीक होजावेगा सबका परीक्षा किया हुवा है और बिल्कुल ठीक है—

ध्वनि कौंसिया–ताल पश्तो–लय धीमा–वक्त सब दिन–
तर्ज़–" मैं जानताहूं कि दिल्दार "

ग़ज़ल ।

दिल किस अदा से लेते हैं वतला दिया कि यों
आहन को मक़नातीस पै दिखला दिया कि यों
होता शफ़क़ में कैसे है खुरशेद जलवागर
रुख से ज़रा नक़ाव को सरका दिया कि यों
दिल आशिक़ों का वस्ल में किस तरह शाद हो
ले वर में मुझको नाज़ से वतला दिया कि यों
दिल आशिक़ों का हिज्र में जलता है किस तरह
सीमाव रखके आग पै दिखला दिया कि यों

पहिला सप्तक	दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
नी	गा नी	
० ० ० ० ० ० ०	सा रे गा गा पा धा ०	सा ० ० ० ० ० ०

स्थायी

दिल		अ	दा	से	ले	ते	हैं
गा .	मा .	पा	मा	रे	गा* .	रे	सा.

ब		त		लादि	या कि
+ . धा		+		सा × २	गा × २

यों	
मा....	⁞

अन्तरा

हो	ता शफ़क़	से	कैसे है	ख़ुर	शे
मा	पा × ३ नी		सा × ३ .	धा	नी *

द	जल	वह गर	⁞	"हां" फिर दुबारा
धा	पा . गा . मा...			मा .

कहो—

सूचना—शेष सब ग़ज़ल उपरोक्त ढंग पर बजेगी—

परीक्षा—इस रागिनी के गाने से आंतों पर ज़ोर पड़ता है इस कारण चित्त को सहायता पहुँचानेवाली है इसके अतिरिक्त गला साफ़ हो जाता है—ख़राश आदि जो कभी कभी खटाई और चिकनाई से हो जाती है वह भी दूर हो जाती है—

ध्वनि पहाड़ी—ताल दादरा—लय दर्मियानी चढ़ी—वक़्त हर वक़्त—

तर्ज़—" इक फ़क़त मैंही नहीं "

ग़ज़ल।

दिल मेरा ज़ुल्फ़े सिया डस गई नागिन बनकर

वे गुनह यार ने मारा मुझे दुश्मन बनकर

उस परी ने लबे गुलरंग पै मिस्सी जो मली

और सिमटा वह दहन गुंचये सोसन बनकर

आज उस गुल का अजब हाल हुआ पीके शराब

चम्पई गाल दमकने लगे कुन्दन बनकर

बाल जो उसने जनाज़े पै मेरे खोल दिये

सबने जाना कि परी आई है जोगिन बनकर

दोस्त जब तक है ख़ुदा कुछ नहीं परवा मोनिस

क्या करेगा कोई हासिद मेरा दुश्मन बनकर

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	नी	साँ	रें	गाँ	माँ	०	०	०

स्थायी

दिल मेरा	ज़ुल	फ़े	सि	या	इस	ग	ईं	न	आ
साँ × ३..	नी.	धा.	रें	साँ.	नी.	धा	पा	धा	पा

गिन	ब	न	कर	
गा..	पा	धा	साँ....	⁝

अन्तरा

उस पर	ईं	ने लबे गुलरंग	पै	मि	स्सी
साँ × ३	..रें	गाँ × ६	रें	गाँ	माँ.

जो म	ली	
गाँ×२. रें	....	⁝

सूचना—शेष सब गज़ल उपरोक्त ढंग पर बजाई जावेगी—

परीक्षा—देखो पृष्ठ (२२)

ध्वनि कल्याण—तालतीन—लय धीमी—वक़्त दोपहर—

तर्ज़—"आई बहार बाग़ में बुलबुल क़फ़स में है"

ग़ज़ल।

जानी लिपट जा सीने से दिल तेरे वश में है

जान मिस्ल अन्दलीब गुलिस्तां क़फ़स में है

छूटेगी किस तरह तू मेरे दाम इश्क़ से

ताक़त कहां फ़रार की पाये मगस में है

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	०	०	०	०	०	०

स्थायी

जा	नी	लपट	जा	सीं	ने	ये	स	ये	दि	ल	ते
सा.	रे	रे	गा×२	धा.	पा	.मा	.गा	रे	गा	मा.	गा

रे	वश में	है
रे	सा × २	रे...

अन्तरा

छू	टेगीं	किस	त	रह	तू मेरे	दा	म	इश	क
पा	गा×२	पा	धा	सां	×३.	धा .	नी	सां	नी

से	ये
.धा	पा....

सूचना—सब दूसरे पद स्थायीके नियमसे बजेंगे और अन्तरे के ढंग पर पहिले सब पद कहना चाहिये—

नोट—इस ढंग के गाने में कुछ गले को दबाकर कहना पड़ता है भारी आवाज़ मर्दानी अच्छी होती है—

परीक्षा—इस रागिनी से शान्ति होती है कितनाही क्रोध क्यों न हो इसके सुनने से शीघ्र चला जाता है चित्त जब चलायमान हो अथवा किसी प्रकार की चिन्ता व्यथित किये हो तो धीमी चाल में गाना चाहिये अवश्य ही आराम होगा—

ध्वनि जिला झँझौटी—ताल दादरा—लय दर्मियानी—वक़ सब दिन—

तर्ज़—" मिल मुझसे मुझको सब्र अब ऐ नाज़नीं नहीं "

गज़ल ।

लगजा गले से ताक़त ऐ नाज़नीं नहीं
है है खुदा के वास्ते मत कर नहीं नहीं
सुनता है कौन किससे कहूं दर्द बेकसी
हमदम नहीं है कोई मेरा हमनशीं नहीं

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
•	०	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	०	०	०	०	०

स्थायी

लगजागलेसे ताक़ त अ ऐ न आ आ
सां × ५ नी × २ धा .. धा ..नी पा ..धा ..पा
ज़ नीं न हीं
.मा गा . मा पा.... :

अन्तरा

सुनता है कौन किस से कहूं दर्द बे क
सां × ५ . रें × २ सां ×२. नी × २ धा . सां
सी
नी.... :

सूचना—अन्तरे के ढंगपर गायन के पहिले पद बजाये जावेंगे और स्थायी के ढंगपर दूसरे पद बजेंगे—

परीक्षा—देखो पृष्ठ (२२)

ध्वनि कल्याण–ताल मुग़ली–लय धीमी–वक़्त शाम–

तर्ज़–" ऐ मेरी जां वफ़ा तुझसे "

ग़ज़ल

कम्तरीन।

ले गया वह दिलरुबा दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

यह गया दिल वह गया दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

मैं न कहता था परेशां होगा दरे सौदाय ज़ुल्फ़

ऐ गिरफ़्तारे बला दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

लगगई किसकी नज़र जो हो गया यों मुज़महेल

था भला चंगा मेरा दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

नक़्द को दिल की समझकर आहे उस दिलवर ने आज

बे दरम सस्ता लिया दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

मैं न कहता था बुतों से ऐ दिले कमतर न मिल

फिर ख़ुदा की जो रज़ा दिल आहे दिल अफ़सोस दिल

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	०	साँ	रें	गाँ	मा	०	०	०

स्थायी

ले	ग	या	वह	दिल रु	बा दिल	आहे	दिल	अफ़
धा.	पा	मा×२.	पा × २.	धा×२.	सां×२	रें.	सां.	

सो	स	दिल
धा.	पा	धा....

अन्तरा

मैं न	कह	ता	था परेशां	हो	गा	ओ
सां ×२	रें	गा.	मा ×४.	गा.	रें	सां

सौ	दा	ये	ज़ुल्फ़	{ आ	आ	आ
रें	गा	रें	सां ...	{ नी	.धा	.पा

आ }
धा ... }

नोट—ब्रैकेट की छोटीसी तान यदि बजैगी तो सम बँध जायगा और यदि न बजसके तो हर्ज नहीं—

सूचना—शेष ग़ज़ल उपरोक्त ढंग पर बजावो—.

परीक्षा—देखो पृष्ठ (३५)

ध्वनि पहाड़ी—ताल क़ौवाली-लय दर्मियानी—वक़्त रुब दिन—

तर्ज़—" और होंगे तेरी महेफ़िल से "

ग़ज़ल

दाग़ ।

आप जिसको हदफ़े तीर नज़र करते हैं

रात दिन हाय जिगर हाय जिगर करते हैं

और क्या दाग़ के अशआर असर करते हैं

गुदगुदी दिलपै हसीनों के मगर करते हैं

ग़ैर के सामने यों होते हैं शिकवये मुझसे

देखते हैं वह इधर बात उधर करते हैं

देखकर दूर से दर्बां ने मुझे ललकारा

न कहा यह कि ठहर जावो ख़बर करते हैं

आपकी ग़ैरों से इशारों में हुई हैं बातें

देखते देखते आप आंखों में घर करते हैं

इनसे पूछे जो कोई ख़ाक में मिलते हैं कौन

वह इशारा तरफ़े राहे गुज़र करते हैं

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
					नी								
०	०	०	०	मा	पा	धा	०	सॅा	रें	गा	०	०	०

स्थायी

आप	जिसको	हद्‌फे	ती	र	नज़	र	कर	त
नी * × ६ ..			धा .	पा	म × २.	पा	ध..	.नी

ये	हैं
धा	पा....

अन्तरा

और	क्या	दाग़ के	अश	आर	अ	सर	कर
पा × २	नी*.	सॅा × ४..		नी* × २	सॅा	रें	गॅा *..

ते	हैं
रें	सॅा ....

सूचना—यह ग़ज़ल बिल्कुल नये ढंग पर बनाई गई है—

परीक्षा—देखो पृष्ठ (२२)

ध्वनि काफ़ी–ताल क़ौवाली–लय चढ़ी–वक़ शाम–
तर्ज़–"सरे शोरीदा पाये दश्त पैमां शामो हिजरां था"

ग़ज़ल

दाग़ ।

भौवें तनती हैं ख़ंजर हाथ में है तनके बैठे हैं
किसीसे आज बिगड़ी है कि वह यों बनके बैठे हैं

दिलों पर सैकड़ों सिक्के तेरे जोबन के बैठे हैं
कलेजों पर हज़ारों तीर इस चितवनके बैठे हैं

इलाही क्यों नहीं उठती क़यामत माजरा क्या है
हमारे सामने पहेलू में वह दुश्मन के बैठे हैं

यह गुस्ताखी यह छेड़ अच्छी नहीं है ऐ दिले नादां
अभी फिर रूठ जायेंगे अभी वह मनके बैठे हैं

यह उठना बैठना महफ़िल में उनका रंग लायेगा
क़यामत बनके उट्ठेंगे भभूका बन के बैठे हैं

कोई छींटा पड़े तो दाग़ कलकत्ते चले जायें
अज़ीमाबाद में हम मुन्तज़िर सावुन के बैठे हैं

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
					नी				रें					
०		०	मा	पा	धा	०	सां	रें	०	मां	०	०	०	

स्थायी

भौंरे	तन	ती हैं	खून	जर	हा	थ में	है	तनके
मा × ३..		पा × ३ .		धा	रे ..	सां × २	नी ※ ..	धा×२

वै	ठे	हैं
नी ※	धा	पा.....

अन्तरा

दिलों पर सैकड़ों सि	के	ते	रे	जो	वनके वै
मां × ७	गां ※.	ं. रे※	सां	नी※.	ं रे※×३

ठे	हैं
सां	नी※....

सूचना—शेष सब ग़ज़ल उपरोक्त ढंग पर बजाई जावेगी—

परीक्षा—नेत्र के सब रोग जो वात से पैदा हों इसके अलाप से अच्छे हो जाते हैं एक चतुर गानविद्या का परीक्षक लिखता है कि इसके गानेवाले को कभी आंखों का कष्ट नहीं होता बुढ़ापे में भी नेत्रों का प्रकाश अच्छा रहता है और न इसका गानेवाला मोटा रहता है—

ध्वनि पहाड़ी–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक़्त हर वक़्त—

तर्ज़–"अजब शोर मचा है"

ग़ज़ल।

पा ब ज़ंजीर दुता ज़ुल्फ़ दुता का देखा
इश्क़बाज़ों को गिरफ़्तार बला का देखा
मिस्ल साया के पड़े रहते हैं पांवों पै तेरे
हमने साये को तेरे साया हुमा का देखा
बे वफ़ा तूने वफ़ा कुछ भी न की मुझसे कभी
हमने क्या क्या न सितम तेरी ज़फ़ा का देखा
मुफ़्त में जान गई वस्ल की उम्मैद में
तुझको पाबन्द सदा शर्मोहया का देखा
खुलगये ज़ाहिरो बातिन के यहां पर्दे सभी
जिसने तेरा जो खुला बन्द क़बा का देखा
उसने खुद अपनेही हाथों से किया अपनाही खून
जिसने हाथों पै तेरे रंग हिना का देखा

दूसरा सप्तक									तीसरा सप्तक					
					नी				गाँ					
०	रे	०	मा	पा	धा	०	साँ	रेँ	०	०	०	०	०

स्थायी	पा ब ज़ न जी र दु ल आ ज़ुल फ़
	मा पा नी* साँ ँगा*. रेँ साँ नी* साँ धा. पा
	दु ता का द ये खा
	मा रे. मा. धा पा मा.... ⁛
अन्तरा	मिस ल स आ या के पड़े रहते हैं पा वँ
	मा पा नी* साँ रे ×६ साँ रेँ. गा*.
	पै ते रे
	रेँ×२साँ.... ⁛

सूचना—शेष पहिले पद अन्तरे के ढंग पर बजेंगे और दूसरे पद स्थायी के नियम से बजाये जावेंगे ध्यान करके बजावो—

परीक्षा—देखो पृष्ठ (२२)

ध्वनि भैरवी–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक़्त ८ बजे सुबह–

तर्ज़–"कटी गुनाहों में उम्र सारी"

ग़ज़ल।

नमाज़ किसकी कहां का रोज़ा अभी तो शग़ले शराब में हूं

खुदा की याद आये किस तरहसे बुतोंके क़हेरो अज़ाब में हूं

शराब का शग़ल होरहा है बग़ल में पाता हूं मैं किसीको

मैं जागता हूं कि सो रहा हूं ख़याल में हूं कि ख़्वाब में हूं

न छेड़ इस वक़्त मुझको वाइज़ नहीं है मौक़ा यह गुफ़्तगू का

सवार जाता है वह शराबी मैं हाज़िर उसकी रकाब में हूं

कभी नमाज़ी कभी शराबी कभी हूं रिन्द और कभी हूं ज़ाहिद

खुदा का डर है बुतों का खटका अजब तरह के अज़ाब में हूं

क़यामत आनेका खौफ़ क्या है तरद्दुद व फ़िक्र क्या है आग़ा

हिसाब क्या कोई मुझसे लेगा बताओ मैं किस हिसाब में हूं

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
				नी			रे		ग		मा	धा	नी	
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०	

अन्तरा और स्थायी एकही ढंगपर बजाइये

न	मा	ज	किस	कीकहां	का	र	वो	जह
गा*	रे*	गा*	मा*.	मा×रे	गा*	.मा.	नी*	धा*

अ	भी	तो	श	ग	ले	शर	आ	व	मे
मा*	मा	मा*	.मा	.गा*	रे*.	.गा*	मा.	गा*	रे*

यें	हूं
सा	+नी*....

÷

सूचना—सब गज़ल उपरोक्त ढंग पर बजाई जावेगी बहुत सरल कर दिया गया है जिसमें सीखनेवाले की समझ में रागिनी तुरन्त आजावे—

परीक्षा—देखो पृष्ठ (१७)

ध्वनि योगिया आसावरी—ताल पश्तो—लय मीठी—वक्त १० बजे तक सुबह—

तर्ज़—" ऐ यार कहां तक मैं करूं "

ग़ज़ल ।

दिल हम किसी परी से न हरगिज़ लगायेंगे
हम भी परी रुख़ों से परे घर बनायेंगे

मन्दिर में बुतको पूजने हरगिज़ न जायेंगे
हम दूर डेढ ईंट की मसाजिद बनायेंगे

हम उस जगह से हिलके कहीं को न जायेंगे
जिनको ग़रज़ हो दौड़े हुये आप आयेंगे

मरजायें शिरको फोड़ के फ़रहाद बनके हम
शीरीं की तलख़ बात न हरगिज़ उठायेंगे

फ़रहाद शिर पटकता हुआ पीछे आयेगा
हम जान शीरीं पहिलेही अपनी गवायेंगे

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
■	■		मा	■	नी		रे	■		मा	■	■	
०	०	०	मा	०	धा	०	सां	०	गां	मां	०	धा	०

स्थायी

दिल हम कि सी प री से
सा. गा नी रे* . सा गा . रे
न हर गिज़ ल गा य यें
सा. नी धा. मा* मा .धा .मा
गे :
मा....

अन्तरा

मन्दिर में बुत को पूजने हर गिज़
सा × र रे मा × प .. सा रे*
न आ आ व यें गे :
मा. मा* मा .धा .मा* मा....

स्थायी

हम दू र ह ये द ई ट
सा रे* मा. गा रे* सा . गा रे*
की मस जिद व ना य यें
सा .. नी* धा मा .* मा धा मा*
गे :
मा....

सूचना—शेष सब ग़ज़ल अन्तरे के दोनों पद के नियम से बजेगी कारण कि इस ग़ज़ल में दो स्थायी स्थापित की गई हैं चैतन्यता से धीरें धीरे बजावो यह ग़ज़ल बहुत कठिन स्केच रखती है परन्तु रागिनी साफ़ ज्ञात होती है—

परीक्षा—प्रातःकाल का समय मुख्य है—रोगी को बेहोश करने के लिये क्लोरोफ़ार्म का सा गुण रखती है रोगी कैसाही बेचैन क्यों न हो इसके सुनने से शान्त हो जावेगा जर्राही के काम में बहुत वार परीक्षा कीगई है जर्राह इससे बहुत से काम निकाल सकते हैं—

भूमिका

प्रिय महाशय ! गानविद्या की प्रत्येक भाषा में दखल है और इसका गुण प्रत्येक भाषा में एकसा होता है यद्यपि उच्चा-रण से बाहिरी भेद न्यूनबुद्धिवाले को ज्ञात होता है परन्तु ज्ञाताओं के निकट यह भेद बिल्कुल नहीं है गानविद्या का ठहराव केवल स्वरों पर है और संसार में कोई आवाज़ ऐसी नहीं है जो इन नियमित स्वरों से पृथक् हो इस कारण आवाज़ कैसीही कठिन क्यों न हो वह स्वरों से तुरन्त मिलेगी और उसका गुण नियमबद्ध गान इकसां पड़ेगा कठिन बात जो दूसरी भाषाओं के बजाने में है वह उससे अनभिज्ञ होने के कारण पैदा होती है नहीं तो इसमें कोई ऐसी कठिनाई हमको रोक नहीं होसकती ।

इस भाग में इस बात का ध्यान रक्खा गया है किसी किसी गायन का उल्था सरल हिन्दी भाषा में सीखनेवाले की सुगमता के लिये लिख दिया गया है जिसमें कि गायन को समझ कर बजावें और दूना आनन्द होजावे ।

प्रत्येक गायन के साथ साथ हिंदी गायन का भी ढंग बतलाया गया है जिससे बजाने में कुछ भी कठिनता न पड़ेगी और सीखनेवाला दूसरी भाषाओं के गाने बड़ी उत्तमता से बजा सकेगा आशा है कि प्रेमी इस नये और मनभावते ढंगसे लाभ उठाकर इस शुभचिन्तक को आशीर्वाद देंगे ।

ताल और तबला

कोई कोई शौक़ीन ताल से इतनी ग्लानि करते हैं कि नाम लेना भी दोष समझते हैं यह उनकी तुच्छ बुद्धि है जोकि गान-विद्या के एक ऐसे बड़े भाग को निन्दा की दृष्टि से देखते हैं अर्थात् मुख्य अभिप्राय को बालायताक़ रखकर बाहिरी भड़क से लाभ उठाना चाहते हैं।

यदि आज कल्ह के प्रेमी पखावजको अपनी सोसाइटी में दाख़िल होने की आज्ञा देदें तो वह अति शीघ्र इस न्यूनता को पूरा कर सकता है।

हारमोनियम एक ऐसा साज़ है कि जिसको संसार के किसी साज़ की सहायता दरकार नहीं किन्तु और बाजे इस की सहायता से बज सकते हैं परन्तु यह भी कभी कभी खालके साज़ की सहायता चाहने लगता है जिससे यह अपनी लहरैं और भी अधिक दिखलाता है।

यद्यपि तबला आज कल्ह की शिक्षित समाज, सोसाइटियों में तुच्छ दृष्टि से देखा जाता है (और वस्तुतः ऐसा होना आवश्यक था) इस कारण शुभचिन्तक भी अपने शिष्यों को इस साज़ से परहेज़ करने की सदैव शिक्षा करता रहता है

परन्तु साथही पखावज, चंग, मृदंग, सेडरम, खँजरी आदि खाल के बाजे बजाने के लिये शिक्षा करताहूं क्योंकि बिना खाल के साज़ के कुछ भी आनन्द नहीं आता।

खाल के साज़ से हर समय ताल की खबर होती रहती है हारमोनियस्ट का हाथ दुगुना चलता है और बहुत जल्द उँगलियां तैयार होती हैं इससे हे हारमोनियम के प्रेमियो! एक खाल का साज़ अवश्य सीखिये जोकि ३ मास बराबर परिश्रम से भले प्रकार आसकता है जबकि बतानेवाला " बताना " जानता हो।

आवश्यकीय विज्ञापन

इस भाग में भारतवर्ष की प्रख्यात प्रख्यात भाषाओं की अच्छी अच्छी गायन लिखी गई हैं इस कारण प्रत्येक मनुष्य सब भाषाओं के गायन देखकर अवश्य है कि घबरा जावे परन्तु घबराने की कोई बात नहीं है यदि प्रेमी लोग अपने चित्त को सावधान रक्खें और शुभचिन्तक ग्रन्थकार की लिखी बातों पर ध्यान दें तो ईश्वर चाहेगा कि इस कठिनता को सरल कर सकेंगे और मनमानी सफलता पावेंगे।

ग्रंथकर्ता

हारमोनियममास्टर

आठवांभाग
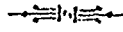
ज़बान संस्कृत (भाषा)

ध्वनि भैरवी–ताल तीन–लय दर्मियानी–वक़्त सुबह–
तर्ज़–" जय जय कृष्ण मुरारी "

स्तुति (रामायण)

जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रणतपाल भगवन्ता
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिन्धुसुता प्रियकन्ता
पालन सुर धरणी अद्भुत करणी मर्म न जानै कोई
जा सहज कृपाला दीनदयाला करहु अनुग्रह सोई
जय जय अविनाशी सब घट वासी व्यापक परमानन्दा
अविगत गोतीता चरित पुनीता माया रहित मुकुन्दा
ज्यहि लागि विरागी अति अनुरागी विगतमोह मुनिवृन्दा
निशि वासर ध्यावहिं हरिगुण गावहिं जयति सच्चिदानन्दा
ज्यहि सृष्टि उपाई त्रिविधि बनाई सङ्ग सहाय न दूजा
सो करहु अघारी चिन्त हमारी जानिय भक्ति न पूजा
जो भव भय भंजन जन मन रंजन गंजन विपति वरूथा
मन वच क्रम वानी छांड़ि सयानी शरण सकल सुरयूथा

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	०	०	मा	पा	०	०	साँ	०	०	०	०	०	०

स्थायी और अन्तरा बराबर

जय जय	सुर	नायक	जन	सुख	दायक
सा×२	गा*×२	मा×३.	पा×२	धा×२	नी*×३.

प्रण	त	पा	ल	भ	ग	वन	ता
सां.	.नी	धा*	पा	मा	गा*	रे*	सा....

सूचना

(१) शेष सब स्तुति उपरोक्त ढंग पर बजाना चाहिये—

(२) यह स्तुति भैरवी में इस कारण दी गई है कि हारमोनियम के प्रेमी प्रातःकाल बजाकर आनन्द उठावें बहुधा स्तुति (मुनाजात) आदि भैरवी में बजाई जाती हैं—

ज़बान अरबी

ध्वनि सारंग–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्१ १बजे दिन–

तर्ज़–" हक़ीक़ ख़ैर उल्नार "

गज़ल ।

मरीज़ुल्इश्क़ मुफ़तूतुन व मजनूनू
सकूवुन् ऐनहू वल्क़ल्ब महेज़ूनू

नुजा महवूसहू मिन्कुल्ल सिजनिन्
फ़मा मसजूनु हाज़ास्सिज्न मसजूनू

व मई यालम तलिद वलदुन् सेवल हिब्बी
फ़हुज़्ज़िया वस्सतन् फ़ीही फ़लातूनू

अलाया साहेबल्वजहिल् हसीनी
तआला हुस्नुकी अम्मा,यकूलूनू

तरह्हम वल्त फ़ितनहवल उशूक़ी
फ़इन् वअदत अनहू मात मजनूनू

बलाउल् इश्क़ या उम्मी बलाऊ
व आलाफुल् मसायबे फ़ीह मशहूनू

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	०	मा	पा	धा	०	सां	०	०	०	०	०	

स्थायी अन्तरा बराबर

मरी	जउल्	इश्क़	मुफ़	तू	नुन	व
सा×२	रे.	मा×२	पा	धा	सां.	.नी*

मज	नुन	
धा	पा...	:

सूचना

(१) शेष सब ग़ज़ल केवल उपरोक्त नियम पर बजैंगी–

(२) अन्तरा इसकारण प्रकट नहीं किया गया है कि तान के बिना अच्छा नहीं लगता उपरोक्त ढंग पर सब पद सादे ढंग में अच्छे बजैंगे–

(३) अरबी के शब्द अधिक ज़ोर देकर या हलक़ में न बोलिये किन्तु फ़ारसी के ढंग पर गाइये नहीं तो हारमोनियम पर बोल कटना कठिन हो जायगा–

ज़बान पंजाबी

ध्वनि कल्याण-ताल पश्तो मिलीहुई-लय धीमी-वक़्त शाम-

तर्ज़-" मेरा जानी किधर है गया "

आशिक़ की आवाज़

कुंडा पार वा नज़र न नीं आवे

कुंडा पार वा..........

गड़ा नी गदाद हो गया-कुंडा पार वा नज़र न आवे हो-

लदी जांदिया वे बेलिया-

कुंडा पार वा..........

जटी हीर नून फ़क़ीर नाल तोर दे

सेती दे मुराद पावेंगी

कुंडा पार वा..........

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक					
०	०	गा	मा	पा	धा	नी	साँ	०	०	०	०	०

न ज़र ना नी आ आ वे कुंडा पा र वा गड़ानी
.गा धा × ४ ..पा नी.. धा×२ पा. मा गा.... सा ×

दा द हो ग या कुंडा पा र वा न ज़र न नी
नी. धा पा. धा नी.. धा×२ पा. मा गा.. .गा धा × ४

आ वे हो ल दी जान दि या वे वे लि या
..पा नी.. धा.. पा धा पा. मा गा धा. पा मा गा.......

जटा हीर नून फ़ ती र ना ल तो र दे सेती दे मु
पा×२ धा×२ पा धा साँ नी धा पा *मा पा— साँ ×४

रा द पा वें गी कुंडा पा र वा :
नी. धा पा. धा नी.. धा×२ पा. मा गा....

सब गायन बजाकर दिखाई गई है जिसमें जल्द समझ में आ जाय—

सूचना

(१) प्रत्येक बोल को स्वच्छता से बजाओ "कुंडा पार वा" दैव एकही ढंग पर बजेगा-

उल्था-नदी का दूसरा तट दृष्टि नहीं आता घड़ा डूब गया है नदी बहती हुई जा रही है अरे कोई बचा लो-

---

नोट-प्रेमियो! लदी एक स्त्री का नाम था जोकि माईदाल पर न व माल से फ़िदा थी और रोज़ घड़े पर बैठ कर अपने यार पास जाया करती थी एक दिन सास ने चालाकी से कच्चा घड़ा ल दिया रात के समय नित्य की तरह नदी में घड़ा डाल सवार कर जाने लगी कच्चा घड़ा मँझधार में डूबगया-यह गायन उसी मय को प्रकट करती है—

ज़बान फ़ारसी

ध्वनि ज़िला–ताल दादरा–लय चढ़ी–वक़्त तमाम दिन–

तर्ज़–"आया करो इधरभी मेरी जां कभी कभी"

ग़ज़ल

इमरोज़ दीगरम बफ़िराके तो शाम शुद

दर आरज़ूये वस्ल तो उमरम् तमाम शुद

आमद नमाज़ शाम न आमद निगारमन

ऐ दीद: पासदार कि ख़्वाबम् हराम शुद

बस्तम् वसे ख़याल कि बीनम् जमाल दोस्त

आं हम् न शुद मयस्सर सौदाय ख़ाम शुद

ख़ाले तो दान दानये ज़ुल्फ़े तो दाम दाम

मुर्ग़े कि दान दीद गिरिफ़्तार दाम शुद

महमूद ग़ज़नवी कि हज़ारां गुलाम दाश्त

इश्क़श् चुनां गिरफ़्त गुलामे गुलाम शुद

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
						नी							
०	०	०	०	०	× धा	०	सा	रे	गा	मा	पा	०	०

स्थायी

इमरोज़दीग	रम	बफिरा	क	तो	शा	म
मा×५	गा..	रे×३	सा.	+नी*	धा.+	+नी*

शुद
सा....

.:.

अन्तरा

आमद	नमाज	शा	स दुनिया	मद	नि	गा	र	मन
मा×५		.पा	मा×३	गा	.रे	पा.	मा	गा....

.:.

(आ/.रे आ/.सा आ/रे.) तान .:.

सूचना

(१) शेष सब पहिले पद अंतरे की ध्वनि पर और दूसरे पद स्थायी की ध्वनि पर बजेंगे—

(२) यह ग़ज़ल बहुतही सुगम रीति से वतलाई गई है प्रेमी लोग चलतू करने के पीछे ज़मज़मा देकर आनन्द पैदा कर सकते हैं ब्रैकेट की छोटी सी तान हर अन्तरे पर आनन्द देगी परिश्रम करके बजाना चाहिये—

जवान पूर्वी

ध्वनि देश–ताल कहरवा–लय चढ़ी–वक्त ११ बजे

तर्ज़–" चलो जल्दी करो जी सैर "

रसिया

तनी देखो हमरी ओर

ऊंची ऊंची जोबना पर जिया ललचावे

तनी देखो हमरी ओर····

ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने देखी नहीं राम

कैसी भोली भोली प्यारी प्यारी करे विसराम

तनी देखो हमरी ओर····

चांदी ज्यों रूप चमके सोना ज्यों गाल

नागिनि ऐसे माथे लटके वाके कड़िया बाल

तनी देखो हमरी ओर····

गाल हैं पेड़े मथुराजी के होंठ कदू की फांक

बुइयां ऐसी मोटी आंखें गाजर जैसी नाक

तनी देखो हमरी ओर····

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	धा	नी	ˆ	रेˆ	गाˆ	०	०	०	०

स्थायी
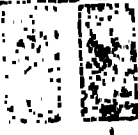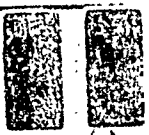
ऊंची ऊंची जोवना प र जि या ल ल चा
.सा ˆ × ७ नी साˆ ˆगा .रेˆ .साˆ नी..
आ वे त नी दे खो हम री ओर ⁘
धा पा... पा धा नी. साˆ नी×२ धा. पा....

अन्तरा

(१) ऐसी गोरी गोरी छोरी मैंने दे खी न हीं राम
साˆ × ११ रेˆ×२ साˆ. नी..
(२) कैसी भोलीभोली प्यारी प्यारी क रे वि स राम
धा × १० .पा .नी×२ धा पा..
(३) त नी दे खो हम री ओर फिर पहिले
पा धा नी. साˆ नी×२ धा. पा....

से वजाओ—

सूचना

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर अन्तरे के नियम से वजाई जावेंगी—

(२) व (३) को प्रत्येक अखीरे पर अवश्य वजाना चाहिये जिसमें गायन का आनन्द दूना हो जावे—

ज़बान अंगरेज़ी।

ध्वनि देश–ताल कहरवा–लय दुगुन–वक्त ११ बजे रात–

तर्ज़–" पनाह–पनाह ख़ुदा की पनाह "

थियेट्रिकल तर्ज़।

अगेन–अगेन–अगेन ऐंड अगेन

व्हेन आई वाज़ सिंगिल माई पाकेट वाज़ डिंगिल

आई लांग टूबी सिंगिल अगेन

अगेन–अगेन–अगेन ऐंड अगेन

सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	दूसरा सप्तक

सम्पूर्ण गायन बजाकर दिखलाइए १४०

अ	गेन	अ	गेन	अ	गेन	ऐंड	अ	गेन
सा	मा..	सा	मा..	सा	मा	गा.	मा	पा...

हेन आई वाज़ सिंगिल माई पाकेट वाज़ डिंगिल

.मा धा×५ .पा ..नी*×५

आई लांग टू बी सिं गिल

.पा धा पा .मा .गा .रे

अ गेन :: फिर पहिले से बजाओ

गा मा....

सूचना

(१) इस गायन के बजाने में हाथ कुछ फुर्ती से चलाना चाहिये—

(२) ठहराव का ध्यान परमावश्यक है कारण कि यह थियेट्रिकल ढंग है जिसमें रागिनी साफ़ साफ़ ज़ाहिर नहीं होती अलबत्ता बोल काटने से यह इंगलिश टोन आनन्द से भर जाती है—

नोट—उपरोक्त ढंग की चीज़ें "हारमोनियममास्टर पांचवें भाग" और "हारमोनियममास्टर छठे भाग" में बहुत सी लिखी हैं।

ज़बान तैलंगी (दक्षिण)।

रागिनी आसा-ताल तीन-लय धीमी-वक्त प्रातःकाल-
तर्ज़-" प्रभु प्रीतम जिसने बिसारा "

आशिक़ की आवाज़ ।

वाड़ियाड़ा उंटर्ड सूप रम्मां
नान सूपस्ते वोपुन्न अम्मां
वाड़ शामन्ती फूलन्ना गाड़े
वाड़ चेहलील लागंची न गाड़े
वाड़ीदर इयेत्ते नीन तेकन्दू
कडू ऊंची मूदो वेक्रत टडूं

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	०	०	०	०	०

स्थायी

(१) वाड़ या ड़ा इस टुकड़े को तीन बार बजावो !

सा×२ रे. मा.

वाड़ या ड़ाउन डू सू प रम मां

सा×२ रे. मा×३. पा धा नी* धा पा..

(२) वा न सू पस ते वू प न अम मां

मा पा धा. पा. मा गा. रे गा रे. सा....

दोनों एकसाथ बजेंगे क्षणिक देरी न हो

अन्तरा

(३) वाड़शा मन ती फू लन न्ना गार ड़े

सां×३. रें. सां. नी.. धा नी धा.. पा..

दूसरा पद नं० २ के ढंग पर एक साथ बजावो–

नोट–शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजावो अर्थात् नम्बर ३ के ढंग पर पहिले पद और नम्बर २ के ढंग पर दूसरे पद सिवा नंबर १ के बजाये जावेंगे–

उल्था–हे सखियो ! वह कहां है एक नज़र तो दिखादो (२) यदि उसको बतलादोगी तो बड़ाही यश होगा (३) वह सेवती का फूल यदि होजाता (४) या वह झील में तनिक दृष्टि आता (५) यदि वह थक कर रहजावे तो मैं सहारा दूं (६) और घड़ा उतार कर चुम्मा दूं–

ज़बान उर्दू ।

ध्वनि भैरवी—ताल क़ौवाली—लय चढ़ी—वक्त सुबह—

तर्ज़—" सर शोरीदः पायेदश्त पैमां शाम हिजरां "

ग़ज़ल ।

बलायें ज़ुल्फ़ जानां की अगर लेते तो हम लेते

बला यह कौन लेता जान पर लेते तो हम लेते

न लेता कोई सौदा मोल बाज़ारे मुहब्बत का

मगर जां नक़्द अपनी बेंच कर लेते तो हम लेते

जो होता हमसे हमबिस्तर बता फिर तेरा क्या जाता

तड़पकर करवटें दिन रात गर लेते तो हम लेते

तुझे क्या काम था ऐ बेख़बर जो ढूंढता फिरता

दिले गुमगश्ता की अपने ख़बर लेते तो हम लेते

लगाया जाम होठों से जो उसने मुझको रश्क आया

कि बोसा उसके लब का ऐ ज़फ़र लेते तो हम लेते

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
					धा	नी			रे	ग	मा	धा	
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	●

स्थायी

बलायें	जुल्फ़	ज	आ	ना	न	की	अ	ग	र
सा×६.			*गा	रे*	सा	*नी+×२.		सा	*नी+
ल	ये	ते	तो	ह	म	ले	ते		
ध*+	.नी+*	रे*.	*गा	मा	*गा	रे.	सा..		

अन्तरा

न लेत	आ	को	ई स	व	द	आ		
सा×३	.रे*	मा..	.मा×२	.धा*	.मा*	.मा		
मो	ल	बाज़ा	र	मु	ह	व	बत	का
गा*..	रे*	सा×२	*रे..	*गा	मा	..गा	*रे.	सा....

सूचना

(१) गायन के सब पहिले पद अन्तरा के ढंग पर और दूसरे पद स्थायी के नियम से बजाये जावेंगे—

(२) काले पर्दे इस ग़ज़ल में अधिक काम में लाये गये हैं ध्यान करके उँगलियों को चलाना चाहिये—

ज़बान फ़ारसी व अरबी।

ध्वनि सिन्धु भैरवी-ताल दादरा-लय दर्मियानी-वक़्त दोपहर या शाम-
तर्ज़-" इलाही खैर हो तेरी "

गज़ल।

असीरे इश्क़ मफ़तूं अस्त मजनूं
हरीफ़ुन् क़ल्बहू वन्नारो मफ़नून्
नमे दानद तबीब आज़ार मारा
बमायः बीह मिनहाजुन् व क़ानून्
नमा तर दामनम् अन्दर नज़ारा
बरीयुन् नफ़्सो ना अम्मा यज़ननून्
शहीदे अकबरस्तई कुश्तये इश्क़
बमा लिज्जुहद वत्तक़वा बममनून्
बिया जाना बनाशम् लुत्फ़ फ़रमा
हुज़ूरुल् हय्य अलल अमवात मसनून्
नयाज़ अन्दर खुमार अस्त ऐ दरेग़ा
बदुन्नुल् खम्र ममलूउन् व मदनून्

स्थायी अन्तरा बराबर

अशीरे	इश	क़ मफ़	तू	नस	त	म
धा*×३.	पा..	मा×२	*गा.	पा	मा	*गा
ज	तून .:.					
रे	सा....					

सूचना

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजाई जावेगी–

(२) अरबी के शब्द हारमोनियम पर फ़ारसी की तरह पर बजाये जावेंगे—

(३) गायन को कठिन समझ कर शिक्षक को घबराना न चाहिये यह ग़ज़ल बहुत सुगम है और सार्थक क़ौवाली की छन्द में है और बसबब हज़रत नयाज़ अहमद रहमतउल्ला अलेह के कलाम होने के मुसलमानों में इज़्ज़त की निगाह से देखी जाती है–

(४) बहुधा सब क़ौवाली की ग़ज़लें उपरोक्त ढंग पर बजाई जाती हैं–

ज़बान तैलंगी व फ़ारसी।

ध्वनि भैरवी–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्त सुबह–तर्ज़–" ऐ दिल तू क्यों हर आसान होगया "

शेर

चरू कट्टा मेदा फ़ाख़्ता नशिस्ता बूद

तू पाकी तूने कूटसे पर शिकस्ता बूद

ज़बान मरहटी व फ़ारसी।

ध्वनि देश–ताल तीन–लय पड़ी हुई– वक़्त रात के ११ बजे–तर्ज़–" मेहर्बां–मेहर्बां जानजां "

शेर

दूनान पुख़्ता–बूदम क़ुतरां क्यों घीला

शमूशीर मेकशादम नाला चर पार घीला

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
		गा			धा	नी								
सा	०	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	०	०	०	०	

स्थायी अन्तरा बराबर

चरू	कट्टा	मेदा	फा	ख़	ता	बर	न
सा×२	*गा×२	मा×२	पा	.सां	*नी..	पा.	*धा
शिकस	ता	बूद	⁝				
.पा	.मा	*गा....					

सूचना

(१) यह शैर बहुधा राज्य हैदराबाद के जिलों में छोटे छोटे लड़कों की ज़बानी सुना जाता है जोकि उपरोक्त छन्द में गाया जाता है—

(२) दूसरा पद भी उपरोक्त ढंग पर बजावो—

०	रे	गा	मा	पा	धा	०	दूसरा सप्तक
					नी		

स्थायी अन्तरा बराबर

दू	ना	न	पुत्ल	ता	धू	दम	कुत	रा	न
रे	मा.	रे	मा.	पा	ॐनी.	धा..	पा×२	मा.	गा
घची	वन	घे	ला						
पा.	मा	गा.	रे.... ∴						

सूचना

(१) दूसरा पद उपरोक्त नियमानुसार बजाना चाहिये-

(२) यह ज़बान मरहटी का मिला हुआ शैर एक उम्दा ढंग पर बतलाया गया है-

ज़बान पंजाबी व उर्दू ।

ध्वनि भाग-ताल तीन-लय दर्मियानी-वक़्त ११ बजे रात-

तर्ज़-" तसां जो है सुख पावना "

ग़ज़ल ।

हरदम नूं कर तेरियां रुठड़ा न जावें रांझना
इश्क़ तेरे दी वगदी सी रावी
विच पे गैयां घुम्मन घेरियां रुठड़ा न जावे....
तेरे जीहा मेनो होर न कोई
मेरे जीहां लिख चेरियां रुठड़ा न जावे....
सरते-फुलां दीखारी व चाई
दर दर हो कावे रहियां रुठड़ा न जावे....
मेरे रुठियां कुछ नहीं वन्दा
तू रुठियां मर जाने सां रुठड़ा न जावे....

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	साँ	रेँ	०	०	०	०	०

स्थायी

हरदम	नू	कर	ते	र	थां
साँ×४	नी..	धा×२	पा	मा	मा पा धा.. (जल्दी)

रु	ठ	ड़ा	न	जा	वे	रां	झ	ना
पा	धा	पा.	मा	गा..	मा	गा	रे	सा....

अन्तरा

इश्क़	ते	रेदी	त्रग	दी	सी	र
पा×२	धा	साँ×२.	साँ×२.	रेँ.	साँ	नी

आ	आ	आ	दी
..धा	..पा	..धा	नी....

सूचना

(१) गायन के सब पहिले पद अन्तरा के ढंग पर और दूसरे पद स्थायी के ढंग पर वजाने चाहिये—

(२) " रूठड़ा न जावे रांझना " प्रत्येक शैर के अन्त पर अवश्य बजावे—

ज़बान अंगरेज़ी व उर्दू ।

ध्वनि भाग–ताल दादरा–लय तेज़–वक़ १२ बजे रात–

तर्ज़–" मज़ा देते हैं क्या यार तेरे बाल "

नम्बर (१)

हियर–डियर–माई लेडी–लवली फ़ेसवाली

मेडम !

हीज़ डियर................

नम्बर (२)

ध्वनि देश–ताल चार–लय धीमी–वक़ १० बजे रात–

तर्ज़–" कहते हैं वह सच मेरी जान "

टी टय़ूज़िंग ब्यूटी ने माई जंटिल हार्ट को तोड़ दिया

ज़ुल्फ़ तेरी के नेट में फँसकर नाइट स्लीपिंग छोड़ दिया

पहला सप्तक						दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	※ धा	०	सा	रे	गा	मा	०	०	०

एक प्रख्यात चीज़ का पहिला पद

हि.	यर	डि	यर	मा	ई	लेडी	लवली	फे	स वा
+.धा	सा×२		रे	गा	रे		मा×४	गा.	रे × २

ल	ई	मेडम
..गा	.रे	सा×२....

सूचना

(१) इस गायन के बजाने में जहां तक हो सके ज़मज़मे देने चाहिये जिससे गायन की भड़क अच्छी तरह से प्रकट हो—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	गा	मा	पा	धा	०	साँ	०	०	०	०	०	०

(१) टी ट्यूज़िंग ब्यूटी ने माई जेन टिल हार्ट को तोड़
रे×३ मा×२ पा धा॰ पा मा॰ गा॰॰ पा मा॰
दि या
॰गा रे॰॰॰॰ :

(२) जुल्फ़ तेरी के ने ट में फँ स क र नाइट
*नी×६ साँ॰ *नी धा पा ॰मा पा धा॰॰
स ली पिंग छोड़ दि या
*नी धा पा ॰मा गा रे॰॰॰॰ :

(१) बजाने के समय शब्द का ध्यान रक्खो नहीं तो गायन में सिकता पड़ेगा इससे ठहराव का ध्यान रखकर बजावो—

ज़बान फ़ारसी व उर्दू ।

ध्वनि भाग–ताल कौवाली–लय चढ़ी–वक़्त १२ बजे रात–तर्ज़–" जो उम्र देखो तो दश बरस की यह क़हेर आफ़त ग़ज़ब खुदा का "

ग़ज़ल ।

ज़ेहाल मिस्कीं मकुन तग़ाफ़ुल दुराये नैना बनाये बतियां
कि तावहिज्रां नदारम ऐजां न लेव काहे लगाय छतियां
चुशमा सोज़ां चुज़र हैरां हमेशा गिरियां बइश्क़ आं मह
न नींद नैना न अंग चैना न आप आवें न भेजैं पतियां
यक़ बयक़ अज़दिले तुमुज़तर बिबुर्द चश्मश क़रार लेकिन
किसे पड़ी है जो जा सुनावे पियारे पीको हमारी बतियां
शबान हिज्रां दराज़ चुं ज़ुल्फ़ व रोज़ वसलत चु उम्र कोता
सखी पिया को जो मैं न देखूं तो कैसे काटूं अँधेरी रतियां

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	नी	सां	रें	०	०	०	०	०

(१) ज़िहाल मिस्कीं म कुन त ग़ा फुल
सां×५. .सां रें सां .नी धा×२.
दु राय नै ना बना य बतियां
नी सां×२ नी धा. पा×२ मा गा×३.....

(२) कि ताब हिज्रां न दा रम ऐजां न लेव का
..गा धा×५ नी धा पा×२. मा गा×२ मा
हे लगा य छति यां
पा धा×२ .पा मा×२ गा.... ⁘

सूचना ।

(१) शेष सब गायन उपरोक्त नियमानुसार बजाये जावेंगे–

(२) यदि इस ग़ज़ल को दार्मियानी चाल में प्रारम्भ कर के दुगुन की लय में बजावोगे तो रागिनी अच्छी प्रकट होगी–

इति

भूमिका

हारमोनियम के प्रेमियो !

गानविद्या के नियमानुसार जितने पद्य उत्तम कवि बनाते हैं वह प्रत्येक साज पर उत्तमता से बज सकते हैं यदि इसके प्रतिकूल कोई बात जान पड़े तो कवि का अपराध होगा कारण कि वह कविता के नियमानुसार न होगा कविता भी गानविद्या के नियम से बनाई गई है दूसरे अर्थ में गानविद्या का बड़ा भाग कविता है इससे कवि को सिवा कविता जानने के गानविद्या के नियम से भी विज्ञ होना परमावश्यक है कारण यह है कि दोनों बातों के जानने से कवि को मनमानी सफलता प्राप्त होती है और उसकी कविता सदैव अच्छी रहती है और कभी कोई भूल नहीं होती इससे जहाँ तक हो प्रत्येक कवि को कविता के अतिरिक्त गानविद्या के नियम से भी जानकारी प्राप्त करलेनी अयोग्य न होगी—

जो मनुष्य गाने बजाने में कुछ भी अभ्यास रखता हो और किसी एक भाषा में निपुण हो तो उसके लिये कविता एक सुगम बात है काव्य के न जानने पर भी वह उन्नति प्राप्त कर सकता है जबकि कुछ योग्यता भी हो और विचार अच्छे रखता हो क्योंकि वज़न पर वज़न बनाना कोई बड़ी बात नहीं है किन्तु गम्भीराशय को थोड़ा करके पद्य के मोतियों में पिरोना कठिन

काम है जोकि प्रत्येक मनुष्य के आधीन नहीं-यह एक ईश्वरीय वस्तु है जोकि मुख्य मुख्य चित्तों पर लहरें मारता रहताहै-हारमोनियम आज कल्ह प्रत्येक सोसाइटियों में प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखा जाता है और कवियों को भी स्थान मिलगया है कि वह उसकी सहायता से कुछ लाभ उठावें-इन्हीं सब बातों पर ध्यान रकखर यह "हारमोनियममास्टर नवांभाग" उन कवियों को समर्पण करता है जो गानविद्या के नियम से सहायता लेकर अपने अछूते ध्यान को प्रकट करते रहते हैं—

प्रेमियों पर प्रकट हो कि यह पुस्तक सिद्धांत का पहिला नम्बर है। इसके बनाने में शुभचिन्तक ने बड़े परिश्रम से काम किया है और ऐसा सुगम कर दिया है कि जिससे सीखनेवाला अति शीघ्र गायन को बजा सके। यद्यपि तान-ज़मज़मे और तोड़ प्रत्येक गायन के साथ साथ बतलाये गये हैं तब भी कोई कठिनता ऐसी शेष नहीं रक्खीगई कि जो सुगम न हो सके और सीखनेवाला चिन्ता की नदी में डुबकी लगाताही दिखाई दे। इससे प्रेमियों से निवेदन है कि वह ठीक ठीक अभिप्राय के जानने का परिश्रम करें और बाहिरी सुन्दरता पर कटाक्ष न करें।

प्यारे शायक़ीन-हारमोनियम ! इस भाग में वह तमाम मशहूर और आमपसन्द तरीक़े लिखे हैं जिनमें एशिया के कवि अपने मनोभाव का वर्णन किया करते हैं। गानविद्या के ध्यान से यद्यपि अच्छा ध्यान नहीं किया जाता तथापि कविता का ढंग होने के

कारण गान में पेंठ अवश्य है—वर्तमान समय में ग़ज़लों का चलन अधिक है और इस विद्या के जाननेवालों ने भी अपनी कविता में इन्हीं ग़ज़लों की तर्ज़ हारमोनियम के नियमानुसार बतलाई है, इसकारण हितैषी ने भी " हारमोनियममास्टर सातवांभाग " में मुख्य कर उसी विषय को लिखा है ।

परन्तु यह आवश्यक नहीं कि केवल ग़ज़लही बजाये या गाये जाते हों किन्तु कविता के सब ढंग गान के नियमानुसार एकत्रित किये जाते हैं एक पद से लेकर सब पद्य प्रत्येक साज़ में बज सकते हैं जबकि बजानेवाला स्वयं कवि होने के अतिरिक्त गानविद्या में भी योग्यता रखता हो शुभचिन्तक दृढ़ता से कहता है कि हर प्रकार के पद्य हारमोनियम सीखनेवाले थोड़ेही समय में इस पुस्तक की सहायता से बजायेंगे यदि उन्होंने पिछले भागों को भी देख लिया है ।

ग्रंथकर्ता

हारमोनियममास्टर
नवांभाग

ध्वनि काफ़ी—ताल क़ौवाली—लय दर्मियानी—वक़्त तीसरा पहर—
तर्ज़—"यह कैसे बाल बिखरे हैं यह सूरत क्यों बनी ग़मकी"

क़सीदा

प्रशंसा शहंशाह सप्तम एडवर्ड
क़ाज़ी अब्दुल अली साहब अल्मुतख़ल्लिस
बनव्वाब रईस आज़म गढ़मुक्तेश्वर ज़िला मेरठ

रैयत फ़ैज़ गुस्तर हो शरीफ़े बन्दा परवर हो
कि आला ख़ान्दां हो तुम नसीमे बाद सरसर हो
ग़रीबों पर सदा लुत्फ़ो करम है तेरा ऐ शाह
सख़ावत में भी हातिम हो शुजाअत में भी बढ़कर हो
अदल इंसाफ़ में तुमसा कोई आया न आयेगा
अक़ल में इल्म में जौदत में तुम बहरे शनावर हो
करो हो जिस घड़ी इजलास यह मालूम होता है
कि हैं चौगिर्द सय्यारे तुम उनमें मेहर अनवर हो
मुअज़्ज़मशाह के क़ब्ज़े में हफ़्त अक़लीम आजावे
मुतीय हों ताक़तें यूरुप की वह अक़वाल यावर हो
तुम्हारी देख खुश खुल्क़ी तवा जौदत ने यह चाहा
स्याही मुश्क अज़फ़र हो क़लम जब्रील का पर हो
दुआ अब्दुल्अली सुबहोमसा है हक़ ताला में
खुदाबन्दा मुअज़्ज़मशाह शाहेहिन्द क़ैशर हो

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
		गा		पा	नी								
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	सा	०	०	०	०	०	०

स्थायी

रैयत	फ़ै	जगुस्त	र	हो	शरी
सा×२.	सा रे गा मा (जल्दी)	मा×३	*गा	*गा मा पा.. (जल्दी)	मा ×२

फ़	वन	दःपर	वर	हो	⁖
*गा रे सा (जल्दी)	सा रे गा* (जल्दी)	*गा×२	रे	सा..	

(नोट) दूसरा पद भी इसी ढंग पर बजेगा–

अन्तरा

ग़रीबों पर सदालुत	फ़ व	क	रम	है
सां × ७	*नी..	*धा	.पा	मा.

ते	रा ऐ	शा	हा	⁖
मा पा धा* (जल्दी)	*धा×२	पा.	मा..	

नोट–दूसरा पद स्थायी के ढंग पर बजैगा–

सूचना–(१) शेष सब पद उपरोक्त, नियमानुसार यानी सब पहिले पद अन्तरे के ढंग पर और दूसरे पद स्थायी के रूप में बजैंगे–

(२) जिन पदों के नीचे लकीर खींच कर (जल्दी) लिखागया है वह बहुत सफ़ाई के साथ बहुत फुरती के साथ

बजेंगे—इन्हीं को ज़मज़मे और पल्टे कहते हैं जब इतना हाथ तैयार हो जावेगा तो मास्टर आफ़ हारमोनियम बनने में एक थोड़ी देरी रह जावेगी साहस बांधकर प्रैक्टिस करो—

ध्वनि देश—ताल दादरा या क़ौवाली—लय धीमी—वक्त १० बजे रात—

तर्ज़—" क्या हाल हो रहा है मजनून "

वन्दे मातरम्

बंगालका जातीय गीत जिसकी कीर्ति संसार में फैलरहीहै

आह ! यह जान बख़्श पानी यह हवाये ख़ुशगवार
यह तरो शादाब व शीरीं मेवा हाय ख़ुशगवार
ठंढी ठंढी इत्र में महकी हुई वादे जनूब
सब्ज़ खेतों की फ़िज़ायें और यह मैदानों की दूब
ज़िल्ल शफ़क़त हो तेरा ऐ मादर शफ़क़ दराज़
ख़ाक पर क्या क्या तेरी तेरे मकीनों को है नाज़
उफ़ ! यह तेरी चांदनी रातों का मंज़र ख़ुशनुमा
आह ! यह अशजार यह फूलों का ज़ेवर ख़ुशनुमा
सौ तबस्सुम तेरे अन्दाज़े तकल्लुम पर निसार
दिलको करती हैं तेरी शीरीं सदायें वेक़रार
सर ज़मीने ऐश है ऐ मादरे दिलसोज़ तू
आरज़ूओं की है बज़्मे इंबिसात अफ़रोज़ तू
लाखों आवाज़ें हैं तेरे घर में सरगर्म ख़रोश
जान निसारों में हैं लाखों तेरे दोस्त व सरफ़रोश
नौ जवानों की है हिम्मत तू दिलेरों की है सेर
कांपते हैं दुश्मनों के तेरी हैवत से जिगर

नूर दानिश तू फ़रोगे जल्वये ईमां है तू
दिल है तू सरमायये सब्रो शकीबेजां है तू
कूवते नाज़ है मेरी मादरे ग़मख़्वार तू
सीनये पुरग़म में है मेरे नफ़स का तार तू
तेरा देव अस्थान देवी ! दिल के काशाने में है
तेरी तस्वीर मुक़द्दस हर सनम खाने में है
लक्ष्मी तू है ज़माने में उजाला है तेरा
हरकमल का फूल पानी में शिवालय तेरा
सरस्वती का रूप है दुर्गा का है अवतार तू
दिलको दानिश की है देवी मादरे ग़मख़्वार तू
उफ़ ! यह सुन्दरि छवि तेरी यह सांवली सूरत तेरी
दिलके मन्दिर की है ज़ीनत मोहिनी सूरत तेरी
यह तवस्सुम हाय शीरीं यह अदाये जां नवाज़
आह यह शफ़क़त भरी तेरी सदाये जां नवाज़
सब्ज़ये खुदरो का गहवारह है तेरी सरज़मीन
तरूत्तये खुल्देदरीं है तेरी खुश मंज़िर ज़मीन
पाक गंगा जल से बढ़कर है तेरा आबे ज़हूर
तेरे पाकीज़ा समर हैं मेवये शाखो सुरूर
आसमां के नूर की है जिलवागाहे नाज़ तू
खुल्दकी है पाक देवीमादरे दमसाज़ तू

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	ँ	०	०	०	०	०	०

आह यह ज आन बख़ श प आ नी यह ह वा
साँ × ४. नी. धा पा मा पा धा. पा मा गा

ये ख़ुश ग वार
रे. गा रे सा.... ⁝

सब गायन इन्हीं पर्दों पर बजैगी सुनने वाला ईश्वर चाहेगा तो मस्त हो जावेगा क्योंकि दर्दभरी आवाज़ क़ायम कीगई है–

सूचना।

(१) इस गीत को दर्दभरी आवाज़ में गाना चाहिये बहुत अच्छा लगेगा–

(२) बाजा के सब स्टाप बन्द करदो केवल ट्रीमलो स्टाप खुला रक्खो जिससे कि हारमोनियममें थरथरी आवाज़ पैदा होकर सुनने वालों के दिलों पर तुरन्त असर कर जावे–

ध्वनि ज़िला–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्त दो पहर–
तर्ज़–"हमभी मरैंगे यारकी दीवार के तले"

फ़र्द

देता है तेरी फ़ौज में नक़ारा जब फ़ज़क
आता है साफ़ चोबकी सूरत नज़र हिलाल

ध्वनि देश–ताल पश्तो–लय धीमी–वक्त १० बजे रा

तर्ज–"मज़ा सोहबत मर्द साभी कहीं है"

शेर

जगह जी लगाने की दुनिया नहीं है

यह इबरतकी जा है तमाशा नहीं

ध्वनि देश–ताल कौवाली–लय दर्मियानी–वक्त १० बजे रात
तर्ज़"सुताने माहवश उजड़ी"

मिसरा

चराकारे कुनद आक़िल कि बाज़ आयद पशेमानी
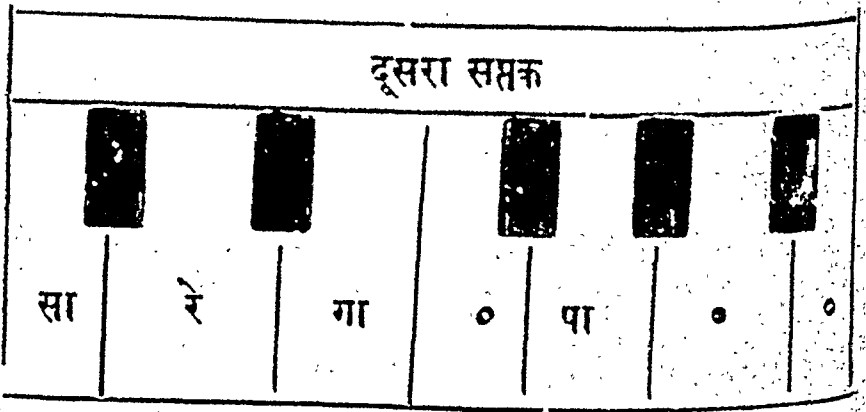
दूसरा सप्तक						
सा	रे	गा	०	पा	०	०

दे ता है तेरी फ़ौ ज में नक़ क़ा रह
सा रे × ४ गा. रे सा. रे गा पा.

जब फ़ लक
गा रे सा.... ः

दूसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

जगह जील गाने की दुनि या न हीं है
सा × ४ ० गा धा॰ पा मा॰ गा.... ⁘

पहिला सप्तक	दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
० ० ० ० ० ० ०	सा रे गा ० मा पा धा नी ०	सा ० ० ० ० ० ० ०

चराकारे कु न द अ अ किल ि बा ज़
* नी × ४ धा *नी सा *नी धा पा मा पा मा
आ अ यद प श ये म अ नी
* गा रे सा॰ * नी *सा रे रे ॰सा*नी ⁘

ध्वनि देश—ताल दादरा—लय तेज़—वक़्त १० बजे रात—
तर्ज़—" क्या हिना थी जो चमन "

रुबाई ।

जबतक थे गिरह में अहमक़ों के पैसे
सब कहते थे उनको आप ऐसे ऐसे

मुफ़लिस जो हुये तो फिर किसी ने ऐ ज़ौक़

पूछा न कि थे कौन वह ऐसे तैसे

दूसरा सप्तक						
						*नी
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी

ज	ब	तक थे गिरह में	अहमक़ों	क़	ये	प
सा	रे	गा × ५	मा×३	.गा	.रे	..रे

(जल्दी)

ये	ये	से	÷
..गा	..मा	गा....	

अन्तरा

मु	फ़	लिस जो हुये तो फिर	कि	सी	ने	ऐ
गा	.मा	पा × ६	मा	पा	*नी.	धा.

ज़ौक़	÷
पा....	

सूचना ।

(१) यह गायन कुछ सफ़ाई से बजाई जावेगी और ज़मज़मों से भरी है—

(२) मात्रा का ध्यान रखना आवश्यक है—

(३) अन्तरा दुगुनी आवाज़ में बोला जावेगा—

(४) हाथ की उँगलियां लचकती रहैं तो फिर गायन आनन्द-मय होजावेगा—

ध्वनि सिन्धु भैरवी–ताल दादरा–लय धीमी–वक्त शाम या बाद दोपहर–

तर्ज़–"दिलमें तेरा है नारसा"

क़िता

हज़रत सईदी शीराज़ी

बल ग़ल् अला बिकमालिही
कशफ़द्दुजा बिजमालिही
हसुनत् जमीउ खिसालिही
सल्लू अलैहिव आलिही

दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
० ० ० मा पा धा ०	सा ० ० ० ० ०

(१) वलग़ल् अला बिक मा लि ही
धा × ४. पा×२ धा. रे˜. सां..

(२) कशफ़ द् दु जा बि ज मा लि ही
धा × २ पा मा × २. पा धा.. पा मा....

(१) नंबर (१) के ढंग पर पहिला पद और नंबर (२) के ढंग पर दूसरा पद बजेगा ध्यान देकर बजाइये–

(२) अरबी शब्दों को फ़ारसी के ढंग पर कहो अर्थात् हलक़ पर ज़ोर मत दो–

ध्वनि पहाड़ी-ताल नकटा-लय धीमी-वक्त रात दिन-

तर्ज़-" दिलमेरा ज़ुल्फ़ स्याह डस गई नागिन बनकर"

ग़ज़ल

हज़रत दाग़ देहलवी

यह तो पूछे मेरे मरक़द पै गुज़रने वाले
क्या गुज़रती है तेरी जान पै मरनेवाले
उम्र क्या है अभी कमसिन हैं न तनहा लेटैं
सो रहें पास मेरे ख़्वाब में डरनेवाले
लुत्फ़ क्या हो जो हों महेशर में भी दो दो बातैं
वह कहें कौन हो तुम हम कहें मरनेवाले
मंज़िले ऐश नहीं है यह सराये फ़ानी
रात की रात ठहर जायें ठहरनेवाले
दाग़े दिल दाग़े जिगर नक़्श जफ़ा नक़्श वफ़ा
न मिटाने से मिटैंगे यह उभरनेवाले
आप महेशर में भी हैं क़ौल के सच्चे क्या ख़ूब
उँगलियां उठैंगी वह आये मुकरनेवाले
हज़रते दाग़ जहां बैठ गये बैठ गये
और होंगे तेरी महफ़िल से उभरनेवाले

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक							
०	०	गा	०	पा	धा	नी	साˆ	रे^	गा^	मा^	०	०	०	

स्थायी

यह तो पू | छैं | मे | रे | मर | क़द | पै | गु | ज़
सा×३. | नी. | धा | रे^ | सा. | नी | धा | .पा | .धा

र/पा (ज़मज़मे पा–धा दोनों पर लगावो)

ने | व | अ | ले
गा. | पा. | .धा | सा .... ÷

अन्तरा

उम्रक | या | है अभी | कमसिन | हैं | न | तन | हा
सा×३ | .रे^ | ^गा×६ | | | ^रे | ^गा | ^मा.

ले | टैं
गा. | रे^ ....

सूचना ।

(१) शेष पहिले पद अंतरे के ढंग पर और दूसरे पद यानी मिसरे स्थायी के ढंग पर बजेंगे–

(२) इस ग़ज़ल को धीरे धीरे ठा की चाल में बजावो जिससे कुछ आनन्द भी आवे जल्दी नहीं करनी चाहिये–

ध्वनि देश–ताल पश्तो–लय धीमी–वक्त ११ बजे रात–
तर्ज़–" मैं वह रिन्द हूं "

मुस्तज़ाद ।

तालिबेवस्ल हूं यूसुफ़ सा तू इनकार न कर–है ज़ुलेख़ाकी क़सम
मान मजनूं का कहा हुज्जत व तकरार न कर–तुझको लैलाकी क़सम
सब्र की ताब नहीं जान भी घबराती है–लब पर आ जाती है
ज़ार हूं मानले कहना मुझे बेज़ार न कर–दिले शैदा की क़सम
मिन्नत व आजिज़ी इस वास्ते करता हूं मैं–तुझ पे मरता हूं मैं
शरबते वस्ल पिलादे मुझे बीमार न कर–है मसीहा की क़सम
देख इनकार अबस करती है पछितायेगी–मुफ़्त मरजायेगी
मुझ से यह हीले बहाने अरी मक्कार न कर–हक़ताला की क़सम

दूसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०

स्थायी और अन्तरा बराबर

ता	लि	बे	वस्ल हूं यू	सुफ़	सा	तू	इन	कार
सा.	गा	मा	पा × ४.	धा	पा	मा	..पा	गा×२.

न	कर =	
मा	पा....	

है	ज़ुलेखा	कीक़	सम
सा×३	गा..	.रे×२	सा....

सूचना ।

(१) पूरी ग़ज़ल मुस्तज़ाद उपरोक्त ढंग से बजावो–
(२) बहुधा मुस्तज़ाद इसी तरह बजाया करते हैं–
(३) धीरे धीरे उँगलियां चलावो–

ध्वनि ज़िला–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक्त तीसरे पहर–
तर्ज़–"तुझे सैर करने को घोड़ा दिया"

मस्नवी ।

बे नज़ीर बदरे मुनीर

अजब यह रविश है अजब बाग़ है
कि जिसका गुल ख़ुल्दको दाग़ है
किधर मेरी पड़ती है या रब निगाह
नज़र कौन आता है यह रश्के माह
बरस पन्द्रह याकि सोलह का सिन
जवानी की रातें मुरादों के दिन
खुलें रूय रोशन पर इसके हैं बाल
मेरे मुर्ग़ दिल के फँसाने का जाल
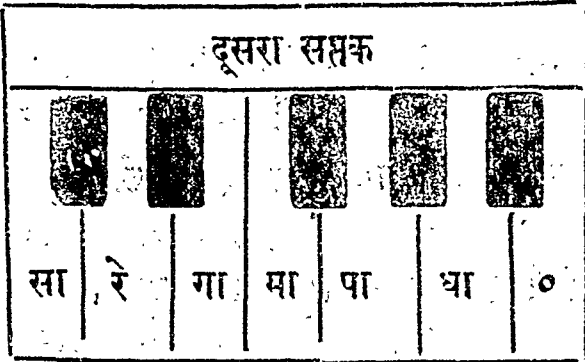
(१) अजब यह रविश | है | अ | जब | बा | ग़ | है
पा × ५ | मा॰ | पा | धा॰ | पा | मा | गा....

(२) कि जिसका गुल | ख़ुल | द | कोदा | ग़ | है
रे × ५ | सा | रे | गा×२. | रे | सा....

सूचना ।

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजैगी यानी पहिले पद नंबर (१) के ढंगपर और सब दूसरे पद नंबर (२) के ढंग पर बजेंगे–

(२) उँगलियों को धीरे धीरे चलावो और पासके पदों पर जहां तक हो ज़मज़में लगाते जावो–

ध्वनि सोहनी–ताल पश्तो–लय धीमी–वक्त आधीरात–
तर्ज़–"हर जगह मौजूद है पर वह नज़र आता नहीं"

नज़्म क़िस्सा ।

था इमन में इक बड़ा परहेज़गार
नाम था हामान उसका आशकार
ज़िक्र हक़ में रोज़ शब रहता था वह
मुफ़लिसी के दुख सदा सहता था वह
उस्के घर वाले थे सब उससे ख़फ़ा
कहते थे कुछ रिज़्क़ की कर फ़िक्र जा
छोड़ उनको चल दिया वह सूये दश्त
इश्क़ मौला ने दिखाया रूये दश्त
एक दिन हामान ने की यह दुवा
मौत का मैं मुहँ न देखूं या ख़ुदा
ता क़यामत मैं अगर या रब जिऊं
याद में तेरेही रोज़ो शब रहूं
दी फ़िरिश्ते ने बशारत यह उसे
मौत आयेगी न ऐ हामां तुझे
याद ख़ालिक़ में दिले रहता मुदाम
वर्ना फिर हो जायेगी तुर्की तमाम
मर्तबा हामान को जब यह मिला
रश्क तब शैतान को उससे हुवा
आग बन में उसने अफ़सूं से लगा
ख़ुश्क आब उस दश्त का सब कर दिया
प्यास से मुज़्तर हुवा हामान जब
ले शराब हाज़िर हुवा शैतान तब
औ पिलाई उस्को लाकर दाम में
याद हक़ भूला वह बस इक जाम में

हो गया हामान शैतां का मुरीद
कर दिया उस पाक को मैंने पलीद
फिर हुआ शाहे इमन वह बादश्ख़्वार
साथ शैतां उसके था लैलोनहार

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	धा	नी	सां	रें	०	०	०	०	०

स्थायी और अन्तरा बराबर कर दिया गया है

था	इ	मन	में	इक	ब	ड़ा	पर
मा	धा	नी	सा	रे	सा	नी	सा

※ (नी—धा)	ह	ये	ज़	गार
जल्दी	.धा	·· नी सा.	नी	धा....
	जल्दी			

यह ही ढंग क़िस्सों की नज़्म के लिये सबसे अच्छा है बहुधा क़िस्से रात के वक़् पढ़े जाते हैं दिनमें इनको बहुत कम देखते हैं कारण कि दिन में इतना समय नहीं मिलता—

उपरोक्त कारणों पर दृष्टि रखकर हमने इस पद्य पर रात के समय की रागिनी कल्याणी स्थिर की है प्रथम तो यह मस्त रागिनी होती है दूसरे क़िस्सा कैसाही निरर्थक क्यों न हो इस रागिनी के अलाप से मनभावता हो जाता है—

(नोट) सब नज़्म उपरोक्त ढंग पर बजेगी—

ध्वनि भाग–ताल क़ौवाली–लय धीमी–वक़्त १२ बजे रात–
तर्ज़–"एक तीर फेंकता जा तिरछी कमान वाले"

ग़ज़ल ।

मैं वह क़ल्ब मुज़्तरब हूं जिसे कल से कल न आये
मैं वह नख़्ल बे समर हूं जो फलूं तो फल न आये
मुझे जोश में जिनूं के जो ख़याल है तो यह है
मेरा हाल ज़ार सुनकर कहीं वह निकल न आये
वह मज़ाके इश्क़ है क्या जोकि एकही तरफ़ हो
मेरी जान मज़ा तो जब है कि तुझे भी कल न आये
न मरो तुम उन पै मुज़्तर कि यह बुत हैं चन्द रोज़ा
तुम उसी ख़ुदा को पूजो कि जिसे अजल न आये

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	नी	सा̑	रे̑	गा̑	०	०	०	०

स्थायी

मैं वह कल बे मुज़ त रब हूं जिसे कल

गा×२ पा. गा पा. धा सा̑ नी.. धा×२ पा.

से कल न आ ये

मा धा. पा मा गा....

अन्तरा

मुझे जोश ये जि नूं में जो ख़ या

पा×२ धा×२ .सा रे̑ गा×२ रे̑×२ सा̑.

ल है तो यह है

नी रे̑ .सा̑ नी. धा....

सूचना।

(१) शेष सब गायन उपरोक्त ढंग पर बजावो यानी अन्तरे के ढंग पर पहिले पद और स्थायी के नियम से दूसरे पद ग़ज़ल के बजैंगे—

(२) जब "कल से कल न आये" बजावो तो "आये पर" ज़मज़मा दो—मा—गा—दोनों पर लगेगा—

(३) "मुज़तरब" पा—धा—नी—सा—पर एक बार भी बजा सकते हो—

ध्वनि जिला—ताल कौवाली—लय दर्मियानी—वक़ बाद दोपहर—
तर्ज़—"क्या भीड़ मैकदेके दर पर लगी हुई"

मुसद्दस।

दुर्गाप्रसादजी

क़ुदरत की है लकीर दयानंद ने लिखा
भीषमपिता ने यही युधिष्ठिर से था कहा
इंसान वह जिसने इन्द्रियों को बस में कर लिया
है वही इन्द्र वरुन वही वह है देवता
क़ब्ज़े में उसके दुनिया की दौलत तमाम है
दुनिया का माल सामने उसके गुलाम है
गुरुकुल बग़ैर ब्रज की रक्षा मुहाल है
गुरुकुल बग़ैर धर्म की शिक्षा मुहाल है
यों ब्रह्मचारियों की परीक्षा मुहाल है
गुरुकुल की बरकतों की यह अदना मिसाल है
भीषम से और जनक से अगर चाहो हों यती
गुरुकुल बनावो जायगी मिटि सब यह दुर्गती
भारत में अमनसिंह जी हैं साहबे हमम
राजा बली से जिनकी सख़ावत नहीं है कम
हरिश्चन्द्रजी से आपने आगे रक्खा क़दम
नाज़ुक समा था जिनमें किया आपने करम
भारत के हाल ज़ार पै करके दया बड़ी
गुरुकुल को दान देदिया गावँ अपना कांगड़ी
दाख़िल हुये हैं बच्चे गुरुकुल में आज जो
निकलेंगे वेद पढ़के यह भारत का ताज हो
संसार से उठायेंगे यह बद रिवाज को
फैलायेंगे यह दुनिया में आर्यसमाज को

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
						नी								
०	०	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	गा	०	पा	०	०	

(१) कुद् रतकी है ल की र दया आ
सा रे ×४ गा. रे सा ×२ .. रे.
नन द ने लि खा
गा पा. गा. रे सा....

(२) भी षम पि ता ने यह ही युधिष
नी सा. .रे सा नी धा पा मा×२
ठिर से था क हा
पा×२ धा. नी* सा....

सूचना।

(१) शेष सब मुसद्दस उपरोक्त ढंग से बजाइये—

(२) नंबर (१) के ढंग पर सब पहिले पद और नंबर (२) के ढंग पर सब दूसरे पद बजेंगे—

(३) दूसरा पद छाती पर ज़ोर देकर गाया जावेगा और आवाज़ को घटाना पड़ेगा—

ध्वनि जंगला–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़्त बाद दोपहर–
तर्ज़–" हज़रते दाग़ जहां "

सेहरा।

हज़रत ज़ौक़ देहलवी।

ऐ जवांबख़्त मुबारक तुझे सर पर सेहरा
आज है इमन व सआदत का तेरे सर सेहरा
आज वह दिन है कि लाये दुरे अंजुम से फ़लक
किश्तये ज़र में मह नौ के लगाकर सेहरा
एक को एक पै तज़ई है दमे आरायश
सरपर दस्तार है दस्तार के ऊपर सेहरा
इक गुहर भी नहीं सदकान गुहर में छोड़ा
तेरा बनवाया है ले ले के जो गौहर सेहरा
सर पै तुर्रः है मुज़ैयन तो गले में बद्धी
कँगना हाथ में ज़ेबा है तो सर पर सेहरा
रूनुमाई में तुझे दे मह व ख़ुरशेद फ़लक
खोल दे मुहँ को जो तू मुहँ से उठाकर सेहरा
दुर ख़ुशआब मज़ामीन से बनाकर लाया
वास्ते तेरे तेरा ज़ौक़े सनागर सेहरा

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
						नी								
०	०	०	मा	पा	धा	०	सां	०	०	०	०	०	०	

स्थायी

ऐ जवां बख़्तमुबा रक तु फ़ेस र पर से
*नी × ७ धा॰ पा मा×२ पा धा॰ *नी
ह रा *
धा पा....

अन्तरा

आज वह दिन है कि ला ये दुरे अन जुम से
मा×२ पा *नी × ४॰ पा×३ *नी सा॰ नी*
फ़ लक :
धा पा....

सूचना ।

(१) इस सेहरे को उपरोक्त ढंग से वजाइये–

(२) यह सेहरा भिन्न भिन्न रंगतों में गाया जाता है परन्तु मैने बिल्कुल नये ढंग पर स्केच खींचकर दिखाया है–

ध्वनि जिला–ताल दादरा–लय दर्मियानी–वक्त पूरा दिन–
तर्ज़–" हाय कौशल्या तेरी जाई "

खमसा ।

आतश ।

अगिया लागी सुंदर बन जलिगयोरे

(१) भड़क के इश्क़की सारे बदन में आग लगी
वह ख्वाला आहका सारे चदन में आग लगी
तेरे तो आतशे रुख़से चमन में आग लगी
मेरे तो जानो जिगर और मन में आग लगी
यह रो रो कहती थी बुलबुल चमन में आग लगी
अगिया लागी......

(२) किया इलाज अतिब्बा ने ना रसाई से
न आखिरस हुई सेहत किसी दवाई से
यह रंग जिस्म का है तेरी आशनाई से
जली है लाश मेरी आतिशे जुदाई से
मदद को पहुँचो सनम अब कफ़न में आग लगी
अगिया लागी......

(३) वह क्या हिना थी चमन से मँगाई शीरीं ने
और उसकी खलक़ में शोहरत उड़ाई शीरीं ने
यह सब को मीर अजायब दिखाई शीरीं ने
उधर तो हाथों में मेंहदी लगाई शीरीं ने
फिर उस तरफ़ को दिले कोहकन में आग लगी
अगिया लागी......

(४) तुम्हारी चुप से मेरी चुप ज़बां है बोलो तो
हमारे दिलमें कुछ औरही गुमां है बोलो तो
लबों को देख के हैरां जहां है बोलो तो

मिस्सी ये होठों पै है या धुवां है बोलो तो
यह सुर्खी पान की है या दहन में आग लगी
अगिया लागी........

(५) भरे थे कुमकुमे हरएक गुल की झोली में
गुलों ने घेर लिया था उसे ठठोली में
छिड़कते जाते थे हरएक रंग चोली में
गुलाल जुल्फों में उनकी पड़ा था होली में
तो लाला बोला कि मुश्के खुतन में आग लगी
अगिया लागी........

(६) अगर्चे होते हैं गुलरुख हज़ार गुस्से में
पै इस तरह की न देखी बहार गुस्से में
यह वस्फ़ तुझही में देखा निगार गुस्से में
हुवा है चेहरा तेरा ज़र्द यार गुस्से में
तो बुलबुलों ने भी जाना कि चमन में आग लागी
अगिया लागी........

(७) हुवा जो अम्र कशिश दिलका दिलमें तब उसके
वह खुद बखुद वह लगा दौड़ गले से मेरे
यह सैर जिसने न देखी वह आनकर देखे
तलब जो बोसा किया मैंने उस भभूके से
ज़बां तो शमा बनी और दहन में आग लगी
अगिया लागी........

(८) मिला है नामेखुदा मुझको इक सनम ऐसा
कि जिसके देखने से होते हैं सैकड़ों शैदा
मैं भूली बातों का उसके बयां करूं क्या क्या
शफ़क को देखके कहता है नौजवां मेरा
अजब तमाशा है चर्खेकुहन में आग लगी
अगिया लागी सुँदर बन जलिगयोरे

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
					नी			धा					
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	सां	०	०	०	०	०	०

(१) अगिया लागी सुन दर ब न जल ग यो :
मा × २ गा×२ सा रे गा×२. रे सा....

(२) भड़क के इश्क की सा रे बदन में आग ल गी :
सा×२ रे गा × ४ मा × ३ गा रे×२ मा गा ..

शेष तीनों पद इसी ढंग पर बजाइये–ज्ञात हो कि सब चौक गायन के इसी ढंग पर बजाये जावेंगे–ज़मज़मे इस कारण नहीं दिये गये कि यह चौकड़ी ज़मज़मों से भरी है सीखनेवाले की समझ में आना कुछ कठिन होगा यदि अँगुलियों में लचक हो तो शौक से ज़मज़मे दीजिये परन्तु उपरोक्त ढंग भी अच्छा है–

(३) यह रो रो कहती थी बुलबुल च मन में आ
गा×२ मा पा × ५ गा पा धा *नी सां

ग ल गी :अगिया लागी ....
..धा×२ पा...

सां विशेष ज़रूरी नहीं

शेष पांचो पद इसी प्रकार से बजैंगे ध्यान करके बजाइये–

ध्वनि ज़िला–ताल दादरा–लय धीमी–वक़् तमाम दिन–
तर्ज़–" अरे वाह मियां जी वाह "

साक़ी नामा।

देहली पंच।

(१) हमें देता है साक़ी क्या पियाली
करें हम खुम के खुम दम भर में ख़ाली
मैं वह हल्क़ः बगोश दुख़्तरज़हूं
कि-बेची आख़िरश बीबी की बाली।
जवानी के नशे में आंख है बंद
और उसपर है सितमकी देखाभाली
यह दौर इनक़िलाव आस्मां है
हरामी बनगये सदहा हलाली
शरर क्या बात है उस कमसखुन की
अदू से बात की और तुझ पै डाली
रहे मै ख़्वार का जब हाल बेहाल
कहां से आवे चेहरे पर वहाली

देहली पंच।

उपरोक्त ढंग पर।

(२) सुनों जी ! ओढ़ली जब हमने लोई
कहो ! फिर क्या करेगा हमरा कोई
हसीनों की सदा चाहे ज़क़न में
बड़ों के नाम की लुटिया डुबोई
था जबतक गांठ में पैसा थे सब यार
नहीं अब पूछता कौड़ी को कोई

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
						नी०							
०	रे	गा	मा	पा	धा	०	साँ	रें	०	०	०	०	०

स्थायी

हमें दे	ता	है सा	की	क्या	प	इ	आ ली
※नी×३ ··	धा·	पा×२	मा ··	धा·	·धा	·मा	·गा रे····

अन्तरा

वह	हल्क़ः ब	गोश	दुख़	त	र	ज	हैं
·मा	पा×३	※नी×२	साँ··	※नी	·रे	सा	※नी ··

[उन उन उन उन] तान [तोड़]

उन	उन	उन	उन
·धा	पा	·मा	पा····

सूचना ।

(१) यह हास्यरसपूरित साक़ीनामा सार्थक और परिणाम से भरा है—

(२) पहिले मिसरे अन्तरा के ढंग पर और दूसरे मिसरे स्थायी के ढंग पर बजाइये और छोटी सी (तान) तोड़ के अवश्य बजाइये आनन्द से भरा है—

ध्वनि ज़िला—ताल दादरा—लय चलती हुई—वक़ तमाम दिन—तर्ज़—" आया करो इधर भी मेरी जां कभी कभी "

मरसिया।

मुहर्रम।

मज़लूम बेवतन है कि प्यासा हुवा शहीद
दरिया तरफ़ लेजाओ जनाज़ा हुसेन का
भाई है तेरा लाल वरूथे ज़मीं पड़ा
वहां से उठाये आवो जनाज़ा हुसेन का
आदर गरीब जोकि अदम में है बेक़रार
जल्दी उसे दिखावो जनाज़ा हुसेन का
फूलों का होये साया जहां और हवा हो सर्द
चलकर वहां रखाओ जनाज़ा हुसेन का
अब्बास और अकबरो क़ासिम को साथ लो
बासर फ़ुगां बुलावो जनाज़ा हुसेन का
पूंछे जो कोई किसका जनाज़ा है यह अगर
जाता है देखलो यह जनाज़ा हुसेन का

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	नी	सा	रे	गा	०	०	०	०

स्थायी

मज़लूम ये व	तन है कि प्या	स	आ	आ	हु	वा
सा ×५	नी. धा × ३	.पा	.धा	पा.	मा	गा.

श	हीद
मा	पा....

अन्तरा

भाई है तेरा	ल	अ	ल	अरु	ये	ज़ मीं	प
सा ×५	रे	गा	रे	सा ×२	नी	धा रे	सा

ड़ा	(आ	आ	आ)
नी....	.धा	.पा	धा....

सूचना।

(१) मरसिया गान के नियमानुसार अच्छे नहीं होते क्योंकि यह विल्कुल गद्य की तरह बोले जाते हैं और ताल का ध्यान तक नहीं रहता इसकारण हम असल ढंग बतलाने को पसन्द नहीं करते कारण कि प्रेमीलोग मनमानी इच्छा पूरी न कर सकेंगे इससे इस मरसिया को ग़ज़ल की ध्वनि पर दिखाया है और वहुधा सभाओं में मुसलमान लोग इसी तर्ज़ को पसन्द करते हैं—

(२) पहिले पद अंतरे के ढंग पर और दूसरे स्थायी के ढंग पर बजैंगे—

ध्वनि देश–ताल क़ौवाली–लय दर्मियानी–वक़् १० बजे रात–
तर्ज़–" मुनव्वर शाहज़ादा का शिफ़ा पाना मुबारक हो "

मुबारकबाद ।

आर्यसमाज ।

यह जलसा तुमको सालाना मुबारक हो मुबारक हो
मिले हैं ख़ेश बेगाना मुबारक हो मुबारक हो
सुशोभित आपने जो आज मंदिर को किया साहब
करम हमपर यह फ़र्माना मुबारक हो मुबारक हो
कहां था देशका हित और कहां पर उसकी उल्फ़त थी
यह बातैं हमको समझाना मुबारक हो मुबारक हो
कहां थीं पाठशालायें जो वैदिक मतको सिखलायें
गुरूकुल का यह बनवाना मुबारक हो मुबारक हो
सुधारा है जो भारत को स्वामी दयानन्द (जी) ने
शुकुर उनका बजालाना मुबारक हो मुबारक हो
बड़े विद्वान् पंडित और लायक़ लेकचरारों से
नसायेपन्द सुनपाना मुबारक हो मुबारक हो
महायोगी महापंडित ऋषी स्वामी सरस्वती का
धरम की वृष्टि वर्षाना मुबारक हो मुबारक हो

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	गा	मा	पा	धा	नी	साँ	रें	गाँ	०	०	०	०

स्थायी

यह जलसा	तुम	को	सा	ला	ना	मु	बा	रक	हो
धा × ४		पा	धा	नी	साँ.	नी	धा	पा	मा.

मु	ब	अ	र	क	हो
पा	.धा	.पा	मा	गा	रे....

अन्तरा

सुशोभित	आ	प	नेज	य	आ	ज मन	दिर	को
साँ × ४.		नी	धा × २	नी	साँ.	पा × २	धा	साँ.

कि	य	अ	स	अ	दब
.रेँ	..गाँ	रे	साँ	नी	धा....

सूचना ।

(१) शेष सब पहिले पद अन्तरे के ढंगपर और दूसरे पद स्थायी के नियम से बजाये जावेंगे—

(२) यह मुबारकबाद बहुधा इसी तर्ज़ पर बजाई जाती है क्योंकि चार पांच मनुष्य मिलकर गाते हैं—

तमाशा

चन्द्रसेन कमलावती

तीसरा ऐक्ट—छठा सीन—रास्ता अदरक ख़ानम का नाज़ व नख़रे से नाचते हुये आना और गाना—

नाच।

थियेट्रिकल।

ध्वनि भैरवी—ताल कहरवा—लय दर्मियानी—वक़्त सुबह—
तर्ज़—" मैं तो फिर नख़रे से आई "

अदरक ख़ानम।

ऊई मैं तो छैल छबीली बीबी देखो मेरा नाज़ो नख़रा-ऊई-ऊई—
अठारह बरस की औरत हूं मैं देखो मेरी शान
अमीरों के लड़के मुझ पै देते हैं सब जान
ऊई मैं तो छैल छबीली बीबी........
इंगलिश—उर्दू—फ़ारसी—तुर्की—इल्म पढ़ी हूं हां
दुनिया सारी देखी मैंने नहीं मिला कोई जवां
ऊई मैं तो छैल छबीली बीबी...........
ख़ाविन्द उसको मैं करूंगी जो दिल मेरे भावे
बेगम जान बनूंगी उसकी जो जूते मुझ से खावे
ऊई मैं तो छैल छबीली बीबी.........

भूमिका

प्रेमियो! हारमोनियम में नाच के गायन कुछ कठिनतासे बजते हैं—एक मुख्य बनावट दाना डालने की होती है जो केवल हाथ की चाल देखने ही से समझ में आ सकती है उसको कोई लिखावट नहीं बतला सकती—दाना डालना ज़मज़मा बजाना एक ही बात है केवल इतना ही भेद है कि पहिले कहे अनुसार में ताल अर्थात् रफ़्तार साफ़ तौरपर और एक के बाद दूसरे प्रकट की जाती है इसके अतिरिक्त इसके अन्त में कहे अनुसार केवल आवाज़ के चक्कर या फैलाव को प्रकट किया करता है—

स्थान स्थान पर हमने इसका वर्णन किया है और दाना डालने की जगह भी बतला दी है शिक्षक को ध्यान देकर बजाना चाहिये परन्तु स्केच के बनाने में हमने एक अच्छा ढंग यह रक्खा है कि यदि दाना न डाला जाय या ज़मज़मा न बजाया जाय तब भी गायन निरानन्द नहीं हो सकती—

सब से अच्छा ढंग यह है कि किसी एक मुख्य नाच पर भले प्रकार अभ्यास कर लिया जाय पीछे दूसरे नाच बजाये जावें सफलता अवश्य होगी—

इस पुस्तक में भिन्न भिन्न नमूने दिखाये गये हैं यदि प्रेमी इर प्रकार उसपर प्रभुत्व जमा लेंगे तो सम्भव नहीं कि पूरी सफलता न हो—

१—इस पुस्तक में लिखेहुये गायन जिस लय और ताल में बांधी गई हैं उनके नाम भी लिख दिये गये हैं और रागिनी का कुछ

चिह्न भी दिया गया है कोई कोई बिना किसी ताल या ध्वनि के लिखे हैं उनसे यह जानना चाहिये कि वह मिले हुये हैं–

२–यफ. टू. यफ. या सी. टू. सी. बाजोंपर इस किताब के सब गायन इकसां बजैंगे परन्तु शौक़ीनों को अपना बाजा सी. टू. सी. के ढंग पर रखना चाहिये इस संबंध में हारमोनियममास्टर दूसरे और तीसरेभाग का देखना बहुत ज़रूरी है–

३–सा मा पा या किसी मुख्य स्वर को हमने गायन की हद नहीं ठहराया है किन्तु जिस स्वर से चाहा उसी से गायन प्रारम्भ की है इसकारण प्रत्येक शौक़ीन को चाहिये कि वह जिस गायन को अच्छी तरह से बजा सकता है उसको भिन्न भिन्न पर्दों से प्रारम्भ करे और बजाये–

ग्रन्थकर्ता

हारमोनियममास्टर

दसवां भाग

—⊱:*:⊰—
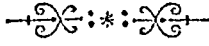
गायन ।

नाच थियेट्रिकल–ताल तीन–खम्माच

योवन बरसन लागे राजा–योवन बरसन लागे
जम जम छम छम चमके ताज आज–योवन बरसन........
छत्र शीश पर घूम घूम तन दमकत

चमकत मुलक फलक तक धूम तन मन नादिर नादिर सुभाक धक धक जग जग लिमट विकट बर तर सर वर आस्मान तक दाद दाद का डंका कड़ कड़ चन्दरशान तकि तकि लजात मुख आस्मान तक धा–

राजा योवन बरसन लागे राजा..........

दूसरा सप्तक						तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	धा	सां	रें	०	मां	पां	धा	०

रा जा यो व न वर
नी ॰ * सा सा रे ॰ गा ॰ ॰ मा * गा ॰ रे ॰ सा ॰ — नी * धा नी * × २

स न ला गे राजा
सा ॰ रे ॰ रे ॰ गा ॰ * मा ॰ गा ॰ * रे ॰ सा ॰ — — सा — — — सा ॰ × २ ....

जमुना भी लगाओ

जम ज म छ प छ म च मके त अ ज
धा × २ धा पा धा नी * सा ॰ नी * धा पा × २ नी * धा पा —

आज यो वन वर ... .
मा × २ — — मा धा × २ नी * × २

छत्र शीशपर झूम झूम तन दमकत चमकत मुलक फलक तक
गा ॰ * × २६

झूम तन मन नादिर नादिर सु भाव थक थक
मा ॰ — — नी * × ७ सा ॰ × ३ रे ॰ गा ॰ * — — रे ॰ × २ गा ॰ * × २

जग जग लिपटवि कट
मा ॰ × २ पा ॰ × २ गा ॰ * × ४ मा ॰ × २

वर तर सर वर आसमान तक दाद दाद का डन का कड़ कड़
गा ॰ * × १८ रे ॰ ॰ गा * मा ॰ पा —

चन दर शान तकि तकि लजात मुख आसमान तक
धा ॰ पा ॰ ॰ गा × १२

धा
मा ॰ राजा ....

नोट—प्रारम्भ में धीरे और बीच में कुछ जल्द बजाओ—एक स्वर पर जो कई शब्द कहे जाते हैं वहां आवाज़ चढ़ी हुई और एकसी रहेगी—

गायन।

† चलत–(नाच) थियेट्रिकलतर्ज़–तमाशा दिलफ़रोश–

वाकी ख़बरिया न पाई मोरी गोइयां

देखा भाला जादू डाला मेरी जान

ढूंढा सारा नदी नाला हो हैरान

इधर उधर डगर डगर नज़र करत हुई हैरान

दुश्वारथा दुश्वारथा दुश्वारथा मेरी जान

वाकी ख़बरिया न पाई मोरी गोइयां

नोट †–यह नाच नहीं है अलबत्ता नाच का ढंग लिये हुये है थियेटर में ऐसी चीज़ें बहुधा चल फिर कर कही जाती हैं–

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

वा की ख़ बरि या न पा ई मो री

+नी*– रे*–गा* रे*गा*धा मा–मा मा* मा गा* रे*

गो इ यां मैं हारी मैं हा री मैं हा

रे* गा*धा गा*– धा*×१ –नी* धा*मा* मा*– मा*मा

री हा य जा न जान *

गा*– रे*गा* मा गा* रे*–

१–यहां पर ज़मज़मा इस तरह लगावो मा धा *मा मा दो मर्तबे जल्दी से बजे–

देखा भाला जादू डा ला मे री जान
मा॰ × ७ मा गा॰ मा मा॰ ॰

" ढूंढा सारा नहीं......" इसी तरह बजेगा—

इ ध र उ ध र ड ग र
मा॰ नी॰ धा॰ नी॰ मा॰ धा॰ मा मा॰ मा

ड ग र न ज र क र त हु ई ह
धा॰ मा॰ मा गा॰ मा गा॰ मा॰ मा गा॰ रे॰ सा+ धा॰

य रान
+नी॰ रे॰— —

नोट—"दुश्वार था दुश्वार था" बवज्न "मैं हारी मैं हारी" बजेगा—

गायन ।

हरिश्चन्द्र लीला—नाच रासधारी—ताल तीन—
रानी तारावती—कितनिक दूर तोरी काशीरे सुनु पण्डित
कितनिक दूर तोरी काशी—
राह चलत मोरे छालेरे पड़ गये
हम महलन केरे वासी सुनु पण्डित
कितनिक दूर तोरी काशी—

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
			॰ मा	॰ धा									
०	०	०	०	०	०	+ नी	०	०	गा	०	०	०	०

क्तिनिक दू र तोरी य का शी रे
गा*×३ गा– गा* रे*×२ ..गा* +नी– रे* गा*
हुन पन डि त क्तिनि क दू
रे* +नी–+नी* +धा*– रे*+२ +नी +नी*
उ र तो री का शी
+धा* +मा* +धा* +नी* +नी* +धा* +मा* +मा*

जल्द बजाओ

रा ह च ल ता मोरे छाले
रे*– गा*– मा* मा* धा* मा ×२ मा*×२–
रे पड़ ग ये
मा गा* रे* गा*– – "हम महलन .... *" क्तिनिक
दूर ....* की तरह पर बजेगा–

गायन ।

नाच रासधारी–रासलीला–
श्रीराधेरानी दे डालो न बँसुरी मोरी
श्रीराधेरानी ....*
श्रीकृष्ण–काहे से गाऊं राधे काहे से बजाऊं
काहे से लाऊं गौवों घेर–श्रीराधेरानी ....*
श्रीराधिका–मुख से गावो कान्हा हाथ से बजावो
लठिया से लावो गौवों घेर–श्रीराधेरानी ....*
श्रीकृष्ण–रूपे की नाहीं राधे सोने की नाहीं
हरे हरे बांस की पोरी–श्रीराधेरानी ....*

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	०	नी	साँ	०	०	माँ	०	०	०

श्री रा धे रा नी दे डा गे न

रे॰×२ गा॰ मा॰ धा॰ नी॰—धा॰नी॰ धा॰ मा॰ मा—

न वां सु री मो री

गा॰रे॰ रे॰ गा॰ मा मा मा॰धा॰ मा॰ मा गा॰रे॰ रे॰—

ज़मज़मा

काहे से गाऊं रा धे काहे स व

धा॰×२ नी॰ सा रे॰ गा॰पा—गा॰ रे॰ सा×२ नी॰ सा

जा ऊं काहेसे ला

सा रे॰ गा॰ रे॰ सा धा॰ नी॰×३ नी

ज़मज़मा

ऊं गौ वों घे रि { शि

नी॰ धा॰ धा॰नी॰ मा॰ मा॰धा॰ { धा॰नी॰

री रा धे रा नी } दे डा

नी॰धा॰ मा॰मा मा॰मा गा॰रे॰ गा॰— } धा॰ धा॰

रो न अन वां सु री मो

मा॰ मा गा॰रे॰ रे॰ गा॰ मा मा मा॰धा॰सा॰ मगा॰ रे॰

री

रे॰—

नोट—ब्रैकेट की सरिगम दाना डालते हुये बजावो—

गायन ।

नाच—गति नकटा अद्धा—ताल कहरवा—

कहां जागे सारी रात नैना कुसुम्बरी रंग होगये

इकतो तिलँगवा—तिलँगवा—तिलँगवा का पहरा—तिलँगवा

का पहरा दूजे ठाढ़े जमादार

नैना कुसुम्बरी रंग होगये—कहां....

इक तो मैं राजा—मैं राजा— मैं राजा की बेटी

दूजे हुई बदनाम—नैना कुसुम्बरी रंग होगये—कहां....

इक तो मैं बाली—मैं बाली—मैं बाली रे भोली

दूजे हुई बरबाद—नैना कुसुम्बरी रंग होगये—

कहां.........

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	०	०	सा॑	०	०	०	०	०	०

क	हां	जा	गे	सारी	रा	त
धा ※	पा	धा ※	नी※	नी※×२—	धा※नीसा॑	नी ※

नै	ना	कु	सुम्बरी	रँ	ग	हो		
धा ※	पा	पा	धा※×२	नी※	सा॑सा॑	रे॑※गा※	रे॑※सा॑	नी※

गये
धा ※—

(२) डकतो ति लँगवा ति लँग वा
रे ॅ×२— रे ॅ* सा ॅ×२— सा ॅ सा ॅ नी* नी*—
ति लँग वा का पट रा ति लँग
नी* नी * धा * नी* सा ॅ सा ॅ नी*— नी* नी*धा*
वा का पट रा
नी*— सा ॅ सा ॅ रे ॅ* ॅगा रे ॅ*सा ॅ नी* धा*—

"दूजे टाढ़े"..................बदज़न "कहां जागे" बजेगा-

नं० २ के बोल स्वच्छ और सुन्दरता से अलग अलग कर के बजाओ—

गायन ।

तमाशा तबदील क़िस्मत—नाच थियेट्रिकल—ताल दादरा

रामशगरां—आओ आओ हमारे संग खेलो पिया

अबुल्हसन—क्या मुझे बुलाती हो—मेरा चाहा जिया

रामशगरां—आओ आओ हमारे संग खेलो पिया

अबुल्हसन—अँगरेज़ी नाच यों न.चते

रामशगरां—हां कैसे ?

अबुल्हसन—

रामशगरां—होके बादशाह तुम नाचते हो क्या ?

अबुल्हसन—अररर मैं भूला तू गा—आओ आओ..................

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक				
०	रे	०	मा	०	०	०	साॅ				

आ वो आ वो ह मा रे सन ग खे
गा* रे गा* मा*—मा मा* धा* नी* धा* धा*मा*

लो पि या
मा* मा गा*— —

क्या मुझे बुलाती हो मे रा चा हा जि या
रेॅ गा*×७ रेॅ * साॅ नी* धा* नी* साॅ आवो

आवो फिर पहिले से वजाओ

अंग रे जी नाच यों ना च ते हां कैसे
रे गा* मा* धा* रेॅ*— साॅ नी* धा* रेॅ*३×——

नाच अँगरेज़ी—

* * * * *
धा धा नी नी गा रे मा मा रेॅ *साॅ रेॅ *साॅ नी*

* * *
धा धा धा—साॅ गाॅ * रेॅ *साॅ रेॅ *रेॅ * रे*—टुकड़ा

फिर पहिले से वजावो—

हो के बाद शाह तुम ना चते हो
धा*×५ नी*— धा* धा*नी*साॅ साॅ×२— नी*धा*

क्या— अरर मैं भू ला तू गा
नी*- -रेॅ*— पा धा* पा मा ना*- - गाना फिर पहिले से

बजाइये—

गायन

गति कहरवा–नाच थियेट्रिकल–ताल दादरा–तीन

पियारा पियारा बना बना जोबना–

पियारा बना–दुलारा बना–नियारा बना

पियारा पियारा बना………

बनूंगी रानी भूतों की नानी–मेरी जवानी लासानी बनी

कालीभवानी काली तू–पियारी पियारी बनी हूं मैं भुरजन

भुरजन डायन बनी बी बी जान भुरजन डायन बनी

जारी जारी दीवानी क्या झकतानी मैं हूं रानी

पियारा पियारा बना………

[ज़वानी–आहा हा हा–वाह वा वाह–क्या क्या पियारी पियारी सूरत रँगीली रसीली–नख़ीली छवीली]

मैं हूं मोहना–मैं हूं मोहना–पियारा…………

शाह की दुलारी पियारी क्यों न मैं बनूं भला–बना जोबन नया नया–चन्दन वदन नया नया

[आ हा हा हा–वाह वा वाह] वारीधना–वारी धना–वारीधना

पियारा पियारा बना बना जोबना………

पहिला सप्तक +							दूसरा सप्तक						
			* मा	* धा	* नी		* रे	* गा					
०	०	०	+ मा	+ पा	०	०	सा	०	०	०	०	०	०

पिया रा पिया रा व ना

+धा* +नी* सा रे* सा +नी* +धा*

जल्दी

व ना जो व ना

+पा +पा+धा*+नी* +धा* +मा* +मा--

जल्दी से बजावो

पियाराव ना दु ला रा व ना नी

सा×३ रे*- सा +नी* सा +नी* +धा*-पा+

या रा व ना

पा+धा*+नी*+धा* +मा* मा+ फिर पहिले से बजावो

व नूं गी रानी य भू तोंकी

+मा +धा*- +नी* सा×२ रे* सा +नी*×२

ना नी मेरी जवानी ला सा नी

सा+नी* +धा*- रे*×६ सा+नी* +धा*+

व नी

नी* सा-

काली भ वा नी का

+धा*×३ +धा*+नी* सा+नी* +धा*+नी*

ली तो पियारी पियारी व नी

+धा*+मा* +मा- रे*×५ सा+नी*

गायन

नाच इन्द्रसभा

लाल परी—

इंसान का काम हुस्न पै मेरे तमाम है
जोड़ा है सुर्ख़ लाल परी मेरा नाम है
आशिक़ को क़त्ल करती हूं अबरू के तेग़ से
दिनरात हमको ख़ून बहाने से काम है

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
* रे	* गा	* मा	* धा	* नी									
०	०	०	मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

इंसान का का म हुस न पै मे
मा×२— गा* रे* — गा* गा*मा मा* मा* मा* मा*

रे त मा म है
मा*धा*नी* नी* धा*मा*मा गा* गा* मा--

जो ड़ा है सु र्ख़ ला ल प री मे
रे* गा*×२ गा* धा* मा*धा* मा* मा×२ गा*मा मा

रा ना म है
*मा मा मा*धा*मा*मा गा* रे*—
जमज़मा

* *

* मा पर अंगूठा दबा रहेगा मा धा पर दोहरा ज़मज़मा लगा कर गा पर आवो —

गायन

चित्रा बकावली—नाचथियेट्रिकल—ताल कहरवा—गति कहरवा—
क्या सुहावे रंग सो मोरा—रंग मोरे रंग से है खिलरहो हर रंग
क्या .... :

१—नीलम का है रंग निराला—वर्षा की ऋतु में झपके सो मोरा रंग— क्या .... :

२—पुखराज है हर रंगसे वाला—फस्ल खिजां में चमके सो मोरा रंग— क्या .... :

३—लाल से है जग गुललाला—फस्ल वहार पर दमके सो मोरा रंग— क्या .... :

४—सब्जपरी में सबसे हूं आला—ऋतु बेऋतु में चमके सो मोरा रंग— क्या .... :

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
※ रे	※ गा		※ मा	※ धा	※ नो								
०	०	०	मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

क्या आ सु हा आ ये रन गे सो मो रा
रे※—गा※— धा※ मा※ मा गा※मा रे※ गा※— मा※ मा गा※

रंग मो रे रंगसे खिल र हो ह र रंग
रे※— रे※ गा※ मा×२ धा※×२ मा※मा गा※ मा रे※

नी लमका है रंगनिरा ला वर्षाकी ऋतु मे यें झूम
मा धा*×३ नी*×४ धा*— नी*×५ धा* नी* मा*
के सो मो रा रंग
धा*—मा* सा गा* रे*—

* *

नोट—पीछे केवल गा से प्रारम्भ करो रे की आवश्यकता नहीं है—

गायन

असीर हिर्स-नाच थियेट्रिकल—

आवो आवो छैला मधुवा पिलाऊं

चैनपाये जिया—मोरे पियारे पिया—तोहे मनमें विठाऊं—वलि वलि
जाऊं भजन वनाऊं— आवो आवो................+

मैका पीना है नेक करीना—चारों है ज़माने में जीना
सच्ची वातें तोहे मैं वताऊं

आव नाव भी साफ़ है और शीशा पियाला साफ़
मैं निर्मल साक़ी वनूं पीने वाला साफ़
आजाओ आजाओ आजाओ हां आवो आवो

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक							
				※ नी			※ रे	※ गा		※ धा				
०	०	०	०	+	धा	०	सा	रे	०	पा	पा	०	०	

आवो आ वो ऊँ ला म हु

+नी※—रे गा※ मा मा※धा※मा※ मा गा※ गा※रे※सा

जमज़मा जमज़मा

वा वि ला ऊँ

+नी※— सा +धा— +नी※

चै न पा ये जि या

+नी※ +धा +नी रे— रे गा※—

मोरे पियारे.................× इसीतरह बजेगा—

तो हे मन में थि टा ऊँ व लि व

गा※ पा पा धा※ मा※ धा※मा※मा※ गा※— रे गा※ मा

ज़मज़मा

लि जा आ ऊँ

गा※ रे सा +नी※—

मैं का पी ना है ने क क री ना चारों....+

+धा +नी※ रे × ३ गा※ मा गा※ गा※ रे※सा+नी※

ज़मज़मा

इसीतरह बजेगा—

सच्चीवा तैं तो हे मैं व ता ऊँ

मा × ३ मा मा※धा※मा※ मा गा※ मा—गा※ गा※रे×सा +नी※

ज़मज़मा

आब नाव भी साफ़ है और मैना पिया ला साफ़
पा × ८— मा × ३ गा* मा पा धा* पा- -
जल्दी

मैंसाफ़ी निर मल व तूं
मा× ३ मा गा* रे— मा गा *—

और पीने वा ला साफ़ आ जा
रे × ३ सा— रे गा*धा गा*- - मा मा मा* धा* मा*
ज़मज़मा

वो आ जा वो आ जा वो हां
मा— गा* मा— गा*— रे*गा* रे* सा +नी*- -

फिर पहिले से बजावो—

गायन

स्टार आफ़ इंडिया—नाच थियेट्रिकल—
देखो कैसी चमन में बहार आई
बुलबुलों ने धूम मचाई—देखो........+
क्या खूब फूल रही फुलवारी—और रंग बरंगी क्यारी
जैसे नये जोबन की हो मतवारी—(हां ! हां ! ! जवानी)
कैसी कोयल ने कूक सुनाई—
देखो.......+
प्यारे से प्यारा है क्या गुललाला है गेंदा हज़ारा है देखो सखी
हम सब मिलकर—कलियां चुनकर—नाचें छम छम हां—
छूम छनान छूम छनान छूम छनान छूम छना न न न—
देखो........... +

दूसरा सप्तक											तीसरा सप्तक						
		गा*		मा*	धा*	नी*		रे*	गा*								
०	रे		०	मा	पा		०	०	स	०		०	मा	०	०	०	

दे खों के सी च मन में व
गा* रे गा* पा− पा पा धा* नी* सा नी* धा*
जल्द

हार आ ई
धा*मा*मा मा गा* गा* -
ज़मज़मा
बुलबुलों ने धू उ म म चा ई
सा × ८ सा रे * गा* मा गा रे* सा −
फिर पहिले से बजावो— ज़मज़मा
क्या खूब फूल र और रंग.... + इसी प्रकार बजेगा—
मा मा* मा*×४ मा*
जैसे नई जोबनकी हो म त वा
रे * × ७ रे *सा नी*धा* धा* नी* सा −

री हां हां
रे * *रे × २ +
कैसी को यल ने क क सु ना ई +
सा ×२ रे *− सा नी* सा − नी* धा*मा*मा−गा*−
ज़मज़मा
प्यारे से प्या रा है क्या गु ल ला ला
× ४ रे* सा नी* सा नी* धा* नी*

है गें दा ह ज़ा रह है दे खो
धा*— पा धा* पा मा पा मा— गा* मा
स खी ह म सब मि ल कर क
रे गा*— रे गा* पा×२ पा धा* नी*२ पा
लि या न चु न कर ना चैं
धा*— नी* धा* मा* मा गा*×२ मा^ गा* रे^ *सा^
छ म छ म हां { छूम छ न
नी* धा* नी* सा^ ^गा* { सा^— सा^ सा^ रे^ ^*गा^ *
एकसाथ
न न छूम छ न न न छूम छ
रे^ * सा^ नी*— नी* सा^ रे^ * सा^ नी* धा*— धा*
एकसाथ
न न न छूम छ न न न न }
नी*सा नी* धा* मा*— मा धा* मा* मा गा* }
एकसाथ

फिर पहिले से बजाओ—

नोट—ब्रैकेट { }—के स्वर दाना डालते हुये बजाइये यदि शिक्षक इसको उत्तमता से बजा ले तो उसके परिश्रमी होने में सन्देह नहीं यद्यपि यह नाच कठिन से कठिन और अच्छा से अच्छा है और स्केच जल्द समझ में आनेवाला है कुल किताब में केवल यही एक नाच है जो सरल तो है परन्तु जो हाथ की उत्तम अभ्यास नहीं रखते वह अन्तिम भाग ब्रैकेट की सरिगम नहीं बजा सकते—

केवल इस एक नाच की प्रैक्टिस से सैकड़ों नाच सुगमता से बज सकते हैं इसकारण सीखनेवाले को इस ओर मुख्य ध्यान देना चाहिये—

गायन

नाच नवावक

ठुमरी और दादरा मिला हुआ

घट छांड़ो सांवलिया भरूं गगरी
भरूं गगरी रे भरूं गगरी—

घट ....।

गई थी बजरिया में ले आई हलदी
मेरे वाला से जोबना पर छाई जरदी

घट ....।

गई थी बजरिया ले आई गगरी
मेरे प्यारे सिपहिया ने तोड़ी गगरी

घट ....।

पहिला सप्तक +							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	+ धा	+ नी	सा	रे	गा	मा	पा	धा

च	ट	छांड़ो	सां	व	लि	या	भ	रू
गा	रे	गा×२-	रे	सा	+नी	+धा-	+धा	सा-

ग	ग	री
सा	रे	गा--

फिर पहिले से बजाइये—

अन्तरा—

गईथी	व	जरिया	मैं	ले आई हल	दी
गा×३	मा	पा×२-	मा	धा×४	पा-

मोरे	वाले से	जोबना	पै	छा	ई	ज	र	दी
मा×२	धा×३	पा×२	मा	गा	रे	सा	रे	गा--

अ	रे	छा	ई	ज	र	दी
गा	मा	गा	रे	सा	रे	गा--

फिर पहिले से बजाइये—

नोट—बीच में दुगुन करने से नाच का आनन्द आयेगा अन्तरे के दूसरे पद पर ठुमका बहुधा अच्छा मालूम होता है—

इति ॥

भूमिका

प्रेमियो ! इस भाग में ताल ऐसे कठिन मसले पर प्रकाश डालने के लिये " नदी कुल्हियामें " वाले उदाहरण के अनुसार यत्न किया गया है, कारण कि शुभचिन्तक ने इसमें ताल सम्बन्धी वह सब बातें इकट्ठा करदी हैं जो किसी गानविद्या की संग्रहीत पुस्तक में नहीं मिल सकती हैं—

उर्दू भाषा में गान का लिटरेचर बिन्दु के बराबर है और अँगरेज़ी में कुछ ऐसी अपूर्व व आश्चर्यमय काट छांट दिखाई देती है जिसको हमारे देश के गान के आगे दम मारने की भी जगह नहीं मिल सकती—हां संस्कृत और प्राकृत भाषाओं में कुछ ऐसे नुसखे दृष्टिगोचर हुये हैं जिनसे कुछ हमको संतोष हो जाता है परन्तु बड़ा ही दुःख है कि ज़माने की दुरंगी ने इसपर भी अपना प्रभाव डाला है जिससे हमको निश्चय करने में पूर्ण सहायता नहीं मिलती इस कारण मेरा भंडार इस प्रकार का है जो अधिकता से आज कल के उस्तादों के सीनों से अक्स किया हुवा है, परन्तु जहां तक हो सका है माननीय ग्रंथों की कसौटी पर रखकर परख लिया गया है इसी कारण हितैषी यह विनय करने का साहस करता है कि पुस्तक निष्प्रयोजन और ज़बानी जमा खर्च से नहीं भरी गई किन्तु इसमें मुख्य रीतों और आवश्यकीय बातों पर वाद करने का परिश्रम किया है।

इस भाग में शुभचिन्तक ने तबला बजाने वालों के लिये भी बोध दिया है किन्तु मृदंग, ढोल आदि जितने ताल के साज़ कहलाते हैं उनका मुख्य उद्देश ताल पर दृष्टि करते हुये बताया

है किसी मुख्य साज कोही मद्दे नज़र नहीं रक्खा है और न किसी साज़ का बजाना बताया गया है कारण कि ऐसा करने से शुभचिन्तक की मुख्य कामना हाथ से चली जाती-

ताल की प्राथमिक दशा अर्थात् उसकी नीव और साधारण रीति व प्रकार मुख्य ढंगपर बतलाये गये हैं और जो तालें आज कल अधिकता से प्रचलित हैं उनके सम्बन्ध में पूरी पूरी जानकारी दिखलाई है जिसमें सीखने वाले ताल के गोरखधंधे में न फँस जावें और आवश्यकीय बातें और समय की तालों से पूरी पूरी योग्यता पैदा करलें किन्तु इतनी योग्यता हो जावे कि वह ताल को स्वयं जान लें और कठिन चक्करों को सुगमता से पार कर सकें-

इस हिस्से को मेरे नाम या मेरी योग्यता के कारण सहायक न समझें किन्तु इस कारण से कि यह योग्य उस्तादों और ग्रंथों का सारांश है जिससे मैंने जांच करके लिखा है किसी हवाले की इस में आवश्यकता नहीं देखी गई कारण यह है कि मैं सदैव उन नियमों और व्यवस्थाओं को पब्लिक में रखता हूं जो साधारण लोगों के पसन्द होते हैं और विना विरोध माने जाते हैं-

अन्त में यह विनय करना आवश्यक समझता हूं कि भारतवर्ष के भिन्न भिन्न भागों में भिन्न भिन्न जांच की गई हैं और प्रत्येक अपनी ध्वनि का पक्का दिखाई देता है परन्तु क़मर देहलवी सब भारतवर्ष की गान विद्या की साधारण रीतियों पर चलनेवाला है किसी मुख्यभाग का माननेवाला नहीं बनना चाहता वह जो कुछ पब्लिक के सामने लाकर रखता है उसको विना किसी

पक्षपात के पब्लिक स्वीकार करती है कारण यह कि कुल भारतवर्ष के लिये जो रीतें इकसां काम दे सकती हैं वह ऐसी कच्ची नहीं होतीं कि जिनको कोई तोड़सके इससे प्रत्येक सीखनेवाले को चाहिये कि वह पक्षपात और हठधर्मी को छोड़कर साधारण रीतों को माने और सीखे जिससे वह एकदिन अपने काम में अवश्य योग्यता प्राप्त कर लेगा और यही मेरी अभिलाषा है—

ग्रंथकर्त्ता
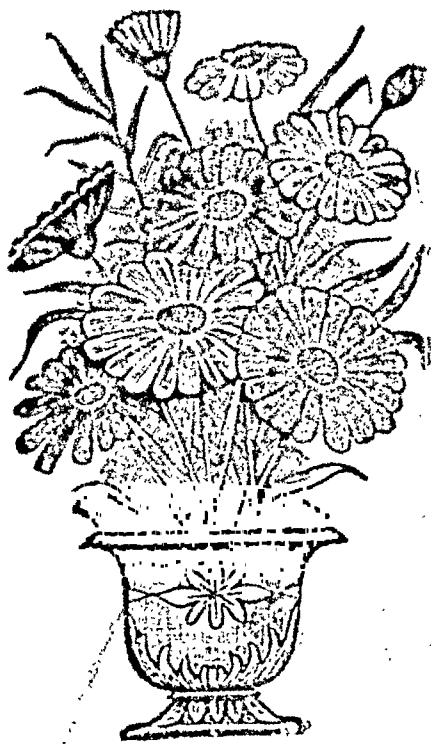
हारमोनियममास्टर

ग्यारहवांभाग

पहिला अध्याय

ताल की आवश्यकता गायन में क्यों है ?

यह प्रश्न है कि जो पहलेपहल एक सीखनेवाले की ज़बान से निकलता है क्योंकि ताल और लय से अनभिज्ञ शौक़ीन ताल को एक बड़ी भारी बला समझते हैं और इतना घबड़ाते हैं जैसे स्कूल के लड़के टाइम टेबिल की पाबन्दी से भागते हैं—

संसार के सब फ़्लासफ़र इस बात पर सहमत हैं कि प्रत्येक काम के लिये एक समय होता है और प्रत्येक काम अपने समय पर होना चाहिये हमारी इस प्रतिज्ञा की सैकड़ों गवाहियां मौजूद हैं और नित प्रति देखने में आती हैं—

ऋतु और रात्रि दिन के लिये समय नियत है—पृथ्वी और नक्षत्रों की चाल समयपर होती है. हमारे सब काम काज जीवन समय परही विभाजित हैं प्रयोजन यह कि सब संसार का काम समय पर होता है फिर हम कोई कारण नहीं देखते कि गाने बजाने में समय का ध्यान क्यों न रक्खा जावे—

नियम के विरुद्ध अथवा बिना समय काम करने से सदैव सफलता से हाथ धोना पड़ता है और ऐसेही नियमविरुद्ध काम करनेवालों को नियम ईश्वरेच्छा से बुरा ज्ञान पड़ता है यही कारण है कि कोई कोई सीखनेवाले जो ताल नहीं जानते इसका

निरोपध दलाय समझने लगते हैं यह उनकी एक बच्चों की सी भूल है कारण कि इसरीति पर कोई काम बिना समय नहीं होता गायन में समय की अवश्य आवश्यकता होती है—

ताल

समय और ताल दो पृथक् वस्तुयें नहीं हैं नियमित समय ही ताल कहलाता है गानविद्या के जाननेवालों ने जांच और अच्छी रीतियों को देखते हुये गायन के साथ भिन्न भिन्न समय नियत किये हैं और हर समय के जानकारों ने अपने अपने समय में इन रीतियों पर बहुत कुछ काम करके दिखाया है यह साधारण रीति है कि समय के परिवर्तन के साथ और प्रकृति के भाव के साथ बहुत कुछ परिवर्तन होता रहता है परन्तु **सामवेदी** गानविद्या ऐसी अचल है कि जिसमें परिवर्तन होना असम्भव जान पड़ता है इससे यह अर्थ है कि साधारण रीतों में परिवर्तन की आवश्यकता आज तक नहीं पैदा हुई यह एक बहुत बड़ी विजय वेदों को प्राप्त है कि उसके नियम ईश्वरीय नियम समझे जातेहैं—

उपरोक्त बातों से हमारा अभिप्राय यह है कि नित नये तालों की बढ़ती कुछ बुरी नहीं है केवल शर्त (होड़) यह है कि पहिली रीतियों से अलग न हों नहीं तो गान की रीति सम्भव है कि कुरीति विद्या मानी जावे—

ताल नाम क्यों हुआ ?

हज़ार मुँह हज़ार बातें—ताल क्यों नाम हुआ इस के कारण पचासों बतलाये जाते हैं कोई कहते हैं कि ताली से पैदा हुआ परन्तु कोई उचित तर्क नहीं दिखाई गई क्या कारण है कि हम ताल से ताली का जन्म न समझें—इसीप्रकार और बहुत सी कहानियां बतलाई जाती हैं उन सबमें एक यह भी है कि तांडव महादेव जी के नाचने का नाम था और लास पार्वती जी के नाच का नाम था इन दोनों के प्रथम के अक्षर ता और ला से ताल कहलाने लगा सम्भव है कि ऐसाही हो इसमें हमको अधिक जांच की आवश्यकता नहीं पड़ी परन्तु एक अच्छे जानकार से यह सुन कर कुछ समझ में आता है कि लोग काल को अधिकता से काम में लाने से ताल कहने लगे हैं यह कुछ दृढ़ राय है क्योंकि काल ताल की जड़ है जो आगे चलकर जान पड़ेगा—

ताल की जड़

काल समय को कहते हैं और ताल भी समय कहलाता है अब हम ब्योरेवार ताल की जड़ और बनावट को समय के साथ बतलाना चाहते हैं—

मात्रा—कला या मात्रा एक थोड़ी देरी का नाम है जो अँगरेज़ी सेकेंड के ५/६ के बराबर होता है या यों समझिये कि जितनी देरी में एक निरोग मनुष्य की नाड़ी एक बार चलती है—यह समय ताल की जड़ है और इसी समय से इस विद्या के जाननेवालों ने ताल की जड़ रक्खी है—

मात्रा का भाग

मात्रा स्वयं एक थोड़ी देरी है परन्तु इसके भी कई भाग किये गये हैं जिनका ब्योरा निम्नलिखित नक्शे से ज्ञात होगा यह पिंड के भाग कहलाते हैं और प्रत्येक ताल में इनके संग्रह को ताल का पिंड कहते हैं—

चित्र मात्रा या पिंड के अंक

नम्बर शुमार	नाम भाग	तादाद मात्रा	निशान शिनाख्त	कैफ़ियत
१	लघु	१	|	
२	गुरु	२	S	
३	प्लुत	३	o	
४	विरामलघु	१ १/२	ĺ	
५	अनुद्रुत	१/४	×	
६	द्रुत	१/२	٥̮	
७	विरामद्रुत	३/८	٥̃	

नोट १—चिह्न स्मरण कर लेना परमावश्यक है—

२—प्लुत का चिह्न ० या ड से भी वतलाते हैं—

३—किसी किसी चिह्न में वहुधा भेद दिखाया गया है परन्तु इस पुस्तक में लिखे हुये स्मरण हो जाने पर दूसरे सुगमता से समझ में आ जाते हैं—

ताल की वनावट

मात्राके भागों से ताल वनाये जाते हैं जो नीचे के उदाहरण से समझ में आसकते हैं—

इकताला—यह ताल ३ मात्रा का है अर्थात् इसमें ३ लघु हैं परन्तु कोई कोई इसमें ३ गुरु वतलातेहैं और इसीरीति से यह ६ मात्रा का होता है—

उपरोक्त उदाहरण से आपको ज्ञात होरहा है कि मात्राके भिन्न भिन्न भागों से जिनका वर्णन पहिले कियागया है प्रत्येक तालकी उत्पत्ति हुई है और जानकारों ने इसी ढंग से सैकड़ों ताल वनाडाले हैं किन्तु अच्छी वुद्धि होने पर आप भी इसी रीति पर नये से नये ताल वना सकते हैं—

स्मरण रखिये कि इस रीति को प्रचलित हुये एक समय व्यतीत होता है और जितने ताल वन सकते हैं वना डाले गये हैं अव इसमें अधिक ध्यान व चिन्ता की आवश्यकता नहीं रही है कारण कि ताल वनाना तो वहुत सुगम है परन्तु उसका दर्शाना कुछ कठिन होता है जो मुख्य अभ्यास से होसकता है इसकारण शौक़ीन ताल वनाने की चिन्ता में न रहें किन्तु दो चार प्रकार के तालों की प्रैक्टिस करलें जो उनकी आवश्यकता को दूर करसकते हैं अर्थात् पहिले वनाने की रक्षा करें और फिर वनाने की ओर दृष्टि उठावें—

एक पुराना नुसखा एक मनुष्य ने मुझको लाकर दिखलाया जिसमें एक गायन के साथ यह चिह्न " ॥ ० ० ॥ " लिखा हुआ था जिसका अभिप्राय सुगमता से सिद्ध होगया कि यह गायन उक्त ताल में गाई जावेगी—

हल—" । " यह चिह्न लघु का है "०" यह चिह्न द्रुतका है—
यही केवल दो चिह्न हैं जो कईबार लिखे हैं इस
कारण नीचे लिखे अनुसार हल हुआ—

।	।	०	०	।	।		= निशान
लघु	लघु	द्रुत	द्रुत	लघु	लघु		= नाम हिस्सा
।	।	½	½	।	।		= तादाद मात्रा

अर्थात् यह एक ऐसा ताल है जिसमें दो लघु दो द्रुत फिर दो लघु आते हैं और ५ मात्रा होती हैं ऐसा ताल उरु ताली कहलाता है—

हमारा अभिप्राय इससे यह है कि चिह्न भलीविधि स्मरण कर लिये जावें जिसमें आवश्यकता पर काम आवें—

नोट—नाम न ज्ञात होना कि यह कौनसा ताल है कुछ हर्ज नहीं परन्तु यह जानलेना कि यह ताल किन रूपों पर मिला है आवश्यकीय है—

दूसरा अध्याय

अब हम उन ९२ तालों का वर्णन करते हैं जो भारतवर्ष में पूर्णरूप से प्रख्यात हैं और साथही साथ उसके खंडों के चिह्न लिखते हैं जिसमें प्रत्येक ताल की बनावट पर पूर्ण प्रकाश पड़ सके–

यह आवश्यक नहीं कि इन सब तालों पर सीखनेवाला अभ्यास करे किन्तु कुल तालों में से यदि दो चार ताल भी अच्छी तरह स्मरण हो जावें तो अच्छा है–

वर्ष के जितने दिन होते हैं भारतवर्ष में उतनेही प्रकार के ताल भी पाये जाते हैं जिनका वर्णन यदि पृथक् पृथक् किया जाय तो प्रत्येक ताल के लिये इतनीही बड़ी पुस्तक की आवश्यकता होती है–

शौक़ीन इन ९२ तालों को सरसरी तौर पर देख जायें और आगे के पृष्ठों पर जो ताल बतलाये गये हैं उनको स्मरण करें कारण यह है कि इन तालों का न तो चलन है न प्रत्येक सीखने वाला इनको सुगमता से समझ सकता है तब भी प्रत्येक ताल के खंड यदि स्मरण हो जावें तो इनसे बहुत कुछ सहायता मिल सकती है –

नम्बर शुमार	नाम ताल	चिह्न	कैफ़ियत
१	सरस्वती अभरण	ऽऽ । । ००	
२	मगन	। । ० ० ० ० ९९९	
३	दावानल	११	
४	नारंडे	। । ० ० । । ११	
५	वर्ण महक	० ० । ० ०	
६	कारोली	० ० ० ०	
७	राय हीको	ऽ । ऽ ० ०	
८	अभयन्द	। । ० ० ऽ	
९	अनंग	। ऽ' । । ऽ	
१०	गौड	। । ० ० । ऽ	
११	अष्ट तालिका	० ।	
१२	सम मुखतर	। । 6 ०	
१३	संज	० । । ।	
१४	परत	। ० ०	
१५	मतवरत	ऽ'	
१६	निसंगलेल	ऽ' ऽ' ऽ ऽ ।	

नम्बर शुमार	नाम ताल	चिह्न	कैफ़ियत
१७	ब्रह्म या वर्म*	|o|oo|ooo|	
१८	चित्र	ooo|	
१९	लब्धा	| ७	
२०	अग्र	o o	
२१	शंख	| o	
२२	गंडक*	6	
२३	इकताली	o	
२४	शार्ङ्गदेव	oo| ڒ SS|	
२५	नर्सिंग	| S ڒ S S | S	
२६	राज मार्तंड	S | o	
२७	राज मृगांक	o o S |	
२८	गौरी	| | | |, |	
२९	कुलधीन	| | S | ڒ	
३०	कुन्द	| | o o S ڒ	
३१	मुकुन्द	| o o o o S	
३२	हंस	| | S S S | ڒ	

नंबर शुमार	नाम ताल	चिह्न	कैफ़ियत
४९	चंग	।।।।ऽऽ।।	
५०	श्रीविन्द	ऽ।।ऽ	
५१	मिलत प्रिया	।।ऽ।ऽ	
५२	लक्ष्मीश	० ० । ऽ'	
५३	सदंग*	।ऽ	० ० ऽ
५४	रत.	।ऽ	
५५	पार्वती लोचन	ऽऽऽ।ऽ'ऽऽ००	
५६	लीला	० । ऽ'	
५७	करण	० ० ० ०	
५८	ललना	० ० । ऽ	
५९	राज नारायण	० ० ।ऽ।ऽ	
६०	इंद्रघात	० । ० ० ।	
६१	मिश्र	[illegible]	
६२	झम्पा	ऽ ० ० ०	
६३	अभंग	। ऽ'	
६४	वसन्त*	।।।ऽऽऽ	

नम्बर शुमार	नाम ताल	चिह्न	कैफ़ियत
६५	प्रताप शेखर	ऽ o 6	
६६	जी छपना	ऽ o o ऽ	
६७	चतुरमुख	। ऽ । ऽ	
६८	मथका	ऽ o ऽ	
६९	वामथका	। । o 6	
७०	दीपकाधर	o o । । ऽ ऽ	
७१	ओल्हीन	। । ऽ	
७२	दमंके	ऽ । ऽ	
७३	वखम	o o o 6 o o 6	
७४	मल	। । । । o o	
७५	पूरन कंकाल	o o o o ऽ ।	
७६	खंड कंकाल	o o ऽ ऽ	
७७	सम कंकाल	ऽ ऽ	
७८	वखम कंकाल	। ऽ ऽ	
७९	तिलकामोद	। । o o o o	
८०	जीमहक	। । ऽ । । ऽ	

नम्बर शुमार	नाम ताल	चिह्न	कैफ़ियत
८१	राजाविद्याधर	।।ऽ००	
८२	कोकला ※	।।ऽ।ڸ	
८३	नन्दन	।००ڸ	
८४	सम	।०6	
८५	भद्रमाली	ऽ००००ऽ	
८६	श्रीकीर्ति	ऽऽ।।	
८७	कीर्ति	।ڸऽ।6	
८८	मकरन्द	००।।।	
८९	जयश्री	ऽ।ऽ।ऽ	
९०	फोरडा	6	
९१	विजयानन्द	।।ऽऽऽ	
९२	रूपक ※	।०6	

नोट १—जिन तालों पर * यह चिह्न है वह भी प्रचलित हैं परन्तु बहुत कम सुनने में आते हैं इससे इनका ब्योरेवार हाल नहीं लिखागया—

नोट २—ऽ से अर्धप्लुत—१ से अर्ध विरामलघु—४ से अर्ध विरामद्रुत है—

। = ० = द्रुत ऽ = गुरु

———*———

तीसरा अध्याय

अब उन तालों की सूची दी जाती है जो प्रचलित तो हैं परन्तु वर्तमान समय में मुख्य मुख्य संगतों और सोसाइटियों में काम में लाये जाते हैं और साधारण रूप में नहीं सुने जाते—सीखनेवालों को इन तालों की छान बीन उस समय करनी चाहिये कि जब वह इस पुस्तक के अन्तिमभाग के तालों को भली विधि समझ लें हम इस स्थान में केवल नाम और संक्षेप हाल लिखेंगे कारण यह है कि मुख्य ताल के सीखनेवालों के लिये हमको अभी बहुत कुछ लिखना है और यह ताल ऐसी बारीक रीति पर है जिनके लिये पृथक् पृथक् ऐसी पुस्तकों की आवश्यकता है—

वर्तमान समय के प्रचलित तालों का नक़्शा

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
१	ब्रह्मयोग	१८ मात्रा—||ऽ || ऽ ||| ऽ ऽ ऽ सम—ख़ाली—१—२—ख़ाली—३—४—५—ख़ाली—६—७—८—९—ख़ाली—१०—ख़ाली— ११—ख़ाली—सम +
२	गंडकी	१७ मात्रा— || ऽ ||| ऽ ऽ |||| ऽ सम—१—२—ख़ाली—३—४—५—६—ख़ाली—८—ख़ाली—९—९—११—१२—१३—ख़ाली—१३ ताल ४ ख़ाली का दौरा
३	रुद्रताल	१६ मात्रा—ऽ | ऽ || ऽऽ ||| ऽ सम—ख़ाली—१—२—ख़ाली—३—४—५—ख़ाली—६—ख़ाली—७—८—९—१०—ख़ाली—सम—
४	ब्रह्मताल	१४ मात्रा—ऽ | ऽ || ऽ ||| ऽ सम—ख़ाली—१—२—ख़ाली—३—४—५—ख़ाली ६—७—८—९—ख़ाली—

१—सम—नम्बर ताल और ख़ाली का क्रम प्रत्येक ताल के साथ लिखा गया है—

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
५	रासताल	१३ मात्रा- ऽ । ऽ ॥ ऽ ऽ ऽ सम—खाली—१—२—खाली—३—४—५—खाली—६—खाली—
६	दो बगर या दो बहार	१३ मात्रा—। ऽ ॥। ऽ ॥। ऽ सम—१—खाली—२—३—४—५—खाली—६—७—८—९—खाली +
७	शङ्करताल	यह ताल ११ मात्र का है "। ऽ ॥ ऽ ॥॥" सम—१—खाली—२—३—४—५—खाली—५—६—७—८—
८	शक्तीताल	यह ताल १० मात्रा का है ऽ । ऽ ॥। ऽ सम खा. खाली खाली ठेका—धा. धा. दे[1] किटे[2] के टे तक[3] ते[4] टेके[5] टे थूं[6] थू—
९	विष्णुताल	यह ताल ९ मात्रा का है अठारह ताल के बाद सम आता है इसमें बाराताल और ६ खाली है— सम-खाली-१-खाली—२—खाली—३—खाली—४-५-खाली-६-खाली-७—८—९—१०—११ +

२-इस लकीर से यह मतलब है कि यह मिले हुये अंक पिछके हैं-

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
१०	ख़म्सा	ख़म्सा और फ़िरदोस्त दोनों ताल अमीर-ख़ुसरो साहब की बनाई हैं कोई कोई जानकार दोनों को एक समझते हैं परन्तु यह भूल है ख़म्सा और फ़िरदोस्त में भेद अवश्य है—" ऽ । ऽ । ऽ " बंगाल में ख़म्सा को ८ मात्रा और फ़िरदोस्त को ७ मात्रा का बतलाते हैं—
११	गणेशताल	यह ताल ५ मात्रा का है—बारा ज़रब जिसमें ३ खाली और ९ भरे हैं— सम—खाली—१—२—३—खाली—४—खाली—५—६—७—८—
१२	करालमुंज	बराबर है ५ मात्रा के इस पर स्वर फांक तालके परन खूब बजते हैं और क़रीब क़रीब दोनों बराबर हैं— सम—१—खाली—२—खाली—सम—
१३	पटताल	२ मात्रा यानी एक गुरु सम खाली ठेका—धा किट धीन नेटे—

सं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
१४	सवारी	सम खाली ४ ठेका–धा धिन धिन नाधी धिन्ना धिन किड़ खाली ५ तक दिन किड़ तक ता ता धिन्ना किता धिन खाली धिन धा धी धिन्ना धिन धाड़ धिन धाड़ ७½ मात्रा–
१५	फ़िरदोस्त	यह पांच जरब का ताल है और एक खाली भी है मात्रा ७ हैं. ।।।ऽऽ–यह ताल अमीर ख़ुसरो का बनाया बतलाया जाता है–
१६	वीरपंच	८ मात्रा (ऽऽऽ।।) सम ख़ाली १ खाली २ ख़ाली ३–४ धा धा के टे तक ते टे कता गद गिन–
१७	त्योड़ा	३½ मात्रा या ७ मात्रा–कोई कोई कहते हैं दो मात्रा हैं–ताल तीन होती हैं और तीसरी पर सम है– १–धा गिड़ नग गद्दे कड़ तक ⎫ २–धा धिन्ना के टे तक गदी गिन– ⎭ ठेका
१८	आड़ा चौताला	७ मात्रा–। ऽऽऽ– सम १ ख़ाली २ खालो ३ ख़ाली सम धाग धागे धिन्ता ते टे धागे धिन्ता गदी गिन धा

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
१९	झूमरा	यह भी तिताला की तरह है ३ ज़रब बराबर फिर ख़ाली—सम दूसरे ज़रब पर होता है परन्तु कोई ७ मात्रा का बतलाते हैं— सम ३ ख़ाली तबला—धिन धा किट धिन धिन धा किट तन ता १ किट धिन धिन धा किट—
२०	धमार	कोई इसको डेढ़ मात्रा का और कोई ७ मात्राका ताल बतलाते हैं इसका सम पहिली ताल पर है—तीन ज़रब बराबर आते हैं— सम २ ३ टेका—कधे टे धाग धिन्ता
२१	सुरफांक	यह ताल ५ मात्रा का होताहै यानी " ऽ।ऽ " गुरु लघु गुरु—
२२	सूलफाख़्ता	यह ३ ज़रब और १० मात्रा का ताल है और सम की जगह पहिले ताल पर है यानी पहिली मात्रा पर ताली (सम) पांचवीं मात्रा पर ताली सातवीं मात्रा पर ताली बाद में फिर पहिली से प्रारम्भ करो—

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
२३	मुखताल	मुखताल मुक्तप्रदेशही में प्रचलित है और बहुधा चौबोलों पर बजता है यह एक बराबर वज़न का ताल है और इकताला के बराबर होता है ताल भी बराबर और एकही होतीहै-
२४	मरहटी	ताल कहरवा यदि विलम्बित लय में इस्तेमाल करें तो वह मरहटी ताल कहलाता है देखो पृष्ठ ४०
२५	क़ैद	एक ताल है-
२६	थपैया	तिताला की तरह है चाल तेज़ रहती है यानी आठ कला का फ़ासिला एक सम से दूसरे सम में रहता है-
२७	सुलफ़	तथा सम खाली १ धा धा धा किटतक दीना गे तट धा किट तक दीना-
२८	चकोर या चक	उस्ताद शादीखां वहवाले कालाकुंद मशहूर पखावजी देहली इसको पहिले तीन ताल त्योड़ा की तरह फिर दो ताल दुताला की तरह और फिर तीन चक्कर हाथ की हथेली पर दियेजावें इसके बाद फिर तीन ताल त्योड़ा और दो दुताला यानी कुल १३ ताल बताते हैं सम की जगह ११ ताल परहै-

नं० शु०	नाम ताल	संक्षेप समाचार
२९	द्रुत ताल	१६ मात्रा—सम—खाली—पहिली—दूसरी—खाली—तीसरी—चौथी—पांचवीं—खाली—छठी—खाली—सातवीं—आठवीं—नवीं—दशवीं—खाली—सम +
३०	तीर तिया	जल्द तिताला की तरह है—
३१	पंचमुखी ताल	१६ मात्रा—
३२	षटमुखी ताल	८ मात्रा—
३३	पंच ताल	१६ मात्रा—
३४	सप्त ताल	१० मात्रा—
३५	भ्रमण ताल	३५ मात्रा—
३६	अष्टमंगल ताल	५½ मात्रा का है— सम—खाली—१—२—खाली—३—४—खाली—५—६—७—हर जरब में एक मात्रा का रुक्का—

चौथा अध्याय

लयका वर्णन

लय ताल की चालको कहते हैं यदि लय स्थिर न रक्खी जावे तो गाना या बजाना फीका और अधूरा रहता है ताल की बनावट के अनुसार लय नियत की जाती है किन्तु गायन का ध्यान भी रखना पड़ता है गानविद्या के गुरुओं ने लय की कई क़िस्में नियत की हैं जिनका जानना प्रत्येक सीखनेवाले के लिये परमावश्यक है-

---

१-मध्यम लय-साधारण चाल में गाने बजाने को कहते हैं-

२-द्रुत लय-तेज़ चाल में अर्थात् साधारण चालके ½ भाग में गाया बजाया जाय-

३-विलम्बित लय-कम चाल में गाने बजाने को कहते हैं अर्थात् मध्यम लय के दुगुने भाग में ख़तम हो-

---

उपरोक्त तीन प्रकारों को पृथक् रखकर हम पांच हालतें लय की मुख्य जानकारों की बनावट में से लिखते हैं इनसे ज्ञात होता है कि लय क्या वस्तु है और उसकी चाल में कैसे भेद डाल कर गायन और ताल को सुन्दर बना सकते हैं-

१-समा-उस लय को कहते हैं जो सब जगह इकसां रहे-

२-सरोता-पहिले पतली और बाद में मोटी हो जावे-

३-पिपीलिका-आदि व अन्त में मोटी और बीच में पतली रहे-

४-गोपुछा-पहिले मोटी फिर पतली हो जावे-

५-मृदंगा-आदि अन्त में पतली और बीच में मोटी हो-

उपरोक्त पांचों प्रकारों में जहां मोटी और पतली बराबरी की गई है उससे जानकारों का अभिप्राय गुरु-लघु आदि से है जो तालके भाग कहलाते हैं अर्थात् जिस प्रकार ताल में " ऽ । ऽ " यह दशा हो तो उससे ज्ञात हो जाता है कि पहिले और पीछे मोटा है और बीच में पतला यह दशा लय की होती है–

बहुधा लोग लय को इकन, दुगुन, तिगुन, चौगुन के नामों से भी पुकारते हैं जिसका अर्थ यह है कि चाल धीरे धीरे तेज़ करते रहने से जो लय बनती जाती है वह भी अशुद्ध न हो जावें–

अन्त में लय के संकेत लिखते हैं जो बजाने और गानेवालों के लिये आवश्यकीय हैं–

लय के संकेत

१–फांग–लय के भाग कर लेते हैं और इन टुकड़ों को फांग कहते हैं–

२–सम गिरह–ताल और गाना साथ साथ प्रारंभ किया जाय तो उसको सम गिरह कहते हैं–

३–अतीत गिरह–तालके पहिले गाना प्रारम्भ करने को अतीत गिरह कहते हैं–

४–अनागत–ताल के पीछे यदि गाना प्रारम्भ हो तो वह अनागत कहलाता है–

५–विषम गिरह–यह केवल अखाड़ों में प्रचलित है अर्थात् इसमें कोई मुख्य समय नियत नहीं जहां से जब चाहा प्रारम्भ कर दिया–

६–परन गिरह–अर्थात् आरम्भ से सम यानी अन्त तक परन कहलाती है–

७-सीला-जो ताल सीधी चाल में गाया बजाया जाय-

८-आड़ी-जो ताल तिरछी दशा में हो-

९-कोआड़ी-जिस में सीधे और आड़े दोनों ताल मिले हों-

१०-टुकड़ा-जो परन से छोटा हो-

११-थाई-ताल के किसी टुकड़े को तीन चार उसी समय में गाये बजाये जितनी देर में वह टुकड़ा बजाया या गाया जाता है-

१२-डबलथाई-थाई को दुगुना या तिगुना करके बजाना या गाना इसको नुक्का भी कहते हैं-

---

ताल के संकेत

निम्न लिखित संकेत ताल के स्मरण रखने के योग्य हैं कारण कि आगे के पृष्ठों में यह काम में लाये गये हैं और जब तक यह न समझ लिये जावें तब तक कोई ताल समझ में नहीं आ सकता है-

ताल-समय के एक नियत किये हुये भाग को कहते हैं जो गाने बजाने की भिन्न भिन्न रीतियों में काम आता है-

ख़ाली-ताल को अलग गणना करने में कष्ट होता है दूसरे ताल को साफ़ तौरपर और पूर्णरीति में ज़ाहिर करने के लिये ख़ाली को भी ताल के साथ रक्खा गया है-यदि ख़ाली न हो तो ताल में दृढ़ता नहीं रह सकती-ख़ाली ताली या ज़रब के बराबर होती है-

ताली-एक हाथ से दूसरे हाथ पर ज़रब देने को ताली कहते हैं परन्तु यह भी मात्रा के हिसाब से होना चाहिये-

सम-जहां पर ताल के दौरा का अन्त होता है उसको सम कहते हैं और न्यास भी इसी को कहते हैं-

पिंड-गुरु, लघु आदि के मिलाव को पिंड कहते हैं और गुरु, लघु आदि को उसका भाग कहते हैं प्रत्येक ताल का एक पिंड होता है। जिससे उसकी मिलावट और बनावट ज्ञात हो जाती है-

पांचवां अध्याय

अब हम उन तालों को ब्योरेवार वर्णन करते हैं जिनको सर्व साधारण जन स्वीकार करते हैं और जिनका चलन प्रत्येक स्थान में पाया जाता है किन्तु अधिक गायन इन्हीं तालों पर गाई जाती हैं-

यहां केवल इतना और बतला देने की आवश्यकता है कि इन तालों में किसी किसी स्थान पर कुछ थोड़ासा भेद है परन्तु वह भेद केवल इतनाही हो सकता है जिस प्रकार एक अच्छे ढंग पर हारमोनियम बजानेवाला भिन्न भिन्न तालों और ज़मज़मों से किसी रागिनी को बजाकर पैदा कर सकता है बुनियाद एक ही होती है परन्तु उसको उत्तम जानकार कई दशाओं में दर्शाया करते हैं-

नीचे हम उन तालों का ब्योरा देते हैं कि जिनका वर्णन अगले पृष्ठों पर ब्योरेवार लिखा गया है-

(२) अद्धा (तिताला)

यह भी तिताला पिछले कहे हुये ढंगों पर है ताल बराबर हैं केवल बोलों में भेद है युक्तप्रदेश के पूर्वीय जिलों में इसका चलन बहुत है ठुमिरियों और साधारण चीज़ों पर अधिकता से बजाया जाता है यदि हम इसको पूर्वी तिताला कहें तो ठीक है—

सम २ ख़ाली १
ठेका पखावज—ता धिन्त ता धिन्त ता तिन्त ता धिन्त

(३) चलत (जल्द) तिताला

यह ताल साधारण रीतिपर ख़्याल के साथ काम में लाया जाता है इसकी भी बनावट उपरोक्त ढंग पर है पहिला और तीसरा भाग छः लघु का है—दूसरा और चौथा भाग दो दो लघु या एक गुरु के बराबर है—

सम ३ ख़ाली १
ठेका तबला—धी धी तके किता किक धिधे धिधा

(४) पंजाबी ठेका

यह भी धीमेतिताला की तरह है दुगुन आदि भी ख़ूब होती है सब ढंग पिछले नियमों के अनुसार हैं केवल बोलों में भेद है इस ताल पर ग़ज़लें अधिकता से सुनी जाती हैं—

सम ३ ख़ाली
ठेका पखावज—धा धी गा धा धा धींग धा धा तींगता तां धींगधा

(५) टप्पा

यह भी तिताला है और बिल्कुल धीमे तिताले के है केवल लय में भेद है अर्थात् इसकी लय विलम्बित कहलाती है यानी टा में होता है—तीन ज़रब बराबर और फिर खाली—सम दूसरी ज़रब यानी ताली पर आता है—

सम ३ ४ खाली १

ठेका—धिन धा धे धिन धा गे तिनता के धिन धागे

ताल क़ौवाली

यह तिताला का अर्द्ध भाग होता है अर्थात् इसमें ८ मात्रा होती हैं—ज़रब एकही होती है और एक ज़रब के बीच में सम आता है, जैसे यदि पांचवीं मात्रा पर ताली लगायें तो पहिली मात्रा पर खाली रहेगा या पहिली मात्रा पर ताली होगी तो पांचवीं मात्रा पर खाली और पीछे सम—

सम १

ठेका—धा धा धे धिन ता ता धे तिन

ताल कहरवा

इसमें भी एक ताल बराबर वजन पर आता रहता है और प्रत्येक ताल के पीछे सम आता है या पहिलेही ताल पर सम रहता है इसके दो भाग होते हैं और प्रत्येक भाग में चार लघु होते हैं—यदि इसको विलम्बित लय यानी टा में बजायें या गायें तो यह ताल मरहटी होता है जो बहुधा नौटंकी और सांगों में बजाया गाया जाता है—

सम २

ठेका—धा धी नधी नक धट

नोट—कहरवा और क़ौवाली में केवल लय का भेद है पहिले और पीछे कहे हुये भी विलम्बित टा में गाया बजाया जाता है—

(२) अद्धा (तिताला)

यह भी तिताला पिछले कहे हुये ढंगों पर है ताल बराबर हैं केवल बोलों में भेद है युक्तप्रदेश के पूर्वीय ज़िलों में इसका चलन बहुत है ठुमिरियों और साधारण चीज़ों पर अधिकता से बजाया जाता है यदि हम इसको पूर्वी तिताला कहें तो ठीक है-

सम २ ख़ाली १
ठेका पखावज-ता धिन्न ता धिन्त ता तिन्त ता धिन्त

(३) चलत (जल्द) तिताला

यह ताल साधारण रीतिपर ख़्याल के साथ काम में लाया जाता है इसकी भी बनावट उपरोक्त ढंग पर है पहिला और तीसरा भाग छः लघु का है-दूसरा और चौथा भाग दो दो लघु या एक गुरु के बराबर है-

सम ३ ख़ाली १
ठेका तबला-धी धी तके किता किक धिधे धिधा

(४) पंजाबी ठेका

यह भी धीमेतिताला की तरह है दुगुन आदि भी खूब होती है सब ढंग पिछले नियमों के अनुसार हैं केवल बोलों में भेद है इस ताल पर ग़ज़लें अधिकता से सुनी जाती हैं-

सम २ ख़ाली
ठेका पखावज-धा धी गा धा धा धींग धा धा तींगता तां धींग धा

रावर एक ताली लगाते जावो सम आता
का नहीं-

यह भी तिताला
लय में भेद है अर्थात् र केवल आधे मात्राका पिंड बतलाते हैं और
न से सबका कहना ठीक है इसके जितने
में होता है-तीन ज डालें भूल सम्भव नहीं-

ज़रब यानी ताली रा ठेके के बोलों के साथ आवश्यक है कारण
सम
इसमें साधारण हैं और सीखनेवाला सुगमता से
ठेका-धिन है-

चक्र इकताला

यह तिः
होती है-
आता है
मात्रा
पांचवें
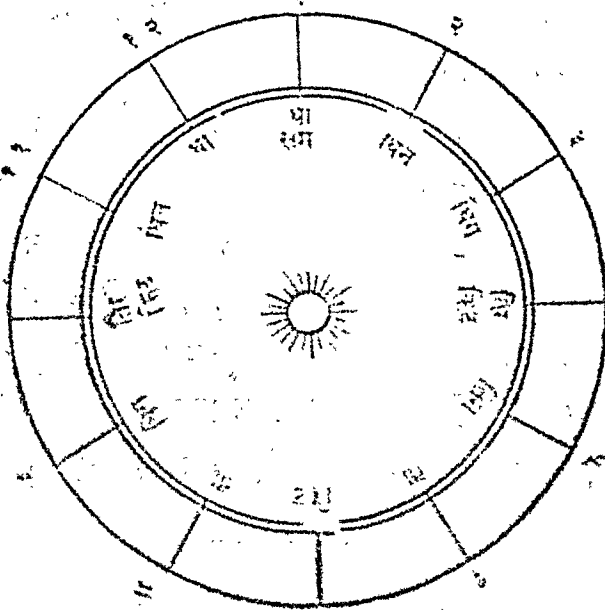
नोट-उपरोक्त चक्र का ब्योरा इस प्रकार है कि १२ मात्रा पर १२ बोल हैं और हर चार चार बोल का एक ताल है इसप्रकार तीन बराबर के ताल हुये और यही बराबर चक्र में रहेंगे-

सूचना-हर ज़रब के बीच में सम समझ कर ताल बराबर देते रहने से और किसी प्रकार का ध्यान न रखने से भी इकताला बराबर ठहरा रहेगा सीखनेवाले नोट करलें-

ताल चार (चौताला)

यह ताल इकताला के बराबर मात्रा रखता है और बोल भी एकही हैं यदि भेद है तो केवल इतनाही कि अन्त के चार बोल दो टुकड़ों में होकर फिर दो दो बोल बराबर बनकर ताल पैदा करते हैं परन्तु इसका च्योरा इस प्रकार अधिक गंभीर है-

यह ताल दो लघु और दो द्रुत से बना है-जरब बारह हैं परन्तु यदि दो गुरु और दो लघु ख़्याल करें तो ६ मात्रा का होता है अर्थात् चार कला + चार कला + दो कला + दो कला कुल कलायें द्रुत लय में तीन और मध्यम लय में छः और विलम्बित में बारह हैं-

सम का स्थान-चौथी ताल पर सम है और ज़रबात ६ मात्रा की चार हैं यानी कुल आठ हुईं-

४ १ २ ३
ठेका मृदंग-(१) ता धिंग धदधिंग धिंग गदी किड़ तक
सम ख़ाली ख़ाली १ ख़ाली २ ३
(२) धा धा धिन्ता ते टे कता किदता ते टे कता गद गिन

नोट-अन्त में कहे हुये ठेका भी न्यास से प्रारम्भ हैं-

ताल चाचर (होली)

इसको यदि हम तिताला के तुल्य कहें तो कुछ अनुचित नहीं कारण यह कि यदि इसको अधिक ठा में बजायें तो बिल्कुल तिताला हो जाता है इससे हम इसको चार या आठ मात्रा का ताल कहते हैं-

परन्तु ७ मात्रा रखकर अर्थात् विराम लघु + गुरु + विराम

लघु + गुरु पर ताल को विभाजित करते हैं जिसका संग्रह यानी पिंड ७ मात्रा का बनता है–

	सम		२		खाली		१
ठेका तबला–धा	थिन	तिग	तिन	ता	तिन	धिग	धिन

कोई कोई इसको बिल्कुल तिताला ध्यान करके गाते बजाते हैं यह भूल है तिताला पर बुरा नहीं जान पड़ता तब भी भेद अवश्य रहता है–

यह ताल साधारण है और बहुधा होलियां इस पर गाई बजाई जाती हैं परन्तु यह भी आवश्यक नहीं कि हर प्रकार की होलियां इस पर अच्छी लगें मुख्यकर आज कल्ह जिन थियेट्रिकल और चलती फिरती होलियों का चलन है–

ताल झप

कोई इसको ५ मात्रा और कोई ७ मात्रा का बतलाता है सम का स्थान दूसरे ताल पर है–इसमें भी तीन जरब होती हैं ५ मात्रा को दुगुना करने से १० मात्रा होती हैं साधारणतः इसको १० मात्रा काही ताल कहते हैं परन्तु पिंड पांच ही मात्रा का होता है–

सम	१	खाली	१	सम
ठेका–धागे	धागे	धिन	ताके	धागे	धा

ताल चंचल

यह भी झपताला के बराबर जाना जाता है और १० मात्रा का होता है इसको हम इस ढंग पर गा बजा सकते हैं कि पहिली ताली पांचवीं मात्रा पर व दूसरी ताली सातवीं पर व तीसरी नौंपर और एक पर खाली और फिर तीसरी पांचवीं आदि

ताल चार (चौताला)

यह ताल इकताला के बराबर मात्रा रखता है और बोल भी एकही हैं यदि भेद है तो केवल इतनाही कि अन्त के चार बोल दो टुकड़ों में होकर फिर दो दो बोल बराबर बनकर ताल पैदा करते हैं परन्तु इसका ब्योरा इस प्रकार अधिक गंभीर है-

यह ताल दो लघु और दो द्रुत से बना है-ज़रब बारह हैं परन्तु यदि दो गुरु और दो लघु ख़्याल करें तो ६ मात्रा का होता है अर्थात् चार कला + चार कला + दो कला + दो कला कुल कलायें द्रुत लय में तीन और मध्यम लय में छः और विलम्बित में बारह हैं-

सम का स्थान-चौथी ताल पर सम है और ज़रबात ६ मात्रा की चार हैं यानी कुल आठ हुईं-

४ १ २ ३

ठेका मृदंग-(१) ता धिंग धदधिंग धिंग गदी किड़ तक

सम ख़ाली ख़ाली १ ख़ाली २ ३

(२) धा धा धिन्ता ते टे कता किट्ता ते टे कता गद गिन

नोट-अन्त में कहे हुये ठेका भी न्यास से प्रारम्भ हैं-

ताल चाचर (होली)

इसको यदि हम तिताला के तुल्य कहें तो कुछ अनुचित नहीं कारण यह कि यदि इसको अधिक ठा में बजायें तो बिल्कुल तिताला हो जाता है इससे हम इसको चार या आठ मात्रा का ताल कहते हैं-

परन्तु ७ मात्रा रखकर अर्थात् विराम लघु + गुरु + विराम

लघु + गुरु पर ताल को विभाजित करते हैं जिसका संग्रह यानी पिंड ७ मात्रा का बनता है–

	सम		२		खाली		१
ठेका तबला–	धा	धिन	तिग	तिन	ता	तिन	धिग	धिन

कोई कोई इसको बिल्कुल तिताला ध्यान करके गाते बजाते हैं यह भूल है तिताला पर बुरा नहीं जान पड़ता तब भी भेद अवश्य रहता है–

यह ताल साधारण है और बहुधा होलियां इस पर गाई बजाई जाती हैं परन्तु यह भी आवश्यक नहीं कि हर प्रकार की होलियां इस पर अच्छी लगें मुख्यकर आज कल्ह जिन थियेट्रिकल और चलती फिरती होलियों का चलन है–

ताल झप

कोई इसको ५ मात्रा और कोई ७ मात्रा का बतलाता है सम का स्थान दूसरे ताल पर है–इसमें भी तीन जरब होती हैं ५ मात्रा को दुगुना करने से १० मात्रा होती हैं साधारणतः इसको १० मात्रा काही ताल कहते हैं परन्तु पिंड पांच ही मात्रा का होता है–

	सम	१	खाली	१	सम
ठेका–	धागे	धागे	त्रिन	ताके	धागे	धा

ताल चंचल

यह भी झपताला के बराबर माना जाता है और १० मात्रा का होता है इसको हम इस ढंग पर गा बजा सकते हैं कि पहिली ताली पांचवीं मात्रा पर व दूसरी ताली सातवीं पर व तीसरी नवींपर और एक पर खाली और फिर तीसरी पांचवीं आदि

ताल चार (चौताला)

यह ताल इकताला के बराबर मात्रा रखता है और बोल भी एकही हैं यदि भेद है तो केवल इतनाही कि अन्त के चार बोल दो टुकड़ों में होकर फिर दो दो बोल बराबर बनकर ताल पैदा करते हैं परन्तु इसका ब्योरा इस प्रकार अधिक गंभीर है—

यह ताल दो लघु और दो द्रुत से बना है—जरब बारह हैं परन्तु यदि दो गुरु और दो लघु ख़्याल करें तो ६ मात्रा का होता है अर्थात् चार कला + चार कला + दो कला + दो कला कुल कलायें द्रुत लय में तीन और मध्यम लय में छः और विलम्बित में बारह हैं—

सम का स्थान—चौथी ताल पर सम है और जरबात ६ मात्रा की चार हैं यानी कुल आठ हुई—

ठेका मृदंग—(१) ता धिंग धदधिंग धिंग गदी किड़ तक
(ऊपर: ४ १ २ ३)
सम ख़ाली ख़ाली १ ख़ाली २ २

(२) धा धा धिन्ता ते टे कता किदता ते टे कता गद गिन

नोट—अन्त में कहे हुये ठेका भी न्यास से प्रारम्भ हैं—

ताल चाचर (होली)

इसको यदि हम तिताला के तुल्य कहें तो कुछ अनुचित नहीं कारण यह कि यदि इसको अधिक ठा में बजायें तो बिल्कुल तिताला हो जाता है इससे हम इसको चार या आठ मात्रा का ताल कहते हैं—

परन्तु ७ मात्रा रखकर अर्थात् विराम लघु + गुरु + विराम

लघु + गुरु पर ताल को विभाजित करते हैं जिसका संग्रह यानी पिंड ७ मात्रा का बनता है—

सम २ खाली १

ठेका तबला—धा धिन तिग तिन ता तिन धिग धिन

कोई कोई इसको बिल्कुल तिताला ध्यान करके गाते बजाते हैं यह भूल है तिताला पर बुरा नहीं जान पड़ता तब भी भेद अवश्य रहता है—

यह ताल साधारण है और बहुधा होलियां इस पर गाई बजाई जाती हैं परन्तु यह भी आवश्यक नहीं कि हर प्रकार की होलियां इस पर अच्छी लगें मुख्यकर आज कल्ह जिन थियेट्रिकल और चलती फिरती होलियों का चलन है—

ताल झप

कोई इसको ५ मात्रा और कोई ७ मात्रा का बतलाता है सम का स्थान दूसरे ताल पर है—इसमें भी तीन जरब होती हैं ५ मात्रा को दुगुना करने से १० मात्रा होती हैं साधारणतः इसको १० मात्रा काही ताल कहते हैं परन्तु पिंड पांच ही मात्रा का होता है—

सम १ खाली १ सम

ठेका—धागे धागे त्रिन ताके धागे धा

ताल चंचल

यह भी झपताला के बराबर जाना जाता है और १० मात्रा का होता है इसको हम इस ढंग पर गा बजा सकते हैं कि पहिली ताली पांचवीं मात्रा पर व दूसरी ताली सातवीं पर व तीसरी नवींपर और एक पर खाली और फिर तीसरी पांचवीं आदि

पर ज़रब सम और ख़ाली देते जायँ बीच का वक़्फ़ा ताल का केवल एक मात्रा का दिया जा सकता है—

नोट—यदि यह ७ मात्रा का माना जावे तो सम इस प्रकार आवेगा—

१ २ ३
धा धीन धिक धीन ता तीन धिक तीन

ताल मुग़लई

यह ताल ढाई ताल के नाम से प्रख्यात है इसमें १४ मात्रा होती है जिस को ७ मात्रा भी कह सकते हैं यह इसप्रकार विभाजित है कि पहिली ताली पहिली मात्रा पर पांचवीं मात्रा पर दूसरी ताली ख़ाली नवीं पर—परन्तु यह स्मरण रखिये कि इसका सम भी ख़ाली पर आता जाता है—उपरोक्त ढंग पर ताली या ख़ाली का वक़्फ़ा दर्मियान २ मात्रा का होता है और यह ठीक है—तबलापर सम का स्थान इसप्रकार भी आता है—

सम १ २
तीन ताक धीन धीन धिग तिरकिट

ताल पश्तो

मेरे ध्यान में ताल पश्तो, ढाई, मुग़लई यह तीनों एक हैं केवल नाम का भेद है—ताल मात्रा लय आदि किसी में भेद नहीं है—

आवश्यकीय नोट

ठेका चाहे तबले का हो या मृदंग का एक ही बात है आवाज़ में भेद होता है ताल में भेद नहीं हो सकता—

इसकारण यदि तबले या पखावज के बोलों पर ताली

लगाने या सम लाने का अभ्यास किया जाय तो किसी और बात का ध्यान चित्त में नहीं लाना चाहिये—

इस पुस्तक में किसी जगह चक्र और किसी जगह पर केवल ब्योरा किया गया है मतलब दोनों से एक है सीखनेवाले को चाहिये कि चक्र बनाकर समझे और ताली देकर प्रेक्टिस करे तब भी सम के स्थान का ध्यान अवश्य रक्खे और खाली को भी एक प्रकार का ताल समझे—

हारमोनियम और तबला

हारमोनियम के ऐसे शौकीन बहुत हैं कि जो ताल का ध्यान न रखकर अपना शौक पूरा करते हैं और तबला या मृदंग (पखावज) के साथ बाजा कम बजाते हैं ऐसी दशा में रागिनी या गायन पूरा आनन्द नहीं दे सकती और गायन की यह अधूरी रीति सिवा सफलता के गान के निस्सन्देह गुण को भी नष्ट कर देती है हम कुछ ऐसे संकेत लिखते हैं जिन पर यदि सीखनेवाले कुछ समय के लिये कटिबद्ध हो जावें तो उनको पूरी सफलता हो सकती है—

१—ताल के साज़ जैसे तबला मृदंग (पखावज) जो पूरे साज़ हैं इन दोनों में से किसी एक में अभ्यास रक्खा जाय यदि यह न होसके तो और छोटे छोटे साज जैसे—ढोलक—चंग—करताल—खँजरी—मंजीरे आदि पर अभ्यास की जावे—

२—यदि किसी ताल के साज पर अभ्यास करने का समय न मिले तो कम से कम उनकी आवाज़ और चाल से अपने कानों को हिल बनाइये जिससे साथ में अलग होने के समय ज्ञात हो जावे—

३—लयका जानना परमावश्यक है और यह अनिर्लिप्त ज्ञात हो

सकता है कारण कि विना लय के गाना भी अच्छा नहीं लगता—

४—सबसे अच्छी रीति ताल के अभ्यास की यह है कि ऐसे आदमी के साथ बाजा बजाया जाय जो ताल का ध्यान रखकर गाता हो—

५—जिस गायन को सीखनेवाला अच्छी तरह बजा सकता हो उसके साथ कोई ताल का साज़ बजवाकर देखे ऐसा करने से तुरन्त दोष दूर हो सकता है—

६—बाजे पर उँगलियां ताल को बतादेती हैं और ताल के साज़ का बजानेवाला कभी कभी इससे सहायता ले लिया करता है परन्तु यह दशा बहुत कम होती है—ताल जनानेवाला सब से अच्छा साज सितार है इससे कभी भूल नहीं होती और सितार के साथ ताल के साज़ भरोसे के साथ बजाये जाते हैं इसकारण हारमोनियम के सीखनेवालों को सदैव अपनी उँगलियों के ज़रब साफ़ और ठीक वक़्फ़े पर देने चाहिये—

७—सब से अच्छी बानि पहिले वक़्फ़ा देकर हारमोनियम के सीखने की है जो वक़्फ़े का ध्यान नहीं रखते और ताल के साज़ की चाल पर भी दृष्टि नहीं रखते वह कदापि सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं और सदैव बेताले रहते हैं—

८—जो सीखनेवाला ताल तीन* से भले प्रकार जानकार हो जायगा जो इस पुस्तक में अच्छे प्रकार बतलाया गया है वह कभी बेताला नहीं हो सकता वरन उसकी सहायता से हर प्रकार के ताल समझ सकता है—

---

* देखो पृष्ठ ४७६ वा ४७७

भूमिका

महाशयो ! हारमोनियममास्टर का यह बारहवां भाग है ।

इस भाग में मेरा विचार था कि कठिन गायन जैसे ध्रुपद, आस्ताई, तिल्लाना आदि भी लिख दूँ और अलाप व बढ़त या विस्तार के साथ किसी किसी रागिनी को बजाकर दिखलाऊं परन्तु ऐसा न करसका जिसके दो कारण हैं—

एक तो यह कि हारमोनियम पर रागिनियां या राग अच्छी तरह नहीं दिखाये जासकते कुछ न कुछ कसर रह जाती है दूसरे यह कि एक एक गायन के लिये दश दश पृष्ठ होने पर भी सीखनेवालों की समझ में नहीं आ सकते—हिन्दोस्तानी गान-विद्या के लिये मैं मुख्य प्रकार के अक्षर बना रहा हूं जो अभी पूरे नहीं हुये हैं तब भी मुझ को आशा है कि अति शीघ्र सफलता होगी इस सफलता पर मैं कठिन से कठिन और पक्के से पक्के गाने अच्छे से अच्छे ढंग पर बना कर दिखला सकूंगा यह अक्षर जमजमे–तान या पल्टे इस सुन्दरता से बतलायेंगे कि जैसे सीखनेवाला अपने सामने एक हारमोनियस्ट को बैठा हुआ बजाता हुआ देख रहा है—

इस भाग में सब सुगम गाने नहीं हैं किन्तु किसी किसी स्थान पर जमजमों और उलट फेरों से और भी कठिन दिखाई देंगे परन्तु बजाने के समय यदि हाथ तैयार है तो कठिन ज्ञात न होंगे जो महाशय इस भाग से गायन निकाल कर बजा लेंगे तो आशा है कि वह हारमोनियम में योग्यता प्राप्त करने योग्य हो सकते हैं और मैं उनको एक बेहद हारमोनियस्ट कह सकता हूं —

सकता है कारण कि बिना लय के गाना भी अच्छा नहीं लगता—

४—सबसे अच्छी रीति ताल के अभ्यास की यह है कि ऐसे आदमी के साथ बाजा बजाया जाय जो ताल का ध्यान रखकर गाता हो—

५—जिस गायन को सीखनेवाला अच्छी तरह बजा सकता हो उसके साथ कोई ताल का साज़ बजवाकर देखे ऐसा करने से तुरन्त दोष दूर हो सकता है—

६—बाजे पर उँगलियां ताल को बतादेती हैं और ताल के साज़ का बजानेवाला कभी कभी इससे सहायता ले लिया करता है परन्तु यह दशा बहुत कम होती है—ताल जनानेवाला सब से अच्छा साज़ सितार है इससे कभी भूल नहीं होती और सितार के साथ ताल के साज़ भरोसे के साथ बजाये जाते हैं इसकारण हारमोनियम के सीखनेवालों को सदैव अपनी उँगलियों के ज़रब साफ़ और ठीक वक़्फ़े पर देने चाहिये—

७—सब से अच्छी बानि पहिले वक़्फ़ा देकर हारमोनियम के सीखने की है जो वक़्फ़े का ध्यान नहीं रखते और ताल के साज़ की चाल पर भी दृष्टि नहीं रखते वह कदापि सफलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं और सदैव बेताले रहते हैं—

८—जो सीखनेवाला ताल तीन* से भले प्रकार जानकार हो जायगा जो इस पुस्तक में अच्छे प्रकार बतलाया गया है वह कभी बेताला नहीं हो सकता वरन उसकी सहायता से हर प्रकार के ताल समझ सकता है—

---

* देखो पृष्ठ ४७६ वा ४७७

भूमिका

महाशयो ! हारमोनियममास्टर का यह बारहवां भाग है ।

इस भाग में मेरा विचार था कि कठिन गायन जैसे ध्रुपद, आस्ताई, तिल्लाना आदि भी लिख दूँ और अलाप व बढ़त या विस्तार के साथ किसी किसी रागिनी को बजाकर दिखलाऊं परन्तु ऐसा न करसका जिसके दो कारण हैं—

एक तो यह कि हारमोनियम पर रागिनियां या राग अच्छी तरह नहीं दिखाये जासकते कुछ न कुछ कसर रह जाती है दूसरे यह कि एक एक गायन के लिये दश दश पृष्ठ होने पर भी सीखनेवालों की समझ में नहीं आ सकते—हिन्दोस्तानी गानविद्या के लिये मैं मुख्य प्रकार के अक्षर बना रहा हूं जो अभी पूरे नहीं हुये हैं तब भी मुझ को आशा है कि अति शीघ्र सफलता होगी इस सफलता पर मैं कठिन से कठिन और पक्के से पक्के गाने अच्छे से अच्छे ढंग पर बजा कर दिखला सकूंगा यह अक्षर ज़मज़मे—तान या पल्टे इस सुन्दरता से बतलायेंगे कि जैसे सीखनेवाला अपने सामने एक हारमोनियस्ट को बैठा हुवा बजाता हुवा देख रहा है—

इस भाग में सब सुगम गाने नहीं हैं किन्तु किसी किसी स्थान पर ज़मज़मों और उलट फेरों से और भी कठिन दिखाई देंगे परन्तु बजाने के समय यदि हाथ तैयार है तो कठिन ज्ञात न होंगे जो महाशय इस भाग से गायन निकाल कर बजा लेंगे तो आशा है कि वह हारमोनियम में योग्यता प्राप्त करने योग्य हो सकते हैं और मैं उनको एक योग्य हारमोनियस्ट कह सकता हूं —

एक मुख्य बारीकी

यदि किसी गायन को हम किताब में दिये हुये स्केच के प्रतिकूल अपनी इच्छानुसार किसी स्वर से बजाना चाहें तो किस प्रकार बजा सकते हैं यह एक प्रश्न बहुधा सीखनेवालों के चित्तों में उत्पन्न हुआ करता है उसको निवारणार्थ हम यहां एक उपाय लिखते हैं जो इस कठिनता को पांच मिनट में हल कर-सकता है -

ग्राम तीन होते हैं-सा-मा-पा अर्थात् जो गायन सा को स्वर मान करके बजायेंगे वह मा को स्वर मान कर बजाने से भिन्न भिन्न पर्दोंपर बजेगी और पा को स्वर मानकर बजायें-तो वह और भी भिन्न हो जावेगी परन्तु तर्ज़, लय, ढंग बदल नहीं सकते केवल आवाज़ की तेज़ी और कमी में भेद हो जावेगा तीनों ग्राम तकही हद नहीं होनी चाहिये-

प्रत्येक गानेवाले की आवाज़ एकसी नहीं होती कोई गा को स्वर मानकर गाता है कोई धा को कोई नी को कोई रे को इस कारण बजानेवाला जो उसके आधीन रहता है मजबूरन् उसको उसकी आवाज़ के अनुसार बाजा बजाना पड़ता है इससे पुस्तक से गायन बजानेवाले शौक़ीन जो केवल दिये हुये स्केच पर भरोसा रखते हैं किसी गवैये के साथ नहीं बजा सकते परन्तु भाग्य से गवैया उसी स्वर से प्रारंभ करदे जहां से कि उनको पहिले से स्मरण है तो हारमोनियम सीखने वाला सुगमता से साथ दे सकता है परन्तु अब हम वह क्रिया बतलाना चाहते हैं जिससे सीखनेवाला किताबी गायन को जहां से चाहे

बड़ी सुगमता से बजासके इस क्रिया को काम में लाने के लिये केवल एक सप्ताह की प्रैक्टिस बहुत है—

ढंग यह है—

हम एक बोलको उदाहरण की रीतिपर दिखलाते हैं जो किसी पुस्तक में सा से प्रारम्भ होता है और इसप्रकार बजता है—

आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी +

सा ˆ × ५ नी— नी धा×२ पा— मा गा— मा पा—

अर्थात् उपरोक्त गायन का पहिला पद सा ˆ से प्रारम्भ होता है अब हम इसको यदि हारमोनियम के किसी काले या सफ़ेद पर्दे से बजाना आरम्भ करें तो बिल्कुल ऐसाही बजेगा—

एक सप्तक में ७ सफ़ेद और ५ काले पर्दे होते हैं यदि इन १२ पर्दों से प्रारम्भ करके हमने इस गायन को बजा लिया तो हमको समझना चाहिये कि हमारी सफलता में अब कोई त्रुटि नहीं रही—

आगे के पृष्ठों में हम स्वयं बजाकर बतलाते हैं जिससे ज्ञात होगा कि १२ भिन्न ठाठ किस प्रकार इकट्ठा किये गये हैं—

शौक़ीन प्रत्येक गाने को जो हारमोनियम सीरीज़ में लिखे हैं इसी प्रकार हर स्वर से बजाकर दृढ़ करलें फिर मजाल नहीं कि इन गानों और इसी ढंग के दूसरे गानों के साथ देने में आप गवैये से पीछे रहजावें—

ग्रंथकर्ता

एक मुख्य बारीकी

यदि किसी गायन को हम किताब में दिये हुये स्केच के प्रतिकूल अपनी इच्छानुसार किसी स्वर से बजाना चाहें तो किस प्रकार बजा सकते हैं यह एक प्रश्न बहुधा सीखनेवालों के चित्तों में उत्पन्न हुआ करता है उसके निवारणार्थ हम यहां एक उपाय लिखते हैं जो इस कठिनता को पांच मिनट में हल कर सकता है -

ग्राम तीन होते हैं-सा-मा-पा अर्थात् जो गायन सा को स्वर मान करके बजायेंगे वह मा को स्वर मान कर बजाने से भिन्न भिन्न पर्दोंपर बजेगी और पा को स्वर मानकर बजायें-तो वह और भी भिन्न हो जावेगी परन्तु तर्ज़, लय, ढंग बदल नहीं सकते केवल आवाज़ की तेज़ी और कमी में भेद हो जावेगा तीनों ग्राम तकही हद नहीं होनी चाहिये-

प्रत्येक गानेवाले की आवाज़ एकसी नहीं होती कोई गा को स्वर मानकर गाता है कोई धा को कोई नी को कोई रे को इस कारण बजानेवाला जो उसके आधीन रहता है मजबूरन् उसको उसकी आवाज़ के अनुसार बाजा बजाना पड़ता है इससे पुस्तक से गायन बजानेवाले शौक़ीन जो केवल दिये हुये स्केच पर भरोसा रखते हैं किसी गवैये के साथ नहीं बजा सकते परन्तु भाग्य से गवैया उसी स्वर से प्रारंभ करदे जहां से कि उनको पहिले से स्मरण है तो हारमोनियम सीखने वाला सुगमता से साथ दे सकता है परन्तु अब हम वह क्रिया बतलाना चाहते हैं जिससे सीखनेवाला किताबी गायन को जहां से चाहे

बड़ी सुगमता से बजासके इस क्रिया को काम में लाने के लिये केवल एक सप्ताह की प्रैक्टिस बहुत है—

ढंग यह है—

हम एक बोलको उदाहरण की रीतिपर दिखलाते हैं जो किसी पुस्तक में सा से प्रारम्भ होता है और इसप्रकार बजता है—

आयाकरो	इ	धर	भी	मेरी	जां	क	भी	क	भी	+
सा॑	× ५	नी—	नी	धा×२	पा—	मा	गा—	मा	पा—	

अर्थात् उपरोक्त गायन का पहिला पद सा॑ से प्रारम्भ होता है अब हम इसको यदि हारमोनियम के किसी काले या सफ़ेद पर्दे से बजाना आरम्भ करें तो बिल्कुल ऐसाही बजेगा—

एक सप्तक में ७ सफ़ेद और ५ काले पर्दे होते हैं यदि इन १२ पर्दों से प्रारम्भ करके हमने इस गायन को बजा लिया तो हमको समझना चाहिये कि हमारी सफलता में अब कोई त्रुटि नहीं रही—

आगे के पृष्ठों में हम स्वयं बजाकर बतलाते हैं जिससे ज्ञात होगा कि १२ भिन्न ठाट किस प्रकार इकट्ठा किये गये हैं—

शौक़ीन प्रत्येक गाने को जो हारमोनियम सीरीज़ में लिखे हैं इसी प्रकार हर स्वर से बजाकर दृढ़ करलें फिर मजाल नहीं कि इन गानों और इसी ढंग के दूसरे गानों के साथ देने में आप गवैये से पीछे रहजावें—

ग्रंथकर्ता
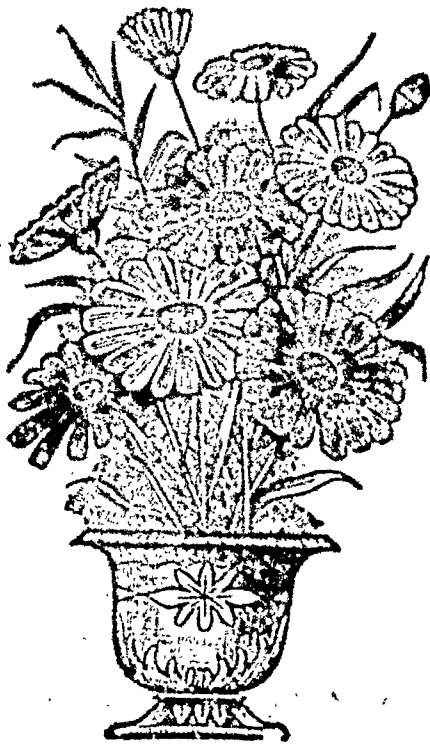
हारमोनियममास्टर
बारहवांभाग

आवश्यकीय चिह्न

सब से प्रथम निम्न लिखित चिह्न स्मरण कर लेना चाहिये—

\+ +

पहिला सप्तक—+ जैसे सा—नी आदि—

दूसरा सप्तक—कोई चिह्न नहीं है जैसे सा—रे आदि—

तीसरा सप्तक—^जैसे सा̂—नी̂ आदि—

पर्दा सफ़ेद—कोई चिह्न नहीं है जैसे सा—रे आदि—

* *

पर्दा काला—*जैसे रे—गा आदि—

ज़रब—×जिस पर्दे के आगे ज़रब (गुणा) का चिह्न हो और आगे कोई अंक हो वहां पर्दे पर उतनीही वार ठोकर देनी चाहिये जितना अंक बतलाता हो जैसे "सा × ३" अर्थात् तीन वार बराबर एक ही चाल से बजैगा—

मात्रा—इसका चिह्न विन्दु से या—इस छोटी सी लकीर से दिखलाया गया है—मात्रा एक थोड़ी सी देरी का नाम है इस का ब्योरेवार हाल हारमोनियममास्टर ग्यारहवें भाग में दिया गया है यहां केवल इतनाही बतला देना उचित है कि यह थोड़ी देरी तीन सेकेंड के बराबर होती है—

ठहराव—जिस पर्दे के आगे जितने मात्रा के चिह्न हों वहां उतनीही देर ठहरना चाहिये जैसे सा — — पा सा . . *

तेज़ी–जिस पर्दे के पहिले जितनी मात्रा हों वहां उतनाही कम ठहरना चाहिये–

नोट—कोई गायन तेज चाल में बजाई जाती हैं और कोई धीरे परन्तु इन दोनों दशाओं में उपरोक्त तेज़ी और ठहराव का ध्यान होता है–

तान या पल्टा–जहां कहीं तान या पल्टा गायन के साथ रक्खा गया है वहां लकीर या ब्रेकेट से दिखाया गया है–

ज़मज़मा–जहां ज़मज़मा बजाना बताया गया है वहां लकीर से चिह्न किया गया है परन्तु निम्न लिखित सूचनायें विचारनीय हैं–

(१) ज़मज़मा मींडको कहते हैं यह कई पर्दों पर अतिशीघ्र और लचक से बजाया जाता है एक स्वर कई बार बजजाता है परन्तु स्वरों में प्रत्यक्ष भेद नहीं होने पाता–

(२) उँगलियों में लचक पैदा करने का अभ्यास करना चाहिये कारण कि बिना लचक के ज़मज़मा नहीं दिया जा सकता–

(३) ज़मज़मा अधिक से अधिक चार उँगलियों से इस प्रकार दिया जाता है कि यदि "मा" पर्दे पर बोल कटता है तो **गा मा पा धा** चारों पर्दों पर उँगलियां लचकाओ परन्तु चार उँगलियों से ज़मज़मा लगाना बहुतही कठिन काम है और न इससे कुछ रागिनी या गायन में अच्छी से अच्छी कहलावटही आसकती है–सब से उत्तम रत्न तीन उँगलियों के ज़मज़में में है इसका ढंग यह है कि यदि "मा"पर बोल है तो **मा पा धा** पर ज़मज़मा लगाया जावे या **मा** पर अँगूठा रखकर **पा धा नी** पर लचक से ज़रब दी जाय–

दो उँगलियों से ज़मज़मा साधारण रूप से दिया जाता है

और अधिक काम में आता है इस में पास के पर्दे पर और बोल के पर्दे पर ज़मज़मा दिया जाता है–

(४) ज़मज़मा सदैव पास के पर्दों पर लगता है और उन्हीं पर्दों पर जो वादी समवादी अनवादी हों दिया जाता है–

नोट—प्रत्येक गायन के पीछे या साथ साथ नोट हैं उनको अच्छे प्रकार समझ लेना चाहिये—

एक गायन १२ स्वरों से प्रारम्भ की जाती है

सा से प्रारम्भ कीजिये— सफ़ेद पर्दे

१– आयाकरो इ घर भी मेरी जां क भी क भी *
सा×५ नी- नी धा×२ पा- मा गा- मा पा-

नी से प्रारम्भकीजिये—

२– आयाकरो इ घर भी मेरी जां क भी क भी *
नी×५ नी*- नी* धा*×२ मा*- गा रे- गा मा*-

धा से प्रारम्भ कीजिये—

३– आयाकरो इ घर भी मेरी जां क भी क भी *
धा×५ धा*- धा* मा*×२ गा गा* रे* गा* गा-

पा से प्रारम्भ कीजिये—

४– आयाकरो इ घर भी मेरी जां क भी क भी *
पा×५ मा*- मा* गा×२ रे- सा नी+ सा रे-

मा से प्रारम्भ कीजिये—

५— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
पा×५ गा- गा रे×२ सा *नी+ धा+ *नी+

भी *
सा-

गा से प्रारम्भ कीजिये—

६— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
गा×५ गा* गा* रे*×२ नी+ *नी+ धा*- *नी+

भी *
नी+

रे से प्रारम्भ कीजिये—

७— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
रे×५ रे*- रे * +नी×२ धा+ +पा +मा*- +पा

भी *
+धा—

नी * से प्रारम्भ कीजिये—

८— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
नी*×५ धा- धा पा×२ मा- गा* रे गा* मा-

धा * से प्रारम्भ कीजिये—

९— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
धा*×५ पा- पा मा×२ गा*- रे* सा रे*गा*-

मा * से प्रारम्भ कीजिये—

१०— आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
मा*×५ मा- मा गा*×२ रे*-सा +नी* सा रे*-

गा * से प्रारम्भ कीजिये—

११– आयाकरो इ / गा*×५ | धर / रे- | भी / रे | मेरी / सा×२ | जां / +नी*- | क / +धा | भी / +पा- | क / +धा | भी / +नी*- | +

रे * से प्रारम्भ कीजिये—

१२– आयाकरो इ / रे*×५ | धर / सा | भी / सा | मेरी / +नी*×२ | जां / +धा*- | क / +मा* | भी / +मा | क / +मा* | भी / +धा*- | +

इस ढंग पर अभ्यास करने से हारमोनियम के किसी स्वर और किसी सप्तक से प्रत्येक गाना प्रारम्भ हो सकता है और साथ करने में अच्छी प्रैक्टिस हो जाती है—

नोट—इस प्रकार के विषय और अच्छे ढंग म्यूज़िकगज़ट सन् १०–११ ई० के ६ नम्बरों में वहुत कुछ लिखे हुये हैं शौक़ीन अवश्य लाभ उठाकर सफलता प्राप्त करें—

नोट—म्यूज़िक गज़ट के ६ नम्बर वहुत कम तादाद में हैं परन्तु हारमोनियमसीरीज के ग्राहकों को १।।) में ग्रन्थकर्त्ता से मिल सकते हैं अनुग्राहकों को २।।) देने होंगे—

ग्रन्थकर्त्ता.

५– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
मा×५ गा- गा रे×२ सा *नी+ धा+-*नी+

भी *
सा-

गा से प्रारम्भ कीजिये—

६– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
गा×५ गा*- गा* रे*×२ नी+ *नी+ धा*-*नी+

भी *
नी+

रे से प्रारम्भ कीजिये—

७– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क
रे×५ रे*- रे * +नी×२ धा+ +पा +मा*- +पा

भी *
+धा–

नी * से प्रारम्भ कीजिये—

८– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
नी*×५ धा- धा पा×२ मा- गा* रे गा* मा-

धा * से प्रारम्भ कीजिये—

९– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
धा*×५ पा- पा मा×२ गा*- रे* सा रे*गा*-

मा * से प्रारम्भ कीजिये—

१०– आयाकरो इ धर भी मेरी जां क भी क भी *
मा*×५ मा– मा गा*×२ रे*- सा +नी* सा रे*-

गा * से प्रारम्भ कीजिये—

११-	आयाकरो इ	धर	भी	मेरी	जां	क	भी
	गा*×५	रे-	रे	सा×२	+नी*-	+धा	+पा-

क	भी	+
+धा	+नी*-	

रे * से प्रारम्भ कीजिये—

१२-	आयाकरो इ	धर	भी	मेरी	जां	क	भी
	रे*×५	सा	सा	+नी*×२	+धा*-	+मा*	+मा

क	भी	+
+मा*	+धा*-	

इस ढंग पर अभ्यास करने से हारमोनियम के किसी स्वर और किसी सप्तक से प्रत्येक गाना प्रारम्भ हो सकता है और साथ करने में अच्छी प्रैक्टिस हो जाती है—

नोट—इस प्रकार के विषय और अच्छे ढंग म्यूज़िकगज़ट सन् १०-११ ई० के ९ नम्बरों में बहुत कुछ लिखे हुये हैं शौक़ीन अवश्य लाभ उठाकर सफलता प्राप्त करें—

नोट—म्यूज़िक गज़ट के ९ नम्बर बहुत कम तादाद में हैं परन्तु हारमोनियमसीरीज़ के ग्राहकों को १।।) में ग्रन्थकर्त्ता से मिल सकते हैं अनुग्राहकों को २।।) देने होंगे—

ग्रन्थकर्त्ता

गायन

ध्वनि काफ़ी—ताल तीन—लय दर्मियानी—

ठुमरी

पिया के पास कैसे जाऊं सखीरी आली पिया बिना इक घड़ी पल छिन जिया घबरावे—मोको नींद न आवे मैं तो पिया के पास कैसे जाऊं

रैनि अँधेरी कारी बिजुरीसी चमकै घटा घूम रही बूंदन पड़त— मैं तो पिया के पास कैसे जाऊं—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

स्थायी

पियाके	पा	स	कै	से	जाऊं	स	खी	री	
गा*×३	माधा*	धा*	नी*	धा*	नी*-	धा*	नी*	सां	
आ	ली	पि	या	बि	न	ए	क	घ	ड़ी
रें*	गां*	सां	रें*	सां	गां*	सां	रें*	नी*	सां
प	ल	छि	न	जि	या	घ	ब	रा	वे
नी*	रें*	सां	नी*	धा*	गा*	रें*	सां	नी*	धा*
मो	को	नीं	द	न	आ	वे	—फिर पहिले से ब-		
पा	धा*	नी*सां	नी×	२*	मा*	मा--			

जाइये—

अन्तरा—

रैनि अन	धेरी	कारी	बिजुरी सी चमके	घ	टा
धा*×३	नी*×२	रे^*×२	^गा*×७	सा^	रे^*

घू	उ	म	र	ही	बू	उँ	द	न
^गा*	मा^	^गा*	रे^*	सा^	सा^	रे^*	सा^	नी*

प	ड़	त	मैं तो पियाके
धा*	मा*	मा	गा*×५

—आगे उपरोक्त ढंग पर बजाइये—

गायन

ध्वनि मल्हार—ताल तीन—लय दर्मियानी—वक्त रात—

ठुमरी

बैयां न पकड़ मोरी मुरकी कलाई रे—बैयां .... +
कर पकड़त मोरी चोली मसकाई रे—
बैयां न पकड़ .... ×
अरज बरज मोरी एक न मानी—हैदर पिया की मैं तो देत दुहाई रे
बैयां न पकड़ .... +

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	मा	पा	धा	०	सा^	रे^	गा^	मा^	पा^	०	०

बै	यां	न	प	क	ड़	मो	री	मु	रकी	क
पा	धा	पा	नी*	धा	पा	मा	गा	मा	पा×२	धा

ला ई रे †
नी* सा नी*-

एक बार फिर पहिले से बजाइये—

क र पक ड़ त मो री चो ली म स
सा मा गा ×२ मा पा मा गा * रे सा पा धा
का ई रे
नी* सा नी*-- +

अरजब रज मोरी ए कन मा नी है द
सा ×४ रे ×२ गा ×२ मा मा ×२ गा - मा - सा मा
र पियाकी मैं तो दे त दु हा ई रे
गा मा ×३ गा * रे सा - पा धा नी* सा नी*-- +

फिर पहिले से बजाइये—

---

† इस स्थान पर धा यदि छूटता हुआ नी * के साथ अन्त में बजेगा तो और भी अच्छा ज्ञात होगा परन्तु आवश्यक नहीं है—

गायन

ध्वनिदेश—ताल तीन—लय दर्मियानी—वक्र रात—

ठुमरी

अचानक घेरी डगर मोरी आन।
ऐसो चंचल चपल छलबलिया कान॥
अचानक घेरी……… ….+

दधि माखनको चोर कन्हैया—नितउठि रार मचाये मेरी दैया—
नित उठि मोसे मांगे जोबना दान॥

अचानक घेरी… ……..+

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	गा	०	०	०	नी	सां	रें	०	मां	०	०	०

स्थायी							
	अ	चा	न	क	घे	री	ड
	धा*	धा*नी*नी—	नी*	धा*	धा*मा*गा	रे*×२	
					ज़म्ज़मा		
	गर	मोरी	आ	न	एकसाथ		
	गा*×२	मा*×२	धा*-	मा*			
	फिर पहिले से बजाइये—						

झपताल	ऐसो चन चल च पल छ ल व
	मा*×२ धा* सा^×२ सा^ रे^*×२ सा^ रे^* गा^*
	लि या का आ न
	रे^* नी— नी* धा* धा*

फिर पहिले से बजाइये—

२ दूध मा खनको चो र क न्है या

धा*×२ नी*— रे^×३ ^गा*— ^गा* मा^ रे^— ^गा*

नितउठि रा र म चाये मो री दै

रे^×४ ^गा*— रे^ ^गा* ^मा— ^गा*— रे^* सा

या नि त उ ठि मो से मां गे

नी*— नी* मा^ ^गा* मा^ ^रे* ^गा* सा^* रे^*

जो ब ना दा न

नी* ^सा धा* नी*— धा*

फिर पहिले से बजाइये—

नोट—यह ठुमरी बहुत अच्छी ज्ञात होगी परन्तु तब कि जब ठा की लय से प्रारम्भ की जावे—

नी और नी* दोनों काम में आते हैं इसका ध्यान रहे—

गायन

रामनाटक से

लक्ष्मण जीके शक्ती लगती है और रामचन्द्रजी विलाप करते हैं—

दादरा

अँखियां खोलियोरे—मुखसे बोलियोरे
तेरा भ्रातरहा शिरमार ———————— अँखियां........+

१—मम हितलागि सहे बनरोशो तजे पिता औ मात
अब मुझसे मुखमोड़के चला अकेलाभ्रात—अँखियां....+

२—जो मैं ऐसा जानता बन्धु विछोहा होय
पिता वचन नहिं मानता चहु समझाता कोय—अँखियां....+
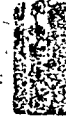
३—सुत दारा औ लक्ष्मी वार वार है जाय
ऐसा भ्राता नहिं मिले लाखों करो उपाय—अँखियां खोलियोरे ....+

४—क्या उत्तर दूं जायकर पूछे तेरी मात
हा ! नारी के कारण चला हाथ से भ्रात—अँखियां........+

दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
नी	

अखियां	खो	लि	यो	रे	(ऐ) †
रे*×२	*गा-	*धा	*पा-	मा-	*गा रे * +

दूसरा टुकड़ा "मुख से बोलियोरे" इसीप्रकार बजेगा—

और तीसरा टुकड़ा इसी प्रकार बजेगा—

तेरा	श्रा	त	र	हा	शि	र	मा	श्रा
रे*×२	*गा मा	*मा	*धा	*रे-	नी	*नी	*धा	-मा*

श्रा	र
-मा	गा*-

फिर पहिले से बजाइये—

स्थायी के तीनों टुकड़े बराबर एक साथ बजेंगे और प्रत्येक अगले अन्तरे के पीछे बजाते रहना मानो समां को स्थापित रखना है वक्फ़ का ध्यान ज़रूरी है नी दोनों प्रकार से काम में लाई गई हैं—

अन्तरा—

ममहितलागिस	हे	बन	रो	शो	तजे पिता
* मा×७	*धा-	*धा×२	*धा नी*	नी--	नी×४

श्रा	और	मात
नी*	नी*धा*	धा*--

अब मुझसे	मु	ख	मो	ड़	के	चला
रे̂*×३	रे̂*	नी	नी नी*-	नी*	धा*-	धा*२

---

† —यह छूटता हुवा और अधिक है जो बारबार बजाने के लिये एक दूसरे दौरे को मिलाता है, और बहुत अच्छा जान पड़ता है परन्तु जल्द बजाकर फिर प्रारम्भ कर देना चाहिये—

अके	ल	अ	आ	त†
नी*×२–	धा*	मा*	मा---	गा*

फिर पहिले से वजाइये—

† बोल तो मा परही खत्म होगया है परन्तु साथ मिलाने के लिये यदि त को गा* पर अदा किया जाय और जल्दही फिर प्रारम्भ कर दिया जाय तो ठीक है–मा पर अधिक ठहराव है—

गायन

ध्वनि कौसिया–ताल तीन–लय दर्मियानी–वक्त रात–

ठुमरी

जल भरन जात जमुना के घाट–इक ठाट से नाज़ुक कामिनियां
–जल भरन..........................+
नाक में उनके बेसर सोहै ज़ुल्फें काली नागिनियां
जल भरन ....+

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	०	०	सां	०	०	०	०	०	०

	ज	ल	भ	र	न	जात	जमु	ना
स्थायी–	गा*	मा	गा*	धा*	पा	पा×४	पा×२	पा धा*नी*

के घा	ट	इक	ठा	ट से	ना	ज़ुक	का
नी*×२–	धा*	पा×२	धा*	नी*×२	नी*सां	रे*×२--	सां–

मि नि या न †

नी* धा* सां नी*धा*पा— ...मा

ज़मज़मा

फिर पहिले से बजाइये—

अन्तरा— न अ क में उनके बेसर सो

धा* नी* धा* रे* सां×३— रे*×३ सां—

है ये ज़ु ल फ़ैं का ली ना गि नि

नी*— धा*पा— पा धा* नी* नी*सां रे*— सां नी* धा*

या न

सां नी*धा* पा-- मा

ज़मज़मा

फिर पहिले से बजाइये—

नोट—दो जगह मुख्य ज़मज़मा है यहां पर उँगलियां सब पर्दों पर तीनबार थर थरानी चाहियें—

† यह अन्त में छूटता हुआ लगता है यदि स्थायी को दो तीन वार बजाना चाहो तो इसको काम में लाना चाहिये नहीं तो नहीं—

गायन

ग़ज़ल वासफ़

बोले सुनकर वह बेकसी दिलकी । क्या ख़बर है मुझे किसी दिलकी
सहल समझे थे दिल्लगी दिलकी । इक क़यामत हुई हँसी दिलकी
उठते जोबन किसी को देखलिया । है जो ज़ोरों पै सरकशी दिलकी
हम उसी दिन से हैं मुसीबत में । बात जिस दिन से मान ली दिलकी
बज़्म दुश्मन में मुझको ले पहुँची । क्या बुरी होती है लगी दिलकी
ऐ बुतो हमने तुमको देखलिया । बस यहीं से है बंदगी दिलकी
बस है ग़मख़्वाह एक तो ऐ दर्द । तुझपै कुर्बान बेकसी दिलकी
मिस्ल ग़ुंचा के हो गये पज़मुर्दा । देखना तुम न बेकली दिलकी
पानी हो हो के बहगई वासफ़ । आबरू सब रही सही दिलकी

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक							
०	०	०	मा	०	०	०	नी	०	०	०	०	०	०	०

स्थायी

बोले सुन क ये ये र वह बे क सी
मा×३— मा मा* मा मा* गा* मा— मा* धा*—
ये दिल की ये
नी* धा*मा* मा--- गा* रे*+
ज़मज़मा

अन्तरा	सहल समझे	ये	थे	दिल	ल	गी
	रे ※^×४	---नी	नी※	धा※मा※मा - (ज़मज़मा)	मा※	धा※-
	ये	दिल	की	+		
	नी※	धा※ मा※ (ज़मज़मा)	मा -			

नोट—आगे इस ग़ज़ल के पहिले के पद अन्तरा और दूसरे पद स्थायी के वज़न पर उपरोक्त ढंग पर बजेंगे—

गायन

ग़ज़ल आसफ़-हुज़ूर निज़ाम दक्षिण मरहूम

इंसाफ़ करेगा कोई क्या इसके सिवा और
मेरा है ख़ुदा और न तेरा है ख़ुदा और

तहरीर मुहब्बत ने किया उनको ख़फ़ा और
तदबीर करी और थी क़िस्मत से हुवा और

बचने का नहीं आपका बीमार मुहब्बत
दो चार दिन उसके लिये करते हैं दवा और

गो बात की ताक़त नहीं मुझमें शबे फ़ुरक़त
करता हूं जिगर थाम के मैं अब के दुवा और

दो तरह के पहलू हैं समझ में नहीं आते—
कहते हैं वह हरबात पै कर हम से वफ़ा और

आसफ़ तो कभी क़ौल से अपने न फिरैगा
यह बात तुम्हारी है कहा और किया और

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

स्थायी							
	इन	सा	फ़करे	ये	गा	आ	कोई
	रे*गा*	रे*गा*मा	मा×रे	मा*	गा*	मा	गा*रे*
	क्या	इस		के	मि	वा	और
	रे*गा*	रे*गा*	मामा*	मा*	मा*	मा*मागा*	मा-- +

अन्तरा	तहरीर	मुह	ब्बत	ने	कि	या	उन
	नी*×३	नी*×२	धा*नी*	धा*	मा*	मा-	मा*-
	को	ख	फ़ा	आ	और		
	धा*	नी*	धा*	मा*	मा-- *		

नोट—इस ग़ज़ल के पहिले पद अन्तरा और दूसरे पद स्थायी के वज़न पर उपरोक्त ढंग पर बजैंगे—

गायन ०

दादरा सोरठ

श्यामरे मोरी बैयां गहोना
बैयां गहोना मोरी बैयां गहोना
हूं मैंतो नार पराये घरकी
मेरे भरोसे गोपाल रहोना
श्यामरे........................... +

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

स्थायी

शा म रे मोरी

सा- रे * सारे*गा*रे*सा + नी* धा + *- + धा*×२

जमज़मा

वै यां ग हो ना वैंयांग हो

+ नी* रे*- गा* धा*मा*मा गा*.... पा×३ धा*

ज़मज़मा

ना मो री वै यां ग हो

नी* धा* मा* मा गा रे * रे * गा *मामा*धा*मा*मा

ज़मज़मा ज़मज़मा

ना
गा*- *फिर पहिले से बजाओ—

अन्तरा

हूं मैं तो नार प राये घ र की मेरे

पा×३ धा*×२ धा* पा×२ पा धा* नी*- धा*×२

भ रोसे गो पा ल र हो

धा* सा*×२ मा*मागा*रे* रे*गा* मामा*धामा*मा

जमज़मा ज़मज़मा

ना
गा*- *फिर पहिले से बजाओ—

गायन

पद—कबीरदास

मुखड़ा क्या देखो दर्पन में—तेरे दया धरम नहिं मन में
काग़ज़ की तो नाव बनाई छोड़ दई जल थल में
धर्मी धर्मी पार उतर गये पापी डूबे जल थल में
मुखड़ा............+
पेच मार के पगड़ी रे बांधी तेल डाला ज़ुलफ़न में
यही बदन पर घास उगैगी गौवैं चरेंगी बन में
मुखड़ा............+
हाथ कड़े तेरे कान में मुरकी उतार लेवे पल में
कटी काया का नाहिं भरोसा डेरा दिया जंगल में
मुखड़ा............+
दर्पन लेके सूरत देखी फूल गया फूलन में
कहत कबीरा सुनो भई साधो रहगई मन की मन में
मुखड़ा............+

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	०	नी	०	०	०	०	०	०	०

मुख ड़ा क्या दे खो दर पन
रे*×र रे*गा* र*गा*मा मा- मा मा* मा गा* मा गा*

में
रे* +

तेरे द या धरम न हिं मन में
धा*×२ धा*×२- नी*×२ धा* मा* मा मागा*

फिर पहिले से बजाओ—

कागज़ की तो नाव बनाई छोड़ दई जल
मा*×४ धा*×४- मा*धा*नी* नी*×२ धा*मा*

थल में *
मा*धा*नी* धा*-

धर्मी धर्मी पा र उतर गये पा पी डू बे जल
रे*×४ नी- नी* धा*×४ धा*- नी* धा* मा* मा

में *
मा गा*

फिर पहिले से बजाइये—

गायन

पद—तमाशा गोपीचन्द

दुनिया सारी समझो झूठी झूठा जग संसार है ।
काया झूठी माया झूठी झूठा जग संसार है ॥
माल खज़ाना धन दौलत जोबन और जवानी है ।
जावे इतको जावे उतको जैसे जलकी धार है ॥
जल में थल में घर जंगल में दिल बादल में कल्ल बेकल में ।
दुनिया सारी समझो झूठी झूठा जग संसार है ॥

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	पा	०	०

टेक—दुनिया सा री सम झो झू
सा × ३ +नी*सा रे*गा* गा*रे सा+नी*

ठी झूठा जग सन सा र है
+धा* मा ×२ मागा* गा*रे* सा रे* गा*—

दूसरा पद इसी प्रकार बजेगा—

माल ख ज़ा ना धन दौलत जोबन औ र ज वा
गा*×२ गा* मा— पा धा*×४ पा×२ पा मा पा धा*

नी † है जावे इत को जा वे
पा मा धा*पा मा गा*— मा*×३ मा*मा गा*मा मा गा*

ज़मज़मा

† जल्द बजेगा—

उतको	जैसे	जल	की	धार	र	है
गा*×३	* मा×२	मा गा*	गा*रे*	सा-	रे*	गा*--

इसके बाद फिर टेक बजाइये—

आगे पहिला पद अन्तरे पर और दूसरा दूसरी स्थायी के ढंग पर रहेगा—

गायन

तर्ज़ थियेट्रिकल

सैयां मुझे हाथों के कंगन बनादे
कंगन बनादे मुझे पहुँची बना दे—सैयां... ....*
जो तू कहेगी वही सुनूंगा—लाऊंगा वही मेरी जान
(चलो तेरी क़सम) लाऊंगा वही मेरी जान
(देखा जावो जावो) लादूंगा वही मेरी जान
(तोबा तोवा तोबा देखो छोड़ो टूटा मेरा हाथ)
(उई मरगई—हाय अरे बापरे)

वाले भी बनवादूं तुझे बुंदेभी बनवादूं—तुझे हँसली
भी बनवादूं—तुझे कड़े छड़े (दोनों तरह दाद हां)
ऐसी चलूं ऐसी फिरूं—फिर न करूं तकरार (सच)
(सब कुछ है तैयार)—(एक बोसा दिला दे)
सैयां......................+

दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
ग म ध नी	रे म
० ० ० ० ० ० ० सां	० ० ० ० ० ०

सै	यां	मु	झे	हा	थों	के	कन	गन
गा*—	मा—	धा*	नी*	रें *—	सां —	नी*	धा*—	मा*मा

ब ना दे कंगन बना दे मु झे पहुँ ची ब
गा* मा×२– रे^*×४ सा^नी* सा^ रे^* ^गा*–रे^*
ना दे
सा^ नी*

फिर पहिले से बजाइये–

जो तू कहेगी वह ही सु नूं गा
रे^*×४ ^गा*– रे^* सा^ नी* सा नी* धा*–
लादूंगा वह ही मे री जान चलो तेरी क़सम
रे^*×३ सा^नी* धा* नी* सा^– – रे^*×६

फिर " लादूंगा.... " बजावो–

इसके पीछे " तोबा तोबा....बापरे " जबानी है–

वाले भी बनवादूं तु झे बुन्दे भी बनवादूं तु झे
रे^*×६ ^गा* रे^* सा×६ रे^* सा
हसली भी बनवादूं तु झे कड़े छड़े दो नों तरह
नी*×६ सा नी* धा*×४ नी* धा* पा×२
दाद
धा*–

हां ऐ सी च लूं ऐ सी च लूं
रे^* रे^* ^गा*– सा रे^*– नी* सा– धा* नी*–
फिर न क रूं त क रार सच
रे^*×२ रे^* रे^*सा नी*धा* धा* नी* सा— रे^*

फिर पहिले से बजाइये–

गायन

तर्ज़ थियेट्रिकल

हाय सैयां पडूं मैं तोरे पैयां सतावो काहे मैंका—
पिया पधारे साजन पै जाऊं वारी—मोहिं विरहा की मारी क्यों कटारी—
कटारी मोरे सैयां—क्यों मारी मोरे सैयां—
कलबलियां तलमलियां वेकलियां—हो रहियां—
हाय सैयां पडूं मैं तोरे पैयां सतावो काहे मैंका—
विरहा की मारी मैं तो रार करूंगी रे—कैसे निठुर तुम हाय—
मोहिं काहे सताये—मोहिं काहे जराये—
जी जराये—कलपाये—डरपाये—तरसाये—
हाय सैयां पडूं मैं तोरे पैयां सतावो काहे मैंका—

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

हा य ए सै यां प डूं मैं तो
मा नी* नी*धा* मा*मा गा*— गा* मा धा* धा*नी*

रे पै ई ई ई यां स ता वो
नी*धा* मा* मा गा *रे* सा +नी*— +नी* सा गा*-

का है मैं का
गा* मा मा *धा *नी* नी*धा* मा * मा गा* मा—

पिया पिया रे सा जन पै जा ऊं
गा * × २ मा धा *— नी * र्सा × २ नी * धा *

वारी — " मोहिं विरहा ...कटारी " +
नी * × ३

इसी तरह पर बजेगा—

कटारी मो रे सैयां " क्यों मारी.... " +
र्सा ×३ नी * धा * नी * × २—

इसी तरह बजेगा—

कल वलि यां तल मलि यां
नी * र्सा र्सा नी * धा *— धा * नी * नी * धा * मा *—

बे कलि यां हो रहि यां
मा * धा * धा * मा * मा— मा मा * मा * मा गा * —

फिर पहिले से बजाइये—

बिर हा की ए मा री मैं तो रा
मा मा* मा* मा* मा गा*मा मा गा* रे*सा +नी*— सा—

र क रूं गी रे
गा* गा*मामा*धा*नी* नी*धा*मा*गा* मा—

कै से नि ठुर तुम हाय मो हिं का
मा नी* नी* धा*×२ धा*मा* मा—— धा*नी* र्सा

जमूज़मा

आ हे स ताये " मोहिंकाहे...." +
नी* धा* मा* मा—

इसी तरह बजेगा—

जी जलाये क त पाये ड र पाये त र
नी*×३– सां नी* धा*– नी* धा* मा*– धा* मा*

साये
मा–

फिर पहिले से बजाइये—

भूमिका

प्रेमियो ! यह पुस्तक हारमोनियमसीरीज़ का १२वां भाग है। इसमें कुछ कठिन ढंगों का वर्णन है परन्तु सुगम रीतों का ध्यान रक्खा गया है और ज़मज़मा या तान या पल्टे के मिलाव में बड़ी सावधानी से काम लिया गया है यदि सीखनेवाला विना ज़मज़मे के गायन बजाना चाहे तो वह भी हताश नहीं रह सकता है कारण यह है कि स्केच बड़ी सावधानी से खींचा गया है—

कुल गायन पृथक् पृथक और वर्तमान समय के ढंग पर बजाकर दिखाई गई हैं यद्यपि संग्रह मेरा नहीं है परन्तु यह अवश्य कहा जायगा कि सबके चित्तों के अनुसार और अलभ्य है—

ज़मज़मा—जहां ज़मज़मा बजाना बताया गया है वहां लकीर से चिह्न किया गया है परन्तु निम्नांकित सूचनावों पर ध्यान रखना चाहिये—

१—ज़मज़मा मींड को कहते हैं यह कई पर्दों पर बहुत जल्द और लचकदार उँगली से बजाया जाता है एक पर्दा कईबार बजजाता है परन्तु स्वरों में ज़ाहिरा भेद नहीं होने पाता—

२—उँगलियों में लचक पैदा करने का अभ्यास करना चाहिये कारण कि विना लचक के ज़मज़मा नहीं दिया जासकता—

३—ज़मज़मा अधिक से अधिक चार उँगलियों से इस प्रकार दिया जाता है कि यदि "मा" पर्दे पर बोल करता है तो गा मा पा धा चारों पर्दों पर उँगलियां लचकावो या रे गा मा पा पर उँगलियां लचकावो परन्तु चार उँगलियों से ज़मज़मा लगाना बहुतही कठिन काम है और न इससे कुछ रागिनी या गायन में अच्छी से अच्छी कहलावटही आसकती है सबसे उत्तम

तीन उँगलियों का ज़मज़मा है इसका ढंग यह है कि यदि "मा" पर बोल है तो मा पा धा पर ज़मज़मा लगाया जावे या मा पर अँगूठा रखकर पा धा नी पर लचक से जरब दी जावे-

दो उँगलियों से ज़मज़मा साधारण रूप से दिया जाता है और अधिक काम में आता है इसमें निकट के पर्दे पर और बोल के पर्दे पर ज़मज़मा दिया जाता है-

४-ज़मज़मा सदैव पास के उन्हीं पर्दों पर दिया जाता है कि जो बादी समबादी अनबादी हों-

नोट-हर गायन के पीछे या साथ साथ नोट लिखे हैं उनको भली विधि समझ लेना चाहिये-

ग्रंथकर्ता

हारमोनियममास्टर
तेरहवांभाग

गायन
तर्ज़ अंगरेज़ी

कुदरत खुदा से चारसू बहार
बाग़ में हैं नग़मयेज़न बुलबुलैं हज़ार बुलबुलैं हज़ार
तेरी रहमतों का किससे होसके शुमार
कर मदद ऐ किर्दगार करदे बेड़ा पार करदे बेड़ा पार
खालिक मालिक हर दूसरा बन्दे हैं तेरे तू है रहेनुमा
सर को झुका–दोनों हाथ उठा–करते सदा तेरी तू ऐ रहेनुमा
कुदरत खुदा से चारसू बहार

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
	गा		धा	नी			रे	गा					
सा	०	०	मा	पा	०	०	सा	०	०	०	०	०	०

कुद रत खु दा से चा र सू ब हार +
पा धा*–पा धा*–नी* धा*– प मा गा* मा सा–––

बाग़में हैं नग़मये ज़न बुल बुलैं ह ज़ार बुल बु
धा*×४– नी*×२ धा*– पा मा×२ नी* धा*– पा मा

लैं ह ज़ार +
गा* मा सा–

नोट—दूसरा पद भी उपरोक्त ढंगपर बजेगा—लय दर्मियानी रक्खो अथवा बहुत धीरा—आगे का टुकड़ा कुछेक जल्द बजेगा—

खा लिकमालिकहर दू स रा बन्दे हैं तेरे तू ऐ

धा* साॅ×६ रे* साॅ नी*-- नी*×६ धा*

रहे नु मा सर को भु का दोनों

साॅ नी* धा*-- गाॅ* रेॅ * साॅ नी*-- नी*×२

हाथ उ ठा कर ते स दा तेरी तू ऐ रहे नु

साॅ×२ नी* धा*- नी* धा* पा मा मा×३ गा* पा मा

मा
—— +
गा*--

गायन

गज़ल

मदफ़न है हसरतों का हिन्दोसतां हमारा
 गुलचीं ने हाय लूटा यह गुलसितां हमारा
इकदिन रहे तरक़ी में हमभी रहेनुमा थे
 अबलोग पूछते हैं नामो निशां हमारा
यूनान व मिस्र व रूमां इंगलैंड गाल जर्मन
 शागिर्द यक ज़माना में था जहां हमारा
दुनिया में हो रहा था भारतवरस का चर्चा
 सबकी ज़बान पर था लुत्फ़े बयां हमारा
इल्मे अदब में कामिल और हिन्दसे के मूजिद
 था फ़लसफ़ा में यकता हर नुक़्तदां हमारा
गौतम वियास. भीषम थे नामवर यहीं के

अर्जुन सा तीर अफ़गन था इक जवां हमारा
लीलावती अहल्या अस्मत मआब सीता
इन देवियों से घर था रश्के जिनां हमारा
चर्खे कुहन ने लेकिन हम पर वह ज़ुल्म ढाये
मोनिस रहा न कोई ऐ मेहरबां हमारा
रौनक़ चमन की सारी फ़स्ले खिज़ां ने लूटी
वीरान होगया है सब गुलसितां हमारा
हसरतज़दों के नाले दिलको जला रहे हैं
दोज़ख़ बना हुवा है जिन्नत निशां हमारा
ख़ाक उड़रही है हरसू गुलख़न बना है गुलशन
ज़ाग़ो ज़ग़न का मस्कन है आशियां हमारा
अफ़लास व क़हेत व ताऊं ने हाय मारडाला
फ़ाक़ों के मारे तन है अब नीमजां हमारा
बेबाकी ज़ारियों से नालों से बेकसों के
मातम कदा बना है हिन्दोसतां हमारा
ऐ अहेल हिन्द उट्ठो हालत ज़रा सँभालो
नक़्शा हुवा दिगरगूं है बेगुमां हमारा
राहत की गर तलब है सब इत्तिफ़ाक़ करलो
छोड़ो निफ़ाक़ इसमें होगा ज़ियां हमारा
सहराय ग़म में बरसों से हम भटक रहे हैं
मंज़िल पै पहुँचे या रब अब कारवां हमारा
अपनी यह आरज़ू है मिहनत लगे ठिकाने
आफ़तसे रक्खे ऐमन वह राज़दां हमारा

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
				न	नी		रे	गा		ध	नी		
०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	ष	०	०	

स्थायी—

मदफ़न है हस र तों का आ आ आ
धा*×२- मा*×२ मा गा रे*गा*मा *गा रे* सा +नी*
हिन दो स तां ह मा आ रा +
सा- रे*- सा +नी*- +धा* +*धा+नी*सा- +नी* +धा*--

अन्तरा—

इकदिन र हे य त र की में ह म
धा*×२- पा मा गा* मा पा धा*नी* धा*- पा पा मा
भीर हे नु मा थे +
मा×२ गा* गा* पा मा- गा*--

नोट—इस ग़ज़ल के पहिले मिसरे अन्तरे पर और दूसरे मिसरे स्थायी के ढंगपर बजेंगे परन्तु हरबार स्थायी के पीछे नीचे का टुकड़ा भी बजाया जावे तो बहुतही गुणकारी और आनन्द-मय रहेगा—

२—गायन को ज़ोरदार और दर्द भरी हुई आवाज़ में गाना चाहिये और बहुत धीमी चाल में रहना चाहिये-ग़ज़ल के प्रारम्भ करतेही यानी "मदफ़न" कहतेही रुक रुक कर और संतोष के साथ उँगलियां चलानी चाहियें—

टुकड़ा—(स्थायी दोबारा)—

अजी	म	द	फ़न	है	हस	र	तों	का	आ	आ	आ
रे*×रसा	रे*	गा*-	मा	धा*-	मा*	मा	गा*	रे*	सा+नी*		

हिन	दो	स	तान	ह	मा	आ	रा
सा-	रे*-	सा	+नी*	+धा*	+नी*सा	+नी*	+धा*-

गायन

दादरा खमसा

प्रीति में तुमरे प्रीतम प्यारे जियरा निकसो जावत है—
तन जोग रमाऊं बन बन डोलूं काहे पिया तरसावत है

टुकड़ा—
कहूं मैं किससे कि किस दिलरुबा ने लूटलिया
निगाह ने लूटलिया ज़ुल्फ़ दुता ने लूटलिया
बताऊं किस को कि किस महलक़ा ने लूटलिया
क़सम खुदा की तुम्हारी अदा ने लूटलिया
अब लीजो खबरिया मोरे पिया नहीं जानभी तन से जावत है—
प्रीतिमें............................... ÷

टुकड़ा—
गिला मैं किससे करूं तेरी बेवफ़ाई का
खिताब खल्क़ में है तुझको पुर जफ़ाई का
अगर तू बन्दा है दावा न कर खुदाई का
दिखादे शक्ल कि यारे इन्हें जुदाई का
अब आनपड़ी हूं तुमरे द्वारे काहे मोहिं तरसावत है—
प्रीतिमें........................ +

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
					गा		रे	गा		म	ध	नी	
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०
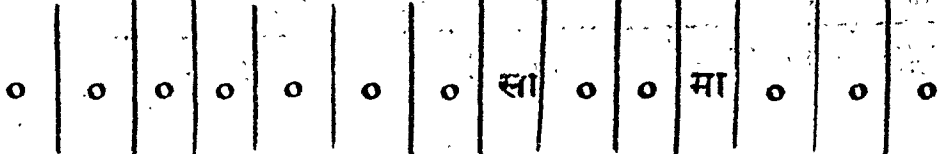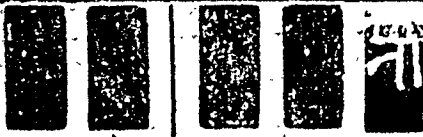
प्री ति में तु म रे प्री तम प्या रे

मा- मा गा रे* सा +नी*- सा गा*×२ गा*मामा* मा

य जि य रा निक सो जा व त है

मा नी धा* मा* मा गा*- *गामामा* मा गा* रे*--

अन्तरा या चौक जो जल्द चाल में बजेगा } क हूं मैं किस से कि कि

रे* नी* धा* नी* धा* मा* मा*

स दिलरु बाने लू ट लिया

धा* मा×२ गा ×२ मा- गा* रे*×२-

दूसरा और चौथा पद भी इसी प्रकार बजाइये और तीसरा भी इसी प्रकारसे बजेगा--

ब ताऊं किसको कि महे लकाने लूट लि या

गा मा×२ धा×४ मा धा*×३ नी* नी* धा*-

इसके पश्चात् चौथा पद पहिले पद के अनुसार बजाकर आगे स्थायी को टुकड़ा सहित अथवा टुकड़ा रहित बजाइये--

---

नोट—यदि इसको फिर दुबारा बजावो तो नीचे लिखे अधिक स्वर भी काम में लावो परन्तु हाथ शीघ्र चलकर अन्त के स्वरपर रुक जाये और फिर वहां से नियमानुसार गाना आरम्भ हो—यह स्थायी धीमी चाल में रहे—

रे*गा*मा मा*फिरपहिले से बजावो—

नोट—यह गायन धीमी चाल में अच्छी रहेगी परन्तु टुकड़े दुगुन में अच्छे रहेंगे—

गायन

दादरा पूर्वी

रामकरै कहीं नैना न उलझे
उलझे तो उलझे सुलझाये नहीं सुलझे
रामकरे............... ∴

अन्तरा–इन नैनन की मार बुरी है
उलझे तो उलझे सुलझाये नहीं सुलझे
रामकरे....... .... ∴

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	पा	०	०	सा	रे	०	०	०	०	०
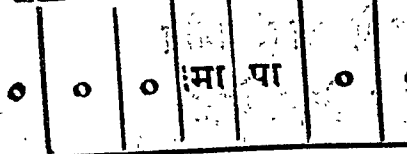
(१) राम क रे† कहीं नै ना न उल†
पा धा* *धा मा*मा गा*×२मा धा* नी* सा रे* गा*

झे —
नी*-

(२) उल झे तो उलझे सुल झा ये न हीं
नी* रे×२ गा*×२- रे* सा नी* धा* नी*

सुल† झे —
सा रे * गा* नी*–

फिर पहिले से बजाइये—

नोट—† यहांपर लौटता ज़मज़मा है अर्थात् यहां पर उँगलियां कम से कम इतनी लचकावो कि प्रत्येक पर्दा तीनवार बज जावे—

अन्तरा—

इन	नै	नन	की	मार	बु	री
धा*×२	नी*	र×२	गा*-	रे*×२	गा*	गा*रे*सा

है	
नी*	—

अगला पद नम्बर २ के ढंगपर बजेगा—

गायन

ग़ज़ल

काफ़िरे इश्कम् मुसलमानी मरा दरकारनेस्त
हररगे मन् तारगश्ता हाजते ज़ुन्नार नेस्त
अज़ सरे बालीन मन् बरखेज़ ऐ नादां तबीब
दर्द मंदे इश्करा दारू बजुज़ दीदार नेस्त
शाद बाश ए दिल कि फ़र्दा बरसरे बाज़ार इश्क़
वादये क़त्लअस्त गर्चे वादये दीदार नेस्त
ख़ल्क़ मीगोयाद कि खुसरो बुतपरस्ती मे कुनद
आरे आरे मे कुनम् बाख़ल्क़ो आलमकार नेस्त

पहिली सप्तक							दूसरी सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

स्थायी—

काफ़िरे इश्क़ म मु सल मा नी म रा दर
रे*×४— रे*गा* रे*सा+ नी*-सा गा* मा धा*--

का र नेस्त
मा— गा* रे*--

अन्तरा—

अज़सरेवा ली न मन बर खे ज़ ऐ ना
धा*×४— मा*धा* मा* मा गा*— सा गा* मा धा*—

दां त वीत्र
मा गा* रे*—†

गायन

दादरा पूर्वी

बटुवा गूंथन देरे महाराजियां मोरा बटुवा गूंथन दे
मोरी बाली का बाला सजनवां बटुवा गूंथन दे
अन्तरा—एक तो चिकना पीपल का पतवा दूजे चिकना घी
तीजे चिकना मोरी प्यारी का जोबना यारों का ललचे जी
मोरी बाली का ....:.
नदी किनारे बगुला बैठे मछली चुन चुन खाय
सींगी मछली कांटामारे तड़प तड़प जीजाय
मोरी बाली का ....:.

---

† नोट—शेष सब पहिले पद अंतरे के ढंग पर और दूसरे स्थायी के ढंग पर बजेंगे—जहां नीचे स्वर के लकीर है वहां ज़मज़मा है दर्मियानी चाल अच्छी रहेगी—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	०	०	सां	०	०	०	०	०	०

(१) बटुवागूंद हन देरे म ज़ा जि यां मो
रे ॅ *×५ ॅगा* सां *×२ रे ॅ* सां नी* धा*— धा*

रा बटु वा गूं ध न दे
नी* सां ×२— रे ॅ *— सां —नी* सां धा*--

(२) मो री बा आ आ ली का
मा* मा —मा —नी* —नी* —धा*—नी* मा*—धा*

वाला स ज न वा बटुआ गूं ध न दे
मा×२ मा* मा गा* रे *— मा*×२ मा —गा* मा रे*

अन्तरा—एक तो चिकना पी पल का प त व
रे ॅ *×५ रे ॅ * गां * रे ॅ * सां नी* धा*

अ दू जे चिक ना आ घी तीजेचिकना
—नी* सां— रे ॅ * सा³×२ नी* सा³ ध*— रे ॅ *×५

गो री का जो व न अ या रोंका लल
रे ॅ * गां * रे ॅ * सां नी* धा* —नी* सां रे ॅ *×२सां *२

चे य जी *
नी*— सां धा*—

मोरी वाली ....*

नोट—हर अन्तरे के पीछे नम्बर २ बजेगा—

गायन

थियेट्रिकल अंगरेज़ी वज़न (स्टार आफ़ इंडिया से)

मैं आफ़त का परकाला हूं—बेढब करतब वाला हूं

नाच नचादूं दमभर में—आग लगादूं घर भर में

ऐसा नटखट—ऐसा बेढब—ऐसी रंगतवाला हूं

मैं आफ़त.......... :

जिसको ताका—उसको मारा

पौबारा हैं पौबारा हैं पौबारा हैं

मैं आफ़त.......... :

हुर्रे—हिप हिप हुर्रे

मैं आफ़त.......... .... :

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	मा	०	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

आ फ़तकापर का ल आ हूं मैं बे ढब करतब

मा सां ×३ रे*- सां नी* नी*×२ धा* नी* नी*×२

वा आ ला आ हूं मैं

-सां -रे* -सां- नी* धा* धा*-

फिर पहिले से बजाइये—

नाचनचा दूं दम भरमें आग लगादूं घ र भ
गा×३ सां रे×३- सां नी*×३ -सां -रें* -सां

र में
-नी* धा*

ऐ सा नट खट ऐ सा वे ढंग ऐसी रंगत
धा* सां नी* रे*-सां गां* रें* मां-सां×२ नी*×२

व आ ला आ हूं मैं
-सां -रें* -सां -नी* धा*×२

इसको बजाकर फिर पहिले से बजाइये—

जिस को ताका उस को य मारा पौ बा रह हैं
धा* सां×३- रें* रें*-सां नी*×२ मां गां* रें* सां-

पौ बा रह हैं पौबारह हैं
गां* रें* सां नी* धा*×४

हुर रे हिप हिप हुर्रे ‡
मां--गां*- सां नी* सां रें गां रें* सां नी* धा*

‡ इसको ज़मज़मे के साथ जल्दी बजाइये—

नोट—कुल गायन बहुतही तेज़ चाल में अच्छे रहेंगे—

गायन

मल्हार

झमझूम बदरवा बरसे—उनाबिन जियरा तरसे—झमझूम .... ॰:॰

अन्तरा

चलत पुरवाई झूम सना नानानाना

झिंगुरवा बोले झूम झना नानानाना

ऊंची महलिया बिछुवा बोले—चलत कँगूरा करके

झमझूम .... ॰:॰

दूसरा सप्तक								तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	पा	०	०		सां	रें	०	०	मां	०	०

स्थायी

झूम झूम ब द र वा आ वर से य
नी*- धा* मा गा* मा रे गा* पा×२ धा*— पा मा

फिर पहिले से बजाइये और "धा*" पर अन्त करके आगे चलिये—

उन बिन जिय रा तर से य
मा×२ धा*×२ नी*×२ रें रें×२ गा* रें*सां नी*धा*

फिर पहिले से बजाइये—

चलत पुरवाई झूम स नानानाना झिंगुरबोले झूम
धा*×१ नी*×३ रें– रें गां*×४-- रें×४ गां*—

झ न न न न न ऊंची महलि या बिछुवा
मां गां* रें* सां नी*×२ गां*×५ नी*— धा*×२—

बो ले च ल त कँ गू रा कर के
नी*-धा* पा गा* मा धा* धा* नी*— रें– रें×२ गां*

य
रें* सां नी*धा* फिर पहिले से बजाइये—

नोट—दर्मियानी चाल और ऊंची आवाज़ ठीक रहेगी

गायन ग़ज़ल

तेरी ज़ात पाक है ऐ खुदा तेरी शान जल्ल जलालहू
तेरा नाम आदिले किब्रिया तेरी शान जल्ल जलालहू
है चमन में तूही तू रंग बू है ज़बां पै तूती के तूही तू
कहैं क्यों न बुलबुल खुशनवा तेरी शान जल्ल जलालहू
यह ज़मीं बनी वह फ़लक बने यह बशर बने वह मलक बने
तेरी लफ़्ज़ कुन का ज़हूर था तेरी शान जल्ल जलालहू
कोई शाह कोई अमीर है कोई बेनवा है फ़क़ीर है
जिसे चाहा जैसा बना दिया तेरी शान जल्ल जलालहू

पहिला सप्तक +						दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

इस जातपाकहै ऐ खु दा तेरी
ट—— ३७ सारे*गा*मागा* गा*रे*सानी*+ +नी*×२

जल ले ज ला ल हू
मा- धा* मा* मा गा*-रे*

मभूम बदर चमन में तू ही तू रं ग बू है ज़
न्तरा गा*×५- मा* मा मा*- मा गा*-- सा×२

चलत पुरवा ती के तू ही तू +
झिंगुरवा बोले धा* मा* मा- गा* रे*--

ऊंची मह ाद अन्तरे के ढंगपर और दूसरे स्थायी के
झूमझूम नी चाल अच्छी रहैगी—

गायन

अंगरेज़ी वज़न थियेट्रिकल

हाय मुझे दर्दे जिगर ने सताया
मेरा प्यारा नहीं दिल आरा नहीं कोई चारा नहीं है खुदाया
हाय मुझे दर्दे जिगर .... ⁘

शैर १—फुगां में आह में फ़रियाद में शेवन में नाले में
सुनाऊ दर्द दिल ताक़त अगर हो सुननेवाले में

शैर २—कबाबे सीख हैं हम करवटें हरसू बदलते हैं
जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते हैं

अहेल बेदाद मिला-दिलका उस्ताद मिला-पूरा सैयाद मिला-
सख़्त जल्लाद मिला-

शैर ३—सांस देखी तने बिस्मिल में जो आते जाते
और चर्कादिया जल्लाद ने जाते जाते

हाय ज़ालिम ने रहम न खाया—हाय मुझे .... ⁘

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	०	+ पा	०	०	सा	०	०	०	०	०	०

आहे मुझे दर्दे जि ग र य ने स
रे×६- रे सा +नी-* +धा* +धा* +नी*

ता या
+नी*सारे* सा—

इसको फिर दुवारा नीचे के ढंग पर बजाइये इसमें ज़रा नज़ाकत और लटक है परन्तु कुछ तेज़ चाल हो—

आ हे मु झे दर दे जि ....
सा मा गा*मा रे* गा*- रे*

शेष भाग पहिले ढंग के अन्तिमभाग के अनुसार बजाइये—

मेराप्यारानहीं दि ल आरा न हीं य को
रे*×६- -रे* -गा* सा×२ रे* सा +नी* +धा*

ई चारा न हीं न है खु
+नी* रे*×२ रे* सा +नी*धा+* +धा*- +नी*

दा या
+नी*सारे* सा-

फिर पहिले से परन्तु लटके से बजाइये—

शैर— फु गां मैंआगमेंफ़रियादमेंशेवनमेंनाले
+धा* +*धा+नी*सा सा×१२

य में " यें यें
+नी* +नी*सारे*- सा+नी*+धा* धा+*+नी*सा-

यें यें यें "
+नी*धा+*- +नी* +धा*--

इस " यें यें " को ज़रा सोच कर बजाइये—टुकड़े करके बजाइये परन्तु अभ्यास के पीछे सब एकही तान ख़्याल करके बजाइये जबतक गले से " यें यें " स्वरों के ध्यान से दर्जे

बदर्जे आप न कह सकेंगे तब तक तान समझ में न आवेगी आप थोड़ा अभ्यास करने से ही अच्छे प्रकार बजा सकते हैं—

सुनाऊं दर्द दिल	ताक़त अगर हो	सुनने	वा
+ पा × ६ –	+ धा * × ५	+नी * ×२	+धा*नी*सा

ले	य	य	में
+नी*	+धा*–	+नी*	+धा*–

दूसरा शैर "कबाब सीख" भी उपरोक्त ढंग पर बजा सकते हैं—उसके पीछे फिर इस प्रकार बजेगा—

अहेल बे	य	दाद मिला	दिल का	उस	ता	द
+धा×३	+नी*	सा×४	+नी*×२	+नी*	सा+रे*	सा

मि	ला
+नी*	+धा*-

दूसरे दोनों टुकड़े भी इसी प्रकार बजाइये फिर नीचे लिखे मुताबिक़ तीसरा शैर बजाइये—

सांस	दे	खी	तन	बिस
+धा*×२	+धा*नी*	+धा*+नी*सा	सा×२	सा+नी*

मिल	में जो	आ	ते	जा	ते
+नी*सारे*	रे*×२	रे*सा	+नी*सा	+नी*सारे*	सा

इस शैर का दूसरा पद भी इसीप्रकार बजाकर "हाय ज़ालिमने" "हाय मुझे" के ढंगपर बजाकर गाने का अन्त कीजिये—

नोट—इस छोटे से गाने को यदि विस्तारपूर्वक लिखें कि जिसमें तान, ज़मज़मा, पल्टा एक एक बोल पर आवे तो ऐसी आधी किताब बनजावेगी शौक़ीनों को जानना चाहिये कि एक अच्छे हारमोनियस्ट के लिये ऐसी चीज़ें बजाना कठिन काम नहीं है परन्तु उनको संक्षिप्त करके स्केच तैयार करना कि जिससे असली आनन्द हाथसे न जाता रहे यह बहुत कठिन काम है—

गायन

मल्हार

कारी कारी रे बदरिया छायरही-मन भाय रही ॥

कारी कारी........ ⁖

रैनि अँधेरी कारे बदरा गरजैं-बिजुरी चमके चम चम चम चम

पवन चलत सना ना ना ना-कारी कारी .... ⁖

झुम झुम झुम झुम मेहा बरसे छाई घटा घनघोर रे।

पी पी पपीहा कू कू कोयलिया-शोर मचावें मोर रे

फुवार पड़त छन छना ना ना ना-कारी कारी........... ⁖

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
रे	गा	म	ध	नी									
सा	०	गा	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

का	री	का	री	रे	ब	द	रि	या	य	छा	य
रे *	सा	रे *	गा *	गा	गा *	गा	*मा	*धा-	मा *	गा-	गा *

रही	+
रे *-	

म	न	भा	य	रही	+
धा *	मा *	गा-	गा *	रे *-	

फिर पहिले से बजाइये—

अन्तरा–रैनि अँ घेरी कारे बदरागरजें बिजुरी
रे*×२-रे* गा*×२ मा*×२ धा*×६ मा*×२

चमके च म च म च म च म प व
धा*×३-मा* धा* नी* धा* मा* गा गा* रे* रे* गा*

म चलत स ना ना ना ना ना ना ना
गा गा×३ रे* गा* गा धा* मा* गा गा* रे*

फिर पहिले से बजाइये–

पीछे दो सतरें "रुमझुम" और "पी पी पपीहा" रैनिअँधेरी की तरह पर बजेंगी और "फुवारपड़त" "पवनचलत" पर बजेगी ध्यान करके बजाइये–

नोट–यह गायन एकही सप्तक पर बजाकर दिखलाई गई है–

गायन

थियेट्रिकल–अंगरेज़ी वज़न–दिलफ़रोश

एजी लावो मुँदरिया मोरे सैयां सँवरिया मैं न मानूं रे
प्यारे कहां गँवाई बतावो–बतावो मोरे सैयां मुँदरिया बतावो–
लाख कही मैंने एक न मानी मुँदरिया सुँदरिया डगरिया गँवाई–
मैं न कहता था मैं न कहता था भला–
(ज़बानी) यह तो मैं जानती थी–रंडी एक लगती थी
(गाना) वाह जी वाहमियां–आह जी आहमियां
वाहमियां वाहमियां वाहमियां वाहमियां वाहमियां
कैसी निराली निकाली यह चाल
एजी लावो .... +

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
			+धा	+नी			रे	गा		मा	धा		
०	०	०	०	+प	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

ए जी ला वो मुँदरि या मो रे सै

-+धा* +पा +धा* +नी* +नी*×२ सा +नी* सा रे*

यां सँ वरि या मैं न मा नूं

गा- रे सा नी*- सा सारे*गा*मा गा*रे*सा +नी*

रे प्या रे कहां गँ वाई ब तावो

सा + सा रे* गा*×२- मा धा*×२- मा मा*×२-

बतावो य मो रे सै यां मुँ दरि या ब

गा*×२ धा* मा* धा* मा मा* मा* मा रे*- गा*

ता वो

मा*मा गा*-

लाख कही एक हू न मा नी सुँ दरि या

रे*×५ गा* रे* सा रे* सा +नी* सा

मुँ दरि या ड गरि या गँ वा ई

+नी* +धा* +नी* +धा* +पा +धा* +नी* +पा +धा*-

मैं न कहता था मैं न कहता था भ ला — गद्य कहने के

+धा*×५ +नी *×४ +पा +पा +धा*-

पीछे फिर इस प्रकार बजाइये—

वाह जी वाहमियां आह जी आहमियां — वाह मियां

+पा×२ +धा*×३ +पा×२ +धा×३ +धा* मा×२

वाह मि यां वाह मि यां वाह मि यां वाह मि यां
मा मा* मा गा* मा गा* रे* गा* रे* सा- +नी* +धा*-
कै सी नि रा ली नि का ली यह चाल
गा* मा गा* रे* गा* रे* सा रे* सा +नी*-

फिर पहिले से बजाइये—

गायन

मांड

मोरे कोठे ऊपर चोर ननदी धीरे बोलो रे
अन्तरा—कोठे ऊपर कोठरी रे जिसमें गढे सुनार
पायल गढियो बाजने रे झनक सुने मोरा यार
ननदी .... +

कोठे ऊपर कोठरी रे नीचे दरिया जाय
मछली बनकर मैं गिरूं रे तड़प तड़प जिय जाय
ननदी .... +

कोठे ऊपर कोठरी रे जिसमें काला नाग
काटे से मैं बचगई रे किस मूरख की भाग
ननदी .... +

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक
०	०	०	०	+पा	०	०	सा	०	०	मा	पा	०	०	सां

मो रे को ठे ऊ प र चो र न
+धा* +पा +धा* सा- रे* गा* मा गा*- रे* सा

न दी धी रे वो लो रे
रे* गा* सा- रे* +धा*+नी*सा *नी+ +धा*

अन्तरा दूसरी स्थायी सहित— कोठे ऊपर कोठ री रे
रे*×५ गा*×२ मा पा-

य जिसमें ग ढे य सु नार
-धा गा* गा*×३ मा पा धा*नी*सां नी* धा*

पायलगढ़ियो य वा ज ने रे झ नक मु
धा*×६ पा मा- गा* रे* गा*- रे* सा +नी*

ने मो रा यार
-+धा* सा- +नी* +धा*-

फिर पहिले से बजावो—

नोट—शेष सब पद अन्तरा स्थायी सहितवाले ढंग पर बजैंगे—

गायन

दादरा थियेट्रिकल

सुरतिया दिखाये जावरे छैल सैयां

दोहा—नैनन छल बल बस रही जोबन बीतो जाय
आनि ख़बरिया लीजो रे सजन बेकल बलमा
ताकूं तोरी नगरिया—डगरिया—सँवरिया—सेजरिया
सुरतिया दिखाये जावरे.... .... +

टुकड़ा—सख़्त पत्थर से ज़ियादा है तेरा दिल क़ातिल
हुई आसान न जां बाज़ की मुश्किल क़ातिल
उफ़रे बेदर्द सितम पेशा व जाहिल क़ातिल

न किया ज़िब्ह गया छोड़ के बिस्मिल क़ातिल
दहने ज़ख़्म पुकारा किया क़ातिल क़ातिल

ताकूं तोरी .... +

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	+ मा	+ पा	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

सु	रतिया	दि	खा	ये	जाव	छै
+धा*	सा×३-	+नी*	सा	रे*ग.*..	गा*—	*रे सा*

ल	सै	य	याँ	सुर तिया	दिखाये	जी	आ
*रे सा	रे*गा*	+नी*	+धा*	पा×३—	धा*	.मा*..	मा

रे	वा †
..गा*	..रे*सा

"लुभाये जावरे छैल सैयां" बवज़न "दिखाये जावरे छैल सैयां" बजाइये—

दोहा—

नैन	न छलबल	व	सर	ही	है
+गा*—	+पा×७	+गा*	+पा×२	+धा*	सा—

जो	व	न	बी	तो	जात	आ	न	ख
गा*—	रे*	सा	+नी*—	+धा*	+पा....	मा	गा*	*रे

---

† इसको जल्द और फिसलती हुई उँगलियों से ज़ाहिर करो दोहा सादा है—

बरिया लीजो रे स जनत्रेकल व ल मा
सा×४ +नी* +धा* +पा×४ +धा* +नी* +धा*

ता कूं तोरी न गरि या ड गरि या सँ वरि या
सा रे* गा*×२ मा पा धा*-पा मा पा- मा गा* मा

से जरि या सु रतिया दि खा ये
गा* रे* गा* रे* सा×२ +नी* सा रे*गा*मा

आगे उपरोक्त नियमानुसार बजाइये—

टुकड़ा— सख़्त प त्थर सेज़िया
+धा*×२ +धा*नी*+ +धा*+नी*सा सा×३

य दा है तेरा य दि ल क़ा तिल
+नी* +नी*सारे* रे*×३ सा +नी* सा +नी*सारे* सा

दूसरा और तीसरा इसी प्रकार बजेगा—

न कि या ज़िब्ह गया छो ड़के बिस मिल क़ा तिल
सा सा रे* गा*×४- सा गा×२ गा*मा मा*- मा- गा*

दहनेज़ख़्मपुका रा किया क़ा तिल क़ा
रे*×७- रे*गा* गा*रे* रे*सा +नी*सा +नी*सारे*

तिल
सा-

इसके पीछे फिर प्रारम्भ करने से पहिले "ताकूं तोरी" उपरोक्त नियमानुसार बजाइये—

गायन

ठुमरी

बिन्द्राबन मोहन दधि लूटी
दधि लूटी रे माखन लूटी
बिन्द्राबन .... +
अन्तरा—कहां गयो हार कहां नथ बेसर
कहां मोतिन की लर टूटी
बिन्द्राबन मोहन.... .... +

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सां	रें	०	०	०	०	०

बिन द रा व न मो हन दधि
पा धा नी*सां- धा पा धापामागा*रे रे`×२- पा×२-

लू टी य फिर पहिले से बजाइये—
पाधा नी*--धापा

द धि लूटी रे† मा खन लू टी फिर
धा नी* सां×२ सां नी* नी*धा पा×२- पा धा नी*-

पहिले से बजाइये—

† जब रे` पर उँगली रक्खो तो नी*-रे-`सां पर ज़मज़मा लगावो और नी* पर ठहरो—गायन को ठा में बजावो—

कहांग यो हा र क हां न थ वे † स
पा×३ धा नी*सा नी*- नी*- रे^ ^रे ^गा* सारे^ सा
र
नी*

कहां मोतिन की † य ल र टू टी
सा×६ रे^ सा नी* धा पा पा धा नी*--+

फिर पहिले से बजाइये—

† जब रे^ पर उँगली रक्खो तो गा*-रे^-सा पर ज़मज़म
लगावो और नी* पर ठहरो-गायन को ञ में बजावो—

इति ॥

भूमिका

पाठक महाशय! हारमोनियममास्टर चौदहवेंभाग में प्रत्येक मज़ाक़ की चीज़ अनोखी लिखी गई है-मज़ाक़वाले तो अवश्यही प्रसन्न होंगे। भय केवल इतनाही है कि इस मस्ताने गाने से कोई महाशय ख़फ़ा न हो जावें यद्यपि अपनी ओर से संग्रह बहुतही सावधानी से किया गया है और आशा नहीं कि मस्ताना तहज़ीब की हद से निकल जाये तब भी यदि कहीं मुस्कराहट से क़हक़हे तक नौबत पहुँचे तो प्रसन्नता से हँसी ख़ुशी में टाल दीजिये—

मज़ाक़ की लहर में गाने से एक अपूर्व सुन्दरता पैदा होती है यद्यपि कभी कभी ताल और लय में फ़र्क़ आ जाता है परन्तु एक चैतन्य हारमोनियस्ट गद्य तक को बजाने से नहीं छोड़ता और अपना हाथ ऐसे स्थानों पर जहां क़हक़हा या गद्य आजाती है तो पूरे तौरपर क़ाबू में रखता है परन्तु यह आनन्द विना सोसाइटी के कदापि नहीं आ सकता-सोसाइटी की आवश्यकता अभ्यास से अधिक है—

ग्रंथकर्ता—
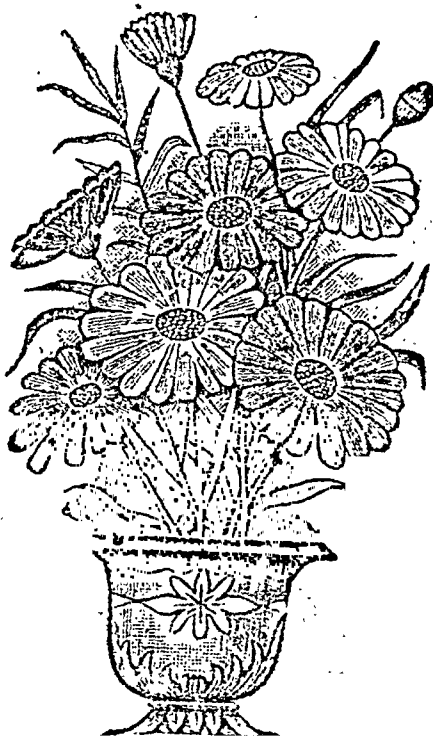
गायन

तमाशा दर्दजिगर

सेहरा—तर्ज़—" बेनक़ाब आज तो ऐ गेसुवोंवाले आ जा "

जब बँधा सर पै तेरे बूढ़े मुछन्दर सेहरा
देखकर नाचते हैं बिरज में बन्दर सेहरा
रंडियां बूढ़ी बुलाव कि है बूढ़े की बरात
बूढ़े खूसट का वही गायेंगी मिलकर सेहरा
बूढ़े नौशा की सवारी को गधा मौज़ूं है
और टूटे हुये जूतों का बँधे सर पै सेहरा
तालियां बजती हैं लाहौल के नारे हैं बुलन्द
कैसा मौज़ूं है यह खन्नास के सर पर सेहरा

दूसरा सप्तक						तीसरा सप्तक						
०	०	मा	०	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

जब बँधा सर पै ते रे बू ढ़े मु
रे ×३ सां —नी धा* धा*नी*मां —नी* धा* मा*

छ न द र सेह रा
मा मा*-- धा* मा*— मा*धा*नी* धा*--

जब बँधा सर पै तेरे बू देमु छन द र
मा ^ * × ६ – गा*- मा*×३ धा* नी*-- सा ^
से हरा ⁘
नी* धा*--

अन्तरा

रंडिया न बू डी बुला व के है
सा ^×३ नी* नी*सा ^ रे ^ * रे ^ *×३ धा* सा ^×३
बू डे की ब रात आ †
सा ^ रे ^ * *गा ^ मा ^ गा ^ * रे ^ * सा ^ नी* धा*नी*--

† यह टुकड़ा हर अन्तरे के पीछे अवश्य बजाना चाहिये जिसमें आवाज़ उतार पर आ जावे–

नोट–शेष पहिले मिसरे अन्तरा के ढंग पर और दूसरे मिसरे स्थायी के ढंग पर बजेंगे–

गायन

आशिक़ व मालिन का झगड़ा

अंगरेज़ी वज़न

गजरा बेचन वाली तू कहां चली
फूलों के गजरे सैयां बेचन चली
गजरा.................. ⁘

फूलों का हार प्यारी मुझको पहिना दे
फिर तो खिले मेरे दिलकी कली
गजरा.................. ⁘

जाव-जाव सैयां मोसे न बोलो
तुमतो फिरते हो सैयां गली गली
गजरा.................. ⁘

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
			धा	नी			रें	गां					
०	०	०	०	पा	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

गज रा बे चन † वा ली तू क हां

धा* पा धा* नी*- धा* धा*नी * सां- सां रें* सां

च ली

नी* धा*-

अन्तरा—

फूलों का हार प्यारी मुझको पिन्हा दे

सा×२ रे* गा*×४ मां×४ *गां-

फिरतोखिले मे रे दिल क ई क ली

मां×४ *गां मां *रें *गां*---रें *मां गां*

गजरा बेचन वा ली तू क हां च ली

सां×४ *नी सां- *रें×२ सां. *नी धा*--

† यह टुकड़ा प्रत्येक अन्तरे और स्थायी के पीछे लगाइये—

नोट—मर्दाना हिस्सा धीमी चाल में और ज़नाना हिस्सा तेज़ी से गाया जावेगा—" फिर तो खिले मेरे दिल की कली " यह बोल नज़ाकत से अदा होगा—मुख्य कर शब्द " दिल की कली " ❖

गायन

खान्दान हामा

दादरा

तर्ज़—"मारेपड़े हम तिरछी नज़रके"

मारे पड़े हम प्यारी फवन के—
प्यारी फवन के जी नाज़ुक वदन के
मारेपड़े………… ∴

इनकार छोड़ो—इक़रार जोड़ो—
दूल्हा बनावो जान प्यारी दुलहिन के
मारेपड़े………… ∴

मिसरी खिलाऊं शर्बत पिलाऊं
बोसे दे डाल प्यारी प्यारे दहेनके
मारेपड़े………… ∴

दिलका गनी हूं घर का धनी हूं
गमज़े दिखाव मोहिं सारे जोबन के
मारेपड़े………… ∴

दूसरा सप्तक	तीसरा सप्तक
रे, गा, मा, धा, नी	
० ० ० मा ० ० ०	० ० ० ० ० ० ० ०

मारे प ड़े य हम प्या री फव न के
माX२ गा* मा धा* मा*– मा गा* माX३ गा* रे*--
प्यारी फ ब न के जी नाज़ुक ब द न् के .:०-
धा*X२ नी* धा* मा* मा गा* गा*X२ मा* मा गा*रे*–
इनका र छोड़ो इक़रार जो ड़ो दूल्हा ब ना
माX२ मा*धा*X२– नी*X४ धा*– माX२– गा* मा
वो जान प्या री दु ल हिन के .:.
धा* मा*– मा गा*– मा* मा गा*रे*–

नोट—शेष गायन उपरोक्त ढंगपर बजाइये—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

म न मै लमिटे त न ते जबदे द. ये

धा* पा धा*- नी*×३- धा* पा धा* नी ×३ नी* सा

रं ग भं ग का ल व टा

रे..- गा*×२ रे* सा- नी* सा धा*-

नोट—अगले दोनों पद इसी प्रकार बजैंगे-फिर यह बजावो-

तन साफ़ मन साफ़ हो सा फ़ आद मी खो वो

मा गा*- मा रे*- सा×२ रे*×३ सा .नी*..सा

टा

धा*-

ल य क़न्द दू ध में घो ला

सा रे*- गा*×३ मा मा*- मा गा*-

" तो भंग बना अनमोला-कर पार भंग का गोला-हर वार बोल बम्भोला" तीनों पद " ले क़ंद " के ढंग पर बजावो-

उठ भोर नहा के गंग

रे*×३ रे*×२ गा* रे*-

चढ़ा ले भंग आदि इसी प्रकार बजावो पीछे नीचे का टुकड़ा बजावो-

दिखादे जंगी कूंड़ी स व टा

गा*×३ रे*×२ सा×३- नी*... सा- धा*- फिर

पहिले से बजावो—

गायन

हरिश्चन्द्र

अंगरेज़ी वज़न–

मन मैल मिटे तन तेज बढ़े दे रंग भंग का लोटा

सौ रोग टले सौ सोग जले करे भंग अंग को मोटा

जब तार जमे आज़ार रमे तो हाथ बढ़े जी मोटा

तन साफ़ मन साफ़ हो साफ़ आदमी खोटा

ले क़न्द दूध में घोला–तो भंग बना अनमोला

कर पार भंगका गोला–हरवार बोल बम्भोला

उठभोर–नहाके गंग–चढ़ाके भंग–जमाले रंग

निराले ढंग–दिखादे जंगी कूंड़ी सोंटा

मनमैल मिटे..................

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	पा	०	०	साँ	०	०	माँ	०	०	०

म न मै लमिटे त न ते जबदे द. ये

धा* पा धा*–नी*×३–धा* पा धा* नी ×३ नी* साँ

रं ग भं ग का ल व टा

रे..ँ–ँगा*×२ रे ँ* साँ–नी* साँ धा*–

नोट—अगले दोनों पद इसी प्रकार बजैंगे–फिर यह बजाओ–

तन साफ़ मन साफ़ हो सा फ़ आद मी खो बो

ँमा ँगा*–माँ रे*–साँ×२ रे*×३ साँ .नी*..साँ

टा

धा*–

ल य क़न्द दू ध में घो ला

साँ रे*– ँगा*×३ माँ माँ*–माँ ँगा*–

" तो भंग बना अनमोला–कर पार भंग का गोला–हर वार बोल बम्भोला" तीनों पद " ले क़ंद " के ढंग पर बजाओ–

उठ भोर नहा के गंग

रे*×३ रे*×२ गा* रे ँ*–

चढ़ा ले भंग आदि इसी प्रकार बजाओ पीछे नीचे का टुकड़ा बजाओ–

दिखादे जंगी कूंड़ी स व टा

ँगा*×३ रे*×२ साँ×३–नी*... साँ– धा*– फिर पहिले से बजाओ—

गायन

रसिया

तर्ज़—"गौना करदेरे बाप महापापी गौना करदे"

बिन बादर बिजुली कहां चमकी—बिन बादर
न कहीं बरसे न कहीं गरजे--गोरिया के माथे बेंदिया चमकी
बिन बादर—

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	रे	०	मा	०	०	०	सां	०	०	०	०	०	०

बिन बादर बि जुली क हां चम की बि न
रे × ६ गा*×३ मा— नी*×२ धा*— मा गा*

बा दर न क हीं ग रजे न क हीं ब
मा— गा*×२ मा×२ धा*×२ नी*×२— धा*×२ नी* धा*

र से
मा गा*

गोरिया के मा थे य बें दिया च म की
रे*×५— सा नी* नी* धा*×२ धा* नी* नी*

बि न बा दर फिर पहिले से बजाइये—
मा गा* मा गा*×२

नोट—फिर पहिले से बजाइये-इस वज़न पर सैकड़ों रसिया प्रचलित हैं—चाल और आवाज़ दर्मियानी रहे वक़्फ़े का ध्यान रखकर बजाइये—

गायन

मुरीदशक—दादरा

कोई मुझे बूटी पिला के लुभागया कोई मुझे बूटी पिला के लुभागया—

वड़े सबेरे जो कोइ छाने वाकी लम्बी डीट
उड़ती चिड़िया वह पहिंचाने गिरी सड़कके बीच
सबेरे फेर छनेगी भंग

दुसरे पहरे जो कोइ छाने वाके लम्बे कान
तवा कटोरा बेच डाल के घर लोटे पर ध्यान
सबेरे फेर छनेगी भंग

तिसरे पहरे जो कोइ छाने ज्यों भादौं की कीच
घर के जानैं मर मये औ आप नशे के बीच
सबेरे फेर छनेगी भंग

चौथे पहरे जो कोइ छाने बचा आपही आप
बे जोड़ू बे ससुरे के हो छः बच्चे का बाप
सबेरे फेर छनेगी भंग

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
०	०	०	०	०	०	०	साँ	०	०	माँ	०	०	०

बूटी पिला के लुभायग यो कोईसु भ्के बू
रे ॅ * × ६ ॅगा* सां×३ रे ॅ* सां

टी पिला
नी*×२

के लु भा य ग यो रे बड़े सेरे जो कोईछाने
धा*- नी* सां रे ॅ* सां नी* धा*- - रे ॅ*×५ ॅगा*×४

वाकी लम बी डीट
मां×३ रे ॅ* ॅगा*- -

उ ड़ती चिड़िया को पहिंचा ने गि री स
रे ॅ* रे ॅ* ॅगा*मां मां × ६ ॅगा*×२ मां×२

ड़क के बीच
गा*- रे ॅ* सां

सेवेरे फेर छनेगी भंग
रे ॅ * × ७ ॅगा*-

सबेरे फेर छने गी भंग
रे ॅ*×४ सां×२ नी* धा*- -

नोट—शेष गायन उपरोक्त ढंगपर वजाओ-रफ़्तार पहिले दर्मियानी रहे फिर दुगुन करदो—(अड़त) पर जमज़मा नहीं है किन्तु लगाव है—लगाव उसको कहते हैं जिसमें पर्दे पर एक

गायन

अलीबाबा चालीस चोर

अंगरेज़ी वज़न—चूरनवाला—

चूरनवाला—मैं देहली से हूं आया—अच्छे अच्छे चूरन लाया
जिसने एक ज़रासा खाया—उसने बेहद लज़्ज़त पाया
बाज़ारी—जिसने चूरन तेरा खाया—उसने लज़्ज़त कुछ ना पाया
बल्कि आख़िरको पछिताया—ओवे कैसा चूरन लाया
चूरनवाला—जो कोइ चूरन मेरा खावे—उसकी बीमारी सब जावे
मिस्ल रुस्तम वह कहलावे—कुश्ती देवों को लड़वावे
बाज़ारी—तेरा चूरन जो कोइ खावे—उसको बदहज़मी होजावे
गर्दन उसकी मौत दबावे—सीधा सोनापुर में जावे

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
										मा			
०	०	०	०	०	०	०	सा	०	गा	०	०	०	०
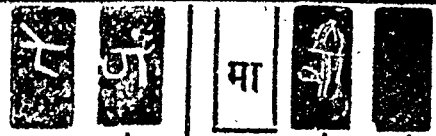
मैं देह ली से हूं आ या अच्छे अ च्छे चू रन
सा रे* गा×२ गा* गा मा* धा*×२ गा मा* गा गा*

लाया
रे*×२—:

" जिसने एक ज़रा सा खाया उसने बेहद लज़्ज़त पाया "

उपरोक्त ढंग पर बजेगा—आगे इस प्रकार बजाइये—

जिसने चूरन तेरा खाया उसने ल ज़्ज़त कुछ ना पाया
धा*×८ मा*×३ धा*×३ मा* गा×२

बल्कि आ ख़िर को पछ ताया ओ बे तू कै सा चू
गा × ३ मा*×२ गा×२ गा*×२ रे* सा रे* गा* गा×२

रन लाया
गा* रे*×२:

नोट—आगे सब चूरनवाले का जवाब इसी प्रकार बजेगा चाल एकसी रहेगी ठा में बजाइये—

गायन

ताजनेकी

अँगरेज़ी वज़न–

सुनो मेरे यारो यह छैल का कहना अकेले रहना बड़ा मज़ेदार–

जंजाल हैं जोड़ू बच्चे–पामाल हैं अच्छे अच्छे–हैं हाल यह सच्चे सच्चे शादी के यार–

सुनो मेरे यारो.........॥

जोड़ू लाके घर बना के याद सबक़ किये तीन

तेल नहीं है नोन मँगादो लावो लकड़ियां बीन

सुनो तुम और मज़ेदारी

चोरी करो-क़ैद भरो-चाहे मरो-चाहे गिरो कुछ भी करो-

जोड़ू को पैसे का प्यार–

सुनो मेरे यारो.........॥

अजी जावो जी–अजी जोड़ू है खंजर की धार
अजी जावो जी–जोड़ू है फ़र्माबरदार-जोड़ू है फ़र्माबरदार
करूं इसको मैं प्यार-लड़ी बार बार-जोड़ू को पैसे का प्यार

सुनो मेरे यारो.........॥

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
				धा									
०	०	०	०	धा	०	०	सां	०	०	मां	०	०	०

सु नो मे रे यारो यह छै ल का क

धा* पा धा* नी* सा^×२ नी* सा^ रे^* ^गा*- रे^*-

ह ना अ के ले र ह ना व

^गा* रे^ *-सा^ नी* सा^- रे^*- ^गा* रे^*-सा^

ड़ा म ज़े दार

नी*-सा^ नी* धा*--

जंजाल हैं जोडू बच्चे—पामाल हैं अच्छे अच्छे

रे^ *×७ गा^ *×७

हैं हाल यह सच्चे सच्चे शा दी के यार जोडू लाके

सा^ ×७ नी* सा^- नी* धा*— रे^*×४

घर बनाके याद सबक़ कि ये तीन तेल नहीं है

^गा*×४ मा^×३ ^गा* रे^* ^गा* मा^ ×४-

नोन मँगादो लावो ल कड़ि यां बीन सुनो तुम औ

^गा*×४ रे^*×२ सा^ नी* धा* रे^*×३ नी*सा^

र मज़े दा री चोरी करो जोडू को पैसा

सा^ सा^×२ नी* धा*- रे^ *×४ सा×२ नी* सा^×२

का प्यार

नी* धा*--

नोट—शेष गद्यके साथ वजेगा—

गायन

दादरा

तरकारी ले लो मालिन तो आई बीकानेर की
सोया बेचूं पालक बेचूं औ बेचूं चौलाई
भरे बज़ार में डंडी मारूं मैं मालिन की जाई
रे तरकारी ले लो.......... :
गाजर बेचूं मूली बेचूं और बेचूं घुइयां
भरे बज़ार में आंख लड़ावे वही मेरा पिया
रे तरकारी ले लो.......... :
गाजर की तो तोप बनाई मूली का दरवाज़ा
शक्करक़न्द की तोप बनाई लड़े फ़िरंगी राजा
रे तरकारी ले लो.......... :
जैपुर बेचूं जोधपुर बेचूं और बेचूं बीकानेर
बैंगन बाबू से टिकट कटाया जाती हूं अजमेर
रे तरकारी ले लो.......... :

पाहिला सप्तक	दूसरा सप्तक

○ ○ ○ +मा ○ ○ ○ सा ○ ग ○ ○ ○ ○

तर	क	आ	री	ले	ए	लो	मा
+गा*×२	+मा	+धा*	+धा*—	+नी*	+नी*	सा—	+नी*सारे*

लिन तो	आई	बी	का	ने	र	से
रे*×२	सा×२	+नी*	सा नी*	+धा*—	+मा*	+मा

सोया बेचूं	पालक बेचूं	और	बेचूं	च	व	ला
रे*×४	गा*×५	रे*गा*मा	मा×२	गा*	रे*	रे*गा*मा

ई	भरे बज़ार में	डंडी मारूं	मैं मा	लिन	की	जाई
गा*--	मा×५	गा*×४	मा×२	गा*	रे*	सा×२

रे	तरकारी	ले	लो
+नी*-	+धा*×४	+नी*	सा

—मालिन तो आई बीकानेर से

फिर पहिले से बजाइये—

नोट—शेष सब पद उपरोक्त ढंग पर बजेंगे—

गायन

असीर हिर्स

अंगरेज़ी वज़न

जवां दूल्हे पै हूं मैं निसार

मुये खूसट पर हूं मैं निसार—तेरी मेरी जोड़ी बनी मज़ेदार

कि लूली लँगड़ी जोड़ी बनी मज़ेदार-अंधी कानी जोड़ी बनी मज़ेदार

सादी करूंगा—घोड़े चढूंगा फिर न करूं तकरार

मुझे वाली मँगा दे—बुन्दे भी लादे—साड़ी दिला दे मुझे चोली के साथ

तुझे वाली मँगादूं—बुन्दे भी लादूं—जूता घटा दूं तुझे मोची के हाथ

अभी लाऊं—अभी लाऊं—अभी लाऊं जान

फिर न करूं इनकार

जवां दूल्हे पै.................. ...... :-

पहिला सप्तक							दूसरा सप्तक						
०	०	०	+ मा	+ पा	०	०	सा	०	०	मा	०	०	०

जवां दूल्हे पै हूं मैं नि सार ते री मे

रे* × ५ सा +धा*– +नी* सा– +धा* +नी* सा

री जो ड़ी ब नी म ज़े दार शादी

+नी* +धा* +पा +धा* +नी* +धा* +मा* +मा +धा*×२

क रूं गा घोड़े च ढू न गा फिर न क रू

+नी* सा–रे*– सा×२ रे*सा +नी* +धा* +रे*×३ सा

न त क रार वाली मँ गा दे बुन्दे

+नी* +धा* +नी* सा– +धा*×२ +नी* सा रे*– सा×२

भी ल आ दे साड़ी दि ला दे मु झे चोली के

रे*सा +नी* +धा* गा*×३ रे* मा×२ गा* रे*×२ सा

साथ अभी लाऊं अभी लाऊं अभी ला ऊं

+नी*–सा×२ रे*– +नी*×२ सा– +धा*×२ +नी* सा-

जान

रे* --

नोट—"मुये खूसट पै जाऊं निसार–शादी का करो इक़रार" यह "जवां दूल्हे पै हूं मैं निसार" की ध्वनि पर बजेगा–

गायन

मज़ाक़िया होली रसिया

होली

मैं कैसे होली खेलूंगी सांवरिया के संग—रंग

अन्तरा—कोरे कोरे कलश मँगाये जामें घोला रंग

भरि पिचकारी मुख पर मारी चोली होगइ तंग

रंग मैं कैसे........ ∴

तबला बजे सरंगी बाजे औ बाजे मिरदंग

कान्हा जी की मुरली बाजे राधा जी के संग

रंग मैं कैसे........ ∴

लहँगा मेरा घुम घुमेरा आँगिया मोरी तंग

ख़सम हमारे बड़े निखट्टू पीकर लोटै भंग

रंग मैं कैसे........ ∴

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक							
सा	रे	गा	मा	पा	धा	०	०	०	०	०	०	०	०

मैं कै से हो ओ ली खेलूंगी य सां वरि या
सा सा रे गा गा– रे सा सा मा×४--- पा(जल्दी) गा गा मा गा

के संग रंग
रे गा गा रे सा सा×२-- फिर बजाइये–

कोरे को रे कलश मँगाये जामें घो ला रंग
गा×३ मा पा×५ धा×३ पा मा मा पा धा पा

भर पिचकारी मुख पर मारी चोली हो गई तंग रंग
धा × ४ पा × ४ धा×२ पा मा गा×२ रे×२

फिर पहिले से बजाइये–

नोट—"रंग" प्रत्येक शेर के पीछे मिलाना चाहिये—

गायन

असीर हिर्स

अंगरेज़ी वज़न

सूरत सीरत में चन्दा-हरफ़न कामिल है बन्दा

शकल मुछन्दर अक़ल में बन्दर ख़ासे कलन्दर वाह जी वाह-

मेम्बर बनकर घर घर फिर कर टैक्स लगायेगा बन्दा-

आ हा हा हा-वाह वाह वाह-ख़ूब निकाला यह धन्दा-

बुरे भले के सब के गले में टैक्स का डालूंगा फन्दा-

यारों में ग़ारों में भंगी चमारों में धोबी कहारों में पाऊंगा नाम-

कुर्सी पै बैठूंगा यारों में ऐंठूंगा-दौलत समेटूंगा मैं सुबह शाम-

मैं ख़ान बहादुर बनके-कर लूंगा-ज़र लूंगा-घर रिश्वत से भर लूंगा-

फिर चाल चलूंगा तनके-हां! मैं ख़ान बहादुर बनके-

तेरीमेरी प्यारी जोड़ी-एक अन्धा एक कोड़ी-मतलब पायेंगे मनके-

सूरत सीरत में चन्दा .... :-

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
सा	रे	गा	मा	पा	धा	नी	सा^	रे^	०	०	०	०	०

सूरत सी र त में च न दा हरफ़ न कामि ल है
सा × ४ रे गा×२ सा रे मा— मा×२ पा गा×२ मा गा—
ब न दा
रे गा सा- -
शकल मुछन्दर अ क़ल में बेन्दर ख़ आ से क़ ल न द
सा^ ×५— पा धा × ४ पा धा पा मा गा रे सा
र वा ह ज इ वाह मे भ्भर बनकर घर घर फिर कर टैक्स
रे गा मा गा रे सा सा गा × ३ रे मा × ३ गा—
ल गाये य गा ब न दा ॥
रे सा×२ रे गा गा रे सा-
आ हा हा हा ! वाह वावाह ख़ू ब ब नि क अ ल अ
सा^ × ४ — पा धा×३— पा धा पा मा गा रे सा रे—
यह य ध न दा बुरे भलों म यें स ब के ग लों में टै
गा मा गा रे सा.. सा^ ×५ नी धा नी नी धा पा धा मा
क्स का डा लूं गा य फ न दा ॥
गा रे सा रे गा मा गा रे सा
यारों में गारों में भं गी च मा रों में धो बी क हा रों
सा^ ×५ नी धा नी धा पा धा पा मा पा मा गा मा
में पा ऊं गा नाम
गा रे गा रे सा

मैं ख़ान बहा दुर बन के क र लूं गा ज़ र लूं गा
सा रे×३ गा धा×२ पा–र्सा नी धा पा– नी धा पा मा
च. र रि श त त से भ र लू न गा ⁖ फिर
धा पा धा पा मा गा रे गा मा गा रे सा– सा
चाल चलूं गा तन के † तेरी मेरी प्यारी जोड़ी ए क
रे × ३ गा धा×२ पा- र्सा × ६ रें
अन्धा एक कोड़ी मतलब पा यें गे य म न के
नी × ६ धा×२– पा धा नी र्सा नी धा पा–

नोट—यह गायन दुगुन में अच्छी रहेगी–

† इसके बादही "मैं ख़ान बहादुर बनके" बजाइये फिर आगे बढ़िये–

गायन

तमाशा लैला

अंगरेज़ी वज़न—

मज़ेदारी गिलौरी भरी लालियां
चातुर हूं नार–करूं न्यारा ब्योपार–मोरे पांवों में यार–
फँसे सेठ साहूकार–ऐसो जादू डालियां
मज़ेदारी गिलौरी........ ⁖

खाऊं खिलाऊं मैं बीड़ा बनाऊं–बीड़े में छप्पन मसाले मिलाऊं
लौंग इलायची और छालियां

नोट—"ऐसो जादू डालियां" कहतेही फिर "मज़ेदारी गिलौरी भरी लालियां" कहना चाहिये–

दूसरा सप्तक							तीसरा सप्तक						
					नी			गा					
०	रे	०	मा	पा	धा	०	सा	रे	०	मा	०	०	०

म ज़े दा री गि लौ री भ री ला लि यां
पा धा नी*सा नी*— धा पा मा रे पा×२ धा नी*

चातुर हूं नार क रूं न्यारा व्योपार मो रे पावों में यार
मा ×४— रे सा नी * ×४ सा नी* धा × ४

फँ से सेठ सा हू कार ऐसो जादू डा लि यां
नी* धा पा×२ धा मा पा— धा×४ पा— धा नी*

फिर पहिले से बजाइये—

खाऊं खि लाऊं मैं बी ड़े ब ना ऊं बीड़े में
नी*×३ सा×२ रे गा*मा मा गा* रे सा — गा*×३

छप्पन म साले मि ला ऊं लौंग इला यची और छा
रे ×३ सा×२ नी* सा नी* सा×४ नी*— धा पा—

लि यां
धा नी*— मज़ेदारी..............:

फिर पहिले से बजाइये—

इति

भूमिका

जब हारमोनियम सीखनेवाला मरम्मत करने में अभ्यास कर लेगा जिस अर्थ से कि यह पुस्तक बनाई गई है तो यह उसके चित्त में अवश्य विचार उत्पन्न होगा कि वह अपने हाथ से हारमोनियम भी बना ले कारण कि बहुत कुछ योग्यता इस पुस्तक के देखने से होजायगी–

इस कारण इस भाग में यह सब पुर्ज़े हारमोनियम के जोकि बहुधा असावधानी से खराब हो जाते हैं चित्रों सहित दिखाये गये हैं और उनकी मरम्मत के नियम मय उन आवश्यकीय मसालों के बनाये गये हैं इसके अतिरिक्त सैकड़ों बारीकियाँ और आवश्यकीय नोट लिखे गये हैं जिनसे प्रत्येक मनुष्य सुगमता से हारमोनियम बाजेकी मरम्मत कर सकता है। यदि साहस ऊंचा हो और हमारे समझाने पर ध्यान दे तो कभी नैराश्यता का मुख न देखेगा किन्तु सदैव सफलता प्राप्त करेगा–

शुभचिन्तक अपने कृपा करनेवाले रायबहादुर मुंशी प्रयाग नारायण साहब भार्गव प्रोपाइटर नवलकिशोर प्रेस लखनऊ को धन्यवाद देता है जिन्होंने दास के इस ग्रंथ को स्वच्छता से छापकर प्रकाशित किया है।

हम को आशा है कि आप इस पुस्तक को ध्यान से पढ़कर इसके अनुसार कार्य करेंगे और हारमोनियम बाजे की मरम्मत स्वयं अपने हाथों से कर लिया करेंगे–

ग्रंथकार
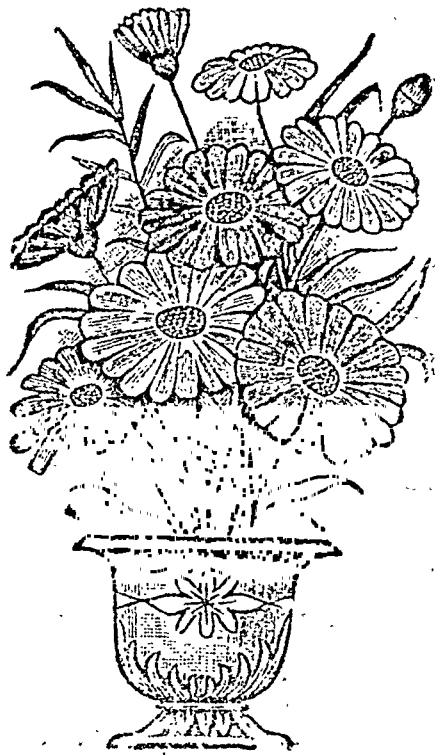
हारमोनियममास्टर

पंद्रहवां भाग
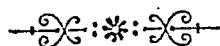
-~:※:~-

पहिला अध्याय

पहिला प्रकरण

यहां पर इसके ब्योरे की आवश्यकता नहीं—
शौक़ीन " हारमोनियममास्टर पहिलेभाग " को देखें और इनके समाचारों से सफलता प्राप्त करें—

मेकर बाजा में एक नवीन ढंग बढ़ाया करता है इससे सम्भव नहीं कि उनका ब्योरेवार हाल इस पुस्तक में बतलाया जावे— सीखनेवालों को चाहिये कि कुछ हारमोनियम बाजों को स्वयं खोलकर उनके बनावट के ढंग को देखें और योग्यता प्राप्त करें—
परीक्षा तभी होगी जब आप कम से कम तीन चार बाजों की मरम्मत कर चुकेंगे और एक दो बाजे खराब हो लेंगे—परीक्षक वही कहलाता है जो कुछ कठिनाइयों व दुःखों को सहन करके अभीष्ट मन्तव्य को नहीं छोड़ता—

हारमोनियम बनाने और मरम्मत करने में कुछ कठिनता या किसी प्रकार की नीचता नहीं है यह कारीगरी है और एम. ए., या बी. ए., की डिगरी से कितनेही गुना अच्छी है हे हमारे फेशनेबुल जण्टिल मैनो ! कारीगरी व व्यापार के शब्दों को चित्तमें स्थान दीजिये नहीं तो यह भारतवर्ष भारतवर्ष न रहेगा—

(२) कारख़ाना हारमोनियम

आज कल भारतवर्ष के सब शहरों में हारमोनियम बाजे बनने लगे हैं परन्तु प्रत्येक कारख़ानेवाले बाजे की मरम्मत बहुत कम करते हैं और बनवाई हद से ज़्यादः लेते हैं जोकि शौक़ीनों के लिये एक प्रकार की फ़ुज़ूल ख़र्ची है यदि हारमोनियस्ट कम से कम सरेश और साबड़के वर्तने का भी भेद जानलें तो उनके लिये बहुत कुछ है कारण यह कि इन दो चीज़ों से हारमोनियम बाजों में बहुत से पुर्ज़े दुरुस्त हो सकते हैं-

कारख़ानों में कारीगरों को बहुत कम छुट्टी रहती है जितने समय में वह एक पुराने बाजे के दोष देखेगा उतनेही समय में वह एक नये बाजे के कुछ पुर्ज़े बना सकता है वस्तुतः यही कारण अधिक वेतन लेने का भी है नहीं तो जो काम मरम्मत में होता है वह चौथाई वेतन से भी कम होता है हमारी राय में जहां तक हो सके हारमोनियम के शौक़ीन कुछ योग्यता कारख़ाने में जाकर पैदा करें वहां पर वह हर प्रकार के बाजों का ढंग देख सकते हैं पढ़ेहुये के लिये कोई कठिन काम नहीं है विना पढ़े भी एक दो सप्ताह में चतुर हो जाते हैं-

(३) कारीगर या मेकर

जो मनुष्य हारमोनियम बाजे बनाता है उसको हारमोनियम मेकर या कारीगर कहते हैं यह बड़ी अच्छी हालत में रहते हैं और अपने काम में उन्नति करके शीघ्रही नाम पाते हैं हारमोनियम बाजा नित्यप्रति सर्व सज्जनों के चित्त में स्थान पाता जा रहा है इसकारण इसके कारीगर भी असंख्य हो गये हैं और धनवान् दृष्टि आते हैं यदि न्याय दृष्टि से देखा जावे तो यह भी

एक उच्चश्रेणी की कारीगरी है पंजाबी और वंगाली इस ओर बहुत जमे हुये हैं जोकि पैरिस को भी लज्जित करते हैं-

परन्तु हमारे देश के पढ़े लिखे नई उम्र के बी. ए., और यम. ए., इस ओर ध्यान नहीं देते हैं यह उनकी न्यून बुद्धि है-

यदि ऐसे होनहार नौ जवान इस सिलसिले में इंट्रस्ट लें तो फिर क्याही अच्छा हो कारण कि विद्या के साथ शिल्पविद्या चमकती है-

यहही दूसरी वलायत वालों का हाल है-

दूसरा प्रकरण

(१) मतलब की बातैं

यदि अपने बाजे को सदैव अच्छी तरह रखना चाहते हो तो नीचे लिखी बातों को अच्छी तरह स्मरण करलो-

(२) जब बाजा बन्द करो तो पहिले हाथ की पांचो उँगलियों को पर्दों पर रख दो और तब तक हाथ रक्खे रहो जब तक कि धौंकनी बन्द हो जावे और आवाज़ न आये यदि इसके प्रतिकूल होगा तो हवा बाजे के अन्दर रुकी रहेगी और हारमोनियम जल्द नष्ट हो जावेगा-

(३) इसी प्रकार बाजा बजाने से पहिले हाथ पर दो पिनर रखलो फिर धौंकनी चलावो-

(४) बाजेपर हाथ या पांव का ज़ोर मत डालो किन्तु हलके हाथों से काम लो-

(५) पर्दों पर उँगलियां हलकी रक्खो और इधर रख कर लचक से बजावो-गानेवाला कितनाही बल क्यों न लगावे उसकी

तरह तुम मूर्खता न करो यह वानि केवल औगुणही नहीं किन्तु बाजे को नष्ट कर देती है मध्यम श्रेणी में उँगलियां चलाओ–

(६) धौंकनी को इकसां और धीरे चलाओ वास्तव में बाजे में यही औगुण की जड़ है जो इसका चलाना जानगया उसका बाजा कभी नष्ट न होगा ध्यान करके चलाना चाहिये–

(७) जब कभी बाजा ख़राब होजावे तो उसको तुरन्त ठीक करलो चाहे वह आवश्यकीय हो या न हो इसके करने से बाजा सदैव अच्छा रहेगा और पुराना होने पर यह न जान पड़ेगा कि बाजा पुराना है–

(८) पर्दों पर उँगलियां कदापि नहीं पटकनी चाहिये पर्दों का फट फट शब्द करना जोकि अधिक दबाने से लकड़ी से टकराते हैं अच्छा नहीं है प्रथम तो बाजा ख़राब हो जाता है दूसरे यह बुरी वानि सदैव सफलता प्राप्त नहीं होने देती इसकारण इस से घृणा करना चाहिये–

(९) यदि तुम हारमोनियम सीखना चाहते हो तो तुमको चाहिये कि हारमोनियम की तर्ज़ बनावट और सब पुर्ज़े–हारमोनि-यम का खोलना–बन्द करना–यह सब बातें अपने हारमोनियम मास्टर से सीखो और योग्य ग्रन्थकारों के नोट अच्छी तरह पढ़ो जबतक कि "Full Construction" समझ में न आवे बाजे में हाथ लगाना ठीक नहीं–

(१०) सदैव अपने गुरु को प्रतिष्ठा की दृष्टि से देखो चाहे वह गानविद्या में योग्यता रखता हो या न रखता हो कारण यह है कि वह तुमको मार्ग बतलाने वाला है जो कुछ शिक्षा दे उस के अनुसार कार्य करो–

(२) बाजा की रक्षा

यह बात अंगीकार की गई है कि जिस वस्तु की रक्षा अच्छी तरह की जाती है वह बहुत दिनों तक काम देती है और जो लापरवाही से बरती जाती है वह बहुत जल्द नष्ट होजाती है इसी प्रकार हारमोनियम बाजे को जब तक नियमानुसार काम में लावोगे कभी खराब न होगा और जहां लापरवाही से सीखने वाले ने काम लिया बस वहीं वह अपने क़ीमती साज़ से हाथ धो बैठा—

इससे जहां तक हो सके हारमोनियम की रक्षा नीचे लिखे अनुसार करो जिससे कि बाजा बहुत दिनों तक खराब न हो किन्तु नया बना रहे—

(१) तुम भूल कर अपना बाजा किसी दूसरे को न दो चाहे वह तुम्हारा कैसाही मित्र क्यों न हो क्योंकि यह बात कितनी ही बार परीक्षा की जा चुकी है कि दूसरा मनुष्य जो कि हारमोनियम बजाना नहीं जानता है बहुत ही लापरवाही से काम लेने के कारण तुम्हारे प्यारे साज़ को तुम्हारे योग्य न रहने देगा—

(२) यदि कोई हारमोनियस्ट तुमसे मांगे जो कि इसको भले प्रकार जानता है और उसके गुण औगुण को भी जानता है तो निस्सन्देह उसको एक दो सायत के लिये दे सकते हो परन्तु मैं इसको भी अच्छा नहीं समझता—सिवा अपने मास्टर या स्वामी के किसी दूसरे के हाथ में देना अच्छा नहीं—यह साज़ है कि जिसको बजाने वाला अपना उच्च श्रेणी का आभूषण समझा करता है और उसको अपने साज़ से हद से अधिक स्नेह रहता है जैसी दशा में वह रखता है दूसरा नहीं रख सकता—

(३) बाजे के मुताबिक़ एक ओहार कन्द सुर्ख़ का डबल बनवावो और उसके भीतर रुई भी आवश्यकतानुसार भरवावो और सदैव बजाने के बाद ओहार में बन्दकर दिया करो ऐसे ओहार प्रत्येक दर्ज़ी बना सकता है जिसकी लागत अधिक से अधिक एक रुपया सवा रुपया होती है बाजे के ऐसे ओहार बनवाने से बाजा गर्द व धूलि से सदैव बचा रहता है और वार्निश भी सदैव अपनी चमक दिखाती रहती है-

(४) बाजा बहुधा धूलि से ख़राब होता है इस कारण उस की रक्षा करनी चाहिये-

(अ) यदि बाजा हलका हो तो उसको अपनी जांघों पर रखकर बजाया करो-

(ब) जहां पर बाजे को रखकर बजाना चाहो उस स्थान को साफ़ करलो जिसमें हवा के साथ धूलि बाजे में न जा सके-

(ज) एक फ़लैनल का टुकड़ा या मलमल का कपड़ा सदैव बाजे के साथ रक्खा करो और कभी कभी बाजे को चारों ओर से साफ़ कर दिया करो-

(५) बाजे के साथ सन्दूक़ भी होता है इससे उसको बक्स में ही रखना ठीक है-

(६) जहां तक हो सके बाजे पर किसी दूसरी वस्तु का कि जो बाजे की न हो दबाव न पड़ने पावे न कभी हारमोनियम को मेज़ बनाकर काम लो-

(७) बाजे को धूप में कदापि नहीं रखना चाहिये नहीं तो बहुत जल्द फट जावेगा और हवा देने लगेगा दर्ज पड़ जायगी-बिल्कुल तड़ख जायगा और किसी काम का न रहेगा-

(८) जैसा धूप से बचाव किया जाता है ऐसेही पानी से भी बचाव करना चाहिए नहीं तो वार्निश ख़राब हो जावेगी- सरेश अलग हो जावेगा और बाजा ख़राब हो जावेगा-

तीसरा प्रकरण

आवश्यकीय सामग्री

यद्यपि हारमोनियम की मरम्मत करने के लिये सैकड़ों चीज़ें काम में लाई जाती हैं तब भी नीचे लिखी चीज़ें बहुत ज़रूरी हैं जिनका प्रत्येक कारीगर के पास रहना परमावश्यक है-

(१) सरेश-हारमोनियम बाजों में कीलों से अधिक काम नहीं लिया जाता इससे हवा के रोकने और जोड़ों के ठीक करने के लिये कारीगर सरेश को अधिक काम में लाते हैं किन्तु कलकत्ते के सौदागर तो सरेश को आवश्यकता से अधिक काम में लाते हैं-

(२) मोम-यह भी धौंकनी आदि के दुरुस्त करने के लिये सरेश की तरह काम में लायाजाता है और बातों में यह मोम सरेश से भी अधिक लाभदायक माना गया है कारण कि सरेश से जोड़े हुए पुर्ज़े अलग करने में बाजा खराब हो जाता है सिवा इसके मोम से जोड़ जब चाहैं सुगमता से अलग कर सकते हैं-

(३) सीमेंट-रीड यानी स्वर के तख़्ते में जड़ने या धौंकनी को बाजा से मिलाव करने के लिये सीमेंट बहुत अच्छा तैल है यह चपरा और सरेश व गोंद आदि के मिलाव से बनाया जाता है और अंगरेज़ी में सीमेंट "Cement" के नाम से प्रख्यात है-

(४) चपरा-यह भी जोड़ने के लिये और वस्तुओं की तरह

जिनको ऊपर कह आये हैं बहुत ही लाभदायक सीमेंट है जोकि सब पंसारियों की दूकानों पर बिकता है यह सरेश की तरह गर्म करके काम में लाया जाता है—

(५) अबरी—जो किताबों की जिल्दों पर लगाई जाती है वही मोटी अबरी हारमोनियम बाजों की धौंकनी पर बहुधा कारीगर लगाते हैं—हरा या आसमानी रंग इसके लिये अच्छा रहताहै—

(६) साबड़—जोकि बहुधा हरिण की खाल का बनाया जाताहै हारमोनियम बाजे का एक बड़ा भाग है कारण कि इसके बिना हारमोनियम का बनाना कठिन है जो मज़बूती इसमें रहती है वह दूसरे में होना असम्भव है धौंकनी केवल साबड़ और काग़ज़ मोटे की बनाई जाती है—और हवा के रोकने व बन्द करने के लिये साबड़ही काम में लाया जाता है क्योंकि इसमें से हवा निकल नहीं सकती यद्यपि यह क़ीमती चीज़ है परन्तु बिना इस के काम नहीं चलता इस कारण हारमोनियम के प्रत्येक कारीगर के पास कम से कम एक टुकड़ा साबड़ का रहना चाहिये—

(७) तार—हारमोनियम में स्प्रिंग बनाने के लिये पीतल के तारों की आवश्यकता पड़ती है क्योंकि और दूसरी धातु के तार काम में नहीं आते अलबत्ता लोहे के मोटे तार धौंकनी में लगाये जाते हैं—

(८) पेच—हारमोनियम में कीलों के स्थान पर पेच अधिकता से काम में लाये जाते हैं क्योंकि प्रत्येक जोड़ को पेचों के द्वारा खोलते हैं और उन्हीं के द्वारा बन्द करते हैं इससे हर प्रकार के पेच अपने पास रखने चाहिये जिसमें कि आवश्यकता के समय काम आवें एक पेच के लिये कष्ट न उठाना पड़े—

चित्र नं० (१)

चित्र नं० (२)

(९) वार्निश–बादामी अथवा काली वार्निश बहुधा हार
ोनियम बाजों में काम आती है क्योंकि इससे सुन्दरता और
ामक दमक दूनी हो जाती है–अच्छी वार्निश बनाने की विधि
स पुस्तक में वार्निश के प्रकरण में बतलाई गई है यह सब
ौदागरों के यहां हर प्रकार की कम मूल्य में मिल सकती है–

(१०) पालिश–Polish-टरपन टाइन(तारपीन) Terpentine
ा अलसी का तेल रोगन को चमकदार बना देता है स्प्रिट आफ़वाइन
pirit of wine के मिलाने से लकड़ीमें चमक होने के अतिरिक्त
ढृता भी होजाती है पुराने बाजों के लिये यह भी उम्दा
ालिश है–

आयवरी–(Ivory) अर्थात् हाथीदांत क़ीमती बाजों में काम
ं लाया जाता है बाजों में सफ़ेद पर्दे इसी के बनाये जाते हैं
ारमोनियम के कारखानों में इसके बड़े बड़े तख़्ते बनाये जाते हैं
ौर उन तख़्तों पर चिह्न बनाकर पर्दे काट लिये जाते हैं–

परन्तु साधारण बाजों में नक़ली हाथीदांत जो कि हड्डी
और पशुओं के सींगों से बनाया जाता है काम में लाया जाता है
और इनमें एक भाग कर्पूर का भी होता है यह वलायत से ही
बनकर आते हैं और कोई कोई देशी कारख़ाने काम में लाते हैं
जो कि कम ख़र्च बालानशीन होते हैं–

लकड़ी—अधिकता से चीड़ की लकड़ी काम में लाई जाती है प्रथम तो यह कम दाम में मिलती है दूसरे हलकी होने के कारण प्रत्येक जगह अच्छी तरह पर जोड़ी जाती है—

सागवन की लकड़ी बहुत मज़बूत होती है परन्तु कम दाम बाजों में नहीं लगाई जाती इस पर वार्निश बहुत अच्छी होती है—

वायु जल के अनुसार लकड़ी काम में लाई जाती है दूसरी वलायत के बाजे हमारे देश के लिये अच्छे नहीं हो सकते क्योंकि उनकी लकड़ी बहुत जल्द खराब हो जाती है परन्तु कोई कोई दूसरी वलायत के कारख़ाने जो कि मुख्यकर हिन्दोस्तान के लिये बाजे बनाते हैं जैसे यम. केसरायल शहर पैरिस (फ्रांस) में यह कारखाना बहुत अच्छी लकड़ी लगाता है जो कि भारतवर्ष के वायु जल के अनुसार होती है इससे जहां तक हो सके वायु जल पर ध्यान देते हुये लकड़ी को काम में लाना चाहिये—

कपड़ा—अतलस और बानात पट्टी आदि में लगाने के लिये अच्छा रहता है पर्दों के नीचे जहां जहां दबाव पड़ता है उसके नीचे फ़्लैनल (फुलालेन) रंगीन भी लगादेते हैं—

उपरोक्त वस्तुवों में से थोड़ी थोड़ी सब चीज़ें प्रत्येक शौक़ीन को अपने पास रखना चाहिये क्योंकि समय पर मिलना कठिन हो जाता है और बहुत तकलीफ़ उठानी पड़ती है—

(२) औज़ार

हारमोनियम बाजों के बनाने में बहुत प्रकार के बढ़ई के और थोड़े से लुहार के औज़ार काम में आते हैं यहां पर ज़रूरी औज़ारों का वर्णन कर देना आवश्यक है जिनसे हर समय काम रहता है—

चित्र नं० (३)
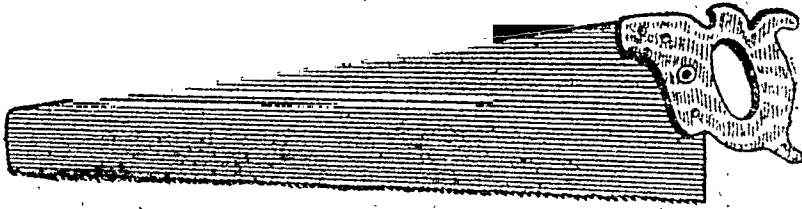
आरी—लकड़ी के चीरने और काटने के लिये मामूली औज़ार है जिसका चलाना प्रत्येक मनुष्य जानता है महीन दांतों की छोटी आरी हारमोनियम के लिये अच्छी होती है क्योंकि छोटे पुर्ज़े स्टाप आदि के बनाने के लिये ऐसी आरी से ही काम लिया जाता है—

चित्र नं० (४)

रेती—रीड यानी स्वर को खुरचकर दुरुस्त करने के लिये यह रेती काम में लाई जाती है इसके घर आयताकार होते हैं—

चित्र नं० (५)
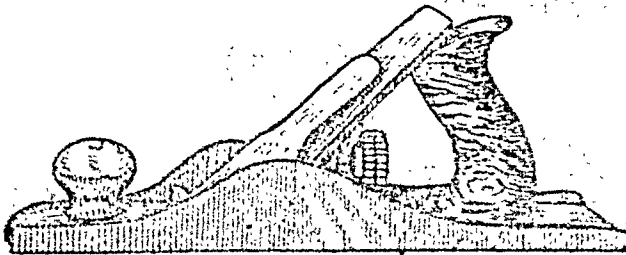
रन्दा—हारमोनियम की सब लकड़ियों पर रन्दा चलाया जाता है यदि ऐसा न होगा तो हारमोनियम पर वार्निश का

चढ़ना कठिन है दूसरे सुन्दरता नहीं रहती है यह अंगरेज़ी रन्दा है हिन्दुस्तानी रन्दा कुछ सीधा होता है—

चित्र नं० (६)
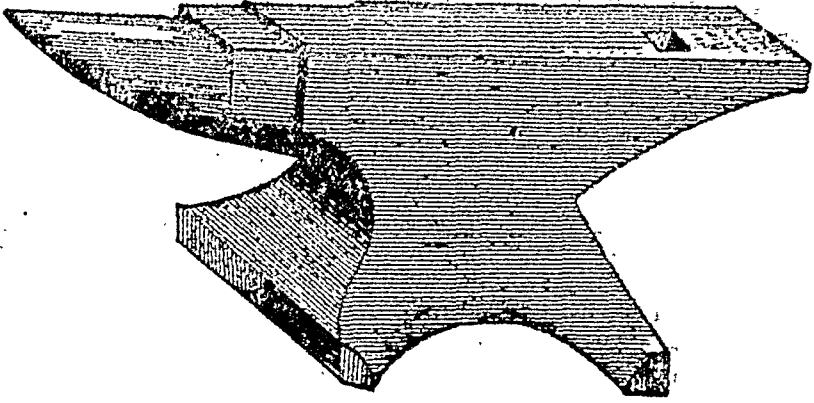
मोदा—इसको पृथ्वी पर रखकर किसी पुर्जे को हथौड़ी आदि से ठोकते हैं या रेती से रेता करते हैं—
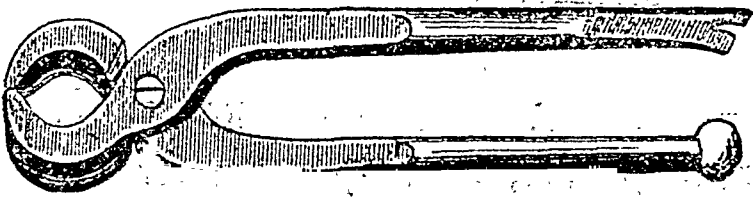
चित्र नं० (७)

केचर—हारमोनियम बाजे की कील आदि निकालने के लिये एक अच्छा औज़ार है—

चित्र नं० (८)
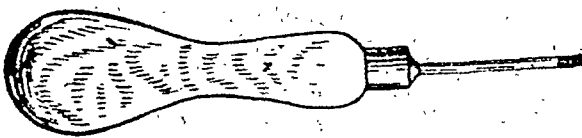
पेचकश—सब से अधिक काम देने वाला औज़ार पेचकश है हारमोनियम में अधिकतर पेचही काम में आते हैं इससे प्रत्येक

चाने के साथ इसका होना परमावश्यक है कारण कि समय पर न होने से तकलीफ़ उठाना पड़ती है यद्यपि छुरी से भी काम निकलता है तब भी इसका होना ज़रूरी है--

चित्र नं० (९)
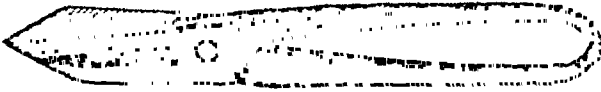
कतरनी-स्प्रिंग यानी कमानियाँ कतरने के लिये इस औज़ार को काम में लाते हैं-

चित्र नं० (१०)
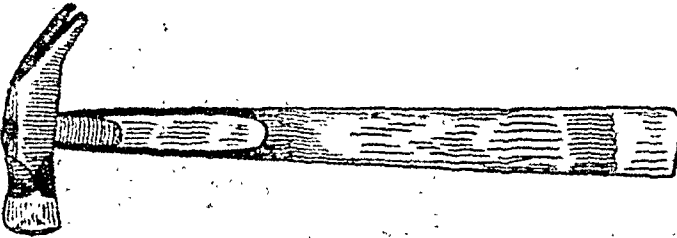
हथौड़ी-कमानियां और कीलें ठोकने के लिये इस से अच्छा कोई औज़ार नहीं है परन्तु हथौड़ी ऐसी हो कि जिसका ऊपरी भाग पतला हो जैसा कि ऊपर चित्र में दिखलाया है-

चित्र नं० (११)
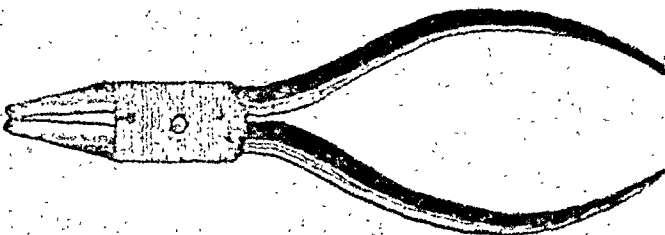
संडासी-इसका काम बहुत कुछ है स्प्रिंग का बनाना निका-

लना आदि कमानियों के छेद आदि इसी के द्वारा निकाली जाती है-

चित्र नं० (१२)
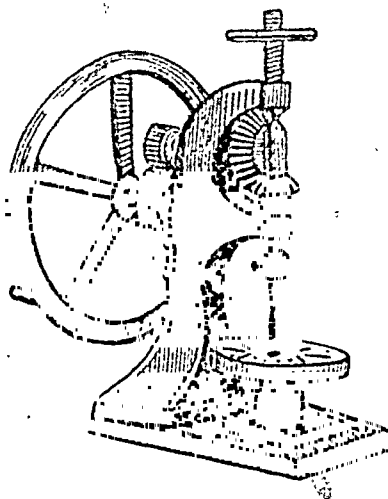
बर्मा-छेद बनाने के लिये यह औज़ार बनाया गया है एक पतली डोरी में लपेट कर चलाते हैं चीड़ की लकड़ी बाजों में अधिकता से होती है इस में छेद करना कठिन होता है परन्तु इस के द्वारा सुगमता से हो जाता है-

चित्र नं० (१३)
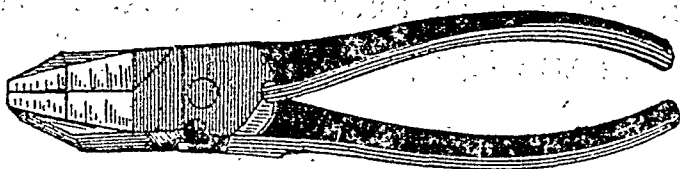
चिमटी-यह भी एक काम देने वाला औज़ार है कुछ पकड़ने या उठाने के लिये बहुत अच्छा है-

---

दूसरा अध्याय

पहिला प्रकरण

हारमोनियम के बाहिरी पुर्ज़ों का वर्णन

अब हम हारमोनियम के उन बाहिरी पुर्ज़ों का वर्णन करते हैं कि जो हमको सामने दिखाई देते हैं और वह सब चीज़ें जिसके कारण से वह नष्ट होजाते हैं वह दुरुस्त करने की तरकीबों और चित्रों सहित बतलाये गये हैं—

(१) स्प्रिंग

कमानियां जो कि पीतल के तार की होती हैं जिसको अंगरेज़ी में स्प्रिंग Spring कहते हैं यह पर्दों को दबाये रहती हैं और इन्हीं की लचक से पर्दा दब जाता है हारमोनियम फ़्लूट की पट्टी को उठाकर देखो सब स्प्रिंग हर पर्दे पर एक एक दिखाई देगा—

चित्र नं० (१४)
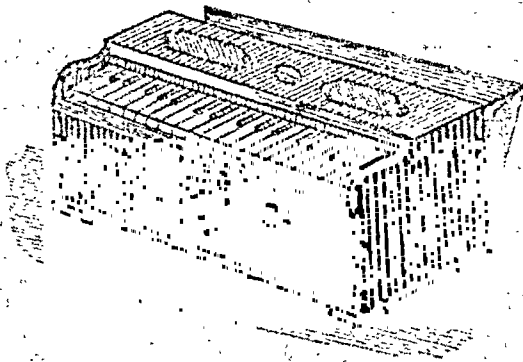
पट्टी जिसके नीचे स्प्रिंग हैं—

चित्र नं० (१६) (ब) (अ)

स्प्रिंग की अलग शकल इस प्रकार की होती है और (ब) का सिरा लकड़ी की पट्टी में लगा दिया जाता है और दूसरा सिरा (अ) पर्दे को दबाये रहता है—
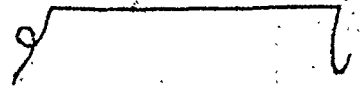
चित्र नं (१७)

पट्टी—यह शकल उस पट्टी की है जिसमें सिरा (ब) स्प्रिंग का जड़ा जाता है—
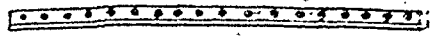
चित्र नं० (१८)
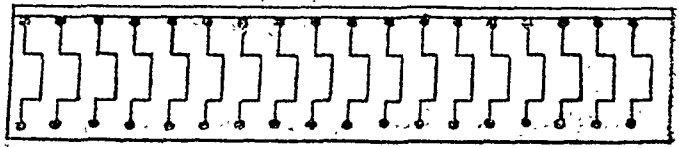
स्प्रिंग

चित्र नं० (२०)

सलाख यह शकल उस सलाख की है जिस में स्प्रिंग पिरो दिये जाते हैं जिस से स्प्रिंग मज़बूत रहते हैं और अलग नहीं हो सकते—

(२) स्प्रिंग क्यों ख़राब होजाते हैं ?

(१) जब स्प्रिंग बहुत पुराना हो जाता है तो थोड़े से दबाव से तुरन्त टूट जाता है—

(ब) बारम्बार स्प्रिंग के दबाने और सरकाने से ढीला हो जाता है—

(ज) हारमोनियम सीखने वाले बहुधा अनजान होने के कारण पर्दे को हद से अधिक दबाते हैं जिसका फल यह होता है कि पर्दे ढीले हो जाते हैं—

पट्टी नंबर (१७) की शकल में जो सलाख़ हैं उन में स्प्रिंग (ब) का सिरा ढीला पड़ जाता है–

ऊपरी कारणों के अतिरिक्त कुछ मुख्य कारण भी स्प्रिंग को खराब कर देते हैं जो कि सीखने वाले की अनभिज्ञता कही जा सकती है–

(३) स्प्रिंग का बनाना

एक पीतल के तार के टुकड़े को लेकर संड्यासी से शकल (१६) की तरह बनाना चाहिये बनाने के समय इसका ध्यान रखना चाहिये कि पिछला सिरा कुछ ऊंचा हो जिससे पर्दे पर ठीक दबाव पड़े—जब स्प्रिंग तैयार हो जावे तो सब से पहिले सलाख़ शकल नंबर (२०) को संड्यासी से घुमाते हुये निकालो जो स्प्रिंग ख़राब हो गया हो उसको संड्यासी से घुमा कर निकालो और नया स्प्रिंग उसकी जगह पर लगादो–

एक विशेष सूचना–नया स्प्रिंग सदैव घुमाकर लगाना चाहिये जिस में कि अपनी जगह पर अच्छी तरह लगा रहे और फिर न हिले जब तक कड़ा न हो जावे बारम्बार दबाते और घुमाते रहो जब स्प्रिंग अच्छी तरह अपनी जगह पर बैठ जावे तो सलाख़ शकल नंबर (२१) को पिछली तरह पर घुमाते हुये सब कमानियों में पिरो देना चाहिये–

चित्र नं० (२१)
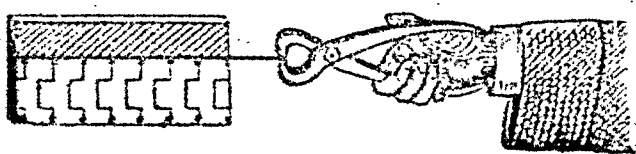
हाथ में संड्यासी को पकड़ के सलाख़ को उपरोक्त नियमानुसार घुमाया करते हैं–

(४) चित्र स्प्रिंग जड़े हुये

नीचे उस तख्ते का चित्र बताया गया है जिसमें स्प्रिंग जड़े रहते हैं–

चित्र नं० (२२)
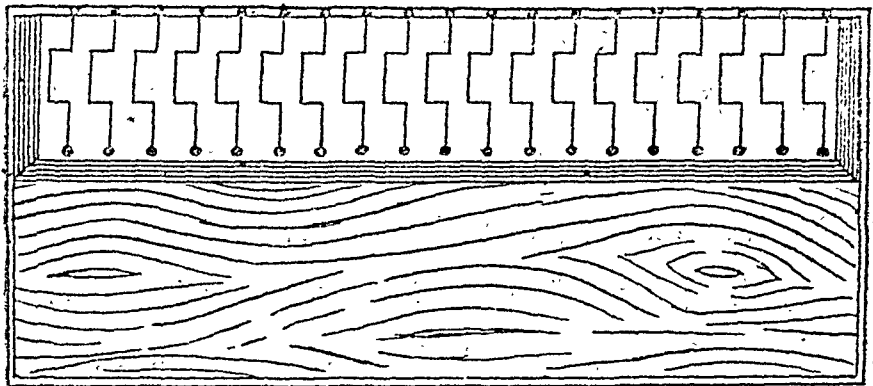
दूसरा प्रकरण

हारमोनियम के पर्दे

हारमोनियम वाजों में दो प्रकार के पर्दे होते हैं–काले व सफ़ेद–

काला–काले पर्दे के नीचे कोमल स्वर लगा रहता है यह पर्दा दो कीलों में अटका रहता है और जिस स्वर के घर को यह ढका रखता है उसी स्वर के नाम से यह बोला जाता है यदि गान्धार के स्वर पर होगा तो यह पर्दा गान्धार कोमल या उतरे के नाम से बोला जायगा इसी प्रकार और भी स्मरण रखना चाहिये–

(२) बनावट

काले पर्दों की बनावट नीचे के चित्र से जानियेगा–

चित्र नं० (२३)

चित्र नं० (२४)
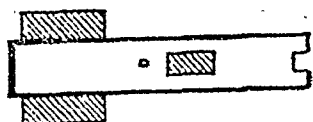
उपरोक्त दोनों शकलों से ज्ञात है कि पर्दे की बनावट बहुत सुगम है इसके नीचे की उस जगह पर जो स्वर के घर को बन्द किये रहती है एक अबरी का टुकड़ा उस घर के बराबर लगा रहता है जिससे हवा इकसां निकलती रहती है जब यह अलग हो जाते हैं या किसी कारण से ख़राब हो गये हों तो पर्दा अपने आप आवाज़ देने लगता है या कील ढीली हो जाती है तो उस समय में हिलने लगता है अधिक दबाने से स्प्रिंग जो पर्दे को दबाये रहता है ढीला हो जाता है इससे उसकी दुरुस्ती करना बुरी बात नहीं है यदि पर्दा टूट जावे तो उसके अनुसार बना लेना चाहिये और न बन सके तो बना बनाया मोल लेकर लगा सकते हैं–

यदि सावड़ का टुकड़ा ख़राब हो जावे तो उसी के अनुसार क़ैंची से कतर करके सरेश चिपका देना चाहिये–

(३) सफ़ेद पर्दा

काले पर्दों की तरह सफ़ेद पर्दे भी दो कीलों में अटके रहते हैं और नीचे सावड़ लगी रहती है जो कि स्वर के घरको ढके रहती है इस पर जो नक़ली आबनूसी लगी रहती है वह भी पेचों के द्वारा लगाई जाती है जिस से मज़बूती दूनी हो जाती है–

चित्र नं० (२६)　　　　चित्र नं० (२५)
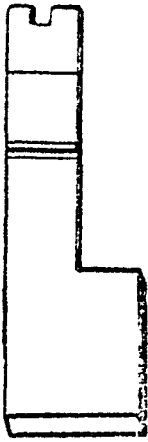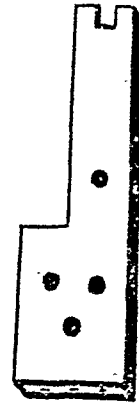
इस के बनाने का नियम भी काले पर्दों का सा है परन्तु नक़ली आयबरी के लगाने में कुछ सावधानी दरकार है कारण कि नक़ली आयबरी के तख़्ते बने बनाये बिकते हैं उनसे तराश कर लकड़ी पर चिपकाये जाते हैं और यह बने बनाये भी प्रत्येक कारख़ाने में मिल सकते हैं—

(४) चित्र पर्दा मय स्प्रिंग

चित्र नं० (२७)
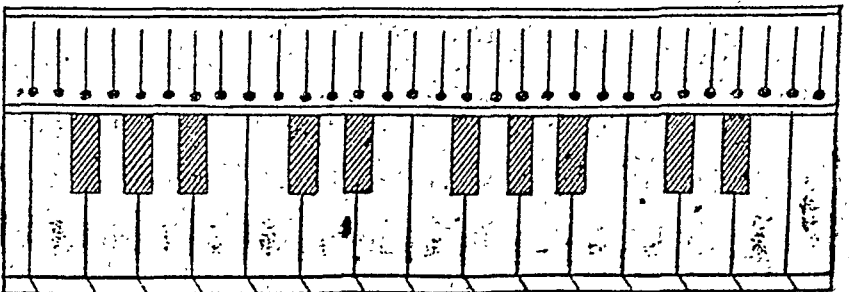
(५) चित्र खाली तख़्ते का

चित्र नं० (२८)
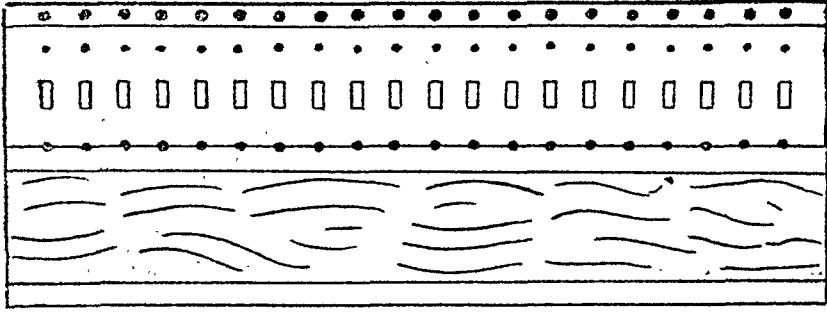
(६) कुछ आवश्यकीय सूचनायें

(१) कभी कभी वह कीलैं कि जो पर्दों को रोके रखती हैं अलग हो जाती हैं जिससे पर्दा अपने आप आवाज़ देने लगता है इससे प्रत्येक को मज़बूत रखनी चाहिये—

(२) पर्दों पर जो घर स्प्रिंग के ठहराव के बनाये जाते हैं उन्हीं पर स्प्रिंग को रखना ठीक है नहीं तो स्प्रिंग पर्दे से अलग हो जावेगा—

(३) बहुधा पर्दों के नीचे कंकड़ पत्थर और छोटे छोटे रेजे आ जाते हैं इससे बाजे को सदैव साफ़ करते रहना चाहिये और पर्दों पर पसीना लग जाने से बचाना चाहिये—

तीसरा प्रकरण

(१) स्टाप

स्टाप के द्वारा हम बाजे को खोल सकते हैं और बन्द भी कर सकते हैं अर्थात् इसके आगे की ओर खींचने से बाजा खुलजाता है और नीचे की ओर सरकाने से बन्द होजाता है इन्हीं के द्वारा

भिन्न भिन्न आवाजें पैदा होती हैं वाजे में नीचे दिये चित्र के अनुसार स्टाप लगे रहते हैं—
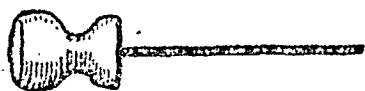
चित्र नं० (२९) स्टाप अलग
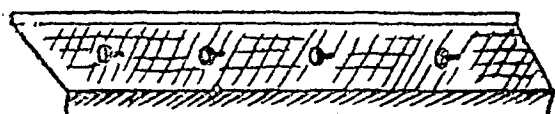
चित्र नं० (३०) स्टाप वाजे में लगे हुय

उपरोक्त शकल से साफ़ ज़ाहिर है कि स्टाप एक पेच- चित्र नं० (३१) दार कील की तरह होताहै जिसके आगे एक कील बटन की तरह लकड़ी का रोशन कियाहुआ मुहँ लगा रहता है जिसपर अंगरेजी हुरूफ़ में उस आवाज़ का नाम खुदा होता है जोकि उस स्टाप के खोलने से पैदा होती है नीचे चित्र देखो—
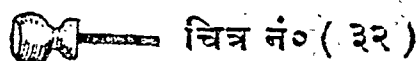
चित्र नं० (३२)

कभी कभी स्टाप की क़ील चित्र (३२) से अलग हो जाती है परन्तु छेद में सरेश डालकर फिर कस देने से ठीक होजाती है शेष भीतरी स्टाप के चित्र तीसरे अध्याय में देखकर मरम्मत करदेना चाहिये—

जो कुछ बाहिरी शकल थी दिखा दीगई है

(२) स्टाप का बिगड़ना और उसका बनाना

हारमोनियम के प्रेमी अनभिज्ञ होने के कारण स्टाप खोलने के समय जल्दी करते हैं और ज़ोर से खींचते हैं जिसका यह परिणाम होताहै कि स्टाप ढीले होकर बिना खोलने के धौंकनी के सहारे से आवाज देने लगते हैं इससे सदैव स्टाप को धीरे से खींचना और बन्द करना चाहिये—

ट्रीमलो स्टाप सदैव खोलना निरर्थक है कारण कि शीघ्र खराब होजाता है–तान बजाने के समय या दर्दनाक गायन बजाने के समय इस स्टाप को खोलना चाहिये यह भी ध्यान रखना चाहिये कि जब ट्रीमलो स्टाप खोला जाता है तो उस समय शेष सब स्टाप बन्द कर दिये जाते हैं—

किसी किसी बाजे में दश दश पन्द्रह पन्द्रह स्टाप होते हैं और किसी किसी में होतेही नहीं केवल एक बड़ा दहाना हवा आने का रहता है—

बांसुरी–सीटी–तेज़–गोल–डबल–मस्त और बहुत प्रकार की आवाज़ें इन्हीं स्टापों से पैदा होती हैं—

जिस बाजे में चार स्टाप हों उसके दो स्टाप बजाने के लिये काफ़ी होते हैं -

चौथा प्रकरण

(१) दमकश

जिसको अंगरेज़ी में बेलो Bellow और उर्दू में धौंकनी कहते हैं यह भी बाजा का अर्द्ध भाग कहलाता है कारण कि इससे बाजे में हवा पहुँचाई जाती है और बिना हवा के बाजे का बजना असम्भव हैं इससे इसका सदैव ठीक रहना आवश्यकीय है जहां तक हो इसकी रक्षा अच्छी तरह करनी चाहिये–

(१) बनावट

बड़ाभाग (१) साबह़ (२) मोटा काग़ज़ (३) सरेश (४) लकड़ी (५) अबरी–

उपरोक्त वस्तुवों से धौंकनी बनाई जाती है और इन्हीं वस्तुवों में से किसी एक के ख़राब हो जाने से निकम्मी हो जाती है—

हारमोनियम बाजों में सैकड़ों प्रकार की धौंकनियां लगी रहती हैं और हर एक मेकर दिन प्रति दिन नये ढंग की धौंकनियां बनाते रहते हैं परन्तु उनमें से कुछ ऐसी हैं कि जो संसारी जनों के पसन्द हैं जिनका यहां पर संक्षेप रूप से वर्णन किया जाता है जिससे सीखनेवालों को बहुत कुछ लाभ हो—

सदैव स्मरण रखिये कि धौंकनी बाजों में दो होती हैं एक वह जो बाहरी ओर लगी रहती है जिसको कि हाथ या पांव से चलाते हैं दूसरी धौंकनी भीतर की ओर रहती है जोकि बाहरवाली के निकट होती है—

बाहर की धौंकनी से भीतर की धौंकनी में हवा पहुँचाई जाती है फिर वही हवा स्टापों के द्वारा रीड अर्थात् स्वर को लगती है तभी पर्दे के दबाने से आवाज़ पैदा होती है—

(२) धौंकनी की क़िस्में बएतबार हारमोनियम

(१) फ़ोल्डिंग कन्स्ट्रक्शन

(२) साधारण बाजों की धौंकनियां

(३) फ़ोल्डिंग धौंकनी

जो दोनों हाथों व पैरों से बाजे बजाये जाते हैं उनकी धौंकनी उलट पलट यानी हाथके बाजों से बिल्कुल ख़िलाफ़ होती है जैसा कि नीचे के चित्र में दिखलाया गया है—

चित्र नं० (३३)
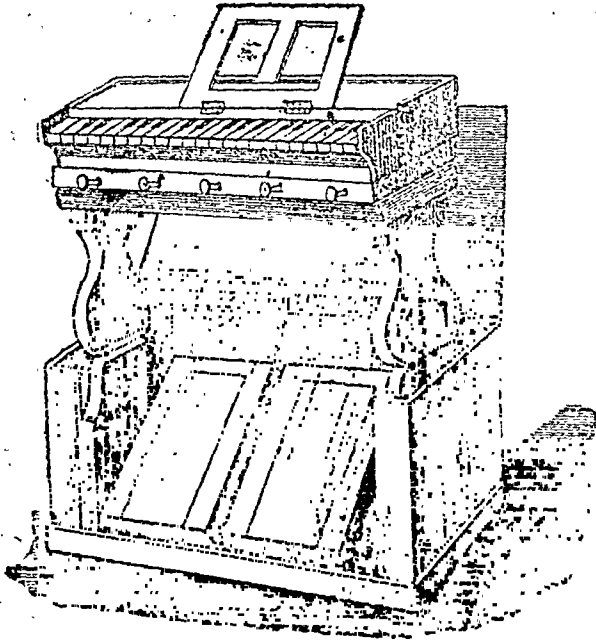
यह धौंकनी दोनों पावों से चलाई जाती है नीचे से हवा दोनों पटियों के द्वारा वाजे के भीतर पहुँचती है किसी किसी वाजे में जर्मनसिलवर की नालियों के द्वारा पहुँचाई जाती है यह एक बहुत अच्छा ढंग है और इसमें मज़बूती भी पाई जाती है—

नीचे के चित्र देखो—

चित्र नं० (३४) धौंकनी— चित्र नं० (३५) धौंकनी मय पैडिल—
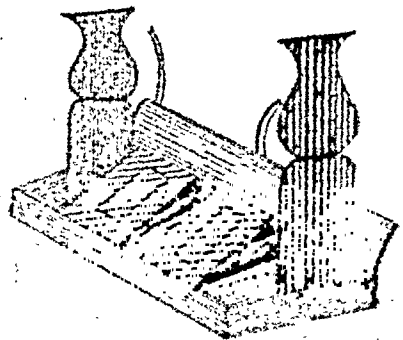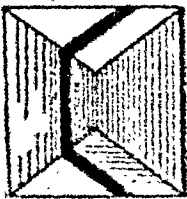
कोई कोई बाजे केवल एकही पावँ से चलाये जाते हैं जैसा कि नीचे के चित्र से दिखाई देगा इसकी धौंकनी ऊपर को होती है और वह एक डोरी के द्वारा जोकि एक पावँ के नीचे दबाई जाती है निकट है यह बाजा केवल हाथ के सहारे से भी बज सकता है—

चित्र नं० (३६) धौंकनी मय हारमोनियम—
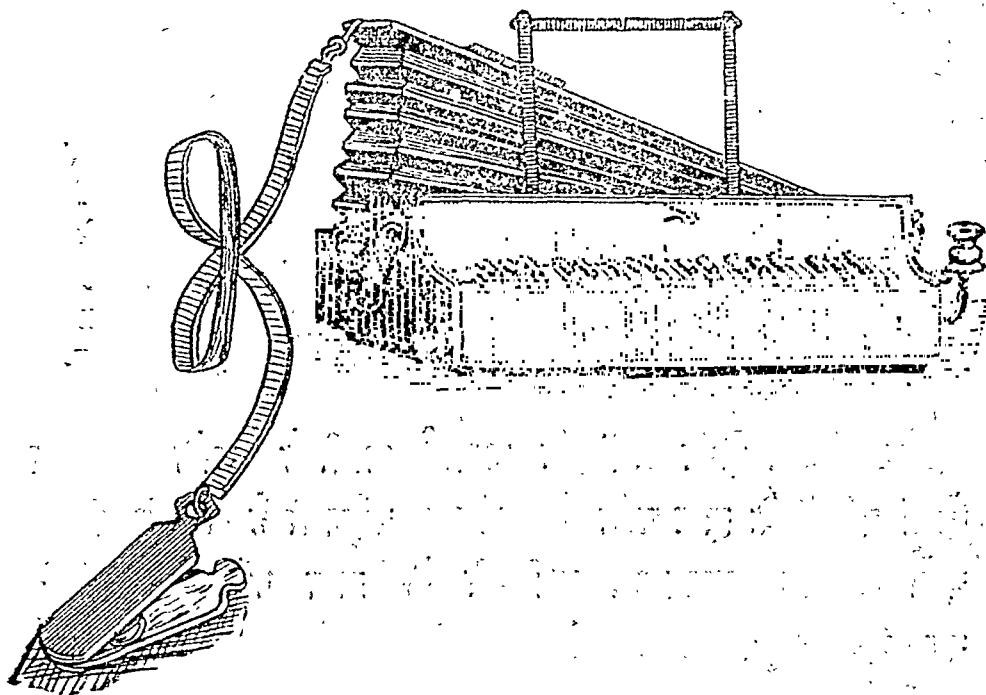
यह भी धौंकनी दुहरी होती है और आठ आठ तह तक की साधारण धौंकनियां होती हैं यह धौंकनी छत की कहलाती है क्योंकि ऊपर होती है—

चित्र नं० (३७) केवल धौंकनी—
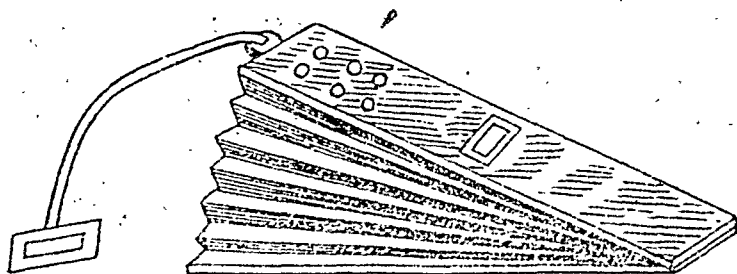
(४) साधारण धौंकनियां

हेरिल्ड के बाजों में जो हाथ की धौंकनियां लगी रहती हैं वह अकार्डीन बाजों की धौंकनियों की तरह होती हैं इनका चलाना सुगम नहीं है कारण कि पांच छः तह की होती हैं जब तक उनके चलाने का अभ्यास न हो तब तक कठिनता पड़ती है—

हेरिल्ड धौंकनी मयबाजा

चित्र नं० (३८)
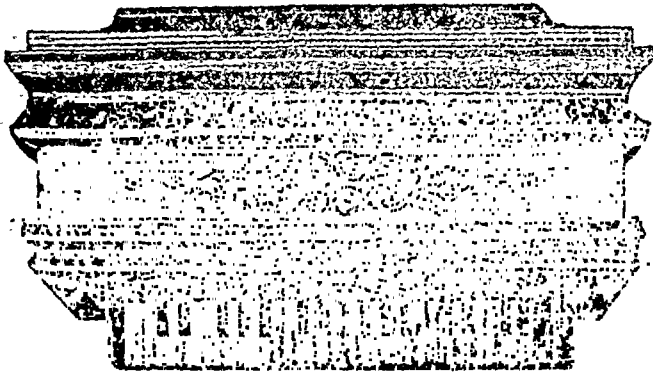
केवल धौंकनी

चित्र नं० (३९)
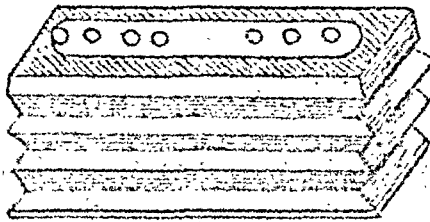
यह धौंकनी साधारण धौंकनियों की तरह फ्लूट के पीछे लगी रहती है—

(५) सादी धौंकनी

साधारण हाथ के बाजों में केवल एक तहकी धौंकनी लगाई जाती है और यह धौंकनी बड़ी सुगमता से चलती है परन्तु खराब भी बहुत जल्द होजाती है—

चित्र नं० (४०) केवल धौंकनी
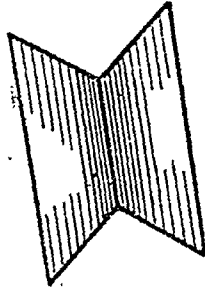
धौंकनी मय हारमोनियम

चित्र नं० (४१)
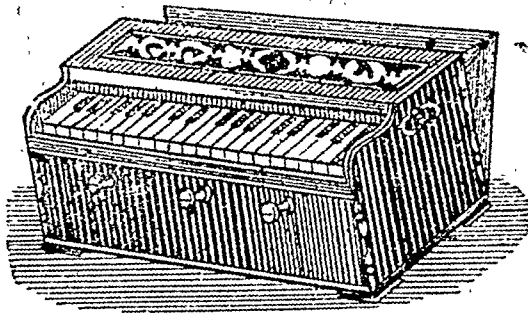
दृष्टि के सामने

किसी किसी हारमोनियम बाजे में एक चौकठा लगा रहता है जिसमें गायन का कार्ड या काग़ज़ लगा देते हैं जिसको देखकर शौक़ीन बजाया करते हैं यह एक बहुतही काम देनेवाला चौकठा है परन्तु इसकी गुण ग्राहकता वलायत वाले ही जानते हैं

भारत वर्ष के कारीगर अपने बाजों में बहुत कम लगाते हैं यह एकही प्रकार के नहीं होते किन्तु हारमोनियम की बनावट के अनुसार विविध प्रकार के होते हैं–

चित्र नं० (४२)
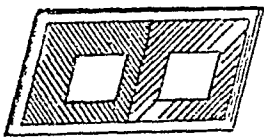
किताब के वास्ते

चित्र नं० (४३)
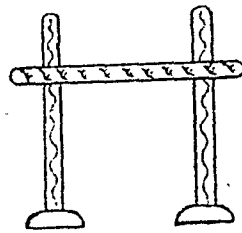
कार्ड के लिये

गायन के कार्ड जोकि हारमोनियम सीखनेवालों के लिये इस शुभचिन्तक ग्रंथकार ने करीब एक हज़ार के बहुत अच्छे तैयार किये हैं जिनमें अलफ्रेड–पारसी–जुबली–विक्टोरियाआदि थियेट्रिकल कम्पनियों के प्रख्यात तमाशों के बढ़िया बढ़िया गायन लिखे हैं नीचे के पते से अंगरेज़ी उर्दू और नागरी में मिलेंगे–

(१) हेरिल्ड एंड को कलकत्ता }
(२) रोज़ एंड को बम्बई }
(अंगरेज़ी)

(३) मैनेजर
नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ.
(उर्दू नागरी)

पांचवां प्रकरण

(१) वार्निश

हारमोनियम बाजे की सुन्दरता वार्निश पर निर्भर है जैसी चमक व दमक की वार्निश होगी बाजा भी वैसाही सुन्दर दिखाई देगा जिस वार्निश पर पानी का धब्बा आजाता है वह वार्निश कुछ अच्छी नहीं होती न मज़बूती दिखाती है–

कोई वार्निश स्प्रिट आफ़ वाइन से तैयार की जाती हैं और कोई साधारण काली वार्निश में टरपनटाइन (तारपीन) आदि मिलाया जाता है–

वार्निश जो बाजे पर होती है वह गर्द और पसीने से ख़राब होजाती है यदि शौक़ीन नित प्रति फ़्लैनल (फुलालेन) के टुकड़े से सब बाजे को साफ़ कर दिया करें तो अच्छा है ऐसा करने से बहुत दिनों तक वार्निश ख़राब न होगी–

यदि बाजे की वार्निश किसी कारण से ख़राब हो जावे या पुराने बाजे पर करना हो तो ब्रुस से वार्निश कर देनी चाहिये हाथ न लगाना चाहिये और वार्निश करने के पीछे बाजे को ऐसे स्थान में रख देना चाहिये जहां गर्द आदि न ख़राब कर सके धूप में भी न रखना चाहिये–

वार्निश बनी बनाई बाज़ारों में मिलती है और हर प्रकार की बोतलों और डब्बों में चार आने से लेकर दश पन्द्रह रुपये पौंड तक की बिकती है स्प्रिट की वार्निश अच्छी होती है–

बादामी और काली वार्निश के कुछ बढ़िया नुसख़े जोकि कम ख़र्च वाला नशीन हैं इस पुस्तक के अन्त में लिख दिये गये हैं–

तीसरा अध्याय

पहिला प्रकरण

नेयम बाजे के भीतरी पुर्जों का वर्णन

(१) स्टाप

तख्ते के भीतर हर स्टाप के नीचे छिद्र होते हैं जिन पर स्टाप के तख्ते छोटे छोटे से दबाव डाले रहते हैं इनका खराब होना जभी ज्ञात होगा जब वह बिना स्टाप के चलाने के केवल धौंकनी के सहारे सब स्वर आवाज़ देने लगें या स्टाप स्वयं ढीले हो जावें–

इनकी दुरुस्ती केवल पेचों के कस देने से होती है या तड़ख जावें तो चाहिये कि सरेश और साबड़ से जोड़ दें–

ट्रीमलो स्टाप–जिससे थरथरी आवाज़ पैदा होती है यह एक तार से मिला होता है जिसमें शीशा या लोहे का एक छोटा सा टुकड़ा लगा रहता है यह कभी कभी खराब होजाता है जिसकी दुरुस्ती के लिये नीचे की प्रक्रिया बहुतही अच्छी है अर्थात् थोड़ा सा मोम लेकर उस लोहे या शीशे के टुकड़े पर लगा देना चाहिये जिससे वह भारी होजावे और अपनी असली आवाज़ पैदा करे–

किसी किसी बाजे में स्टाप डबल आवाज़ पैदा करने के लिये होते हैं और किसी किसी में नहीं भी होते–एक बड़ा छिद्र हवा देता रहता है और बहुत से वलायती बाजों में सीटी का स्टाप होता है जिससे सीटी की आवाज़ निकलती है–

यह प्रत्येक भिन्न भिन्न आवाज़ रखते हैं जब दो एक साथ

साथ खोल दिये जाते हैं उस समय आवाज़ मिलकर अजीब समां नज़र आता है—

यदि किसी स्टाप से पूरी आवाज़ न आवे तो उसका दोष देख कर दुरुस्त कर देना चाहिये—

अधिक ज़ोर से खींचने से स्टाप के वह सिरे जोकि हवा के दहाने को बन्द किये रहते हैं ख़राब होजाते हैं और बहुधा ढीले भी होजाते हैं इनके पेच कसदेने चाहिये और जहां से तड़ख़ गये हों वहां सरेश और साबड़ से काम निकालना चाहिये—

चित्र नं० (४४) स्टाप सादा चित्र नं० (४५) ट्रीमलो स्टाप
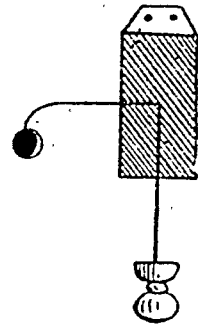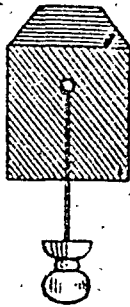
दूसरा प्रकरण

(१) धौंकनी

जो धौंकनी भीतर की ओर होती है उसका चित्र यह है—
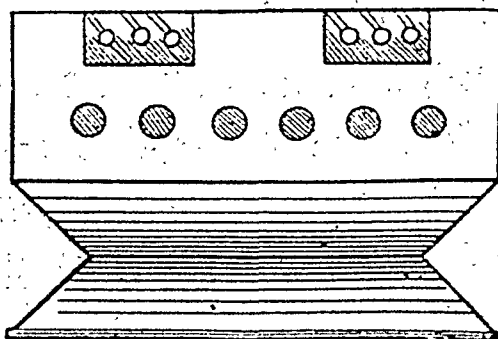
चित्र नं० (४६)

फ़ोल्डिंग बाजों में नीचे से हवा पहुँचाई जाती है इससे वह भीतरकी धौंकनी में दोनों ओर से होकर पहुँचती है चित्र यह है—

चित्र नं० (४७)
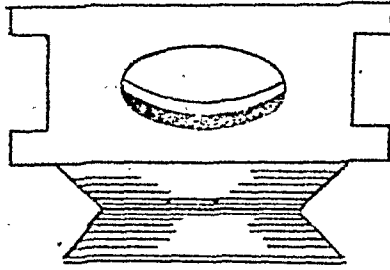
हाथ के बाजों में जो धौंकनियां होती हैं उनके भीतरी भाग में ऊपर के तख़्तों में नीचे के चित्र के अनुसार छिद्र होते हैं और उनपर सावड़ के टुकड़े लगे रहते हैं जिनके द्वारा हवा भीतर पहुँचती है—

चित्र नं० (४८)
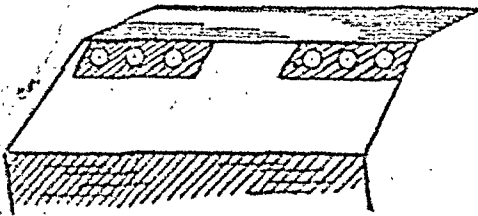
यदि धौंकनी का सावड़ कड़ा होजावे कि जिससे तड़ख़ जाने का अन्देशा होता है तो उसके भीतर तेल डाल देना चाहिये इस से सावड़ नर्म हो जावेगा यदि कहीं तड़ख़ जावे या फट जावे तो लेई से सावड़ को जोड़ देना चाहिये तो मज़बूत रहेगा परन्तु लेई में थोड़ा सा नीलाथोथा अवश्य मिलादेना चाहिये नहीं तो धौंकनी को समय पाकर चूहे काट डालेंगे—

अन्त

महाशयो ! इस पुस्तक में मरम्मत के संबंध में बहुत से कठि
अवश्य लिखी गई हैं जिनके कारण सीखने वाले व प्रे... चल
उठाते हैं परन्तु मैं हारमोनियम के शौकीनों को उपदेश करता हूं
कि वह किसी कारखाने में हारमोनियम की बनावट को देखें
और दश पन्द्रह हारमोनियम बाजों को अपने हाथ से खोल
कर उसके भीतरी पुर्ज़ों को भले प्रकार देखें जिससे अधिक
योग्यता प्राप्त हो–

कभी कभी एक ज़रा से नुक़्श के पैदा होने से बाजा खराब
हो जाता है शिक्षक को उसके दोष जानने के लिये कुछ बुद्धि
पर भी ज़ोर देना चाहिये कारण कि जो दोष अनजान होने के
कारण से हो जाता है वह ज्यों का त्यों बनाही रहता है और
सीखने वाला किसी दूसरे दोष को ढूंढ़ते हुये दिखाई देता है–

इस कारण इसका ध्यान हर दशा में होना चाहिये और
शीघ्रता नहीं करनी चाहिये जो काम धीरज में होता है वह
बहुधा अच्छा होता है–

यदि आप कारीगर बनना चाहते हैं तो परिश्रमी होने का
उपाय कीजिये बिना परिश्रम आप अच्छे कारीगर नहीं हो सकते
दूसरे जितनाही अभ्यास अधिक होगा उतनेही तजुर्बेकार और
होनहार कारीगर बन जावोगे–